सेहरे के फूल

सेहर के फूल

आदिल रशीद

नव साहित्य प्रकाशन दिल्ली-६

प्रथमावृत्ति

छः रुपये

प्रकाशक : नव साहित्य प्रकाशन, बंगलो रोड, दिल्ली—६
मुद्रक : शुक्ला प्रिंटिंग एजन्सी द्वारा महेन्द्र प्रार्ट प्रेस दिल्ली।

SEHRE KE PHUL—Adil Rashid—Rs. 6/-

एक

जनवरी का आरम्भ।

सर्दियां शुरू हो चुकी थीं। शाम के साढ़े पांच बज चुके थे। सूर्य की अन्तिम किरणें हवेली के सामने वाले सबसे ऊंचे नीम के पेड़ की फुनगियों पर नाच रही थीं। सूर्य का रंग सुनहरा हो चुका था। कुहरे की एक लम्बी और हल्की-सी रेखा दूर तक फैलती हुई मालूम हो रही थी।

चिड़ियों ने बसेरों की तलाश में उछलना, कूदना और शोर मचाना शुरू कर दिया था। गांव के सारे ढोर और डंगर अपने-अपने थान पर वापिस आ रहे थे। गांव के छपरों से धुआं उठना शुरू हो गया था। मुर्गियां डरबों के पास आ जमा होने लगी थीं और कुड़कुड़ा रही थीं।

सांझ अत्यधिक शान्त और सुन्दर थी। सूरज देखते ही देखते डूब गया था। सर्दी ज्यादा बढ़ चली थी। गांव वालों के मकानों के सामने अलाव चमकने लगे थे।

लेकिन वह अभी तक गुम-सुम, उदास हवेली की छत पर सरदरी के नीचे स्तून से लगी खड़ी, न जाने क्या सोच रही [illegible] गिर्द सर्द हवाओं की लहरें तड़पना शु[illegible] ने सरसरा क[illegible]लों क[illegible]

उठी—

"अभागी ! खुदा ग़ारत करे तेरी इस सुलगती जवानी को ! यहाँ खड़ी-खड़ी क्या कर रही है ?"

सहसा ही सहम कर वह सामने दिखने लगी।

"बड़ी बेग़ैरत और बेहया हो तुम।" किसी ने उसे झंझोड़ कर रख दि ।—"ग़जब खुदा का। जवान-जहान लड़की और किस बेबाकी से छत पर मुंह उठाए खड़ी है। झाड़ मुंह पहाड़। इसे यह भी होश नहीं कि बेपर्दगी हो रही होगी।"

वह अब पूरी तरह होश में आ चुकी थी। अत्यधिक बेचारगी के साथ आहिस्ता से बोली—

"मैं जरा यों ही···जी घबरा रहा था तो···।"

"चुप !" उसके गाल पर एक थप्पड़ पड़ा—"बड़ी आई जरा यों ही की बच्ची। लगता है कि सारे खानदान की नाक कटा कर ही तू चैन लेगी।"

उसकी पीठ पर दोहत्थड़ मारकर उसे आगे की तरफ धक्का दिया गया—"चल, उतर नीचे। लाख बार समझाया होगा कि कोठा अटारी न किया करो, मगर मेरी सुनी जाय, जब न।"

वह मरी हुई चाल से शानदार हवेली की छत पार कर जीने तक आई। जी — पहुंच उसे पीछे से एक और धक्का दिया गया—

"क[illegible] ोडी ! अभी से पर-पुर्जे निकालने

नीचे हवेली के सहन में आकर उसकी पीठ पर एक घूंसा और पड़ा—"मैं कहती हूँ, नोज कोई तुझ जैसी बैल लड़की का वास्ता किसी से डाले। खुदाए-ख्वार न जाने कहाँ-किधर मरती रहती है ?"

आवाज़ में और कठोरता आ गई—"मैं कहती हूँ तौबा-तौबा ! नोज कोई तुझ जैसा हो ! आखिर तू मुझे समझती क्या है ?"

वह चुप रही।

"बोल ! जवाब दे···!"

"माफ कर दीजिए, मामीजान !" वह झिझकती हुई रुक-रुक कर बोली—"मैं अब कभी छत पर न जाऊंगी।"

"जहन्नुम में जाओ तुम—चूल्हे में पड़ो मेरी तरफ से।" उसके बाल नोच डाले गए—"लेकिन खुदा रसूल का वास्ता, इतने बड़े खानदान की नाक न कटवाओ। पूरे का पूरा खानदान चुल्लू भर पानी में डूब मरेगा। निगोड़ा मरकर भी बदनामी का दाग़ न धुलेगा—यह समझ लो अच्छी तरह।"

"जी !"

"क्या जी ?"

"अब मैं छत पर कभी न जाऊंगी।"

"नहीं-नहीं, यह नहीं !!" वह दाँत पीसकर बोली—"इतनी बड़ी बदनामी का दाग़ मरकर भी न छूटेगा—समझी !"

"जी हाँ।"

"जी हाँ की सगी।" उसके नर्म वा नाज़ुक बाज़ू में इतने जोर की चुटकी काटी गई कि नाखून अन्दर धंस गया। एक जोर की 'सी' उसके लबों से तड़प कर बाहर आ गई। उस जगह आस्तीन में खून जम गया।

"मुर्दार के तन-बदन में भट्टी सुलग रही है।" दान्त भींच कर नफ़रत से कहा गया। कई तीर एक साथ छोड़ दिए गए—

"आवारा कहीं की···बदचलन···छिनाल !"

और वह, जिसकी उम्र अभी केवल ग्यारह वर्ष की थी, उन तुन्द-तेज़ और घिनौने शब्दों का अर्थ न समझते हुए भी सहम गई।

"दुल्हिन !" उधर बड़े कमरे से आवाज़ आई—"क्या बात है ? किस पर बिगड़ रही हो, किसने क्या किया ?"

वह उसका हाथ पकड़ घसीटती हुई उस कमरे में ले आई। उसे एक जोर का धक्का दे मसहरी पर गिराकर बोली—

"इससे पूछ लीजिए—अपनी इस कमीनी लाडली से।"

"तौबा है, दुल्हिन !" ज़ाकिरा बीबी अपनी रजाई गुस्से से झटक कर मसहरी पर से उठ कर खड़ी हो गई।

"आखिर क्या बिगाड़ा है, तुम्हारा इस नन्ही सी जान ने ?" उन्होंने उसे लिपटा लिया।

वह उसे पुचकारने लगी—"मेरी सईदा···मेरी बच्ची।"

मासूम सईदा अपनी नानी अम्मा की हमदर्दी पर रो पड़ी। उसकी खूबसूरत आंखों से गंगा-यमुना एक साथ उमड़ पड़ीं। बलपूर्वक किए गए सब्र का बान्ध एक हल्के से इशारे से टूट गया। वह हिचकियों से रोते हुए—फँसते हुए शब्दों के साथ भर्राई हुए आवाज़ में अपनी सफाई के तौर पर बोली—

"हम एक इत्ता-सा कोठे पर चले गए थे। रज़िया बहिन ने—हमारी अप्पी ने हमें खूब घूंस-घूस कर मारा था। जी बहुत डूब रहा था—बहुत रंज हो रहा था। हमें—बस, हम जरा ऊपर चले गए थे, ममानी जान ने··· !"

और वह अपना ग़म बर्दाश्त न कर फूट-फूट कर रोने लगी। बड़ी बेकसी और बेचारगी के साथ वह रो रही थी।

ज़ाकिरा बीबी का दिल फटने लगा। अनवरी बेग़म— सईदा की ममानी का जी जल कर कबाब हो गया। वह जोर से गर्जी—"अरी री छत्तीसा···!" मारे गुस्से के उसकी आंखें उबल पड़ीं। बहुत मुंह बनाकर चीखी—

"मारे जूतों के अल्लाह जानता है कि अभी मैं फ़र्श कर दूंगी तुझे ! टेसुए बहाकर समझती है कि जीत जायगी। क्यों री, कब मेरी बच्ची रज़िया ने तुझे मारा ? खबरदार, जो उस बच्ची का नाम लिया तूने !"

वह अपनी सास की ओर घूम अत्यधिक चिल्लाते हुए नथुने फुलाकर बोली—"देखिए खाला अम्मा ! मैं आपसे यह बताए देती हूँ कि इस नाशदनी के बारे में अब अगर आपने अपनी चलाई तो मैं इसके भले-बुरे में फिर कभी न बोलूंगी। देख लीजिएगा कि एक दिन यह सारे खानदान की नाक कटाकर ही चैन लेगी। इसके तौर बहुत बिगड़ते जा रहे हैं।"

"क्या कहती हो तुम, दुल्हिन !" जाकिरा बेगम आश्चर्यजनक नजरों से अपनी बहू की ओर देखते हुए जैसे चीख पड़ीं—"कुछ तो अल्लाह रसूल का खौफ़ खाओ। इस मासूम के बारे मे तुम यह सब कुछ कह क्या रही हो ?"

उन्होंने अपनी गर्दन जोर से झटकी।

"छिः ! शर्म करो दुल्हिन, शर्म ! क्यों इस मासूम बे-माँ की बच्ची का सब्र समेट रही हो ?"

"अच्छा !" अनवरी चिढ़ गई—"मेरी जूती से। आज से मैं आपकी इस लाड़ली बे-माँ की बच्ची से बात तक न करूंगी। जो इसका जी चाहे, करे। कोठे पर बस जाए मेरी तरफ से जाकर।"

"दुल्हिन !"

बूढ़ी ज़ाकिरा बीबी का सर्द खून उनकी बूढ़ी रगों में लावे की तरह खौल गया। वे चीख पड़ीं—"इतनी बड़ी ज़बान तुम्हारे माँ-बाप ने तुम्हारे मुंह में डाल दी है। जो जी में आता है, बेखौफ़ बक देती हो ! शर्म नहीं आती तुम्हें !" वे रंज और गुस्से से पागल हो गईं—"अ[illegible] जानता है कि तुमने इस वक़्त बड़े जोर का घूंसा मेरे कलेजे [illegible] है। मेरी रूह तक तुमने ज़ख्मी कर दी है। अल्लाह [illegible]

तुम जैसा भी मुंहफट हो। बकवाद की इन्तहा कर दी तुमने।"

वे एक सर्द आह भरकर बोलीं—"काश ! मैं इतनी मजबूर न हो गई होती।"

"तो क्या करतीं आप ?"

अनवरी अपनी सास से भी बदतमीज़ी पर उतर आई। उसकी आंखें शोले बरसा रही थीं। वह गर्जकर बोली—

"हां-हां, कहिए न, कि अगर आप मजबूर न होतीं, तो क्या कर लेतीं मेरा ?"

"!" वे बड़ी बेचारगी से दांत पीसकर बोलीं—"खड़े-खड़े मैं तुम्हें इस घर से निकाल देती।"

"तो अब निकाल दीजिए।" वह आग बबूला हो गई—"मैं भी तो देखूं, आपके मुंह में कितने दांत हैं।"

"अब तुम मुझ निगोड़ी के मुंह के दांत भी गिनने लगी हो, दुल्हिन ! शाबाश ! जीती रहो। बड़ी अच्छी शिक्षा तुम्हारे मां-बाप ने तुम्हें दी है। सुबहान अल्लाह !"

"आपकी शिक्षा से अच्छी शिक्षा है, मेरे मां-बाप के पास।"

"मुबारक हो।"

"वह तो है ही।" अनवरी बड़े रुआब से बोली—"खुदा का शुक्र है कि मैं गई-गुजरी नहीं हूं।"

ज़ाकिरा बीबी के दिल से एक सर्द आह निकल गई—

"काश ! कि वे जिन्दा होते आज के दिन······या मेरा बेटा मेरे कहे में होता। काश ! मैंने अपनी सारी जायदाद अपनी अदूरदर्शिता से उसके नाम न लिख दी होती।"

"तो क्या होता ?' अनवरी अब बिल्कुल बदतमीज़ी पर उतर आई थी—"मेरे मां-बाप भी नंगे-भूखे नहीं हैं।"

"यह तो मुझे मालूम है, दुल्हिन !" ज़ाकिरा बीबी पूरी संजीदगी से बोलीं—"ग़रीब घर की बेटी इसीलिए तो मैं अपने घर ब्याह

कर लाई थी कि आज के दिन उसकी इमारत के ताहने उससे सुनूं।"

"ग़रीब घर ! ग़रीब घर ! क्या रट लगा रखी है, आपने ? आप कौन से बड़े घर से ब्याह कर आई थीं ? मेरी मां तो फिर भी आपके मां-बाप से बड़े घर की बेटी थी। वह तो कहिए कि आपका ब्याह यहां हो गया और आपने घूंघट उठाकर यह हवेली देख ली, वरना......।"

"बस दुल्हिन !" ज़ाकिरा ने अनवरी की बात काट दी—"मुझे न मालूम था कि तुम्हारे मुंह में कई गज़ की ज़बान है।"

"तो आज मालूम हो गया न !"

"हां, मालूम हो गया।" वे बहुत आहिस्ता से बोलीं।

वह पांव पटककर बोली—"यह तो गुम्बद की आवाज़ है।" यह कहकर वह वहां से बड़े झुंझलाए हुए अन्दाज़ में चली गई। ज़ाकिरा बीवी ने अपने सफ़ेद दुपट्टे के आंचल से अपनी नाक ज़ोर से रगड़ी।

"मेरी बच्ची !" उन्होंने मासूम सईदा को अपने कलेजे से लगा लिया। वे बुदबुदाईं—

"काश ! अल्लाह मियां को तुझ पर तरस आ जाता, बेटी ! तेरी मां न मरती।"

"आप मुझे मेरे अब्बाजी के पास भेज दीजिए, नानी अम्मा !"

"बेटी !" ज़ाकिरा की आवाज़ भर्रा गई।

"तुम्हारी नई मां भी तो तुम्हारी इस ममानी से कुछ कम नहीं है......और तुम्हारे अब्बाजी।"

उनके दिल पर जैसे कि बड़े ज़ोर का घूंसा पड़ा। वे बड़े दुःख के साथ बोलीं—

"वे तो जैसे कि तुम्हें पैदा करके भूल ही बैठे हैं।"

सईदा ने बड़ी मासूमीयत से अपनी नानी अम्मा की तरफ देखा—"क्या अब्बाजी मुझे कभी याद न करते होंगे, नानी मां ?"

सईदा की इस मासूमीयत पर ज़ाकिरा का दिल रो पड़ा। वे दर्द

के साथ बोलीं—

"याद करता होता तो कभी याद न कर लेता।"

"मैं कल अब्बाजी को एक ख़त लिखूं ?"

"क्या लिखोगी, बेटी ?"

"लिखूंगी कि मैं आपकी बेटी, आपको बहुत याद करती हूं। ममानी जान और उनके बच्चे मुझे बहुत मारते है। आप आकर मुझे अपनी बेटी को ले जायें।"

नानी अम्मा ने दिल में सोचा—"उसे आकर ले जाना होता, तो वह यहां भेजता ही क्यों ?"

"मैं अपने अब्बाजी को यह दिखाऊंगी।" सईदा ने अपना दाहिना बाजू खोला।

"अरे !" नानी अम्मा ने उसे बेअख़्तियार लिपटा लिया। उनकी आंखों से आंसू बह निकले। सईदा का बाजू ज़ख़्मी था। नीला हो गया था वह। ख़ून का एक चकत्ता उस पर जमकर सूख गया था।

रात के खाने पर ताहिर मियां, सईदा के मामूजान जब जनानख़ाने में तशरीफ़ लाए, तो उन्हें घर की फ़िज़ा कुछ बदली-बदली लगी।

जब वे हाथ-मुंह धोकर खाना खाने के लिए तख़्त पर बैठे तो उन्होंने देखा कि दस्तरख़्वान पर उनके बच्चे बैठे हैं। उनकी बीवी अनवरी नहीं है। उन्हें बड़ी हैरत हुई। उन्होंने अपनी बड़ी बेटी रज़िया से पूछा—

"ये और सब लोग कहां हैं ?"

रज़िया अभी उनके सवाल का जवाब देने भी न पाई थी कि उनका बेटा अकबर, जो रज़िया से छोटा था, बोला—

"अम्मी जान को बड़े ज़ोर का गुस्सा चढ़ा हुआ है।"

"क्यों ?"

"दादी बीबी से लड़ाई हुई है।" उनकी सबसे छोटी बेटी नजमा बोली—"दादी अम्मा ने अम्मी को हमारी डांटा है अब्बूजान ! दादी

बहुत बुरी हो गई हैं।"

यह उनकी सबसे छोटी बेटी नज्मा कह रही थी जो अभी सिर्फ़ छह साल की थी।

"क्या हुआ था ?" ताहिर ने रज़िया से वसाहत चाही।

रज़िया ने भीगी बिल्ली बनते हुए कहा—

"सईदा को छोटा समझ कर मैंने पढ़ने पर एक ज़रा-सा मार दिया था, बस, उस पर वह मुझे बुरा-भला कहने लगी और···।"

ताहिर साहिब यकबारगी अपनी बेटी रज़िया की बात काट कर बोले—

"और इस पर तुम्हारी दादी अम्मा को गुस्सा आ गया होगा ?" एकाएक वे अपने आगे वाली प्लेट खिसका कर बोले—"ब-खुदा, मैं तो तंग आ गया हूँ इस सईदा की बच्ची से ! बाप के होते हुए यह ग़ैर की औलाद न जाने कब तक मेरे सिर पर सवार रहेगी ? जैसे कि हमारी ही हवेली दुनिया-जहान का यतीमखाना बन कर रह गई हो।" वे गर्दन झटक कर बेज़ारी से बोले—"लाहौल बिला कुव्वत।"

वे अपनी जान से आजिज़ आते जा रहे थे।

"न जाने यह हमारी अम्मीजान साहिबा को भी क्या सूझती है, जब देखो, उसी अभागी लौण्डिया के पीछे हंगामा ! बहिन थी एक, ब्याह दी गई। अब अगर वह मर गई है तो इसमें हमारा क्या कसूर कि उसकी बेटी को भी हमीं पालें। बाप ज़िन्दा है उसका। मर नहीं गया।" वे दस्तरख्वान से उठकर खड़े हो गए।

"हमारी अम्मीजान साहिबा भी अच्छी-खासी मुसीबत है, हमारे लिए।" वे बुदबुदाए।

"मरती भी नहीं है।"

"आप उन्हें कुछ न कहें।" अनवरी अपने दुपट्टे के आंचल से अपने मगरमच्छ के आंसू पोंछती हुई अपने शौहर के सामने आकर खड़ी हो गई।

"मैं ही सब पर भारी हूं इस इतनी बड़ी हवेली में ! मुझे तो अल्लाह के वास्ते आप मेरे मायके भिजवा दीजिए। मैं निगोड़ी कहीं भी रह कर और रूखी-सूखी खाकर जी लूंगी।"

वह सिसकियां भरने लगी। ताहिर साहिब अपनी चहेती बेगम की इन चरित्र बाज़ियों पर बेताब होकर अपनी उस मां को भूल गए, जिन्होंने उन्हें जन्म दिया था। अपना दूध पिलाया था और पाल-पोस कर इतना बड़ा किया था।

वे अपनी मां के अधिकार को भूलकर बीवी के नखरेबाज़ियों में लग कर एकाएक बोले—

"क़सम अल्लाह पाक की, मैं इस पूरी हवेली को आग लगा दूंगा।"

"हवेली को खुदा न करे कि आप आग लगाएं। मुझी को जहन्नुम रसीद कर दीजिए।"

"कहा क्या अम्मी ने तुम्हें ?"

"छोड़िए।" अनवरी बोली—"आखिर को वह मां हैं। उनका दर्जा बहुत ऊंचा है। मैं तो उनकी जूतियां तक सीधी कर लूंगी। लेकिन इस बालिश्त भर की लौण्डिया की तिड़-तिड़ करती हुई ज़बान मुझसे अब बरदाश्त नहीं होती।"

"क्या ?" ताहिर साहिब के तन-बदन में आग लग गई।

"ज़बान चलाना सीख गई है, वह नामुराद सईदा" वे आस्तीनें चढ़ाकर दहाड़े—"कसम कुरान पाक की, मैं खून कर दूंगा, उस नामुराद का।" और यह कह कर वे अपनी मां के कमरे की ओर लपके।

"नहीं—नहीं······खुदा के लिए जाने दीजिए······आपको मेरी क़सम !" कहती हुई अनवरी उसके पीछे दौड़ी। उसके पीछे उसके तीनों बच्चे थे, महज़ यह दिलचस्प तमाशा देखने के लिए।

कमरे के दरवाजे पर पहुंच वह गला फाड़ कर चिल्लाए—

"कहाँ है वह बदबख़्त की बच्ची ? कहाँ है सईदा ?"

और वहाँ उस मासूम, बेक़सूर, मज़लूम सईदा का दम निकला जा रहा था। उसकी नानी बेचारी उसे गोद में भरे बैठी थी। मारे डर के सईदा की कँपकँपी छूट रही थी।

"अक़ल की बातें करो, ताहिर !" उसकी माँ ने अपनी दोहती (नातिन) को और अधिक समेटते हुए अपने बेटे से कहा—"यह सताई हुई तुम्हारी मरने वाली बहिन की बेटी है—निशानी है। उसके जिगर का टुकड़ा है। उस निरपराध पर जुल्म कर के अल्लाह का अजाब न समेटो अपने लिए।"

"यह अभी से ज़बान चलाना सीख गई है। बड़ों का अदब-लिहाज इसने सब-कुछ भुला दिया है।"

"किसने कह दिया है यह तुम से ?"

"मैं कोई दूध पीता बच्चा नहीं हूँ कि कहने-सुनने में आजाऊँ।"

"नहीं, मामू साहिब !" सईदा आपनी नानी की गोद से हाथ जोड़ कर बोली—"सच मामू साहिब ! हमने किसी से ज़बान नहीं चलाई।" वह चिचियाती हुई, सहमी-सी मिन्नत से बोली—

"मुमानी जान तो हमारी माँ है। हम तो मामाओं और नौकरानियों तक से जबान नहीं चलाते। यह हमारा अल्लाह जानता है। हमने तो आज तक अपने भाई और बहिनों तक की किसी बात का जवाब उन्हें उलट कर नहीं दिया।"

ताहिर साहिब का दिल अभी अपनी अभागी भांजी की इस सफाई पर पसीजने भी न पाया था कि अनवरी अपना मुंह बिगाड़ते हुए बोली—

"अरी वाह री चलित्तरबाज। गज भर की जबान की जगह जैसे कि अब तो बेचारी के मुंह में ज़बान ही न हो।" वह जोर से गर्जी—"क्यों री क्या मैं छोटी हूँ ?"

"बस-बस !" ज़ाकिरा बीबी बोली। उनके ढंग में नर्मी थी—

"अब छोड़ो यह सब, दुल्हिन ! शरीफ़ घर की औरतें मर्दों को नाहक जोश नहीं दिलाया करतीं, बल्कि उनके जोश को खत्म करा देने की कोशिश करती हैं।"

"सुन लीजिए !" अनवरी ने ताहिर को मुखातिब किया—"मैं आपको जोश दिला रही हूँ।" उसने फिर पूरा अभिनय किया—तभी तो कहती हूँ कि आप मुझे अपने साथ न रखिए।"

वह रोने लगी। उसके इस तरह रोने पर ताहिर का गुस्सा भी भड़क उठा। उसने जनूनियों की तरह झपट कर बेक़सूर और और पीड़ित सईदा को अपनी माँ की सुरक्षा की छाया से छीन लिया।

उसने मासूम बच्ची को बालों से पकड़ कर उठा लिया। वह ग़रीब डर के कारण इतनी सहमी कि बेहोश हो गई। ताहिर ने उस बेहोश बच्ची को, जोकि मासूम थी, बे-माँ की थी, जिसका बाप उसे भूला चुका था और जो अपने बाप के होते हुए भी यतीम हो गई थी, जिसका तनिक भी कसूर नहीं था, उठाकर उस जगह फ़र्श पर दे मारा। बच्ची ने हरकत तक न की। इसलिए कि वह बेहोश हो चुकी थी।

उसकी उसी बेहोशी के आलम में एक बेरहम इनसान ने गुस्से और जनून में उसे पीटना शुरू कर दिया। वह उसे पीट रहा था और एक बेबस और बेकस बूढ़ी औरत ज़ाकिरा बेगम गुम-सुम बैठी उसे फटी आँखों से ताक रही थी। आखिर उसने अपना चेहरा दोनों हाथों से ढाँप लिया।

मार खाते-खाते तकलीफ की शिद्दत के मासूम सईदा को होश आ गया। वह "बेअख्तयार चीख उठी—वह बिलबिला रही थी।

"मामू साहिब ! खुदा के लिए मामू साहिब ! रहम कीजिए। तरस खाइये······मामू साहिब ! मैं मर जाऊँगी।"

"काश, तू मर जाती, बेटी !" बे-अख्तयार ज़ाकिरा बीबी के मुंह से चीख के रूप में यह वाक्य निकला और वह पागलों की तरह अपनी मासूम पीड़ित, बेकसूर नातिन से लिपट गई। वह ढाल बन गई अपनी

बच्ची के लिए। उनके होनहार और लायक बेटे ताहिर के दो-एक हाथ उन पर भी पड़ गए।

लेकिन उन्होंने अपनी सईदा को बचा लिया। उनके मुँह से बे-अख्त-यार निकला—

"तुझे खुदा कभी भी माफ़ न करेगा ताहिर! अल्लाह करे, तेरा यह जुल्म तेरे और तेरे बीवी-बच्चों के आगे आए।" और यह कह कर वे भूखी शेरनी की तरह उठकर खड़ी हो गई। उन्होंने अपनी पूरी शक्ति से ताहिर को एक धक्का दिया। वे चिल्ला कर बोलीं—

"क़सम अल्लाह की! मैं तेरा दूध कभी न बख्शूंगी।" वे ताहिर के आगे तनकर खड़ी हो गई—

"अब तू मुझे मार—अपने बीवी-बच्चों की कसम है तुझे। तू मेरा कलेजा निकाल कर बाहर फेंक दे।" वह ज़ारो-क़तार रो रही थी और सईदा उसी जगह फ़र्श पर बेसुध पड़ी कराह रही थी। ताहिर और उसके बीवी-बच्चे कमरे से बाहर जा चुके थे।

ज़ाकिरा बीबी ने अभागी सईदा को उठाया। उसे मसहरी पर लिटा दिया। उसे लिपटा कर वे फूट-फूट कर रोने लगीं।

रात के दो बजे का वक्त था।

गरीब सईदा, बेकस-मजबूर और लाचार सईदा, बे-माँ की मासूम बच्ची अभी-अभी गहरी नींद सोई थी। उसकी चोटों पर हल्दी और चूना जगह-जगह लेप की शक्ल में लगा हुआ था। उसकी नानी अंगीठी पास रखे हुए बैठी थी और कपड़ा गर्म कर-कर के सेंक रही थी।

बच्ची सो रही थी और ज़ाकिरा बीबी ठण्डी-ठण्डी आहों के बीच उसे लगातार ताक रही थी। फिर जैसे कि वह सपना देखने लगी हो—

उनके पति खान बहादुर डिप्टी अकराम अली साहिब का जमाना था। वह दौर था उनकी जिन्दगी का, जबकि डिप्टी साहिब के नाम के डंके बजाते थे। उनके पति की यहां से लेकर वहां तक तूती बोलती थी। वह महारानियों से भी अधिक शानो-शौकत का जीवन बिताया

करती थी।

डिप्टी साहिब उन पर अपनी जान कुर्बान किया करते थे। उन्हें हरदम दुल्हिनों की तरह बना-संवार कर रखते। उनके एक हल्के से इशारे पर ज़मीन-आसमान के कुलावे मिला कर रख देते।

उनकी सेवा के लिए हवेली में—छह—छह सेविकाएं थीं। तीन छोकरियां थीं और एक मुगलानी बी भी थी, जो उन बान्दियों पर रखी गई थी। वह उन बान्दियों से बेग़म साहिबा के लिए खिदमत लेती थी और खुद भी बेगम साहिबा की खिदमत करती थी। यह मुगलानी बी बेगम साहिबा की खास सलाहकार थी।

रोज सुबह-सबह गांव की नाईन आकर बेगम साहिबा को नहाने में मदद करती थी। उनके सारे शरीर पर सुगन्धित उबटन मलती थी। फिर उन्हें पानी में पड़े अर्क़ गुलाब और केवड़ा से नहलाती थी।

चार-चार सेविकाएँ नहाने के बाद बेग़म साहिबा का शृंगार करती थीं। उन्हें कीमती पोशाकों से संवारती थीं। जेवरात से सजाती थीं और फूलों से शृंगारती थीं। दोपहर के समय से शाम ढले तक चार-चार लौण्डियां बेगम साहिबा को सुलाती थीं, उनका सिर सहलाती थीं, तलवों पर मालिश करती थीं, हाथ-पांवों दबातीं और लगातार पंखा झलती रहतीं।

डिप्टी साहिब जब दौरे पर जाते थे, तो रोजाना बेगम साहिबा की ख़ैरियत की खबर हरकारे आकर दिया करते थे। कभी-कभार बेगम साहिबा भी उनके साथ दौरे पर होती थीं।

डिप्टी साहिब अपने सजे-संवरे घोड़े पर सवार होते थे और बेग़म साहिबा का दुल्हिनों के समान सजा रथ घोड़े के साथ-साथ होता था। रथ के पीछे सेविकाओं और नौकरानियों की बहेलियां होती थीं। बाकी सामान होता था। हर दौरे पर बेग़म साहिबा की आव-भगत डिप्टी साहिब से कम नहीं, बल्कि ज्यादा ही होती थी।

उनकी खिदमत में जागीर के रहने वाले नजराने पेश करके श्रद्धा

के फूल चढ़ाते। पूरे इलाके के निवासी उनकी सेवा में नत मस्तक रहते।

अक्सर बेगम साहिबा डिप्टी साहिब के शिकार के समय पर भी उनके साथ रहती। खेमे और छोलदारियां लगा दी जाती : खेमे में मसहरी, गद्दे और तकिए बिछाए जाते और जंगल में भी बेगम साहिबा की हकूमत चलने लगती। वही शान, वही आन और वही ठाठ-बाट, जो कि हवेली पर उन्हें प्राप्त थे, यहां भी प्राप्त हो जाते।

ज़ाकिरा बीबी को याद आया, एक अवसर पर वे अपने पति के साथ शिकार को गई हुई थीं। उनकी नजर हिरण के एक बच्चे पर पड़ी। उस मासूम, खूबसूरत बच्चे को देख कर उनके दिल में एक अरमान मचला—"क्यों न इसे जिन्दा पकड़ लिया जाय?" उन्होंने अपनी इस इच्छा को मुगलानी बी के द्वारा डिप्टी साहिब तक पहुँचवा दिया। मुगलानी बड़े अदब से बोली—

"हज़ूर, हमारी बेगम साहिबा की इच्छा है कि हिरण के इस बच्चे को जिन्दा पकड़ लिया जाय!"

"अच्छा!" डिप्टी साहिब मुस्कराए—"बात तो नामुमकिन-सी है, लेकिन इसे मुमकिन बनाने की कोशिश की जायगी।"

उन्होंने अपने आदमियों को हुक्म सुना दिया—

"जिस तरह भी हो, हिरण के उस बच्चे को पकड़ लिया जाय।" वे मुस्कराए—"यह हमारी बेगम का हुक्म और इच्छा है।"

"अभी लीजिए, सरकार!" शिकार के माहिर, उनके गुलाम रणजीतसिंह ठाकुर ने कहा—"हजूर बेगम साहिबा की इस खुशी के लिए हर नामुमकिन बात मुमकिन बना दी जायगी, मालिक!"

"शाबाश, रणजीतसिंह!" डिप्टी साहिब खुश होकर बोले—हम तुम्हें मुंहमांगा इनाम देंगे।"

"आप ही का दिया खाता हूं, मालिक!" और उसने हिरण के बच्चे को जिन्दा पकड़वा लेने के अपने परीक्षित उपाय शुरू कर

दिए।

बेगम साहिबा की इस बच्चगाना ख्वाहिश की पूर्ति के लिए लगभग चालीस पासियों ने हिस्सा लिया जिनमें से दो को शदीद किस्म की चोटें आई, लेकिन हिरण का वह बच्चा जिन्दा पकड़ लिया गया।

बेगम साहिबा खुश हो गई और डिप्टी साहिब ने रणजीतसिंह ठाकुर को बीस रुपये इनाम में दिए। दो-दो रुपये हर पासी को दिए गए। अपनी बेगम की एक जरा-सी इच्छा पर डिप्टी साहिब ने सौ रुपये कुर्बान कर दिए।

खान बहादुर डिप्टी अकराम अली साहिब एक बहुत बड़े जागीर-दार थे। उनकी यह जागीर उनके बाप-दादा के वक़्त से चली आ रही थी। उनके खानदान में उनसे पहले कभी किसी ने सरकारी नौकरी नहीं की थी और न किसी ने अंग्रेज़ी शिक्षा अपनाने की इच्छा ही प्रगट की थी। उनका खानदान अंग्रेज़ों से सख्त नफ़रत करता चला आ रहा था। जंगे-आजादी सन् १८५७ में हिन्दोस्तान की आजादी के लिए उनके खानदान ने बड़ी जद्दो-जहद की थी। बड़ी-बड़ी कुर्बानियां दी थीं। सन् १८५७ की इस जंगे-आज़ादी की असफलता के बाद यह खानदान लग-भग आधी सदी तक अंग्रेजों की नजरों का कांटा रहा। अंग्रेज कौम ने और इस हकूमत ने इस खानदान को बहुत अधिक नुकसान पहुंचाए थे।

लेकिन अकराम अली साहिब ने अपनी खानदानी परम्परा के विरुद्ध अंग्रेज़ी शिक्षा प्राप्त की थी। वे बी० ए० थे, डिप्टी थे और सरकारे-बरतानिया की तरफ से उन्हें खान बहादुर का खिताब दिया गया था। वे आनरेरी मैजिस्ट्रेट भी थे।

उन्होंने अपने वक़्त में बेशुमार दौलत कमाई थी और जमा की थी। उनका दौरा मशहूर था। उनका रुआब, उनका दबदबा और उनका बड़प्पन दूर-दूर तक मशहूर था।

वे अपनी प्रजा में सभी के प्रिय थे। वे कभी किसी पर इस तरह बोझ न डालते थे, कि वह उसे सहन न कर सकें। वे हजार के आसार

से हज़ार लेते थे और पाँच हज़ार के आसामी से पाँच हज़ार। वे यह कभी न करते थे कि पाँच हज़ार माँग बैठें, चाहे उस आदमी की हैसियत पाँच हज़ार देने की न हो।

वे हमेशा रुपया रुपये वालों से लेते थे और बेझिझक लेते थे। ग़रीबों को वे बेझिझक देते भी थे। उनकी उदारता प्रसिद्ध थी। वे अपने इलाके के बाहर भी दूसरे इलाकों में सख़ी हाकिम के नाम से पुकारे और याद किए जाते थे। प्रजा उन्हें जी-जान से चाहती थी।

वे जब भी दौरे पर जाते थे, तो गाँव वाले उन्हें जी-जान से रोकते थे और अपना मेहमान बनाने की दिली कोशिश करते थे। एक दफ़ा वे दौरे पर थे। एक गाँव में वे चन्द घण्टों से अधिक रुकना न चाहते थे। लोगों का अत्यधिक ज़ोर था कि वे आज की रात रुक जायें और वे रुक नहीं रहे थे। उन्हें इसके अगले क़स्बे में पहुँचना था।

वे जब अपने घोड़े पर बैठ गए तो गाँव वालों ने उनके घोड़े के आगे एक-दो नहीं, बल्कि पूरे-के-पूरे छह बकरे जिबह करके डाल दिए। उन्हें उसके बाद मजबूरी से रुक जाना पड़ा।

अहमदपुर, जिला इलाहाबाद का बहुत बड़ा गाँव था। यह गाँव डिप्टी अकराम अली साहिब के परदादा के दादा का बसाया हुआ था। उनका नाम अहमद मियाँ था, उन्हीं के नाम पर इस गाँव का नाम अहमदपुर पड़ा।

डिप्टी साहब इसी गाँव में रहते थे। उनकी आलीशान हवेली, जो पूरी तरह एक किला मालूम होती थी, इसी गाँव में थी। यह हवेली डिप्टी साहिब के दादा ने बड़े प्राचीन ढंग से बनवाई थी।

ज़ाकिरा बीबी सोच रही थी—वह इसी हवेली में दुल्हिन बन कर उतरी थीं। यहीं उनका वह लम्बा-सा घूँघट उतरा था। यहाँ, इसी कोठी में उनकी 'हाथ बरताई' हुई थी। वे अपनी शादी से आठवें दिन बावर्चीख़ाने में गई थीं। घूँघट की ओट से उन्होंने खौलते हुए कड़ाह में पहली पूरी बेल कर डाली थी। घर के बड़े से पतीले में कलछुल

चलाई थी,।

फिर हर तरफ से मुबारक-सलामत की आवाज़ें आने लगी थीं। उनके ससुर साहिब ने उन्हें अपना गांव सती चौरा इनाम में दे डाला था। उनकी सास साहिबा ने उनका हाथ पकड़ कर उठाते हुए कहा था—"बस, क़ैसर दुल्हिन, बस, रस्म पूरी हो चुकी। चलो, उठो। गर्मी और धुएं से तुम्हारी तबियत बिगड़ जायगी।"

और फिर उस रोज़ और उसके बाद दो रोज़ तक पूरे गांव की दावत होती रही थी। दूर-पास के महमानों की महमानदारी तथा सेवा-सुश्रूषा का काम चलता रहा था। पूरी कोठी और साथ लगे मैदान में खेमे और छोलदारियों में महमान भरे हुए थे।

हिन्दू, मुसलमान सभी तो थे। बड़े-बड़े सरकारी अफ़सर भी थे। नवाब, रायबहादुर, जागीरदार, तालुकेदार और छोटे-बड़े सब थे। और जब शादी के दो साल बाद उनके घर यह पहला बच्चा ताहिर पैदा हुआ था, खुशी की कोई सीमा न रही थी। पूरे एक सप्ताह तक दावतों का सिलसिला जारी रहा। ग़रीबों-मुहताजों को रुपये और पैसे बांटे गए। इस बच्चे के जन्म पर दिल खोलकर रुपया और खुशी खर्च हुई।

डिप्टी साहिब ने अपनी बेगम से खुश होकर कहा—

"तुम जल्दी नहा लो, बेगम। फिर देखो, मैं तुम्हें क्या इनाम देता हूं!"

"इनाम तो मुझे मिल चुका आपकी तरफ से।"

जाकिरा बीबी, उनकी बेगम साहिबा ने प्यार के अथाह सागर में डूब कर अपने पास ही लेटे हुए नवजात ताहिर की ओर देखते हुए कहा।

"यह तो तुम्हारा इनाम है, जो तुमने हमें दिया है, बेगम।"

"यह हम दोनों की मुहब्बत का इनाम है, जो हमारे अल्लाह ने हमें अता फ़रमाया है।" उनकी बेगम ने प्यार तथा श्रद्धा से कहा—"मैं

सोचती हूं, अल्लाह मियां मुझ नाचीज़ पर कितने मेहरबान है।"

फिर ज़ाकिरा बेगम सवा महीने के बाद नहाकर जब प्रसूतिगृह से बाहर निकलीं तो उनके चाहने वाले पति ने उन्हें कागजात का एक पुलिंदा देते हुए कहा—

"यह हमारी तरफ से आपका इनाम है, बेग़म।"

"क्या है यह ?"

"हमारा इनाम।" डिप्टी साहिब मुस्कराए—"हमने हर्बाबगंज का पूरा गांव आपके नाम कर दिया है।"

"अरे !" उनकी बेगम के मुंह से निकला—"यह क्या किया आपने ? क्या आपकी नज़रों में मैं गैर हूँ ?"

"खुदा न करे, लेकिन इसकी अहमीयत कभी तुम्हें बाद में मालूम होगी।" और यह कहकर उन्होंने अपनी चहेती बेगम की खूबसूरत गर्दन जवाहिरात के कीमती हार से सजा दी।

"यह क्या ?"

"कीमती हार—हमारी भेंट—श्रद्धा।"

"अल्लाह ! तेरी कितनी कृपा है मुझ पर।" ज़ाकिरा बेगम के मुंह से बेअख्तयार निकला—"पति की मुहब्बत जैसी कितनी अजीम दौलत उसने मुझे बख्शी है !"

अकराम अली साहिब ने अपनी बीवी की ठोड़ी ऊपर उठाई और उनके हसीन चेहरे को गौर से देखते हुए कहा—"बुरी नजर न लगे। कितनी खूबसूरत हैं आप ! कसम खुदा की, मैं जन्नत की हूर भी न लूं।"

"हटिये भी !" वह शर्मा गई। "बनाना तो कोई आपसे सीखे।"

उनकी घनी और लम्बी पलकें अपने-आप नीचे झुक गईं और डिप्टी साहिब हज़ार जान से अपनी बेगम पर कुर्बान हो गए।

दो

सईदा ने सोते में तनिक-सी हरकत की, एक दर्दीली कराह उसके होठों से फिसल कर बाहर आ गई। जाकिरा बीबी की कल्पना का सिलसिला टूट गया। वे अपने होशो-हवास की दुनिया में वापिस आ गईं। अपनी पीड़ित नातिन को आहिस्ता-आहिस्ता थपकने लगीं। सईदा बड़बड़ा रही थी—वह अत्यधिक टीस और पीड़ा के साथ कह रही थी—

"नहीं, मामू साहिब, मैंने बिल्कुल ज़बान नहीं चलाई। मुझे न मारिए। अम्मी हमारी अगर न मर गई होतीं, तो हम काहे को आप पर बोझ बनते। हमारे अब्बा भी हमें नही बुलाते अपने पास। काश, अल्लाह मियां ही हमें अपने पास बुला लें।"

वह बड़बड़ा रही थी और जाकिरा बीबी उसे आहिस्ता-आहिस्ता थपक रही थीं। थोड़ी देर बाद वह फिर गाफ़िल हो गई—सो गई। जाकिरा बीबी फिर अपने अतीत में पहुंच गईं। उनके रूपहले सपनों का सिलसिला फिर आरम्भ हो गया—

"कल हमारे बेटे ताहिर की पहली सालगिरह है।" अकराम अली साहिब अपनी बेगम से कह रहे थे—"आप देखिएगा, यह सालगिरह हम कितनी धूमधाम से मनाते हैं।"

और उनके पहले बेटे ताहिर की सालगिरह वास्तव में इतने शानदार तरीके से मनाई गई कि लोग एक दूसरे का मुंह ताकते रह गए। कम से कम पांच सौ गरीबों—मुहताजों और लावारिसों को दावत दी गई। उन्हें नक़दी और कपड़ों से नवाजा गया। दोस्तों को इतनी शानदार और बेलाग दावत दी गई कि आज तक किसी बड़े से बड़े रईस की

बेटी या बेटा भी इस शान के साथ ब्याहा तक न गया होगा।

मन्दिरों और मस्जिदों में दीप जलाए गए। दिल खोलकर मिठाई बाँटी गई यह सिलसिला दो दिनों तक जारी रहा। फिर ताहिर की हर सालगिरह पर यही कुछ होता रहा। यहाँ तक कि ताहिर छह बरस का हो गया। उसकी "रस्म-बिस्मिल्लाह" इतनी धूमधाम से मनाई गई कि बड़े-बड़े सेठों, साहूकारों, जागीरदारों और तालुकादारों की आँखें खुली की खुली रह गईं।

"रस्म-बिस्मिल्लाह" की इस खुशी में डिप्टी अकराम अली साहिब ने गाँव में एक आलीशान मस्जिद और मदरसा (स्कूल) बनवा दिया। एक कुआँ खुदवा दिया। दस गरीब किसानों का लगान हमेशा-हमेशा के लिए माफ़ कर दिया। गरीब बच्चों की शिक्षा का प्रबन्ध मुफ्त कर दिया।

और फिर ? पूरे सात साल बाद जाकिरा बीबी की गोद फिर से हरी हो गई। उनके घर एक चांद-सी बच्ची पैदा हुई। उसका नाम रखा गया—रुखसाना।

अकराम अली साहिब को बेटी का बड़ा अरमान था। वे अपनी बेगम से कहा करते थे—

"बेगम, इस दफ़ा तुम मुझे एक बेटी लेकर देना।"

"यह भी कोई मेरे बस की बात है !" जाकिरा बेगम मुस्कराईं—"अल्लाह जो देगा, हाजिर कर दूंगी।"

"मुझे बेटी का बड़ा अरमान है, बेगम ! पाजेब की झंकार घर की चारदीवारियों में अमृत रस घोल देती है।"

वे अत्यधिक अरमान के साथ बोले—"बेटियां तो अल्लाह पाक का दिया हुआ इनाम हुआ करती हैं। काश कि वह हमें इस नेक इनाम के योग्य समझ ले।" वे जैसे कि बिखर गए—"देखो बेगम, हम तो बेटी ही लेंगे—कहे देते हैं—हाँ ! नहीं तो हम आपसे रूठ जायेंगे।"

"अच्छा— !" जाकिरा बेगम मुस्कराईं—"अल्लाह ने चाहा, तो

हम बेटी ही आप को देंगे।"

"और अगर न दी तो—?"

"तो फिर अल्लाह मालिक है।" जाकिरा बीबी शोखी से बोलीं—"फिर देखेंगे कभी।"

"हाँ—अरे वाह !" अकराम अली साहिब ने बीबी की पेशानी चूम ली। वे शर्मा गईं—भावना में डूब गईं।

वे भी भावना में डूबते बोले—

("भाई के लिए एक बहिन का होना बहुत जरूरी है। वरना भाई बहिन की मुहब्बत की रसम झूठी हो जायगी। एक भाई बगैर बहिन के और बहिन बगैर भाई के ऐसी ही है, जैसे कि पानी के बगैर खेती या तारों के बगैर आसमान। जैसे कि एक मस्जिद, जो कि गुम्बद के बगैर खड़ी कर दी गई हो। या एक मन्दिर, जो मूर्ति और कलश के बगैर सूना लगे। चाँद अपने हाले और आसमान चाँद के बगैर सूना लगता है, बेगम !")

"सच्च कहा आपने।" जाकिरा बीबी बड़े अरमान के साथ बोलीं—"आज तक मैं भाई के लिए तड़पती हूँ। काश, हमारा कोई भाई होता।"

"यही हाल मेरा भी है, बेगम ! हम भी एक बहिन की सच्ची और बेलौस, एक अमिट मुहब्बत के लिए तरस गए हैं।"

वे एक हल्की-सी सर्द आह के दरम्यान बोले—

"बगैर बहिन के हमारा बेटा ताहिर भी हमारी ही तरह यह कमी हमेशा महसूस करेगा।"

"अल्लाह न करे।"

"तो आप दे रही हैं हमें एक बेटी ?"

"अल्लाह दे रहा है।"

"सच्च !"

जाकिरा ने बड़े विश्वास के साथ अपना सिर हिला दिया।

"ओह ! हमारी बेगम !!" अकराम अली साहिब ने बे-अख्त्यार अपनी बेगम को लिपटा लिया।

"अरे अरे !" वे मुस्कुराईं—"खुदा के लिए। मुगलानी बी ने देख लिया तो—?"

और फिर गाँव की मानी हुई दाई ने अकराम अली साहिब की गोद में गालीचे में लपेटी हुई एक मासूम-सी कली लाकर रख दी, तो वे मारे खुशी के पागल हो गए। बेअख्त्यार उन्होंने अपनी इस बच्ची को अपने कलेजे से लगा लिया। वे होठों ही होठों में बुदबुदाए—

"अल्लाह, तेरा लाख-लाख शुक्रियो-अहसान है। आखिर पाजेब की झंकार का रस तूने मेरे कानों में घोल ही दिया। इसकी उमर-दराज फ़रमा रब-हजूर ! हमारा ताहिर अब यह न कह सकेगा कि वह बहिन के प्यार जैसी अलौकिक वस्तु से महरूम है।"

"हम तुम्हारा मुंह मोतियों से भर देंगे, राधा !" और यह कहकर सौ-सौ के मुट्ठी भर नोट उन्होंने गाँव की सबसे चतुर और पुरानी दाई राधा की झोली में डाल दिए।

"मैं अपने डिप्टी साहिब से और भी कुछ लूंगी···मैं !"

राधा का वाक्य अभी पूरा भी न हुआ था कि वे चीख पड़े—

"बोलो, राधा बहिन। बोलो, कि तुम्हें इनाम में और क्या चाहिए ?"

"लक्ष्मी दी है मैंने आपकी गोद में, डिप्टी साहिब !" राधा बोली—"मैं तो हजूर से इनाम में उस कलमी बाग के पीछे वाले चारों खेत लूंगी।"

"कसम खुदा की—" डिप्टी साहिब झूमकर बोले—"मैंने वे चारों खेत तुम्हें दे डाले। कहो, और क्या चाहिए तुम्हें ?"

"बहुत मिल गया मुझे, डिप्टी साहिब !" राधा खुशी से बौखला कर बोली—"मेरा दामन आपकी बखशीशों से भर गया, मेरे सरकार।"

डिप्टी साहब ने नवजात बच्ची का मस्तक चूम लिया। वे बड़ी हस-रत के साथ एक लम्बी आह के साथ बुदबुदाए—

"काश ! अब्बा ज़िन्दा होते···माँ ज़िन्दा होतीं हमारी—उन्हें पोती का कितना बड़ा अरमान था।"

उन्होंने राधा से बेअख़्तयार पूछा—

"बेगम कैसी हैं हमारी ?"

"ख़ुदा उन्हें हमेशा तन्दुरुस्त और जीता रखे सरकार ! हमारी सरकार बिल्कुल ठीक हैं।"

"हमारी तरफ से उन्हें बेटी के जन्म पर मुबारकबाद दो।" उन्हों ने बच्ची को दाई की गोद में देते हुए जैसे ख़ुद से कहा—"उन्हें भी बेटी का बहुत अरमान था।"

फिर बेटी के जन्म के इस अवसर पर डिप्टी साहिब ने बेटे के जन्म से भी बढ़कर ख़ुशी मनाई। इस ख़ुशी में उन्होंने शहर इलाहाबाद में अपनी ख़रीदी हुई जमीन पर अपनी तरफ़ से 'रुख़साना हाई स्कूल' के नाम से एक ख़ूबसूरत हाई स्कूल बनवाया। कानपुर में 'रुख़साना आर्फ़नेज' के नाम से एक यतीमख़ाना खुलवाया जिसमें हर मज़हब और मिल्लत की यतीम लड़कियों के रहने-सहने और शिक्षा का प्रबन्ध कर दिया गया। यह अपने ढंग का पहला लड़कियों का यतीमख़ाना था जिसमें मज़हबी भेद-भाव न रखा गया था।

यतीमख़ाने के ख़र्च के लिए अपनी जागीर का एक पूरा गाँव उन्होंने उसके नाम कर दिया। पचास हज़ार रुपये अलग से जमा करवा दिए।

ज़ाकिरा बीबी की सोच का दायरा विस्तृत होता गया। वह जागते रहने पर भी अपने अतीत के हसीन सपने दूर तक देखती चली गईं।

छह वर्ष का ज़माना और बीत गया।

ताहिर अब तेरह वर्ष का था और रुख़साना, उनकी प्यारी-प्यारी बच्ची छह बरस की थी। उसकी 'बिस्मिल्लाह' हुई तो उसने शुरू होते

ही पढ़ने-लिखने में इतना ध्यान दिया कि अपनी उस्तानी बीवी से 'अलिफ़-बे' का क़ायदा उसने एक हफ़्ते में ही खत्म कर डाला। उसकी बुद्धिमत्ता और शौक़ पर सारा घर हैरान और खुश था। ताहिर का दिल लिखने-पढ़ने में अलबत्ता नहीं लगता था। वह रुखसाना के बिल्कुल उलट था। पढ़ने से अधिक खेलने-कूदने और गाँव के लड़कों के साथ खेत-खलिहान और बाग़ में उसका जी लगता था। वह गाँव के किसानों और चमार-पासी लड़कों के साथ रहकर ज्यादा खुश होता था।

हाफ़िज जी उसे कुरान शरीफ पढ़ाने बैठे। उन्होंने उसे शुरू कराया—

और वह 'बिस्मिल्लाह उलरहमानुलरहीम' के बजाए बोला—

"लाओ कुल्हाड़ी, काटें नीम।"

हाफ़िज साहिब ने उसे घूरा—

"बुरी बात मियाँ! तौबा करो, तौबा!" और वे खुद अपना दाहिना हाथ अपने दोनों गालों पर मारने लगे—"तौबा! तौबा!! तौबा!!!"

वह खिलखिलाकर हँस दिया।

"बुरी बात!" हाफ़िज जी ने उसे फिर समझाने की कोशिश की—"कहो मियाँ, बिस्मिल्लाह उलरहमानुलरहीम!"

और वह झट बोला—

"तुम गंजे, हम हकीम!"

हाफ़िज जी तंग आ गए बेचारे और वह खिलखिलाकर इन्तहाई बदतमीज़ी के साथ हँसने लगा। वे शर्मसार होकर प्यार से बोले—

"आप बहुत बड़े खानदान के चश्मे-चिराग़ हैं!" उन्होंने उसे समझाने की कोशिश की—

"आपको ये बातें शोभा नहीं देतीं। पढ़िए, शाबाश!"

"तो फिर पढ़ाइए न!" वह ठनकने वाले ढंग से बोला।

"पढ़ते तो हैं नहीं आप !"

"आप पढ़ाते कहां हैं ?" और फिर वह खिलखिलाकर हंस दिया।

"आपको पढ़ाना नहीं आता।"

और यह कहकर वह हंसता हुआ पढ़ाई छोड़कर भाग गया। मौलवी साहिब बेचारे अपना-सा मुंह लेकर रह गए। क्या कर सकते थे बेचारे ! वह डिप्टी साहिब का बेटा था। डिप्टी साहिब के इस बेटे को पढ़ाना कोई हंसी-ठट्ठा तो था नहीं।

उन्होंने दूसरे दिन दबी जबान में डिप्टी साहिब से कहा—

"साहिबजादे साहिब पढ़ने में ध्यान नही देते अच्छी तरह।"

"अच्छा !"

"जी हां !"

"फिर ?"

और हाफ़िज़ साहिब इस फिर के आगे गड़बड़ा गए। हिम्मत करके बोले—

"उनके सुधार की सख्त ज़रूरत है।"

"तो फिर आप किसलिए हैं ?" डिप्टी साहिब ने कहा—"सुधार करने के लिए ही तो आपको रखा गया है।"

"डरता हूं हज़ूरे वाला !"

"किस बात से ?"

"मेरा सुधार अगर हज़ूर को अच्छा न लगा तो ?"

"हर्गिज़ नहीं, हाफ़िज़ साहिब !" डिप्टी साहिब ने बात बिल्कुल साफ़ कर दी—"पढ़ाने-लिखाने के मामले में आप हर बात के मुख्तयार हैं। ताहिर अगर प्यार-मुहब्बत से नहीं पढ़ता, तो उसकी हड्डी-पसली एक कर दीजिए। पढ़ना तो उसे है ही। इससे तो छुटकारा मिल नहीं सकता उसे।"

"बहुत अच्छा, हज़ूर !"

और फिर दूसरे दिन जब हाफ़िज़ साहिब ताहिर को पढ़ाने आए

तो उनके इरादे कुछ और ही थे। उन्होंने शुरू किया—

"खालिक बारी सरजनहार—"

और ताहिर, जो कि हद्द दर्जा का निडर और गुस्ताख था, झट से बोल पड़ा—

"गधे का बच्चा थानेदार !"

हाफ़िज़ साहिब ने उसे जोर से डांटा।

"खबरदार ! बदतमीज़ी की तो मुझसे बुरा कोई न होगा।"

ताहिर हंस दिया—"आपको अच्छा कौन कहता है ?"

"बे-अदबी गुनाह है।" हाफ़िज़ साहिब उसे एक अवसर और देना चाहते थे—"पढ़ो—मियांजी, मियांजी, कुजाबूदई।"

वह झट से बोल पड़ा—

"कबूतर को बिल्ली किधर ले गई।"

एक ज़न्नाटेदार तमाचा ताहिर के मुंह पर इतनी ज़ोर से पड़ा, कि उसका मुंह घूम गया। वह बिलबिलाकर रोने लगा और उसने गुस्से में आकर अपनी किताब फाड़ डाली। उसने हाफ़िज़ जी के मुंह पर थूक भी दिया।

हाफ़िज़ जी सन्नाटे में आ गए। वह रोता हुआ अन्दर भाग गया। वह जाते ही अपनी मां से लिपट गया। वह ज़ारो-क़तार रो रहा था।

"हाफिज़ जी के बच्चे ने मुझे मारा—मुझे मारा। उसे नौकरी से निकाल दो। मैं उससे न पढ़ूंगा। मैं जूते मार-मारकर हाफ़िज़ जी की हड्डी तोड़ दूंगा। मैं मार डालूंगा, हाफ़िज़ जी को……!"

"अरे ! अरे !" उसकी मां समझाने लगी—"कोई बच्चा हाफ़िज़ साहिब के लिए ऐसी बात कहता है ? बुरी बात।"

"नहीं-नहीं ! मुझे हाफ़िज़ जी के बच्चे ने मारा है। यह देखिए।"

उसने अपना गाल दिखाया। अपने बेटे के गाल पर बड़ी-बड़ी, मोटी-मोटी पांचों उंगलियों के निशान देखकर वह भी आपे से बाहर हो गई। तन-बदन में आग लग गई। वह आग-बबूला होकर चीख

उठी—

"यह मुआ उस्ताद है कि कसाई !" उसने अपने बेटे को अपने कलेजे से लगा लिया। वह मारे रंज और गुस्से के बोले ही जा रही थी। वह जोर से चीखी—

"मुग़लानी बी !"

और जब मुग़लानी बी हांफती-कांपती उसके सामने आकर खड़ी हो गई, तो उसने बड़े झुंझलाते हुए अन्दाज़ में चीख़कर कहा—

"ज़रा किसी से दिखवाओ तो, कि वह मौलवी का बच्चा है कि चला गया ?"

"क्या हुआ, बेगम हज़ूर !"

"कम्बख़्त ने इस तरह मारा है मेरे लाल को !"

मुग़लानी बी ने बड़े गौर से ताहिर की तरफ देखा। उन्होंने पागलों की तरह बड़ी बदहवासी की हालत में उसे खेंचकर अपने कलेजे से लगा लिया। वह जोर-जोर से चीखने लगी—

"हाथ टूटें इस निगोड़े मुल्ला के ! गजब खुदा का, कोई ऐसे मारता है बच्चे को ! सत्यानास जाए उसका। दाढ़ी में आग लगे जहन्नुमी के। खुदा करे, कब्र तक में उसके कीड़े पड़ें। जहन्नुम का कीड़ा बने अल्लाह करे वह !"

"अब तुम बड़-बड़ करती रहोगी, मुगलानी बी, या जाकर मालूम भी करोगी कि वह बदबख़्त हाफिज का बच्चा है भी कि चला गया।" उन्होंने चिढ़कर मुगलानी बी को झंझोड़ा। वह मुल्ला जी को गालियाँ सुनाती हुई हवेली के मरदाने की तरफ लपकी। उन्होंने जनाने दहलीज़ में खड़े होकर आवाज दी—

"रसूल ! अरे रसूल के बच्चे ! कहाँ मर गया तू ?"

"आया मुगलानी बी !" रसूल, जो कि मरदाने में था, भागता हुआ दहलीज की ओट में आकर खड़ा हो गया।

"क्या हुक्म है, मुगलानी बी ?"

"देखना, वह हाफ़िज जी निगोड़ा है कि मर गया।"

और उधर हाफिज जी, जोकि बेसुध से बैठे सब सुन रहे थे, दहलीज के निकट आकर खड़े हो गए। हाथ बांधकर बड़े अदब से डरते-डरते बोले—

"हो सकता है कि छोटे सरकार की सिखलाई मेरी कम्बख्ती रही हो, लेकिन गुलाम ने हज़ूर डिप्टी साहिब से बखुदा इस अमर की इजाजत ले ली थी।"

"दिमाग तो तुम्हारा नहीं चला गया कहीं?"

हाफ़िज साहिब गड़बड़ा कर घिघियाते हुए बोले—

"नहीं, हजूर मुगलानी साहिबा, खुदा के मेहर से गुलाम के होश-हवास कायम हैं।"

"पूछो उन से—" वह, जो खुद भी डेवढ़ी तक आ गई थी, आहिस्ता से बोली—"होश-हवास में रह कर भी तुमने मासूम बच्चे का इस बेरहमी के साथ मारा है कि उसके गाल का भुर्ता बना दिया है?"

और मुगलानी साहिबा ने पूछा—

"हज़ूर बेगम साहिबा फ़रमाती हैं कि तुमने होश-हवास में होकर भी छोटे सरकार को इस तरह मारा है, कि उनका गाल, खुदा न करे, भुर्ता बन गया है!"

हाफ़िज साहिब लगभग जमीन तक झुक गए। हकलाते हुए बोले—

"खुदा को गवाह करके अर्ज़ करता हूँ, बेगम हज़ूर, मेरी नीयत ठीक थी, लेकिन छोटे सरकार पढ़ने में मज़ाक फ़रमा रहे थे। मैंने हज़ूर डिप्टी साहिब से इसकी इजाजत ले ली थी कि—"

वह एकबारगी झुंझला गई। गुस्से में उसे इस बात का भी खयाल न रहा कि उसकी आवाज़ बाहर तक पहुँच जाएगी। वह अत्यधिक कठोर आवाज में बोली—

"—कि तुम हमारे बेटे को मार डालो, क्यों, यही तुम कहना चाहते हो न?"

हाफ़िज साहिब का पेशाब निकलते-निकलते बचा। बहुत ही खुशामद से हाथ जोड़ कर, थूक निगलते हुए बोले—

"गुलाम शर्मिन्दा है, हजूर बेगम साहिबा ? लेकिन बात दरअसल यह थी कि छोटे मियाँ साहिब······यानि यह कि······यानि······ वह······।"

"बको मत !" वह इस बार अपने पर काबू करती हुई आहिस्ता से बोलीं—"दफ़ा हो जाओ यहाँ से, वरना मुझसे बुरा कोई न होगा। अगर आप हाफ़िज-कुरान न होते, तो मैं आपकी खाल ही खिचवा लेती।"

मुगलानी बी ने बात दुहराई—

"हजूर बेगम साहिबा फ़रमाती हैं कि अगर आप हाफ़िज-कुरान न होते तो वे आपकी खाल खिचवा लेतीं। आप दफ़ा हो जाइए यहाँ से।"

"बहुत अच्छा हजूर ! बड़ी मेहरबानी सरकार।" हाफ़िज साहिब हलकलाते हुए बोले और उन्होंने वहाँ से अपनी जान बचाकर भाग जाने में ही खैरीयत समझी। वे अपना रूमाल और पगड़ी सम्हालते रफूचक्कर हो गए।

"कमीना······मादर······!" तेरह साला ताहिर ने अपने उस्ताद हाफ़िज साहिब को बड़ी शान के साथ जनाटेदार माँ की गाली देकर गुस्से से कहा—"आपने उस सूअर के बच्चे की खाल क्यों न खिचवाई मैं उसके मुंह में जरूर पेशाब करूँगा।"

उसने अपने बेटे को क्रोध भरी नजरों से देखा। वह उसकी जबान से इतनी मोटी गाली सुनकर हैरान रह गई। उसने अपने बेटे को डांटा—

"क्या बकते हो तुम, ताहिर ! तुम गाली देना सीख गए हो ? गाली बकने लगे हो तुम ! किससे ये गालियाँ तुमने सीखी हैं ? खबरदार जो इतनी लम्बी जबान तुमने चलाई। मैं तुम्हारे मुंह में अंगारे रख

दूँगी। यह तुम समझ लो अच्छी तरह।"

"लेकिन उसने मुझे मारा क्यों?"

"खबरदार! क्या मालूम, तुमने हाफिज़ साहिब को भी गाली दी हो! अब मैं तुम्हारी तरफ़दारी बिल्कुल न करूँगी।"

वह बहुत रंज और मलाल के साथ वहाँ से मुड़ी। उसने मुगलानी बी से कहा—"तुम उसका मुंह धोकर गाल सेंक दो।"

वह अपने कमरे में आई और अपना मुंह लपेट कर पड़ गई। अपने बेटे के मुँह से इतनी फ़ाहश गाली सुनकर उसका दिल डूबने लगा था। बहुत ही ज्यादा सदमा और मलाल हुआ था उसे।

जाकिरा बीबी ने एक ज़ोर की झुरझुरी ली। उन्हें एक ज़रा-सा होश आया। सईदा को उन्होंने ग़ौर से देखा। वह बड़ी गहरी नींद सो रही थी। वह फिर अपने अतीत के सपनों में खो गईं—

डिप्टी साहिब बड़े झुंझलाए हुए अन्दाज में अन्दर आए। वे बड़े उदास और ग़मगीन दिखाई दे रहे थे। जैसे कि वे किसी बहुत बड़ी उलझन में गिरफ्तार हों।

"क्या बात है?" जाकिरा बीबी ने पति से बड़ी मीठी ज़बान में पूछा।

"कुछ नहीं।" वे आहिस्ता से बोले और बेत के मोढ़े पर बैठ गए। अपने दोनों हाथों से उन्होंने अपना सिर पकड़ लिया।

"आख़िर बात क्या है?" वह बड़ी हमदर्दी से बोली—"किस बात से आप उलझ रहे हैं?"

"कुछ नहीं।" वे एक सर्द आह के साथ सीधे होकर बैठ गए—"बड़ा अरमान था हमें बेटे का!"

"तो क्या किया हमारे इस बेटे ने?"

"जैसे कि आप उसे जानती ही नहीं हैं।"

"फिर भी?"

"अब वह कोई दूध पीता बच्चा तो नहीं। अठारह साल की उमर

उसकी हो गई है और बातें वह इस अन्दाज से करता है, जैसे कि मुँह से दूध टपक रहा हो।"

"अभी क्या हुआ ?"

"मेरे दोस्त कमिश्नर श्यामसुन्दर मुझसे मिलने आये थे। कम्बख्त गत की एक बात भी उनसे नहीं कर सका। उसी अपने ढंग में हकला—हकला कर अधकटे वाक्य उनसे बोल रहा था, जो कि न सुने जा सकें, न समझे जा सकें। मारे शर्म और रंज के मेरा तो बुरा हाल हो गया। यह कम्बख्त मुझे कहीं मुँह दिखाने लायक नहीं रखता। किस-किस से मैं क्या-क्या बातें बनाता रहूँ उसके लिए ? लाख दफ़ा समझाया कि अल्लाह के बन्दे, साफ़-साफ़ बोलना सीख, ठीक तरीके से बात कर, लेकिन वह उस अन्दाज़ में बात करता है, जैसे कि उसका साँस फूला जा रहा हो। या जैसे कि उसके गले में कोई चीज़ फँस रही हो। बोलने और बात करने में शर्माता ऐसा है, जैसे कि कोई नई-नवेली दुल्हिन अपने ससुराल वालों से बात कर रही हो। न जाने कैसे बात करता है। किसी बात की तमीज़ खुदा ने उसे नहीं दी।"

वे एक लम्बी साँस लेकर बड़े रंज के साथ बोले—

"आखिर कह ही दिया कमिश्नर साहिब ने—आखिर आपके साहिब-जादे साहिब इस कदर घबराए-घबराए और झेंपे-झेंपे से क्यों रहते है ? अब आप ही बताइए कि इसका जवाब उन्हें मैं क्या देता ? इधर-उधर की ख्वाहमख्वाह की बातें बना कर रह गया।

"होगा—जाने दीजिए ! वह तो है ही खब्ती।" जाकिरा बेगम पति का दिल रखने के लिए बोली—"वक्त के साथ-साथ खुद-बखुद सुधर जायगा।"

"कैसी बातें करती है आप भी।" वे झुंझलाए—

"अब कौन-सी उम्र होगी उसकी इनसान बनने की ?"

एक माँ का दिल अपने बेटे की ये बातें सुनकर डूबने लगा। लेकिन वह अपने पति की तसल्ली के लिए बोलीं—

"न जाने इस लड़के को क्या हो गया है? लेकिन ठीक हो जायगा ज़रूर! देख लीजिएगा आप।"

वह यह सब-कुछ यों ही जबान से कहे जा रही थी। हालांकि उनका दिल और उनका दिमाग खुद बुरी तरह उलझ रहा था अपने बेटे की उस नालायकी पर।

डिप्टी साहिब बोले। उनके अलफाज दर्द और कर्ब में डूबे हुए थे—

"न उसे कपड़ा पहनने की तमीज है और न उसे खाना खाने का सलीका है। न उसे ठीक तरीके से हंसना आता है और न रोना, न बोलना और न बात करना। दस्तरखान पर बैठकर वह खाना कभी नहीं खाता। जब देखता हूं, बावर्चीखाने में घुसा नौकरों-चाकरों के साथ खाना खा रहा है। पढ़ता-लिखना वह नहीं है। अठारह साल का वह हो गया है, कुरान-पाक अभी तक खत्म नहीं हुआ। उर्दू भी कोई ख़ास नहीं आती, फारसी के लिए दर्जनों उस्ताद रखे, लेकिन उस कम्बख्त ने फारसी पढ़ कर न दी। सोचा था, फारसी पढ लेगा तो उर्दू खुद-बखुद आजायगी, लेकिन वह अपनी जगह से टस से मस न हुआ।"

वे कुछ देर रुक कर बोले—

"अजीब मुसीबत में मेरी जान इस लड़के की वजह से फँसी हुई है।"

वे बहुत अधिक उदास, निराश और ग़मगीन दिखाई दे रहे थे। जाकिरा ने फिर उन्हें तसल्ली देने की कोशिश की—

"छोड़िए! खामखाह के लिए आप अपनी जान हल्कीन क्यों किए डाल रहे हैं। भाड़ में डालिए कम्बख्त को।"

"भाड़ में कैसे डालूं! नाम तो मेरा बदनाम होगा। जूते तो हमेशा मेरे नाम के साथ लगेंगे। काश, यह कम्बख्त पैदा ही न हुआ होता! और अगर पैदा हुआ ही था, तो मर जाता। या अब मर जाय कम्बख्त। मैं बहुत बड़ी बुराई और बदनामी से बच जाऊंगा।"

वे जैसे कि रोने लगे हों।

"यह सन देखिए उसका और उसकी तालीम के बारे में सोचिए। अभी तक छठी जमाअत में भुगत रहा है और वह भी ऊंट होकर क्लास में सब लड़कों के मुकाबिले में सिफ़र है, कमजोर है, बेचारा पढ़ाई में। काश कि उसे हैज़ा, प्लेग या कोई और बीमारी पसन्द कर ले।"

सचमुच उनकी आंखों में आंसू आ गए और उनकी आवाज़ भर्रा गई। जाकिरा बहुत ज्यादा गमगीन होकर बोखला गई।

"मैं कहती हूं अब जिक्र भी छोड़िए उस नमूढ़िए का। अपने आप भुगतेगा।" वह अपने आंचल से डिप्पुटी साहिब के आंसू साफ करने लगी।

"अपना दिल कुढ़ाएँ आपके दुश्मन!"

उन्होंने अपने पति का सिर अपनी गोद में भर लिया। बहुत तसल्ली देने के ढंग में कहने लगीं—

"सच तो है, यह पागल-दीवाना लड़का न जाने कहां से मेरी कोख से पैदा हो गया! इससे तो अच्छा था कि मैं बांझ होती।" वे कुछ क्षण रुक कर बोलीं, "लेकिन मैं इतना जरूर कहूंगी कि वह एक दिन जरूर ठीक हो जायगा। आखिर को वह आपका बेटा है। आगे चलकर वह ज़रूर सुधर जायगा।"

"मैं कहता हूं, वह मरकर भी न सुधरेगा।"

"तो जहन्नुम में डाल दीजिए कम्बख्त को।"

"मेरा तो दिल चाहता है कि मैं खुदकुशी कर लूं।"

"खुदकुशी करें आपके दुश्मन।" जाकिरा बहुत ज्यादा परेशान हो कर बोलीं—"खुदा के लिए आप उसका जिक्र छोड़ दीजिए।"

"हां, जिक्र तो उसका छोड़ दूं, लेकिन इस रिश्तए-कम्बख्त का क्या करूं?"

"समझ लीजिए कि वह आपका बेटा नहीं है।"

"मेरे ऐसा समझ लेने से दुनिया कब ऐसा समझेगी।"

वह बड़ी बेचारगी के साथ बोले और मोढ़े से उठकर अपनी मसहरी

पर जाकर गिर पड़े। जाकिरा बीबी इन्तहाई परेशानी की हालत में अपने हाथ मलने लगी।

चार साल और गुज़र गए।

ताहिर अब बाईस साल का था। पढ़ना-लिखना उसने सब छोड़ दिया था। उसके बाप डिप्टी साहिब उसकी तरफ़ से अब क़तई मायूस हो चुके थे।

ताहिर अब अपनी जागीर में काश्तकारों के पास लगान की वसूली तहसील के लिए आने-जाने लगा था। एक दिन वह सुबह-ही-सुबह अपनी घोड़ी पर सवार होकर हवेली से निकला। वह मौजा सुजानगंज जा रहा था। मौजा सुजानगंज उसकी जागीर का एक खूबसूरत गांव था।

वह अभी मौजा सुजानगंज में दाखिल हो ही रहा था कि जवारी की खड़ी फ़सल के दो खेतों के दरम्यान वाले डांडे पर उसे अपने सामने से एक जवान लड़की आती हुई दिखाई दी। लड़की जवान थी और खूबसूरत थी। उसके सिर पर चरी का एक गट्ठा रखा हुआ था। वह ग़रीब सामने ताहिर को घोड़ी पर सवार आता देखकर मेंड़ से दाईं तरफ़ हट गई। जल्दी से उसने अपना लम्बा घूंघट गिरा लिया। वह अपने जागीरदार डिप्टी अकराम अली साहिब के बेटे को अच्छी तरह पहचानती थी। उसने मालिक को गुजर जाने का रास्ता दे दिया था।

"ओह!" ताहिर ने उसके बराबर में आकर अपनी घोड़ी की लगाम खेंच ली। घोड़ी मालिक का इशारा पाते ही उसी जगह ठिठक-कर खड़ी हो गई।

"गोरा-गोरा चांद आखिर हमें देखकर नारंगी रंग के बादलों की ओट में क्यों छिप गया?"

उसने बड़ी बेबाक़ी के साथ लड़की का नारंगी घूंघट अपने बेंत की नोक से ऊपर उठाया। लड़की सहम कर दो क़दम पीछे हट गई। उसके घूंघट ने उसके चांद से मुखड़े को दोबारा ढक लिया।

"बड़ी ज़ालिम हो जी तुम।" ताहिर शरारतन मुस्कराया—"हम जान देने पर तुले है और तुम नीम बिस्मिल बनाकर छोड़ देना चाहती हो!" और यह कहकर वह घोड़ी की पुश्त पर से नीचे आ गया। मारे खौफ़ के गरीब लड़की का दम निकल गया। उसे ऐसा लगा, जैसे कि खून उसकी रगों में यकबारगी जम गया हो। वह दो-चार क़दम और पीछे हटते हुए बड़ी घबराई हुई आवाज़ में बोली—

"हम का जाए देव, सरकार! रस्तवा हमार छोड़ देव, मालिक!"

वह एक क़दम आगे बढ़ा।

"हम वह रास्ता कभी नहीं छोड़ते गोरी, जिस पर कि हम एक बार चल पड़े हों।" और यह कहकर उसने उस लड़की का हाथ पकड़ लेने की कोशिश की। वह बहुत अधिक बोखलाकर खड़ी जवार के खेत पर गिर पड़ी। पक्की फ़सल के कुछ पौधे टूट कर गिर पड़े। उसके सिर पर रखा चरी का गट्ठा उस जगह गिर गया। उसने झुककर उस जवान और खूबसूरत लड़की की गोरी कलाई थाम ली।

"दिल पर छुरियां चलाकर और हमारे जिगर मे भाला उतारकर अब हमसे रास्ता कतराती हो!" उसने एक झटके के साथ लड़की को ऊपर उठा लिया।

"इससे अच्छा मौका हमारी प्यास बुझा देने के लिए तुम्हें और कब मिलेगा?" उसने उसे खेंचकर अपने सीने से लगा लेना चाहा—"हम तेरे दीवाने हो चुके हैं।"

लड़की ने अपनी पूरी क़ुव्वत के साथ जागीरदारज़ादे को एक ज़ोर का झटका दिया और वह फिसलकर मेंड पर चित गिर पड़ा। और जब तक वह दुबारा उठे वह अपना गट्ठा उस जगह छोड़कर, उलटे पांव गांव की ओर बेतहाशा भागी। उस सिम्त से, जिस सिम्त से कि ताहिर आया था, दो-चार आदमी आते हुए दिखाई दिए। वह जल्दी से उठकर अपनी ब्रिजिस पर लगी हुई नर्म-नर्म मिट्टी को साफ़ करता हुआ अपनी घोड़ी की पुश्त पर आ गया।

उसने घोड़ी को एक ज़ोर की एड़ लगाई और अब वह उस सिम्त को भाग रहा था, जिस सिम्त से कि वह लड़की आकर वापिस लौट गई थी।

वह खेतों से गुज़रकर खुली जगह पर आ गया। उसने देखा, वह लड़की हिरणी की तरह, जोकि शिकारी की ज़द से बचकर भाग रही हो, बुरी तरह भागी चली जा रही थी। वह अपनी घोड़ी को भगाकर उसके बराबर आ गया। लड़की सहमकर फिर खड़ी हो गई। वह बोला—

"देखो, इसका ज़िक्र किसी से न हो, वरना तुम्हें जान से मार दूँगा।"

और यह कहकर वह अपनी घोड़ी को एड़ लगाकर उससे आगे निकल जाना चाहता था कि वह बाग़ैरत और दिलेर लड़की अपनी इज़्ज़त की खातिर उसके आड़े आ गई। उसने बड़ी दिलेरी से उसकी घोड़ी की लगाम पकड़ ली। एक ज़ोर का झटका उसने लगाम को दिया। घोड़ी यकबारगी अलफ हुई और ताहिर घोड़ी की पुश्त से नीचे आ रहा। इतनी-सी देर में वे पीछे से आते हुए आदमी भी आ गए। उन लोगों ने आते हुए दूर से बहुत कुछ देख लिया था। उन्होंने जवार के खेत पर पड़ा हुआ चरी का वह गट्ठा और जवार के खेत के टूटे हुए पौधे भी देखे थे।

बहादुर और अपनी इज़्ज़त की खातिर मर मिटने वाली लड़की ने एक झटका देकर घोड़ी की लगाम छोड़ दी। पास पड़ा बेंत उठाकर उसने घोड़ी के जिस्म पर कई ज़र्बें लगा दीं। घोड़ी हिनहिनाती हुई तीर की तेजी के साथ अपने गाँव अहमदपुर की तरफ भागी और कब्ल इसके कि ताहिर अपनी कमर सहलाते हुए उठे, उसने कमाल हिम्मत से काम लेते हुए उसकी बेंत से उसे दीवानावार पीटना शुरू कर दिया। वह लड़की अपनी आबरू की इतनी बड़ी आबरूरेजी पर जैसे कि दीवानी हो गई हो। वह जनून और गुस्से में यह भूल बैठी थी कि वह एक

बहुत बड़ी जुर्रत का इक़दाम कर रही है। वह अपने आका को पीट रही है, वह उसकी बेइज्ज़ती कर रही है, जो उसका और उसके खानदान का और उसके पूरे गांव का अन्नदाता है। जो अगर चाहे तो उस पूरे गांव को आग लगा सकता है।

ताहिर उठकर खड़ा हो गया। उसने उस लड़की को झंझोड़ कर रख दिया। उसने अपना बेंत उस लड़की के हाथ से छीन लिया। इतने में वे देहाती भी उस जगह पर आ गए। ताहिर उन्हें देखते ही दहाड़ा—

"यह लड़की पागल है। इसे रोक लो। वरना मैं इसका खून कर दूंगा!"

"इज्जत चीज ही ऐसी है, मालिक!" एक देहाती बोला। उसके लहजे में नफ़रत थी, दुःख और गुस्सा था—"अपनी इज्जत पर मर मिटने के लिए हमारी कंवारियां अपनी जान पर खेल जाती हैं, सरकार? आप तो खाली पागल होने की बात कर रहे हैं।"

"दिमाग खराब हो गया है तेरा?" उसने उन सब पर रोब डाला—

"तुम लोग जानते हो, हम कौन हैं? हम पूरे गांव को आग लगा देंगे।"

"हमारे दिल में तो आपने आग लगा ही दी है, मालिक! गांव की आग की बात तो बाद की है।"

"आ बदजात हमरी इज्जत लूट ले चाहत रहा।" वह लड़की बड़े फर्ब के साथ बोली और फूट-फूटकर रोने लगी।

और फिर उसी समय गांव के बड़े बूढ़े और कई नौजवान उस लड़की को साथ लेकर डिप्टी साहिब के पास इस इतने बड़े वाकया की रिपोर्ट करने के लिए चल पड़े। ताहिर से उन लोगों ने कुछ नहीं कहा था।

"सरकार!" गांव का मुखिया बोला—"आज के दिन तक आपकी जागीर में ऐसा नहीं हुआ, मालिक! एका आप फैसला करो। नाहिं तो

हमें सब अफ़ीम चाट कर मर जाव, मालिक !"

बात बिल्कुल साफ थी। हर मामला साफ था। आईने की तरह हर चीज़ अयाँ थी। डिप्टी साहिब की गर्दन जिन्दगी में पहली मर्तबा शर्म से और मजामत से मुजरिमों की तरह नीचे झुक गई। वे अपनी गर्दन नीचे किए-किए बोले—वे अपनी रिआया के सामने आँखें चार नहीं कर सकते थे। उनकी आवाज भर्राई हुई थी—

"मैं तुम सबसे बहुत ज्यादा शर्मिन्दा हूँ। अगर हो सके तो तुम लोग हमें माफ़ कर दो और अगर न माफ़ कर सको तो मैं तुम्हारी तजवीज की हुई हर सजा का स्वागत दिल से करने के लिए तैयार हूँ।"

उनकी आँखें बरस पड़ीं—

"इस नालायक औलाद की वजह से हमें आज के दिन यह शर्मसारी उठानी पड़ रही है। तुम लोग उसे जो सजा दोगे, वह उसे भुगतनी पड़ेगी। तुम लोग खुद उसे सजा दो। इस सजा को पूरा करने में हम तुम्हारा साथ देंगे।"

उन्होंने उस दिलेर और नेक लड़की को सम्बोधित किया—

"बेटी ? तुम यकीनन तारीफ और इनाम की हकदार हो। तुमने वह बड़ा और अहम काम किया है, जिसकी मिसाल आज के हमारे इस समाज में नही मिल सकती। मैं तुम्हें तुम्हारे इस साहस पर दिली मुबारकबाद पेश करता हूं। खुश किस्मत है वह बाप, जिसकी तुम बेटी हो। और पवित्र है वह कोख, जिसने तुम्हारे जैसी साहस और नैतिकता की महान लड़की को जन्म दिया है।"

उन्होंने उस लड़की के सिर पर प्यार से हाथ फेरा।

"हम तुम्हें वे सारे खेत इनाम में देते हैं, जो तुम्हारा बाप जोतता है। किसकी बेटी हो तुम ? कौन है वह खुशनसीब बाप ?"

"हजूर माई-बाप !" वह लड़की डिप्टी साहिब के पाँव छूकर बोली—आपके गाँव का गुण्टरीत हमारा बाप है, सरकार।"

"कौन ! जगदेव ! तुम जगदेव की बेटी हो ?"

"हाँ हजूर ! माई बाप !" जगदेव बोला—"आ हमरी बेटी है, मालिक !"

"मुबारक हो, भाई।" डिप्टी साहिब बड़ी हसरत के साथ बोले—"यह तुम्हारी बेटी है और यह हमारा बेटा है।"

उन्होंने कहर आलूद नजरों से बड़े दुःख के साथ अपने बदइतबार बेटे ताहिर को देखा। और फिर उनकी गर्दन शर्म से एक बार फिर नीचे झुक गई। वह उसी तरह सिर झुकाए-झुकाए बोले—

"हाँ। तो तुम लोग इस मेरे बदमाश और कमीने बेटे के लिए क्या सजा तजवीज करते हो !"

"आप महान हैं, सरकार ! आप साक्षात् देवता हैं। बहुत बड़ा दर्जा है आपका, मालिक !" गाँव का चौधरी बोला।

"हमको सब कुछ मिल गया, मालिक !" छोटे सरकार हमारा मालिक हैं, माई-बाप ! हम प्रजा लोग छोटे सरकार को क्या सजा देंगे। पहली भूल उनसे हुई है ! हम सब उनकी पहली भूल को भूल गए हैं, मालिक ! दिल से भूल गए हैं, सरकार !"

"नहीं। तुम इस बदकार को उसकी कमीनगी की सजा जरूर दो। यह मेरी दिली ख्वाहिश है।"

"बस सरकार ! अब बहुत शर्मिन्दा न करें, सरकार !"

और फिर वे सब के सब अपने जागीरदार साहिब की इस शराफत और इनसाफ परवरी का गहरा नक्श लेकर वहाँ से वापिस लौटे।

डिप्टी साहिब को अपनी इस बेइज्जती पर इतना बड़ा सदमा पहुंचा कि वे हवेली के अन्दर आकर बच्चों की तरह फूट-फूट कर रोने लगे। वे बार-बार कहते थे—

"मैं अब अपनी जागीर में किसी को मुंह नहीं दिखा सकता। मेरी सारी इज्जत, मेरा सारा वकार और मेरी जिन्दगी भर की आन इस कमीने लड़के ने गन्दगी में लियेड़ दी है। मेरी सारी जिन्दगी की नेक-नामी मिट्टी में मिल गई है।"

ने वार-वार अपने मुंह पर तमाचे मार रहे थे। अपने बाल नोच रहे थे। वे 'अब मैं ज़िन्दा न रहूँ। मेरी ज़िन्दगी अब एक बदनाम मौत है, मेरे लिए।'

उनकी बेगम साहिबा ने उन्हें बहुतेरा सम्हालने और समझाने-बहलाने, फुसलाने की कोशिश की, लेकिन उनका सदमा कम न हुआ। किसी बात का असर न हुआ उन पर। और वे बीमार हो गए। दिल के दौरे उनके ऊपर पड़ने लगे। हकीमों और डाक्टरों की समझ से बात बाहर हो गई।

उन्होंने खाना-पीना यकलख्त छोड़ दिया। एक बड़ी अजीब और भयानक किस्म की चुप लग गई उन्हें। और एक दिन ऐसा आया कि वे इस दुनिया से रुखसत हो गए।

इस वाकया के एक हफ्ते के अन्दर ही उनका हार्ट फेल हो गया। दिल की हरकत बन्द हो गई और वे अल्लाह को प्यारे हो गए।

उन्होंने सच ही कहा था। वे दुनिया को इस वाकया के बाद फिर मुंह न दिखा सके। जाकिरा बेगम की दुनिया लुट गई। उनकी जीती-जागती दुनिया तारीक हो चुकी थी।

जाकिरा बेगम के दिल से एक सर्द आह खिंचकर बाहर आ गई। वे बेसाख्ता पुकार उठीं—

"मेरे अल्लाह।"

उनके दिल से खिंचकर यह मुकद्दस नाम बाहर आया और वे अपने होश में आ गईं। उन्होंने देखा, उनका दामन उनके गर्म-गर्म आँसुओं से भीग चुका था। वे न जाने कब से रो रही थीं।

"नानी अम्मा!"

मासूम सईदा चौंक पड़ी। उन्होंने "मेरी बच्ची" कह कर उसे बेअख्तियार अपने कलेजे से लगा लिया और उसे फिर से थपक-थपक कर सुलाने की कोशिश की।

तीन

ज़ाकिरा बीबी की सोच और उनके खयालात का सिलसिला अभी खत्म नहीं हुआ था। आज जबकि वे अपनी नातिन सईदा के ग़म में बुरी तरह निढाल थीं, उन्हें एक-एक बात बड़ी तफ़सील के साथ याद आती जा रही थी।

उनके शौहर के मरते ही उनके नालायक बेटे ने अपनी कमीनगी और शरारत का मज़ाहिरा बड़ी शिद्दत के साथ शुरू कर दिया था।

माँ के होते हुए इस बात का कोई हक़ नहीं था उसे कि वह बाप की जायदाद अपने नाम लिखवाले, लेकिन वह अपनी माँ की ज़िन्दगी में ही सारी जायदाद अपने नाम करा लेने के ख्वाब देखने लगा। साथ-ही-साथ उसे अपनी शादी की भी फिक्र बड़े ज़ोर-शोर के साथ लाहक़ हो गई थी।

"अम्मी !" एक दिन वह अपनी माँ से कह रहा था—"आखिर आप मेरी शादी कब करेंगी ?"

"घर में बहू आए, इसकी ख्वाहिश किस माँ के दिल में न होगी, बेटा !" वे मुलामियत से बोलीं—"लेकिन अभी तुम्हारे अब्बाजान को मरे हुए दिन ही कितने हुए हैं। दुनिया क्या कहेगी आखिर ! कम-से-कम उनका चालीसवाँ तो हो जाने दो !"

"ये अब बेकार की बातें हैं, अम्मी ! बेकार के ढकोसले। चाली-सवाँ-वालीसवाँ से क्या होता है। अब्बाजान अगर मर गए तो क्या मैं उनके सोग में सारी उमर कँवारा ही बैठा रहूँगा ?"

ज़ाकिरा बीबी ने इन्तहाई मलाल के साथ अपने इकलौते बेटे को देखा। वे बड़े दुःख के साथ बोलीं—

"बड़े नालायक़ हो तुम, ताहिर ! बेहूदा और इन्तहाई बदतमीज़ क़िस्म के !"

"अरे वाह ?" वह अपनी मां की बात पर गुस्से में आ गया। कठोरता से बोला—"मेरी ज़ात में तो हमेशा ही अब्बाजान मरहूम को और आपको कीड़े ही नज़र आए हैं। अगर आप लोगों की नज़रों में क़सूर है, तो इसमें मेरी ज़ात में क्या फ़र्क़ पड़ता है।"

"कैसी बातें करते हैं आप, भाई मियां !" रुख़साना, उसकी सोलह साला बहिन बीच में बोल पड़ी—"किसी वक़्त तो आप अम्मी-जान का दिल देखकर बात किया कीजिए।"

"अरे वाह !" उसने अपनी मां की तरफ़ मुस्कराकर देखते हुए अपनी छोटी बहिन रुख़साना के सिर पर एक धप् लगाई—'बड़ी आई मुझे नसीहत करने वाली चुड़ैल कहीं की...बदतमीज़...।"

"नहीं भाई मियां !" रुख़साना पूरी संजीदगी के साथ बोली—"आपकी इन बातों से अम्मी जान तो क्या, मुझे भी बड़ा दुःख होता है।"

"बस-बस !" उसकी पेशानी पर शिकन उभर आई—"बड़ी आई मुझे रोकने-टोकने वाली ! छोटा मुंह, बड़ी बात ! ख़बरदार जो फिर कभी तूने मेरे आड़े आने की कोशिश की तो ! जूते लगाकर हवेली से बाहर निकाल दूंगा !"

"ताहिर !" ज़ाकिरा बीबी तेज़ होकर बोलीं—"यह तेरी बहिन है। तुम किसी लौंडी, बान्दी या छोकरी से बात नहीं कर रहे हो ! और फिर उसने कहा भी क्या है तुम्हें ? ख़बरदार ! आईन्दा से सोच-समझकर ज़बान चलाना, वरना मुझसे बुरा कोई न होगा। मैं कहे दे रही हूं—हां !"

"क्या कर लेंगी आप मेरा ?" वह इन्तहाई बेरहमी और गुस्ताख़ी से बफ़रकर बोला—"मैं अब दूध पीता बच्चा नहीं हूं। इतनी बड़ी हवेली और इतनी बड़ी जागीर का मालिक हूँ। मेरी भी इज़्ज़त है,

मेरी भी आन है और मेरी इज्जत, मेरी आन का आपको हर वक़्त ख़याल रखना होगा। वरना……!"

जाकिरा बीबी को बेटे की इस गुस्ताखी पर बड़े ज़ोर का गुस्सा आ गया। वे तेज़ होकर बोलीं—

"वरना क्या ? वरना क्या करेगा तू मेरा ?"

"मैं…मैं…!" ताहिर बकते-बकते रुक गया। चुलबुलाकर बोला—'वरना मैं तुम्हारा घर छोड़कर कहीं चला जाऊँगा।" उसने एक्टिङ्ग की। भर्राती हुई आवाज में बोला—"मैं कहीं नदी-नाले में जाकर डूब मरूँगा।"

वह झूठ-मूठ के आँसू अपने कुर्ते के दामन से पोंछने लगा। बड़े मरे दिल से बोला—

"काश ! मैं पैदा होते ही मर जाता।"

वह हवेली से बाहर जाते हुए रुककर बोला—

"मैं अभी जाकर खुदकुशी कर लेता हूँ। गाँव में खुद मेरे बाप के खुदवाए हुए बहुत से कुएँ हैं। उनमें से किसी एक का पानी खुश्क नहीं हुआ।"

"अरे-अरे ! खुदा न करे !"

एक माँ का दिल भर आया। माँ का दिल…फिर भी माँ का दिल ही होता है। वे अपने ताहिर के पीछे बदहवास होकर भागीं। उन्होंने अपने बेटे का बाज़ू थाम लिया। उधर से उसकी बहिन रुखसाना भी भागकर आ गई और आते ही अपने भाई से लिपट गई। आखिर को वह बहिन थी। भर्राई आवाज में बोली—

"अल्लाह न करे, आपके दुश्मनों को कुछ हो, भाई मियाँ ! मैं आप पर से वारी—कुर्बान ! आपके ऊपर से मैं सदक़े उतर जाऊँगी—मेरे बीरन ! मेरे भाई मियाँ !"

वह फूट-फूटकर रोने लगी।

ज़ाकिरा ने भी बेटे को गले से लगा लिया। भर्राए स्वर में कहा—

"खुदा न करे कि नसीबे-अल्लाह, तू मेरी नजरों से ओझल हो। तुम्हारे सिवाय हमारा अब कौन सहारा है, बेटे !"

आँसू जाकिरा की आँखों से भी टपाटप गिरने लगे। ताहिर के दिल का कमल यकबारगी खिल उठा। यह अपनी ग़ैरइरादती किस्म की एक्टिंग जो उसे निशाने पर दिखाई दी, तो वह खुशी से दीवाना हो गया। मजीद एक्टिंग करते हुए माँ से लिपट गया। अपनी बहिन को खींचकर अपने गले से लगा लिया। भर्राई हुई आवाज़ में बोला—

"मेरा इस इतने बड़े जहान में सिवाए माँ और बहिन के और कौन है ? अब्बाजान की बेवक्त मौत ने मेरा दिमाग खराब करके रख दिया है। ग़मों का पहाड़ टूट पड़ा है मेरे ऊपर। इसलिए बगैर सोचे-समझे मेरे मुँह से न जाने क्या कुछ निकलने लगता है। बखुदा मेरी किसी भी बात का मेरे दिल से तालुक नहीं होता। मैं तो गमों के बोझ तले दब-कर पागल हो गया हूँ।" वह रोने लगा।

"कसम खुदा की, हबीबगंज कल गया था। मेरा वसूली तहसील में जी बिलकुल नहीं लगा। हर लम्हा मैं इसी रंज और अफ़सोस में डूबा रहता हूँ कि मौजा सुजानगंज की उस बेहया लौंडिया ने मेरे ऊपर बिलकुल झूठा इलजाम लगाया था। अब्बाजान ने उन दो टके के देह-तियों के मुकाबिले में मुझे झूठा समझा और मेरी इतनी ज्यादा बेइज्जती की कि खुदा की पनाह ! बेचारे खुद भी उन हरामजादे गाँव वालों के इस तोहमत पर गमों से निढाल होकर मुझे यतीम बना गए। मुझे अकेला छोड़ गए इस इतनी बड़ी दुनिया में।'

और इतना कहकर वह फूं-फूं कर रोने लगा। जाकिरा और रुख-साना दोनों उसे घबरा-घबराकर पुचकारने और सम्हालने लगीं।

"गम न करो मेरे बेटे !" जाकिरा ने कहा—"अगर वे गाँव वाले झूठे हैं, तो अल्लाहपाक उन्हें जरूर इस इतने बड़े इलजाम की सजा देगा।"

'मेरा ईमान है। तुम गम न करो, ताहिर।"

"हाँ, और नहीं तो क्या—" रुखसाना मासूमीयत से बोली—"उन बदबख्तों ने हमारे खानदान पर बहुत बड़ा जुल्म किया है।"

"खुदा सब कुछ देखता और खामोश रहता है, अम्मीजान!" ताहिर हिचकियों के दरम्यान बोला।

"इस दुनिया में हमेशा झूठों का ही बोल बाला है। सच्चे और नेक बन्दे तो रो-रोकर मर जाते हैं। खुदा किसी की बेगुनाही का सबूत देने के लिए कभी नहीं आता।"

"ऐसा न कहो, बेटे! यह कुफ्र है।" जाकिरा बीबी ने कहा—'खुदा के यहाँ देर जरूर है, लेकिन अन्धेर नहीं है।" वे ज़ोर देकर बोलीं—

"इस पर यकीन रखो, बेटे कि हर बात में अल्लाहपाक की कोई-न-कोई मसलहत जरूर होती है और वह नेक होती है। बन्दे के लिए उसमें भलाई होती है।"

"होती रही होगी कभी भलाई।" ताहिर ब-ज़ाहिर बड़े कर्ब के साथ बोला—"लेकिन उसकी इस भलाई में तो अपना सब कुछ तबाह हो गया। अब्बाजान के रखवाले साए से महरूम हो गया। यतीम बना दिया मुझे उसकी इस मसलहत ने।"

और यह कहकर वह फिर हिचकियों से रोने लगा। वह बच्चों की तरह फूट-फूट और बिलख-बिलख कर रो रहा था। और ये दोनों जाकिरा और रुखसाना उसे घबरा-घबरा कर तसल्ली दे रही थीं। और परेशान हुई जा रही थीं बेचारियाँ। रुखसाना बोली—

"अब और ज्यादा गम न कीजिए, भाई मियाँ। अल्लाह न करे, अगर आपके दुश्मनों को कुछ हो गया तो हम क्या करेंगे?"

"हाँ, बेटे।" जाकिरा ने उसका सिर अपनी गोद में भर लिया—"सब्र करो। सब्र का फल हमेशा मीठा होता है।"

"मीठे ही फल तो हम खा रहे हैं।" ताहिर बोला—"देखिए न, खा रहे हैं न हम मीठे फल! और अभी आपको तो और भी मीठे-

मीठे फल खाने को मिलने वाले है।" वह तनकर बोला—

"इंशा अल्लाह !"

फिर माँ की ओर मुखातिब हुआ—

"कहिए न अम्मी, इंशा अल्लाह।"

"इंशा अल्लाह।" ज़ाकिरा ने इन्तहाई अक़ीदत के साथ कहा—"सब्र के फल हमेशा मीठे होते है।"

"यही हमारा ईमान है, भाई मियाँ !" रुखसाना बोली—"और यह ईमान रखने वाले कभी घाटे में नहीं रहते। हो सकता है कि दुनिया वालों की नज़रों में वे घाटे में रहते हों। इस दुनिया में न सही, तो अगली दुनिया में अल्लाह पर भरोसा रखने वालों को नेक अज्र जरूर मिलता है।"

"ये सब दिल बहलावे की बातें हैं।" ताहिर हिकारत से बोला।

"तौबा करो बेटे, तौबा !" जाकिरा ने तौबा की—"ऐसा कहना क्या, ऐसा सोचना भी कुफ्र है और सिर्फ उन्हें अल्लाहपाक कभी न बख्शेगा, जो काफिर हों।"

"काफ़िर किसे कहते हैं ?" ताहिर ने सवाल किया।

"काफिर वह है, भाई मियाँ—" रुखसाना बोली—"जो खुदा को न मानता हो। और बस, उनमें से एक भी काफिर नहीं है जो खुदा को मानते, जानते और समझते हैं।"

"बड़ी समझदार हो गई हो तुम !"

"इल्म की रोशनी से हर समझ अता होती है, भाई मियाँ !" रुखसाना ने फखरिया कहा—"मैंने उस्तानी बीबी से पढ़ने के बाद हाफ़िज़ साहिब से भी पर्दे में बैठकर दीनी तालीम हासिल की है। और फिर अदीब कामिल का इम्तहान भी तो मैंने पास किया है।"

"अच्छा-अच्छा ! बस रहने दे।" ताहिर मुस्कराया—"बड़ी आई पढ़-फाज़िल बनकर। मुझे सब कुछ मालूम है।"

और फिर उसने अपनी माँ से कहा—

"यह बात मैं कहे देता हूँ, अम्मी जान ! मैं मौजा सुजानगंज के सरकश असामियों से उनकी इस कमीनगी का बदला ज़रूर लूंगा।"

"नहीं बेटे।" ज़ाकिरा ने उसके जज़बात को ठण्डा करने की कोशिश की—"काश्तकारों की मुखालफ़त ठीक नहीं होती। और फिर बदला लेना इनसान का काम नहीं, रहमान का काम है।"

'अच्छा अम्मी।' वह अब हद दर्जा सआदतमन्द बनने की कोशिश कर रहा था। उसने समझ लिया था कि उसकी यह सआदतमन्दी की एक्टिङ्ग सबसे ज्यादा जोरदार और कामयाब हो सकती है। इसके ज़रिये वह, वह सब कुछ बड़ी आसानी के साथ हासिल कर लेगा, जो कि उसे गुस्से और सरकशी में शायद कभी न मिले और जिसे हासिल करने के लिए उसे अपनी माँ को जान से मार देना पड़ेगा। माँ की मौत का इन्तजार ! खुदा की पनाह ! कितना सब्र-आज़मा होगा उसके लिए। न जाने वह अपनी मौत से कब मरे।

लहज़ा वह बड़े शर्माते हुए अन्दाज़ में बोला—

"मैं अपनी उस बदतमीज़ी की आपसे माफ़ी चाहता हूँ, अम्मी।"

"कौन सी बात, बेटे ?"

"वही, जो मैं अपनी शादी की बात आपसे कर रहा था। वह बात दरअसल यह है, अम्मी, कि अब्बाजान की अचानक मौत की वजह से अपना दिमागी तवाज़न खो बैठा हूँ। न जाने क्या अण्ट-शण्ट मैं बकने लगा हूँ।"

उसने अपनी बहिन रुखसाना की तरफ मुस्कराकर देखा—

"पहले तो मुझे अपनी इस गुड़िया का ब्याह करना है।"

और यह सुनकर रुखसाना शर्मा गई। शर्मा कर उसने अपनी गर्दन नीचे झुका ली। वह अपना सिर अपने दोनों घुटनों में दिए बैठी थी। शर्म से उसका चेहरा गुलनार बन गया।

ज़ाकिरा बीबी बोलीं—

"नहीं ! मैं तुम दोनों के फ़िक्र में हूँ, बेटे ! मैं तुम दोनों की शादी

एक साथ करने की सोच रही हूँ।" उनकी आँखों में आँसू फिर से छलक आए।

"काश कि वो जिन्दा होते।"

जाकिरा बीबी का दिल उनके पहलू में जख्मी परिन्दे के मानिन्द फड़फड़ाने लगा। वे फूट-फूटकर हिचकियों में रोने लगीं।

ताहिर और रुखसाना दोनों उनसे लिपटकर रोने लगे। वे दोनों उन्हें समझाने-बुझाने और फुसलाने लगे। रुखसाना की आँखें भी सावन-भादों की तरह बरसने लगी।

जाकिरा बीबी की एक खालाजाद बहिन थी अफ़रोज़ बेगम! उनकी शादी इलाहाबाद के अब्दुल इलाही साहिब से हुई थी। ये इलाहाबाद के एक मशहूर वकील के मुंशी थे। अफ़रोज़ बेगम के माँ-बाप भी कोई बहुत बड़े आदमी न थे। बस ऐसे थे, कि भली-बुरी इज्जत के साथ गुजर-बसर हो रही थी। लहज़ा अफ़रोज़ बेगम की शादी अब्दुल इलाही साहिब से हो गई।

अलबत्ता उनकी खुद की शादी बहुत बड़े घराने में हुई थी। माँ-बाप उनके भी गरीब थे, लेकिन वह खुद किस्मत वाली थी जो उनका विवाह डिप्टी अकराम अली साहिब से हो गया था। घूंघट उठाकर उन्होंने अपने ससुराल में दौलत की रेल-पेल देखी, हवेली देखी, और दर्जन भर नौकर-चाकर, आयाएँ, खादिमाएँ और बान्दियाँ देखीं। हद से ज्यादा मुहब्बत करने वाला उन्हें शौहर मिला।

और शौहर की उस दारफ़ता मुहब्बत में उनकी बला की खूबसूरती, उनके मलकूती हुस्न, उनकी सलीका शुआरी और उनके मिज़ाज़ को बहुत बड़ा दखल था। वे हद से ज्यादा खुशमिजाज, हँसमुख और समझदार किस्म की लड़की थीं, जो उस घर में बहू बनकर आई थीं।

अपनी सास और अपने ससुर को उन्होंने हमेशा अपने माँ-बाप की तरह चाहा और प्यार किया। वह उनका अदब और उनका लिहाज हद से ज्यादा करती थी। वह तो खैर फिर भी उसके सास-ससुर थे,

वह हवेली के नौकरों-चाकरों तक से मुरव्वत, शराफ़त और मुहब्बत से पेश आती थीं। इसलिए वह इस हवेली में बेहद हरदिल अज़ीज़ थीं और हरेक की आँख का तारा बनी हुई थीं।

ज़ाकिरा बीबी अपनी खालाज़ाद बहिन अफ़रोज बेगम से हमेशा मिलती-जुलती रहती थीं। उन्हें अपने यहाँ बुलवाती थीं। प्यार-मुहब्बत से पेश आती थीं और उनका बड़ा खयाल करती थीं। उन्हें, उनके शौहर को और उनके बच्चों को सर-आँखों पर जगह देती थीं। वे अपनी खालाजाद बहिन के साथ अच्छा सलूक भी करती थीं।

वह अक्सर खुद भी अफ़रोज़ बेगम के यहाँ जाती थीं और बहुत कुछ दे-दिवाकर आती थीं। अफ़रोज़ बेगम की यह दिली ख्वाहिश थी कि वह अपनी बेटी अनवरी को इस घर की बहू बनाने मे कामयाब हो जायँ। उन्होंने दिल-ही-दिल में ताहिर को अपनी बेटी अनवरी के लिए पसन्द कर लिया था।

एक दफा जबकि वह अनवरी को साथ लेकर आई हुई थी, उन्होंने बातों-बातों में बात निकाली—

"आपा !" वह ज़ाकिरा बीबी को आपा कहा करती थीं—"मुझे आपका बेटा ताहिर बहुत अच्छा लगता है।"

"क्यों नहीं !" ज़ाकिरा बीबी बोलीं—"आखिर को तुम्हारा भांजा है। अपना बेटा किसे अच्छा नहीं लगता ? देखो न, तुम्हारी बेटी अनवरी मुझे कितनी अच्छी लगती है। आखिर को मेरी बेटी है न, इसलिए।"

"तो आपा, तुम उसे अपनी बेटी बना ही लो न !"

"वह तो है ही मेरी बेटी।"

"नहीं, मैं रिश्ते की बात कर रही हूँ। अगर अनवरी और ताहिर मियाँ का·······!"

ज़ाकिरा बीबी ने बात काटी—

"अभी से क्या ! अभी तो दोनों बच्चे हैं। जब वक़्त आएगा, तो

मैं······।"

अफ़रोज़ बेगम ने कई पहलू बदले। झट से बोल पड़ीं—

"बच्चे ही जवान होते हैं। अगर यह रिश्ता अभी से—"

"यह बात भी इंशा अल्लाह हो जायगी।" ज़ाकिरा बीबी ने कहा—"वक़्त आने दो। मैं डिप्टी साहिब से बात निकालूंगी।"

"लेकिन अभी से बात पक्की कर लेने में—मेरा मतलब है कि—"

"हां-हां!" ज़ाकिरा बीबी बोलीं—"सब कुछ वक़्त आने पर ख़ुद-ब-ख़ुद हो जायगा।"

"आप टाल रही हैं, आपा!"

"ख़ुदा न करे।"

"फिर!"

"मैंने कहा न कि वक़्त आने दो।"

"अच्छा, आपा!" अफ़रोज़ बेगम ने कहा—"लेकिन यह याद रखिएगा कि यह मेरा बहुत बड़ा अरमान है।"

"इंशा अल्लाह, जरूर पूरा होगा।"

"और अगर······!"

ज़ाकिरा बीबी ने अफ़रोज़ बेगम की बात काटी—

"तुम यह क्यों भूलती हो, अफ़रोज़ कि रिश्ता आसमान से उतर कर आता है।" वह मुस्कराई—"किस्मत में होगा, तो जरूर यह शादी होकर रहेगी।"

"अल्लाह करे, आपा!" अफ़रोज़ बेगम बड़े अरमानों के साथ बोलीं—"मैं जिन्दगी भर तुम्हारा अहसान न भूलूंगी।"

"अहसान काहे का बहिन! आख़िर को तुम हमारा ही ख़ून तो हो।"

"तभी तो मैंने ख़ुद ही बे-ग़ैरत बनकर यह बात, जोकि दिल में थी, निकाल ही दी।"

"अच्छा किया तुमने।"

"मेरी बिटिया अनवरी बड़ी सीधी और नेक है। तुम्हारे पाँवों धो-धोकर न पिए, तो मुझसे कहना। कसम अल्ला की, अनवरी तुम्हें कभी शिकायत का मौका न देगी।"

"मुझे अहसास है, अफ़रोज़! आखिर खून तो अपना ही है न!"

और फिर इस गुफ्तगू के बाद एक दिन, जबकि ताहिर चौदह साल का था, इस वाकया के पूरे चार साल बाद जाकिरा बीबी ने डिप्टी साहिब से बात निकाली—

"अनवरी कैसी लड़की है!"

"क्यों?"

"मैं उसके बारे में एक बात सोच रही हूं।"

"वह क्या?"

"अगर हम उसे अपनी बहू बना लें—तो?"

"मेरा खयाल तो यह नहीं है।" डिप्टी साहिब बोले—"मेरा खयाल तो किसी और तरफ जाता है।"

"किसी और तरफ?"

"हां!" डिप्टी साहिब ने अपनी बेगम को बताया—"वह कमिश्नर वसीमुलद्दीन साहिब हैं न, उसकी बेटी फ़रज़ाना मुझे बहुत अच्छी लगती है। बड़ी खूबसूरत है, जहीन है और पढ़ने-लिखने में नम्बर एक है और फिर वसीमुलद्दीन साहिब मेरे जिगरी यार हैं और फ़रज़ाना उनकी इकलौती बेटी है। बहुत बड़े आदमी भी हैं वसीम साहिब! ताहिर के लिए फ़रज़ाना से अच्छी दुल्हिन चिराग लेकर ढूंढ़ने पर भी न मिलेगी।"

"ग़रीब घर की लड़कियां अच्छी बहुएं बन सकती हैं और बड़े घर की बेटियां तो—"

"नहीं, ऐसी भी कोई बात नहीं। अफ़रोज़ बड़ी नेक तबीयत बच्ची है, सलीकामन्द और बाशुआर है और फिर हम कहां कुछ कम हैं। अल्लाह का दिया हुआ क्या कुछ अपने यहां नहीं।"

"लेकिन !" ज़ाकिरा बीबी रुककर बोलीं—"मुझे अनवरी बहुत पसन्द है।"

"तो फिर देख लेंगे बाद में। अभी कौन ताहिर का ब्याह होने जा रहा है। और फिर मैं तो अपनी बेगम की पसन्द का हमेशा खैर-मुकद्दम करने को तैयार रहता हूँ। आपको अगर वह लड़की पसन्द है तो हम उसी को अपनी बहू बना लेंगे।"

"सच !" ज़ाकिरा बेगम खुश होकर बोलीं।

"आपकी कसम।"

तो फिर मुझे तो अनवरी पसन्द है। गरीब घर की लड़की है, हमेशा नज़रें झुका कर चलेगी। और फिर मेरी खालाज़ाद बहिन की बेटी है। बेज़बान भी है बेचारी। हमेशा मेरे कहे पर चलेगी।"

"अच्छा-अच्छा भई।" डिप्टी साहब बोले—"जैसी तुम्हारी मर्ज़ी। लेकिन अभी इस बात का वक़्त कौन सा है ?"

"मैं तो आपकी राय मालूम करना चाहती थी।"

"मेरी राय हमेशा आपकी मर्ज़ी की मुहताज रहेगी।" उन्होंने शरारत आमेज़ नज़रों से अपनी बेगम की तरफ़ देखा। ज़ाकिरा बीबी की नज़रें खुद-बखुद नीचे झुक गईं।

ज़ाकिरा बीबी का ज़हन माज़ी के तानों-बानों में बहुत बुरी तरह उलझा हुआ था। इस वक़्त रह-रहकर उन्हें अहदे-रफ्ता की एक-एक बात याद आ रही थी।

रुखसाना ने मुंशी फ़ाज़िल का इम्तहान बड़े शानदार तरीक़े से अव्वल नम्बर में पास कर लिया था। और उसकी इस अज़ीमुलशान कामयाबी के सिलसिले में डिप्टी साहब ने एक शानदार तकरीब मनाने का प्रोग्राम बनाया था।

सहभोज भी था और नृत्य तथा संगीत का कार्यक्रम भी। दूर-नज़-दीक हर किस्म के रिश्तेदारों को दावती-कार्ड भिजवाए गए थे। दोस्त और अहबाब भी जमा किए गए थे।

डिप्टी साहब ने इस तकरीब की खुशी में दो दिन की दावत का शानदार प्रोग्राम बनाया था। बड़े आदमी थे, दिल वाले थे और तकरीबात (उत्सव) मनाने का शौक था उन्हें। वे तो दावतों की तरतीब का बहाना ही ढूंढा करते थे। लिहाज़ा यह बहाना उन्हें हाथ आ गया था और वे अपने दिल का शौक पूरा कर रहे थे।

उन्होंने यह भी लिखवाया था दावती-कार्ड में कि आने वालों की आमदो-रफ्त का खर्चा वह खुद अदा करेंगे। न जाने क्यों, वे अपनी चहेती बेटी की यह तकरीब इस अन्दाज़ में मना रहे थे, जैसे कि वह उसका ब्याह रचा रहे हों। तकरीब में अभी आठ दिन बाकी थे, लेकिन प्रबन्ध उन्होंने अभी से शुरू कर दिए थे।

उन्होंने तहसीलदार साहब को बुलवा कर कहा—

"जानते हो, बाबू मथुराप्रसाद कि मैंने तुम्हें किसलिए तकलीफ दी है ?"

"आप हुक्म दीजिए, हज़ूर ! आपका काम मेरे लिए तकलीफ नहीं, राहत है।"

"तुम्हारी भतीजी मुंशी फ़ाज़िल हो गई है।"

"अच्छा।" बाबू मथुराप्रसाद ने खुश होकर कहा—"मुबारक हो।"

"और जानते हो, मथुराप्रसाद।" डिप्टी साहब जैसे कि झूम गए—"मुंशी-फाज़िल का इम्तहान उसने अव्वल दर्जा में पास किया है।"

"अरे वाह साहिब।" मथुराप्रसाद पुरजोश अन्दाज में बोले—"बड़ी ज़हीन है, हमारी रुखसाना बिटिया ! भगवान उसकी उमर में बरकत दें।"

"ख्याल है कि उसकी इस शानदार कामयाबी पर एक शानदार किस्म की दावत हो जाय। एक ऐसी तकरीब, कि लोग बरसों याद रखें।"

"ज़रूर, साहिब, ज़रूर। दावत तो होनी ही चाहिए।" मथुरा-

प्रसाद ने कहा—"हुक्म दीजिए, मेरे जिम्मे आप क्या काम सौंप रहे हैं ? मैं इस तकरीब के लिए दिल खोलकर काम करूँगा।"

"आपको उम्दा किस्म की मिठाइयों और पकवानों के लिए दस मन घी का इन्तजाम करना है, मथुराप्रसाद जी ! हमारे हिन्दू दोस्त और उनके घरवाले भी इस खुशी में शरीक हो रहे हैं। और हां, किसी माकूल किस्म के हलवाई का इन्तजाम भी आपको करना है। बल्कि मैं तो इस महकमे का काम ही आपको सौंप रहा हूं। जो चाहिए और जैसा चाहिए पकवाइए। लेकिन यह खयाल रहे कि हर चीज़ क्लास वन हो और उम्दा हो।"

"बड़ी खुशी से साहिब ! अगर शिकायत का मौका मिले, तो गर्दन मार दीजिएगा।"

"और हां, ताजा और उम्दा किस्म की सब्जियों का इन्तजाम भी आप ही करेंगे।"

"वह तो करना ही है !"

"और कोई उम्दा किस्म की गाने वाली—" डिप्टी साहिब ने मुस्कराकर कहा—"इसमें तो आपको खास तजुर्बा है।"

"जर्रानवाजी है, हजूर की।" मथुराप्रसाद मुस्कराए—"यह इन्तज़ाम भी हो जायगा।"

"और कव्वाल ?"

"वह आप जानिए, साहिब ! इसमें बन्दे का दखल ज़रा कम है।"

"अच्छा ! यह इन्तज़ाम हम कर लेंगे।" डिप्टी साहिब सोचने लगे। बोले—"वह हबीब कव्वाल कैसा रहेगा ?"

"बहुत उम्दा ! लेकिन वह आएगा देहली से ? मसरूफ़ ज्यादा रहता है।"

"उसका बाप भी आएगा, मथुराप्रसाद !" डिप्टी साहिब पूरे जोक से साथ बोले—"इस पर हमें पूरा भरोसा और शक्ति है।"

"यह बात तो सच है, डिप्टी साहिब !" मथुराप्रसाद ने कहा—

"मेरी राय में उसके पास दिल्ली किसी को भिजवा दीजिए।"

"कल ही सत्तार को एक हज़ार नक़द देकर दिल्ली भेजता हूं।"

"बस ठीक है।" मथुराप्रसाद ने कहा—"एक हज़ार तो बहुत ज़्यादा है। पांच सौ में तो पांच कव्वाल आ जायेंगे।"

"यही तो मैं भी कह रहा हूं। लेकिन वह चूंकि बहुत मसरूफ़ रहता है, लिहाजा मैं तो उसे हर कीमत पर बुलाने के लिए तैयार हूं।"

"बहुत शानदार प्रोग्राम हो जायगा।" मथुराप्रसाद ने कहा।

"हां ! एक दिन तो सबसे पहले मिलाद शरीफ़ होगा। दूसरे दिन दो-चार घण्टे नाच और फिर सुबह तक कव्वाली।"

"बड़ा मज़ा आएगा।" मथुराप्रसाद ने ताईद के साथ-ही-साथ पूछा—"महमान कहां-कहां से आ रहे हैं ?"

"देहली, लखनऊ, कानपुर, इलाहाबाद, बरेली, प्रतापगढ़, बनारस और आस-पास की दूसरी जगहों से।"

"यह तो अच्छी-खासी शादी हो गई।"

"हां, भई मथुराप्रसाद जी।" डिप्टी साहिब बोले—"मेरी नज़रों में तो दौलत का सही प्रयोग यही है कि खाओ-खिलाओ, खर्च करो और फिर कमाओ।"

और फिर थोड़ी देर और बैठकर मथुराप्रसाद चले गए। और जब मथुराप्रसाद जी जा चुके तो डिप्टी साहिब उठकर जनानखाने में आ गए।

"मैंने कहा—बेगम, सुनती हैं आप ?" वह सीधे बावर्चीखाने में आ गए। बीबी को देखकर बोले—

"आखिर यहां क्या करती हैं गर्मी और धुएं में ? कितनी दफ़ा कहा कि यह जगह आपके लिए नहीं है !"

"फिर कहां है मेरी जगह ?"

"चपरखट पर—और—और—"

"अच्छा-अच्छा !" ज़ाकिरा बीबी मुस्कराइं। उन्होंने आंखों से

मुगलानी बी को इशारा किया—"बस-बस, मैं समझ गई।"

"फिर सब-कुछ समझते हुए भी आप यहां क्यों घुसी रहती हैं?" वह आहिस्ता से बोले—

"जबकि आप यह समझती है कि आपकी जगह मेरे दिल में है।"

"हां-हां, ठीक है।" वह बोलीं—"मुर्ग पलाव पकाने आ गई थी ज़रा। आप चलिए, मैं आती हूं।"

और फिर थोड़ी-सी देर बाद वह आ गई।

"फ़रमाइये!"

"अपनी बेटी रुख़साना की कामयाबी की ख़ुशी में एक शानदार तकरीब मनाने जा रहा हूं।"

"मुबारक हो।"

फिर इस तकरीब की पूरी तफ़सील बताकर वह कहने लगे—

"आज रात खाने के बाद हम बैठकर महमानों की फेहरिस्त बनाएंगे। खयाल रखिएगा, कोई रह न जाय।"

ज़ाकिरा बीबी मुस्कराने लगीं। वह बोले—

"यह आप मुस्करा क्यों रही हैं?"

"इसलिए कि यह सब-कुछ हो चुका है। फेहरिस्त तरतीब देकर कार्ड भिजवाए जा चुके हैं।" वह हंस दीं।

"और आप मुझे इस तरह बता रहे हैं, जैसे कि—"

"लाहौल विला···!" डिप्टी साहिब ख़ुद भी हंस दिए—"यह मेरे दिमाग को क्या होता जा रहा है, बेगम! मैं इतनी बड़ी बात यकदम से भूल कैसे गया?"

"वल्लाह! हैरत है!"

"आपने बादाम का हरीरा पीना और हलवा खाना छोड़ जो रखा है।" वह मुस्कराईं—"फिर से शुरू कर दीजिए।"

"लेकिन एक शर्त पर।"

"वह क्या?"

"वह यह कि आप हर लम्हा मेरे दिल-दिमाग में इस अन्दाज़ से न घुसी रहा कीजिए कि आपके सिवाए मैं हर बात भूल जाऊं।"

"अच्छा-अच्छा !"

ज़ाकिरा बीबी खुशमगीं अन्दाज़ से उनकी तरफ देखकर बोलीं—

"बहुत ज्यादा न बनाया कीजिए !"

"मैं बना रहा हूं आपको ?"

"तो मज़ाक कर रहे होंगे आप !"

"क़सम ले लीजिए।"

और फिर यह तकरीब बड़ी धूम-धाम से मनाई गई। इस तकरीब में कस्बा करीमगंज के ताल्लुकेदार और उनके घर वाले भी शामिल थे। क़स्बा करीमगंज के ताल्लुकेदार साहिब पोतड़ों के रईस थे। कई मुसम्मल गांवों के और कस्बों के वे मालिक थे। उनकी बेगम का इन्तकाल हो चुका था। बीबी के मरने के बाद उन्होंने दूसरी शादी नहीं की थी। वे थे और उनकी दो बेटियां थीं और उनका एक बेटा था— जलील अहमद ! और ये सब-के-सब इस तकरीब में शामिल थे। ताल्लुकेदार साहिब और डिप्टी साहिब में पुरानी दोस्ती थी और उनकी यह दोस्ती उनके बाप-दादा के वक़्त से चली आ रही थी। उनके बाद उनके बाप भी एक दूसरे के दोस्त थे।

जलील अहमद की उमर कोई बीस बरस की रही होगी। डिप्टी साहिब को यह लड़का जलील बेहद पसन्द आया और जलील की बड़ी बहिन राबिया को, जिसकी शादी हो चुकी थी, रुखसाना बेहद पसन्द आई। रुखसाना की उमर पन्द्रह साल की थी। उसने दिल-ही-दिल में अपने छोटे भाई के लिए रुखसाना को पसन्द कर लिया।

उसने ज़ाकिरा बेगम से इस तकरीब के दूसरे दिन कहा—

"एक बात अर्ज़ करूं, चची जान !"

"ज़रूर कहो, बेटी !"

"मान जायेंगी आप ?"

"बात क्या है ?"

"पहले वायदा कीजिए कि आप मान जायंगी !"

"मानने वाली बात तो तुम शायद कहोगी नहीं !"

"बिल्कुल !"

"फिर कहो !"

"लेकिन वायदा मैं पहले ले लेना चाहती हूं।"

"अच्छा वायदा !"

"अपनी बेटी रुखसाना को हमारी भाभी बना दीजिए।"

और अभी ज़ाकिरा बीबी कुछ कहने भी न पाई थीं कि वह फ़ौरन बोल पड़ी—

"जलील, मेरा छोटा भाई बड़ा होशमन्द है। बासलीका, खबसूरत और मिजाज का नेक है। वह भी आया हुआ है। अगर चाहें तो खुद भी देख लीजिए। मैं किसी बहाने से अन्दर बुलवा लूंगी। आप छिपकर पर्दा से देख लीजिएगा।"

"मैं रुखसाना के अब्बा जान से बात करूंगी।"

"वे मान जाएंगे न ?"

राबिया उमंगों और ख्वाहिशों के दरम्यान बोली।

"उन्हीं के मानने या न मानने का तो सवाल है, बेटी !" जाकिरा बीबी बोलीं—"लड़की का मामला है और......।"

"आपको तो मेरी इस तजवीज से इत्तिफ़ाक है न !" राबिया झट से बोल पड़ी।

"हो भी सकता है। लेकिन जब तक कि मैं लड़के को न देख लूंगी मैं कोई—" वह फिर बेकरारी से बोली—

"जलील को मैं आपको अभी दिखाए देती हूं।"

"मैं डिप्टी साहिब से बात करूंगी।"

और फिर इस बातचीत के थोड़ा ही अर्सा बाद जाकिरा बीबी डिप्टी साहिब से बातचीत कर रही थीं—

"आपकी बेटी के लिए एक रिश्ता आया है।"

"रुखसाना के लिए !"

"और क्या आपकी रुखसाना से अलहदा भी कोई बेटी है ?" वह मुस्करा दी—"उसी की बात मैं कर रही हूं।"

"अच्छा !"

"हां !"

"लेकिन मेरे दिल ने तो रुखसाना के लिए किसी और को पसन्द किया है।"

"आपने रुखसाना के लिए कसी और को पसन्द कर रखा है। लेकिन यह कब हुआ ?"

"इसी तकरीब के मौके पर।"

"अच्छा !" वह मुस्कराईं—"और इसी तकरीब के मौके पर मुझे भी एक रिश्ता मिला है।"

"किसने रिश्ता मांगा है ?" डिप्टी साहिब ने चाहत जाहिर करते हुए पूछा।

"राबिया ने।"

"राबिया ! कौन राबिया ? और किसके लिए उसने रिश्ता मांगा है ?"

"आपके दोस्त कस्बा करीमगंज के ताल्लुकेदार की बेटी ! उसी ने अपने भाई जलील के लिए हमारी बेटी का रिश्ता······!"

"अरे वाह !" वह यकबारगी बोल पड़े।

"यानि यह कि दोनों तरफ से एक ही बता हुई है।"

"क्या मतलब ?"

"मैं भी तो उसी जलील की बात कर रहा हूं। खुदा कसम बेगम वह लड़का मुझे बेहद पसन्द है।"

"तो बस फिर क्या······।" जाकिरा बीबी खुश होकर बोलीं—"कर लूं हां ?"

"न हाँ कीजिए और न ना।" उन्होंने राय दी—"बस, गोल-मोल बात कर के टाल दीजिए।"

"लेकिन यह क्यों ?"

"मैं जरा लड़के के बारे में और छानबीन करलूं। चाल-चलन भी तो देखना जरूरी है। और फिर मैं चाहता हूं कि यह बात तात्लुकेदार साहिब खुद निकालें। उनकी बेटी की और बात है और उनकी बात और होगी।"

"यह बिल्कुल ठीक है।" जाकिरा बीबी बोलीं—"मैं राबिया को ऐसा जवाब दे दूंगी कि जो न इकरार ही हो बिल्कुल और न इनकार ही हो। फिर हम इतमीनान से इस रिश्ते पर खूब अच्छी तरह से सोच-विचार कर लेंगे।"

और फिर यह बात इसी जगह खत्म हो गई। इस तकरीब के बाद साल ही भर के अन्दर डिप्टी साहिब का इन्तकाल हो गया। और जाकिरा बीबी शौहर के गम में बोल गईं।

लेकिन इस वाकया के बाद से, जब कि ताहिर ने अपनी शादी के बारे में अपनी अम्मा से खुद कहा था, वह ताहिर की शादी के बारे में सोचने लगीं।

उनका खयाल यह था कि ताहिर और रुखसाना की शादी एक ही वक्त में हो जाय तो अच्छा है। न जाने शादी के बाद ताहिर का रवैया क्या हो। वह ताहिर से बेहद मुहब्बत इसलिए करती थी कि वह ताहिर की मां थी। लेकिन ताहिर की तरफ से निश्चिन्त वह बिल्कुल नहीं थीं। उन्हें ताहिर पर भरोसा बहुत कम रह गया था।

लिहाजा वह ताहिर के रिश्ते के लिए सोचने लगीं और साथ ही साथ अपनी बेटी के रिश्ते के बारे में भी। वह जल्दी से जल्दी बेटी की जिम्मेदारियों से छुटकारा पा लेना चाहती थीं।

और यह उनकी खुशकिस्मती ही तो थी कि जबकि वह अपनी बेटी के रिश्ते के लिए परेशान थीं, एक बार बिल्कुल उम्मीद के विपरीत

राबिया उनके यहाँ फिर आ गई।

वह उसे इस तरह अचानक अपनी हवेली में देख कर खिल उठीं। उनके दिल को ढारस हुई कि अब कोई बात जरूर बन जायगी। वह यह समझ गई थीं कि राबिया जरूर अपने भाई के रिश्ते के लिए आई है।

"अरे! आओ-आओ, बेटी!"

उन्होंने राबिया को पलकों पर उठाया और अपनी आँखों में जगह दी।

"कहो, खैर तो है? बगैर खबर किए रास्ता भूल गई थी।"

"नहीं चची जान!" वह उनसे लिपटती हुई बोली—"रास्ता ही तो हम नहीं भूले। तभी तो आए हैं। अब्बा जी भी बाहर मरदाने में बैठे हैं।"

"अच्छा-अच्छा। बड़ी खुशी हुई।"

उन्होंने मुगलानी को आवाज दी। उन्होंने मुगलानी बी से कहा—

"बाहर जाकर खादिम हुसैन से कहो कि ताल्लुकेदार साहिब तशरीफ़ लाए हैं। उनकी देख-भाल करे। और तुम फ़ौरन शर्बत लेकर जाओ।"

और फिर उनके नयन भर आए—

"काश कि डिप्टी साहिब जिन्दा होते, बेटी।" एक सर्द आह उनके होठों से फिसल गई—"फिर वे खातिर-तवाजा करते अपने दोस्त की।"

"कोई बात नहीं, चची जान।" राबिया गड़बड़ा गई—"सब्र कीजिए। और फिर हम कहाँ कोई गैर हैं।"

और फिर कुछ देर तक इधर-उधर की बातें करने के बाद राबिया ने बात निकाली—

"अब्बा जी ने खास तौर पर आपके यहाँ आने के लिए मुझे मेरी ससुराल से बुलवाया है।"

"अच्छा।"

"हाँ, चची जान! यूँ समझ लीजिए कि अब्बाजान जलील का

रिश्ता मांगने आए हैं आपके दर पर।"

ज़ाकिरा कुछ सोचने लगी कि राबिया झट से बोल पड़ी—

"देखिए चची जान, मैं यह तै कर चुकी हूं कि जलील की शादी रुखसाना से ही होगी। मेरा भाई बड़ा लायक और शरीफ़ है। अगर कुछ ऊँच-नीच हो तो आप मुझे चोटी से पकड़ लीजिएगा।" वह जोर देकर बोली—"मैं हर तरह का जिम्मा लेती हूं।"

ज़ाकिरा बीबी सोचने लगी—इन्तजार तो मैं खुद भी इस रिश्ते का कर रही थी, लेकिन क्या पता कि जलील किस प्रकार का लड़का है। वे होते तो देख-भाल कर लेते। मैं बेचारी पर्दानशीन औरत! वह उलझ गईं। मैं क्या कर सकती हूँ भला और अभी वह यह सब सोच रही थीं कि राबिया बोली--

"आप कोई तरद्दुद न कीजिए, चची जान। मेरे भाई का चाल-चलन आईने की तरह साफ है। बेहद नेक और प्यारा लड़का है जलील, हमारी ज़ात-पात भी ऊँची है। रुखसाना बहिन, अल्लाह ने चाहा तो जिन्दगी भर सुख और चैन से रहेगी।"

ज़ाकिरा बीबी सोचने लगी—काश! यह ताहिर ही किसी काम का होता। और जलील के बारे में पुच्छ-गिच्छ करके कोई राय दे सकता। बड़ा भाई है, वह शादी करता अपनी बहिन की! मुझे बता सकता जलील के बारे में।

वह यही सोच रही थीं कि राबिया फिर बोली—

"सोच क्या रही हैं आप—?"

"सोच यह रही हूँ कि मैं क्या फैसला कर दूं, बेटी!"

"मुझ पर यकीन कीजिए आप, चची जान। जलील मेरा भाई सैंकड़ों में से एक है और ब-खुदा आपकी या रुखसाना बहिन की दुश्मन मैं हर्गिज नहीं हूं।"

ज़ाकिरा बीबी ने दिल मज़बूत करके कह दिया—

"अच्छा! यह रिश्ता मुझे मंजूर है, बेटी।"

और यह कहते-कहते उनकी आवाज़ भर्रा गई। उनकी आँखों से आँसू टपकने लगे। राबिया ने उन्हें बेअख्तयार होकर लिपटा लिया—

"ग़म न कीजिए, चची जान! लड़कियाँ होती ही हैं ब्याहे जाने के लिए और फिर उसे भी अब अपना ही घर समझिए। समझ लीजिए कि आपकी बेटी आप ही के घर में है। जलील को आप ताहिर भाई से कम न समझिए। वह बड़ा भला है। हमेशा आपका बेटा बनकर रहेगा।"

और फिर यह रिश्ता तै हो गया। राबिया बोली—

"मैं यह खुशखबरी अब्बा जी को सुना दूँ।" और यह कह कर वह उठी। मुगलानी बी आगे-आगे दौड़ी—

"मैं मर्दाना बैठक में पर्दा करा देती हूँ। हो सकता है, वहाँ कोई और बैठा हो।"

मर्दाना बैठक से, जो नौकर थे, वे हटा दिये गए। राबिया अपने बाप के पास आ गई। वह आते ही बोली—

"मुबारक हो, अब्बाजान। चची बेगम ने रिश्ता मंज़ूर फ़रमा लिया है।"

और यह खुशखबरी सुनकर ताल्लुकेदार साहिब यकबारगी मखमल के मोढे से उठकर खड़े हो गए। वह बहुत ज्यादा खुश दिखाई दे रहे थे। वे बेअख्तयार कह उठे—

"यह सब तुम्हारी कोशिशों का नतीजा है, बेटी! और यह हमारी मुहतरिमा भाभी साहिबा की मेहरबानी है। मेरी दिली आरज़ू पूरी हो गई।"

वह बड़े रंज और अफसोस के साथ बोले—

"काश! इस खुशी के मौके पर हमारे दोस्त भाई अकरामअली साहिब जिन्दा होते! ब-खुदा, उन्हें भी इस रिश्ते से बहुत खुशी होती।"

"तो फिर मिठाई खिलवाइये, अब्बाजान।" राबिया ने अपने बाप से कहा।

"जरूर बेटी, जरूर ।"

"मैं रतन नगर का सारा हिस्सा लूँगी नेग में ।"

"रतन नगर में जो मेरा दो आने का हिस्सा है, वह सब का सब मैं तुम्हें नेग में दे दूँगा—बस ना ।"

"मैं चची बेगम से शादी की तारीख माँगूं ?"

"बेशक, बेटी ।"

और फिर वह भागी हुई अन्दर आई । आते ही वह ज़ाकिरा बेगम से बोली—

"शादी की तारीख तै कर दीजिए, चचीजान ।"

"अच्छा बेटी । शादी की तारीख भी तै हो जायगी । अब इतनी जल्दी भी क्या है । रिश्ता तो मैंने मान ही लिया है ।" ज़ाकिरा बीबी उस समय बहुत उदास-सी हो रही थी । रुन्धे हुए गले के साथ कहने लगीं—"एक हफ्ते के बाद तारीख भी तै हो जायगी ।"

"तो मैं मंगनी की अंगूठी रुखसाना बहिन की उंगली में डाल दूँ ?"

"अब ऐसी भी क्या भागड़ मची है, बेटी ! डिप्टी साहिब माना कि नहीं हैं, फिर भी मैं जिन्दा हूँ अभी । रुखसाना का बड़ा भाई मौजूद है । इस सादगी से तो डिप्टी साहिब नजला-जुकाम दूर हो जाने पर भी खुशी नहीं मनाया करते थे । तुम तो जानती हो, बेटी, मैं उनकी रूह को शर्मिन्दा नहीं होने दूँगी । मंगनी की रस्म ज़रूर अदा होगी । लेकिन डिप्टी साहिब की शान के मुताबिक !"

"तो फिर क्या—" राबिया ने पूछा—"कब मंगनी की रस्म आप अदा करेंगी, चची जान ?"

जाकिरा बीबी उंगलियों पर हिसाब लगा कर बोलीं—

"आज रज्जब की चार है । बारह रज्जब की सुबह, उस दिन मंगनी की रस्म से हम मुक्त हो जायंगे ।"

"बहुत अच्छा, चचीजान । बहुत खूब !" राबिया खुश होकर

बोली—"मैं अभी जाकर अब्बाजान से कहे देती हूँ।"

और यह कह कर वह फिर मर्दाना बैठक की तरफ लपकी। मुगलानी बी पर्दा कराने के लिए आगे-आगे दौड़ी। वह पर्दा कराने के लिए अपना गरारा और दुपट्टा सम्हालती हुई राबिया के आगे-आगे भागी जा रही थी।

"गफूरुन रहीम!" ज़ाकिरा बीबी के लबों से एक सर्द आह के साथ यह नाम बाहर आया—"सब-कुछ ठीक ही हो, मेरे अल्लाह! मैं बेवा हूँ। मेरी बच्ची रुखसाना यतीम है। और यह उसके भविष्य का सवाल है। खुदा करे, सब ठीक ही हो, मेरे मौला!" वह बड़ी उदास थी।

"मैं नातजुर्बाकार हूँ। मुझे कुछ नहीं मालूम। और अपना बेटा, हालांकि जवान है, लेकिन बेफ़िक्र और नालायक है बिल्कुल। उसे बहिन क्या, किसी से भी कोई दिलचस्पी या लगाव नहीं है।"

इतने में राबिया अपने बाप के पास से वापिस आ गई। आते ही वह बोली—

"अब्बाजान कहते हैं कि ठीक है, चचीजान। उन्हें आपकी हर तजीवज से पूरा-पूरा इत्तफ़ाक है।

"अच्छा बेटी!"

ज़ाकिरा बीबी ने 'अच्छा बेटी' कुछ इस तरह कहा, जैसे कि उनके हलक में कोई चीज फँस गई हो। वह अभी तक गुम-सुम दशा में थीं। उस वक्त उसे डिप्टी साहिब बड़ी बुरी तरह याद आ रहे थे। वह अपने आपको इन्तहाई बेबस और हकीर महसूस कर रही थी। उसे ऐसा महसूस हो रहा था, जैसा कि वह इन्तहाई लाचार हो, लावारिस हो, और बे-आसरा हो।

उसके दिल से धुआँ उठ रहा था कि राबिया ने सकूत को तोड़ते हुए कहा—

"तो फिर इजाजत है, चचीजान !"

और वह यकबारगी जैसे ख्वाब से बेदार हो गई हों। गड़बड़ाते हुए बोलीं—

"अब ऐसी जल्दी भी क्या है, बेटी ! हम तो तुम लोगों की कोई खातिर-नवाजा भी नहीं कर सके। अभी ठहरो !"

"लेकिन !"

"नहीं बेटी !"

उन्होंने मुगलानी बी को हुक्म दिया—

"ताल्लुकेदार साहिब के लिए नाश्ता लेकर जाओ !"

और वह जल्दी-जल्दी खुद भी भाग-दौड़ करने लगीं।

जाकिरा बेगम ताहिर का इन्तजार कर रही थी। वह अपने दोस्तों के साथ दो दिन से शिकार पर गया हुआ था। जब वह दूसरे ही दिन वापिस आ गया तो जाकिरा बेगम ने उससे बात की—

"तुम्हें अपनी अफ़रोज खाला याद हैं, ताहिर !"

"क्यूं, क्या बात है, अम्मी ?" वह बोला—"याद क्यों नहीं है, अफ़रोज खाला।"

"मैं उनकी बेटी अनवरी से तुम्हारा रिश्ता करने की बात सोच रही हूँ।"

"अरे वाह !" वह यकबारगी खुश हो गया—"तो हमारी अम्मी को इस खाकसार का खयाल आ ही गया। गोया कि मजार-मुबारक पर हमारी मांगी हुई दुआ कबूल हो गई।"

उसने अपनी मां को लिपटा लिया—

"उनकी साहिबजादी अनवरी पर तो यों समझो कि मैं—"

जाकिरा बेगम ने बड़ी तर्शरूई से उसकी बात काट दी। वह उसका

जुमला समझकर उसे पूरा होने देना नहीं चाहती थी।

"बहुत ज्यादा बक-बक मत करो, ताहिर!" वह जैसे कि खुद झेंप गई हों। चन्द लम्हे रुककर बोलीं—

"तो मैं कल ही इलाहाबाद जा रही हूँ। अफ़रोज से रिश्ता पक्का करके आऊँगी। अनवरी, उनकी बेटी मुझे भी पसन्द है।" उन्होंने ताहिर को बताया—

"इसी महीने की बारह तारीख को रुखसाना की मंगनी है, ताल्लुकेदार साहिब के बेटे जलील के साथ। मैंने हाँ कर ली है।"

"यह तो और भी अच्छा हुआ। बहुत अच्छा किया आपने जो रिश्ता तै कर दिया। जलील बड़ा शरीफ़ और नेक लड़का है। खूबसूरत भी बहुत है और फिर ताल्लुकेदार साहिब का इकलौता बेटा भी है—बिल्कुल मेरी तरह।"

और यह सुनते ही जाकिरा बीबी के सीने से जैसे कि एक बहुत बड़ा पत्थर हट गया हो। जैसे कि शदीद गर्मी और घुटन के बाद खुशगवार हवा के झोंके चल पड़े हों यकबारगी जैसे कि डूबते को यकदम से किनारा मिल गया हो। यकबारगी खुश होकर बोलीं—

"तो सचमुच ठीक किया मैंने यह। जलील अच्छा लड़का है न, ताहिर! तुम्हें भी पसन्द है वह। नेक, शरीफ़ और पाकबाज है न जलील!"

"हाँ-हाँ अम्मी! खुदा की कसम, वह लाखों में एक है। मैं तो खुद भी रुखसाना के लिए कभी-कभी जलील के बारे में सोचा करता था।" और फिर वह यकबारगी बोला—"लेकिन यह बात हुई कैसे? जलील का रिश्ता रुखसाना के लिए यह अचानक आ कैसे गया?"

"तुम्हारे अब्बाजान की जिन्दगी में ही यह बात उन्हीं लोगों की तरफ से एक दफा उठी थी। तुम्हारे अब्बाजान को भी जलील पसन्द आया था। वह रुखसाना की कामयाबी के सिलसिले वाले जश्न में आया था न, डिप्टी साहिब ने उसे देखा था और पसन्द कर लिया था।

ग्रौर फिर वह उसी तरफ से श्राए हुए पयाम पर खुश भी बहुत हुए थे।"

ताहिर ने पूछा—"तो फिर उसी समय ग्रब्बाजी के सामने यह रिश्ता तै नहीं हुग्रा था क्या?"

"नहीं।" जाकिरा बीबी ने बताया—"तुम्हारे ग्रब्बाजान मरहूम ने कहा था कि मैं लड़के के चाल-चलन के बारे में ज़रा मालूम करलूं, आप इस तरह बात कीजिए कि एकदम से न इंकारी हो ग्रौर न इकरार।"

वह एक सर्द ग्राह भरकर बोलीं—

"ग्रौर फिर उसके बाद वह मुझ ग़म-नसीब को ग्रकेली छोड़कर ग्रल्लाह के प्यारे हो गए।"

"वाकई!" ताहिर ने न जाने दिल से या सचमुच ग्रफ़सोस जाहिर करते हुए कहा—"बेचारे ग्रब्बाजी हम लोगों की कोई भी खुशी देखने के लिए जिन्दा न रहे। कितने बदनसीब हैं हम लोग!"

ग्रौर फिर वह फ़ौरन पूछने लगा—

"लेकिन यह रिश्ते की बात लेकर ग्राया कौन था?"

"खुद ताल्लुकेदार ग्रौर उनकी बेटी राबिया।"

"ग्रापने बहुत ग्रच्छा किया ग्रम्मीजान, कि हां कर ली। मेरी बहिन रुखसाना बहुत खुश रहेगी वहां। जलील बहुत ग्रच्छा लड़का है।"

"तुमने जलील की ग्रच्छाई की तसदीक करके मेरे दिल पर से बहुत बड़ा बोझ हटा दिया। सच मानो ताहिर, मैं बहुत बेचैन थी कि न जाने यह ग्रच्छा हुग्रा कि बुरा। खुदा न करे, कल के दिन कोई ऊँच-नीच हो तो—?"

"नहीं ग्रम्मी जान! जलील बड़ा ग्रच्छा है। ग्रापने बड़ा ग्रच्छा किया कि रिश्ता रद्द नहीं किया। वरना फिर हम रुखसाना के लिए जाने कहां-कहां नजरें दौड़ाते फिरते! रिश्ते के लिए मुहताज बैठा रहना भी कष्टकारक होता है न।"

"यही तो मुसीबत होती है, बेटे! लड़की वालों के लिए कि मुंह

में घुंघनिया डाल कर बैठे रहो। खुद से जबान खोली नहीं जा सकती। पयाम खुद से आए तो ठीक, वरना पसन्द होते-होते भी पहल न कर सको।"

वह उलझ कर बोली—

"हम मुसलमानों के यहाँ का यह दस्तूर कभी-कभी तो मुझे बहुत खलने लगता है। हमारे यहाँ दोतरफ़ा तलाश ही नहीं हो सकती।"

"हाँ, यह तो है, अम्मी जान!" ताहिर ने कहा और फिर उसने बड़ी बेताबी से सवाल किया—

"तो आप इलाहाबाद कब जायेंगी, अम्मी?"

"कल ही। सोच रही हूँ कि वहाँ भी जाकर बात पक्की कर आऊँ। तो तुम दोनों के फ़र्ज़ से एक साथ ही मुझे छुट्टी मिल जाय।"

"मैं भी आपके साथ चलूँ, अम्मी जान?"

"मैं तो अपने साथ एक नौकर और मुग़लानी बी को लेजाना चाहती थी, लेकिन तुम चलो तो और भी अच्छा है। इसलिए कि हम वहाँ से शादी के लिए कुछ सामान-वामान भी खरीद लेंगे। आखिर को दुहरी-दुहरी शादियाँ हैं।

"हाँ अम्मी जान! यह ठीक हो रहेगा!"

और फिर दूसरे ही दिन ज़ाकिरा बीबी, ताहिर, एक मुलाज़िम और मुग़लानी बी के साथ इलाहाबाद के लिए रवाना हो गई। चलते-चलते भी उन्होंने हवेली के मुलाज़िमों और नौकरानियों को बहुत-सी हिदायतें दी थीं।

और अपनी बेटी रुखसाना से उन्होंने कहा था—

"देखो बेटी, मैं आज ही रात तक वापिस आ जाऊंगी। या फिर हो सकता है कि मैं कल शाम तक इलाहाबाद से लौटूं। तो हवेली के अन्दर किसी भी ऐसी-वैसी औरत को न आने देना। मर्दाने की तरफ़ भूल कर भी न जाना। और हवेली की छत-वत पर भी न निकलना। बहुत एतिहात से रहना, बेटी। लड़की ज़ात हो। ज़माना बहुत बुरा है।

और अब तुम अल्लाह रक्खे, जवान हो। अल्लाह न करे, कोई ऊंच-नीच हो जाय। मारने वाले का हाथ तो पकड़ा जा सकता है, कहने वाले की ज़बान कोई नहीं रोक सकता। तुम एक बहुत ही ऊँचे और शरीफ़ खानदान की बेटी हो।"

और फिर उस वक़्त, जबकि वह अपनी फ़िटन पर सवार होके जा रही थीं, एक बार और वापिस आकर उन्होंने रुखसाना से पूछा था—

"तुम मेरी बातें समझ गई हो न, बेटी!"

और रुखसाना ने आहिस्ता से कहा था—

"जी हाँ, अम्मी!"

फ़िटन के तेज़ रफ्तार घोड़ों ने अहमदपुर से इलाहाबाद का सफ़र कोई डेढ़ घण्टे में बड़े आराम से तै कर लिया। अहमदपुर इलाहाबाद से बीस मील उत्तर-पूरब को था।

फ़िटन जब अफ़रोज़ बेगम के घर के दरवाज़े पर जाकर रुकी तो दो-एक बच्चे बाहर आकर देखने लगे। जब अन्दर यह इत्तिला भिजवाई गई कि अहमदपुर से सवारियाँ आई हैं तो अफ़रोज़ बेगम का खुशी के मारे बुरा हाल हो गया। वह भागती हुई दरवाज़े तक आ गई।

इधर से ज़ाकिरा बेगम बुर्क़ा सम्हालती हुई फ़िटन से उतरीं और दहलीज में वे दोनों एक दूसरे से इस तरह गले मिलीं कि गिरते-गिरते बचीं। मुग़लानी बी ने दोनों को सम्हाला।

फ़ौरन से पेश्तर बाहर वाला कमरा खुलवा दिया गया। ताहिर और उनका मुलाज़िम हनीफ़ अन्दर आ गए। ताहिर रखे हुए मोढ़े पर बैठ गया और हनीफ़ ताहिर के पांव दबाने लगा। वह उसी जगह फ़र्श पर उकड़ूँ बैठ गया था।

हनीफ़ आका के पांव क्यों न दबाता। आखिर को वह गुलाम था बेचारा और ताहिर उसका आका था। हालांकि ताहिर न तो साईकल पर सवार होकर आया था और न घोड़े पर और न वह पैदल चलकर आया था कि थक गया होता। लेकिन यह सरमायेदाराना और

जागीरदाराना निज़ाम की देन थी। ये असूल थे बुर्जुआ समाज के। एक कम दर्जा के गरीब आदमी के लिए इससे छुटकारा कैसे मुमकिन था।

लिहाज़ा हनीफ़ ताहिर के पांव दबाता रहा और वह उस तरह बग़ैर किसी अहसास के उससे पांव दबवाता रहा। थोड़ी-सी देर में अन्दर से एक मुलाज़िमा साबुन और तौलिया और ताम्बे के बड़े से लोटे में हाथ-मुंह धोने के लिए पानी लेकर आ गई।

ताहिर कमरे के अन्दर ही कोने में रखी हुई चौकी पर उकड़ूं बैठ कर मुंह धोने लगा। वह मुलाज़िमा ताहिर के हाथ पर पानी लोटे से डालती रही और हनीफ़ अपने दोनों हाथों में तश्त लिए झुका खड़ा रहा।

थोड़ी ही-सी देर में अन्दर से सैनी में नाश्ता लग कर आ गया। वही मुलाज़िमा नाश्ता लेकर हाज़िर हुई थी। तख़्त पर दस्तरख्वान बिछा दिया गया। हनीफ़ पंखा लेकर खड़ा हो गया। मुलाज़िमा ने सैनी से चीजें उठा-उठा कर दस्तरख्वान पर सजा दीं। उसने आहिस्ता से कहा—

"बेगम साहिबा ने फ़रमाया है, आप नाश्ता कर लीजिए। अनवरी के अब्बा जी कचहरी चले गए हैं। उन्हें नौकर भेजकर इत्तिला करा दी जायगी। वकील साहब से छुट्टी लेकर वह आ जायंगे।"

"अच्छा।"

ताहिर ने कहा और वह तख़्त पर बैठकर नाश्ता करने लगा। हनीफ़ गर्मी और मक्खियों के न होने के बावजूद पंखा झलता रहा। नाश्ते में जलेबी, अण्डे का फागीना, हलुवा और बाजार के पराण्ठे थे।

नाश्ता के बाद मुलाज़िमा ने ताहिर से आकर कहा—

"हज़ूर को अन्दर बुला रही हैं।"

उसने हनीफ़ की तरफ़ एक छोटी-सी सैनी बढ़ाई—

"यह तुम्हारा नाश्ता है।"

सैनी में बासी रोटियां थीं, बासी दाल थी और चटनी थी। हनीफ़

सैनी लेकर नाश्ता करने लगा।

ताहिर मुलाज़िमा के साथ अन्दर जा चुका था।

"तसलीम खाला जान !"

"जीते रहो मियाँ, जुग-जुग जियो, सलामत रहो।" खाला की तरफ़ से उसे दुआएँ मिलीं ! वह बोलीं—

"माफ़ करना मियां, तुम्हें फ़ौरन अन्दर इसलिए नहीं बुलाया गया कि कुछ पर्दानशीन औरतें आ गई थीं।"

और फिर उन्होंने मुलाज़िमा से पूछा—

"नौकर को नाश्ता दे आई ?"

"जी !"

"और कोचवान को भी ?"

"नहीं तो बेगम साहिबा।"

"पागल है क्या !" वह गर्जी "क्या वह आदमी नहीं है बेचारा ?"

"अभी देकर आती हूँ, बेगम साहिबा !"

"जल्दी ले जा नाश्ता।"

वह फिर ताहिर की तरफ मुखातिब हुई—

"अरे ! तुम खड़े क्यों हो, मियाँ ! बैठो-बैठो।"

और ताहिर, जोकि अभी तक खड़ा था, उसी जगह पलग पर बैठ गया। अफ़रोज बेगम चीखीं—

"अरे बाहर से मोढ़ा लाने को कहा था !"

"तो क्या हुआ !" ताहिर बोला—'पलंग क्या बुरी है ? बैठ गया हूं, खाला जान !"

"तुम अफरोज, ताहिर को क्या गैर समझती हो ! आखिर तकल्लुफ की क्या जरूरत है ? बैठ तो गया है।"

"नहीं-नहीं।" अफ़रोज बेगम बोली—"फिर भी—"

जाकिरा बेगम की बात का जवाब देते हुए ताहिर से बोलीं वह—

"माफ़ करना मियाँ, हम तुम्हारे जैसे बड़े आदमी तो हैं नहीं। और

फि[illegible]री हवेली और कहाँ यह निगोड़ा किराए का मकान।" उन्होंने हल्केपन में कहा।

"और फिर तुम लोगों के आने की इत्तिला भी तो हमें नहीं थी। हालाँकि अल्लाह जानता है कि इस तरह अचानक आ जाने से हमें कितनी खुशी हुई है। यह हमारा दिल ही जानता है।"

"कैसी बातें करती हो, अफ़रोज़ !" ज़ाकिरा बीबी ने कहा—"अपनों में भी कोई तकल्लुफ़ करता है। और फिर यह अमीर-ग़रीब, छोटा-बड़ा, और हवेली की बातें···। कहीं तुम पागल तो नहीं हो गई हो।"

"अगर हम लोग आपको ग़ैर समझते तो बग़ैर इत्तिला आ ही क्यों जाते।"

ताहिर ने कहा। इतने में मुलाज़िमा सरकण्डे का मोढ़ा ले आई। ताहिर को इसरार करके उस पर बिठा दिया गया। अफ़रोज़ बेगम बोली—

"तुम्हारे खालूजान अब आते ही होंगे, मियाँ। नौकर को मैंने भिजवा दिया है।"

"कोई बात नहीं खालाजान !" ताहिर बोला—"तकल्लुफ तो कोई है नहीं।"

वह बातें तो अपनी खाला से कर रहा था, लेकिन उसकी बेताब नज़रें बार-बार इधर-उधर उठकर चोरी-चोरी किसी और की तलाश कर रही थीं। उसका दिल अनवरी को देखने के लिए बेताब था।

और अनवरी उसे कहीं नज़र नहीं आ रही थी। और वह उसे नज़र भी कैसे आ सकती थी। अब कोई पहले जैसी बात तो रही न थी। पहले वे खालाज़ाद बहिन-भाई ज़रूर थे, लेकिन अब उनका रिश्ता दूसरा हो रहा था। अनवरी की माँ ने ताहिर से उसका पर्दा करा दिया था। उनके रिश्ते की बात बहुत पहले से ही तो चल रही थी।

ताहिर थोड़ी देर तक अपनी खालाजान से इधर-उधर की बातें

करता रहा। और फिर उसके खालू साहिब आ गए। रस्मी बातचीत के बाद उठकर वह उनके साथ बाहर आ गया।

और जब ताहिर बाहर के कमरे में चला गया, तो ज़ाकिरा बीबी ने अफ़रोज़ से बातचीत शुरु की। वह बोलीं—

"मैं क्यों आई हूँ यहाँ, तुम जानती हो, अफ़रोज़ ?"

"कोई ख़ास बात है, आपा !"

"हाँ।"

"फ़रमाइये।"

"तुमने एक दफ़ा मुझसे अनवरी के बारे में बात की थी न।"

अफ़रोज़ का चेहरा खिल गया। उसकी आँखें चमकने लगीं। वह बड़ी बेताबी से बोली—

"एक दफ़ा तो क्या आपा, यह बात तो मैं आपसे कई दफ़ा कह चुकी हूँ। ताहिर मियाँ मुझे बहुत पसन्द हैं। मैं तो अपनी बेटी के कई पयाम रद्द कर चुकी हूँ। महज़ इस खयाल से कि—"

"मैं आज इसलिए आई हूँ"—ज़ाकिरा बीबी ने उनकी बात काटी। वह झट से बोल उठी—

"इसलिए तो नहीं कि मैं अनवरी के पयाम रद्द न करूँ ?"

"पागल हो गई हो क्या ?" ज़ाकिरा बीबी बड़े प्यार से बोली—"मैं अपना वायदा और तुम्हारा अरमान पूरा करने आई हूँ।"

"क्या ?" ख़ुशी की इन्तिहा से अफ़रोज़ बेगम का हार्ट फेल होते-होते बचा—"सच !"

"हाँ, अफ़रोज़ !" ज़ाकिरा बीबी ने कहा।

"अब मैं ताहिर का ब्याह जल्द कर देना चाहती हूँ।"

"मुबारक हो, आपा !" अफ़रोज़ अपनी ख़ुशी को समेटते हुए बोली—"मेरी तरफ से तो पहले भी इसरार था और अब भी इकरार है। बल्कि यह तो मेरा सबसे बड़ा अरमान है, जो आप पूरा कर रही हैं।"

"तो फिर यह रिश्ता तुम पक्का ही समझो, अफ़रोज़। मैं इसीलिए आई हूँ। तुम शादी की तैयारियाँ शुरू कर दो। मैं अपनी बेटी अनवरी को अगले ही महीने ब्याह कर ले जाना चाहती हूँ।"

"आपने मेरे दिल की सबसे बड़ी आरज़ू पूरी की है, आपा। मेरी बेटी अनवरी अपनी सारी जिन्दगी आपकी लौंडी बनकर रहेगी। कभी वह न अपनी आँख उठाएगी आपके सामने और न कभी अपनी ज़बान ही खोलेगी।"

"मुझे मालूम है बहिन। और तभी मैं उसे अपनी बहू बनाने आई हूँ।" ज़ाकिरा बीबी ने कहा—"मुझे इससे इन्हीं बातों की उम्मीद है।"

और फिर उसी वक्त ज़ाकिरा बीबी ने अनवरी की उँगली में मँगनी की अंगूठी पहना दी। मँगनी की मिठाई, जो कि वह साथ लेकर आई थीं, पूरे मुहल्ले में बाँट दी गई।

और फिर वह दुहरी-दुहरी शादियों की खरीदो-फरोखत के लिए अपने बेटे को साथ लेकर और अपनी फ़िटन पर बैठकर रवाना हो गईं। चलते वक्त अफ़रोज़ ने कहा था—

"आपा। दोपहर का खाना यहीं खाएँगी आप। मैं इन्तज़ाम करके रखूँगी।"

"नहीं भई!" ज़ाकिरा बीबी ने कहा था—"खाना-वाना है अपने पास। और फिर खरीदो-फ़रोखत में न जाने कितना वक्त लगे। तुम खाने-वाने की कोई फ़िक्र न करो। शाम से पहले ही मैं अहमदपुर लौट जाना चाहती हूँ। वहाँ मेरी बेटी रुखसाना अकेली है।"

"लेकिन···।"

"नहीं बीबी, तुम यह सब छोड़ो।"

"फिर शादी की तारीख?"

"वह फिर तै हो जायगी।"

"वह कब तक?"

"मैं अहमदपुर जाकर तै करूँगी। तुम्हें इसकी इत्तिला भिजवा दी

जायगी।"

"अच्छा।" अफ़रोज ने कहा—"क्यों न मैं एक दिन के लिए अहमदपुर खुद आ जाऊँ ?"

"जरूर आइये, जरूर। तुम्हारा घर है।"

"कब तक आ जाऊँ ?"

"जब चाहो।"

"फिर भी ?"

"अरे हाँ। एक हफ्ते बाद रुखसाना की मँगनी भी तो है," जाकिरा बीबी सोचकर बोलीं—"मैं तुम्हें इत्तिला करवा दूंगी, आ जाना।"

"लेकिन मँगनी की धूमधाम में···।"

वह बात काटकर बोलीं—

"तुम कोई मँगनी में ही तो शिरकत के लिए आओगी नहीं। एक दिन रुक जाना। तारीख-वारीख सब तै हो जायगी। फिर वापिस आ जाना।"

"अच्छा।"

और फिर शादी का बहुत-सा सामान खरीदकर कोई शाम के पाँच बजे के करीब अहमदपुर के लिए इलाहाबाद से रवाना हो गईं।

चार

रुखसाना की मँगनी की रस्म अदा हो चुकी थी।

उसकी और उसके भाई ताहिर की शादी की तारीखें भी मुकर्रर हो चुकी थीं। बकरीद की पहली तारीख ताहिर की शादी थी और फिर उसके पांच दिन बाद, यानि छह बकरीद को रुखसाना की शादी की तारीख थी। और यह इसलिए था कि रुखसाना अपने भाई की खुशियों में शरीक हो सके। अपनी नई-नवेली भाभी को इस घर में देख सके। और फिर उसके बाद वह अपने नए घर और अपनी नई जिन्दगी की बहारों में खो जाय।

ताहिर की शादी में अभी पन्द्रह दिन बाकी थे कि एक दिन वह अपनी मां से बोला—

"अम्मी, एक बात कहूं, अगर आप बुरा न मानें और इसके कोई और मतलब न लें तो।"

"कहो बेटे! क्या बात है? मैं भला तुम्हारी बातों का कोई और मतलब क्यों लेने लगी? भला मां भी कभी अपने बेटों की बातों का कोई और मतलब लेती है, जो मैं लूंगी? जो कुछ तुम्हें कहना है, शौक से कहो।"

"वह बात दरअसल यह है कि अब जागीर के कामों में मुझे बड़ी दुशवारी होने लगी है। आजकल के काश्तकार बड़े सरकश हो गए हैं। जो खेत जिस काश्तकार के पास है, वह किसी-न-किसी बहाने से उस पर कब्जा जमाना चाहता है। कोई लगान नहीं पहुंचाता तो कोई आमों और अमरूदों के बाग़ों पर कब्जा कर लेना चाहता है। मैं बड़ी मुसीबत में फँसकर रह गया हूं, अम्मी।"

"फिर !" जाकिरा बीबी ने चिन्ता प्रगट की—"इसका हल क्या है ?"

"यही कि ऐसे तमाम बदमाशों से मुकद्दमाबाज़ी की जाय ।"

"तो मुकद्दमा करो तुम । तुम्हें रोक किस बात की है ?"

"सब से बड़ी रोक यह है अम्मी कि जागीर आप के नाम है और आप इन बदमाशों के लिए अदालत-कचहरी तो करने से रहीं । मैं कोई कदम कैसे उठा सकता हूँ ।"

"तो तुम अपने बाप के बेटे नहीं हो क्या ? दुनिया जानती है कि डिप्टी साहिब के बेटे तुम हो और बाप के बाद जायदाद का वारिस बेटा होता है ।"

"लेकिन जब तक माँ जिन्दा हो, बेटा कुछ नहीं कर सकता ।" ताहिर ने बताया ।—"शौहर के बाद बीबी ही—"

जाकिरा बीबी बात काट कर बोलीं—

"तो मैं सब कुछ तुम्हारे नाम किए देती हूँ ।" वह बड़े प्यार और फराख-दिली के साथ बोली—"आखिर को तुम ही तो मालिक हो । फिर मेरा क्या ? मैं आज मरी और कल दूसरा दिन । मुझे तो तुम दो रोटी दे देना और बस । एक कोने-खुतरे में पड़ी अल्लाह-अल्लाह करती रहूँगी ।"

"आप कैसी बातें करती हैं, अम्मीजान !" ताहिर अपनी माँ की गोद में लोट गया—"आपके दुश्मन पड़े रहें कोने-खुतरे में । आप तो हमेशा, खुदा ने चाहा तो हम लोगों के दिलों और दिमागों पर राज करेंगी राज ! खुदा करे, आपका साया ताक़यामत हमारे सर पर कायम रहे ।"

ताहिर को यह उम्मीद नहीं थी कि उसकी माँ इतनी आसानी के साथ सारी जागीर उसके नाम करने पर तैयार हो जायेंगी । लिहाजा वह खुशी के जामे में फूला नहीं समा रहा था । बोला—

"जागीर मेरे नाम हो गई तो मैं इन सब सरकशों को, जोकि जागीर

के मालिक बन जाना चाहते हैं, एक मिनट में ठीक कर दूंगा। अभी तो ये सब यह समझ रहे हैं न कि जागीर मेरे नाम नहीं है। मैं उनका क्या कर सकता हूँ।"

"लेकिन इस पर भी तो तुम ही सब-कुछ हो। तुम उन लोगों के खिलाफ कोई कर्यवाही क्यों नहीं कर सकते हो, बेटे?"

"तुम नहीं समझती माँ मेरी" वह बड़े लाड़ के साथ बोला—"अब कायदा कानून बदल गया है।"

"तो फिर मैं सब-कुछ तुम्हारे नाम किए देती हूँ।"

"हाँ अम्मीजान। यह सब कुछ फौरन ही मेरे नाम कर दीजिए। मैं सबको कर दूं। नहीं तो जागीर में बड़ी गड़बड़ मच जायगी।"

"लेकिन इस जागीर में एक तिहाई तुम्हारी बहिन का भी तो है, बेटे।"

"वह मैं कहाँ हड़प किए जा रहा हूँ, अम्मी। मैं रुखसाना का हिस्सा अलग कर दूंगा। तुम उसका यह हिस्सा उसके दहेज में दे देना।

"हाँ-हाँ, बेटे।" ज़ाकिरा बीबी को जैसे याद आ गया—"यह भी तो करना है मुझे। यह ठीक है। उसकी जायदाद मैं उसके दहेज में दे दूंगी।"

"तो फिर सारा मामला जल्द से जल्द तै हो जाना चाहिए, अम्मीजान! रुखसाना की शादी में अब देर ही कितनी है।"

और फिर इन पन्द्रह दिन में ही सारी कार्यवाही पूरी हो गई। ज़ाकिरा बीबी ने कुल जागीर अपने बेटे ताहिर के नाम कर दी। वह अपनी चाल में कामयाब होकर मुतमयीन हो गया।

अब यह जागीर उसके नाम थी। वही इसका स्याह और सफ़ेद मालिक था। उसने बड़ी होशियारी से अपनी माँ का नाम कानूनी तौर पर इस जागीर से कटवा दिया था। ज़ाकिरा बीबी का अब इस जागीर से कोई वासता नहीं रह गया था। वह अब मुकम्मल तौर पर उनके बेटे के कब्ज़ा-कुदरत में चली गई थी।

अनवरी ब्याह कर उस हवेली मे आ गई थी। वह दुल्हिन बन कर डोले से उतरी, तो जाकिरा बीबी की खुशी का कोई ठिकाना न था। जाकिरा बीबी ने मुंह दिखाई में अपनी बहू को सारे जेवरात दे दिए।

"यह लो बेटी !" उन्होंने अपने सारे जेवरात का पिटारा बहू के सामने खोल कर रख दिया—"यह मेरी तरफ से तुम्हारी मुंह दिखाई है।"

बहू ने सलाम करके वह सारे जेवरात ले लिए और जाकिरा बेगम को ऐसा महसूस हुआ, जैसे कि उनके सिर से बहुत बड़ा बोझ उतर गया हो।

और फिर पाँच दिन के बाद उनकी लाडली बेटी रुखसाना की रुखसती का वक्त भी आ गया। जिस वक्त उनकी बेटी रुखसाना अपनी हवेली से विदा होकर अपनी ससुराल जा रही थी, तो उनका कलेजा फटा जा रहा था।

उन्होंने अपनी बेटी को अपने कलेजे से लगाकर हिचकियों के दरम्यान कहा—

"बेटी ! अब तुम अपने घर जा रही हो। जो तुम्हारा सही मायनों में अपना घर है, बेटी। उसी घर को तुम अपना घर समझना, बेटी। इस बात का हमेशा खयाल रखना कि शोहर की रज़ाजोई और उसकी खुशी ही तुम्हारी खुशियों का मदार है। शोहर की खुशी में ही तुम्हारा ईमान होना चाहिए, बेटी। आज से हम तुम्हारे लिए अपने होते हुए भी गैर हैं, बेटी। और वे, जोकि अब तक तुम्हारे लिए गैर थे, तुम्हारे अपने हैं। इसी में जन्नत है तुम्हारी और यही वह जज्बा है, जो तुम्हारी आखरत को सुधारने वाला है। ससुर की सेवा तुम्हारा फर्ज है और वही तुम्हारा बाप है। यह याद रखना बेटी कि शरीफ़ लड़कियाँ जिस घर में दुल्हिन बन कर जाती हैं, वहाँ से फिर उनका जनाज़ा ही निकलता है। वे कभी किसी हाल में भी वहाँ से बाहर कदम नहीं निकालतीं। हमेशा मीठी जबान से पेश आना और ससुराल वालों की कड़वी बातों को भी

अमृत के घूंट समझ कर पी जाना, बेटी। इसी में तुम्हारी बेहतरी और तुम्हारी इज्जत है। शोहर या ससुराल वालों से लड़-झगड़ कर या रूठ कर इस घर में कभी न आना और न इस घर के दरवाजे तुम्हारे लिए कभी खुलेंगे ही, बेटी। यह बात तुम खूब अच्छी तरह से जहन-नशीन कर लो।"

वह फूट-फूटकर रोने लगी। उनकी आवाज उनके गले में रुंध कर रह गई। वह बेटी की जुदाई पर पछाड़ें खाने लगी। लेकिन जल्दी ही उन्होंने खुद पर काबू पा लिया। और बेटी को फिर समझाने लगीं—

"तुम एक बड़े बाप की बेटी हो। तुम्हारा बाप अपने वक्त का बहुत बड़ा आदमी था। लेकिन अपने बड़े बाप की बड़ाई में इतरा कर अपने ससुराल वालों को छोटा कभी न समझना। मैंने तुम्हें दिल खोल कर दहेज दिया है। ऐसा दहेज, जो बहुत कम लड़कियों को मिलता है बेटी। लेकिन अपने इस दहेज पर गरूर कभी न करना और न इसे अपनी मलकीयत समझना। तुम से ज्यादा इस पर तुम्हारे शोहर का हक है। तुम यही समझना, बेटी। और अपने दहेज की बड़ाई का खयाल भी कभी तुम अपने मन में न लाना। तुम्हारा सब-कुछ तुम्हारे शोहर का है। तुम्हारी जान तक उसकी है और तुम्हारा माल उसके कदमों की खाक के बराबर भी नहीं है।"

वह अपनी बेटी को भींच कर बोलीं—

"कभी तुम अपने शोहर के खिलाफ सोचना भी नहीं। अपने शोहर के सिवा किसी गैर मर्द का खयाल भी अपने दिल में न लाना। कभी किसी दूसरे मर्द की तारीफ अपने शोहर के सामने इस अन्दाज में न करना कि उसे अपनी सुबकी मालूम हो। चाहे वह शरीफ, मुस्तहक शख्स तुम्हारा भाई ही क्यों न हो। चाहे तुम्हारा देवर हो या कोई और हो। और बेटी अपना ईमान कभी न छोड़ना। इस्लाम का हर फ़र्ज़ पूरा करना और कुरान पाक को हमेशा अपने दरम्यान समझना। इसमें तुम्हारी और हम दुनियां के सारे मुसलमानों की नजात है, बेटी। कुरान

पाक का फ़रमान है। फ़रमान ही हमारा सबसे बड़ा नसब उलऐन है।"

उन्होंने अपनी बेटी को एक दफ़ा फिर लिपटाया। उन्होंने उसकी पेशानी एक बार फिर चूमी और अपने हाथों से उसे डोले में सवार करा दिया।

और फिर वह हिचकियों के दरम्यान अपने समधी, ताल्लुकेदार साहिब से आँखें चार न करते हुए बोलीं—

"यह मेरी उमर भर की कमाई है, भाई साहिब। यह नादान बच्ची है मेरी। बे-बाप की बच्ची है गरीब। अगर इससे कोई गलती हो भी जाय तो दरगुजर फरमा दीजिएगा। माफ कर दीजिएगा इसे। आपका हम पर अहसान होगा, भाई साहिब! और मैं यह आपका अहसान मर कर भी न भूलूंगी।"

और उस पर ताल्लुकेदार साहिब ने, रुखसाना के ससुर साहिब ने गद्गद् स्वरों में कहा—

"आप अपना दिल न छोटा कीजिए, बहिन! रुखसाना आपकी ही नहीं, बल्कि मेरी भी बेटी है। मैं उसको अपनी पुतलियों में जगह दूंगा। हम उसे अपने सर का ताज बना लेंगे।"

और फिर रुखसाना अपने मां-बाप की हवेली छोड़कर अपने शौहर के घर जाने लगी। डोला उठा और पुरदर्द आवाज में बड़े शोर के साथ रुहेलियां यह नगमा उगलने लगीं—

"काहे को ब्याही बिदेस, ओ सखि बाबल मोरे, काहे को ब्याही बिदेस!

हम तो हैं बाबल तोरे आंगन की चिड़ियां
जिधर उड़ाओ, उड़ जायें रे···!"

रोते हुए जाकिरा बेगम की हिचकियां बन्ध गईं और वे बेहोश हो गईं। जिस वक़्त रुखसाना का डोला अहमदपुर की हदों को फलांगने लगा, तो उसके कानों में खुद-बखुद ये दिल-सोज आवाज़ें गूंजने लगीं—

"डोले का पर्दा हटाकर जो देखा

न बाबल, न बाबल का देस
ओ लक्खी, बाबल मोरे !
काहे को ब्याही परदेस ?"

रुखसाना का दिल उसके काबू से बाहर हो गया और वह बेहोश होकर अपने साथ जाने वाली मुग़लानी बी की गोद में गिर पड़ी। मुग़लानी बी ने घबरा-घबरा कर उसे पंखा झलना शुरू कर दिया।

रुखसाना अपनी ससुराल पहुंच गई। उसके मायके अहमदपुर का आफ़ताब, जो कि उसकी जुदाई के ग़म में पहले ही कजला गया था, क़स्बा करीमगंज, उसकी ससुराल में आकर बिल्कुल ही डूब गया। और अब सारे जहान पर तारीकी छा गई। रुखसाना को ऐसा महसूस हो रहा था, जैसे उसका दिल, दूर, किसी अन्धे कुएं में जाकर डूब गया हो।

अनवरी, ज़ाकिरा बेगम की बहू की हाथ बरताई की रस्म अदा होने वाली थी और ज़ाकिरा बेगम यह सोच रही थी कि वह अपनी बहू को इस मौक़े पर क्या इनाम दे कि इतने में ताहिर उनके कमरे में आ गया। आते ही बोला—

"आप अपनी बहू को उसकी हाथ बरताई पर क्या इनाम देंगी, अम्मी ?" वह इठलाते हुए बोला—"वह इस घर में पहली दफ़ा बावर्ची-खाने में जा रही है। पहली दफ़ा वह खाने और बर्तन को हाथ लगाएगी।"

और फिर वह खुद ही बोला—

"मामूली इनाम से काम न चलेगा, अम्मी! इस मौक़े पर तो वह आपसे कोई बहुत ऊंचा इनाम लेगी।"

"मैं खुद ही सोच रही हूं, बेटे !" ज़ाकिरा बीवी ने कहा—"क्या दूं उसे। अपनी जागीर तो सारी की सारी मैं तुझे दे चुकी हूं। अपने

तमाम जेवरात मैं उसे मुंह दिखाई के तौर पर पहले ही दे चुकी हूं।"

"एक बहुत बड़ी चीज़ अभी बाकी है आपके पास, अम्मी !"

"क्या ?"

"बता दूं ?"

"बताओ।"

"मगर मैं क्यों बताऊं ?" ताहिर इठलाते हुए बोला—"आप खुद ही सोचिए न।"

"मेरी सोच को तो जैसे घुन लग गया है, बेटे ! मेरा मतलब है कि सिवा गमों के मेरे पास अब कुछ नहीं रह गया।"

"काहे का ग़म है आपको, अम्मी ? खुदा न करे, आपको गम हो कोई। किस बात का ग़म है आपको ?"

"बेवगी का ग़म कुछ कम है, बेटा ! और फिर बेटी की जुदाई, क्या तू कोई मामूली बात समझता है मेरे लिए।"

"और मैं जो हूं यहां और यह जो आपकी बहू जो यहां आ गई है। क्या हम लोग कोई चीज नहीं हैं आपके लिए ?"

"क्यों नहीं, बेटे !" वह बड़े चाव के साथ बोलीं—"अल्लाह रक्खे तुम दोनों को। तुम दोनों तो मेरी आंखें हो।"

उन्होंने बड़े जज़्बाती अन्दाज़ में कहा—

"तुम ही दोनों से तो इस खानदान का नाम चलेगा।"

"फिर इनाम !"

"दूंगी।"

"क्या ?"

"तुम ही बताओ; बेटे, मैं तुम्हारी दुल्हिन को क्या दूं ?"

"बता दूं फिर ?"

"हां !"

"हबीबगंज !" ताहिर कमाल चालाकी से बोला—"वह गांव, जो अब्बाजान ने आपको इनाम में दिया था। वह तो अब भी ज्यों का त्यों

आपका है।"

"तौबा है !" वह अपनी पेशानी पर हाथ मार कर बोलीं—"मैं भी कितनी भुलक्कड़ हूँ। हबीबगंज मेरे ज़हन में ही न था।"

वह बड़े प्यार से बोली—

"अरे ! यह कौन-सी बड़ी बात है ! घी कहाँ गया, खिचड़ी में। है तो मेरे पास बहू को देने के लिए। अपनी रईस दुल्हिन को इनाम में मैं हबीबगंज दे दूँगी।"

ताहिर इतना खुश हुआ कि उसकी खुशी का ठिकाना न रहा। उसने अपनी माँ को लिपटा लिया।

"आप कितनी अच्छी अम्मी हैं हमारी !"

मुग़लानी बी ने अत्यन्त राजदारी के तौर पर अपनी मालकिन ज़ाकिरा बीबी से बात शुरू की—

"एक बात कहने की इजाजत चाहूँगी मैं आपसे, बेगम हजूर !"

"कहो, मुग़लानी बी !"

"लेकिन शर्त यह कि आप बुरा न मानेंगी।"

"मैंने आज तक तुम्हारी किसी बात का बुरा माना है, मुग़लानी बी !"

"फिर भी।"

"नहीं, मैं बुरा न मानूंगी।"

"न आप मेरी नीयत पर शक करेंगी।"

"हर्गिज नहीं। खुदा न करे कि मैं तुम्हारी नीयत पर शक करूँ।"

"आप हबीबगंज बहू बेगम को इनाम में नहीं देंगी।" मुग़लानी बी क़तई फ़ैसले के तौर पर बोली—

"हबीबगंज मैं आपको हर्गिज न देने दूँगी।"

"यह क्या कह रही हो, तुम मुग़लानी !" वह हैरतजदा हो गईं।

"यही, जो मैं कह रही हूँ।"

"तुम्हारी बात मेरी समझ में नहीं आ रही।"

"यह इसलिए बेगम हुज़ूर, कि आप जरूरत से ज्यादा नेक तबीयत, शरीफ़ और सीधी हैं।"

"कहना क्या चाहती हो तुम ?"

"छोटे सरकार की नीयत में फ़तूर है। वह आपको कौड़ी-कौड़ी से मुहताज कर देना चाहते हैं। वह आपको अपना दस्ते-निगर बना देना चाहते हैं। और आप उनकी चालों को, उनकी फितरत को समझ नहीं पा रहीं। वह यह चाहते है कि······।"

"मुग़लानी !"

"मैं सच अर्ज़ कर रही हूँ, बेगम हुज़ूर ! आप यह अपना आखिरी सहारा छोड़ कर सख्त घाटे में रहेंगी। इसके बाद आपके पास कुछ न रह जायगा। और आप बाद में बहुत पछताएँगी।"

"मुग़लानी बी।" ज़ाकिरा बीबी के तेवरों पर खफ़ीफ़-सा बल आ गया—"तुम मुझे मेरे बेटे के खिलाफ़ भड़का रही हो !"

"खुदा न करे, बेगम हुज़ूर !" मुग़लानी ने आजज़ी से कहा—"काफ़िर का मुंह हो मेरा। लेकिन चूंकि मैंने जवानी से लेकर अब तक आपका ही नमक खाया है, लिहाज़ा मैं आपको अपने सामने परेशान नहीं देखना चाहती।"

"लेकिन वह मेरा बेटा है, मुग़लानी बी ! और फिर मेरा है ही कौन, जो मुझे फ़िक्र हो। अकेली जान है, रूखी-सूखी मिल जायगी, खाकर गुज़ारा कर लूंगी।"

"यह कह देना आसान है, बेगम हुज़ूर ! लेकिन उस हालत में गुज़ारा आपके लिए मुश्किल हो जायगा। वे हाथ, जो सदा देते रहे हों, जब किसी के सामने फैलाने पड़ें तो इन्सान मर जाने की सोचने लगता है। और मौत वक़्त से पहले कभी नहीं आती, बेगम हुज़ूर।"

"तो क्या, तुम्हारा खयाल यह है कि ताहिर मुझे दो वक़्त इज्ज़त की रोटी भी न देगा ?"

"अल्लाह न करे, आपको ऐसे मनहूस वक़्त का मुंह देखना पड़े,

लेकिन यह हो सकता है, बेगम हजूर !"

ज़ाकिरा बीबी का चेहरा उतर गया। वह गुमसुम हो गईं। मुग-लानी बी ने फिर समझाने की कोशिश की—

"इतना भी न सोचा आपने, बेगम हज़ूर, कि पूरी जागीर अपने नाम लिखवाने की क्या ज़रूरत थी ?"

"वह जागीर का निज़ाम बिगड़ रहा था। काश्तकार तंग करने लगे थे। समझते थे कि मैं पर्दानशीन औरत होकर···!"

"नहीं, बेगम हज़ूर ! यह बात भी भला हो सकती है कभी !"

"फिर !" वह बेताबी से बोलीं।

"छोटे सरकार इस तरह कहकर जागीर अपने नाम करवा लेना चाहते थे, वरना कौन बेटा बाप के बाद जायदाद की देख-भाल नहीं करता। कौन ऐसे बेटे हैं, जो माँ से यह कहा करते हैं कि जायदाद हमारे नाम लिख दो। जायदाद तो होती ही है लड़के की, फिर इस लिखा-पढ़ी की ज़रूरत क्या होती है ? मकसद क्या इससे ?"

"लेकिन मेरा कौन है, मुगलानी बी ! यह सब लेकर मैं करूंगी भी क्या ?"

"अब मैं आपको किस तरह समझाऊँ, बेगम हज़ूर !" मुगलानी ने कहा—"अज़ीज़ुल रहमान कारिन्दा भी यही कह रहा था कि बेगम हज़ूर ने सख्त गलती की है।"

"वे सब पागल हैं।" ज़ाकिरा बीबी ने उलझकर कहा—"हबीबगंज को लेकर क्या मैं चाटूंगी। आज मरी, कल किस्सा खत्म ! चन्द रोज़ा ज़िन्दगी के लिए जवान-जहान बेटे का दिल कौन बुरा करे।"

और फिर वे कदरे सख्ती से बोलीं—

"तुम ऐसी बातें निकालकर मुझे और ज्यादा परेशान करने की कोशिश फिर कभी न करना, मुगलानी बी ! मैं इस किस्म की बातें सुनना भी नहीं चाहती।"

और फिर मुगलानी बी बेचारी अपना-सा मुंह लेकर रह गई। दूसरे

ही दिन बहू के बावर्चीख़ाने में कदम रखते ही ज़ाकिरा बेगम ने हबीब-गंज अपनी बहू को इनाम में बख़्श दिया।

मुग़लानी बी अपना दिल पकड़कर रह गई।

'दुल्हिन !"

ज़ाकिरा बेगम ने एक दफ़ा बहू से कहा—

"तुम यह भारी-भारी जोड़े पहनकर बावर्चीख़ाने में न आया करो, बेटी ! ख़ुदा न करे, दुपट्टे या गरारे के पायचों में अगर आग लग गई तो ! और फिर इन भारी-भारी जोड़ों को इस तरह ख़राब भी तो नहीं करना चाहिए।"

अनवरी ने अपनी सास को कहर भरी नज़रों से देखा। वह ख़ामोश हो गई। लेकिन वह उसी लम्हा बावर्चीख़ाने से चली गई। अपने कमरे में जाकर मसहरी पर औंध गई और बिसूरने लगी।

ज़ाकिरा बीबी समझीं कि वह अपना लिबास बदलने चली गई है। उन्होंने उसकी कहर में डूबी हुई नज़रों को नहीं देखा था। वह बावर्ची-ख़ाने में मामा को चन्द हिदायतें देकर अपने कमरे में आकर लेट गई।

उस वक़्त उन्हें अपनी बेटी रुख़साना बहुत बुरी तरह याद आ रही थी। उसकी शादी को पूरे आठ महीने हो चुके थे। और वह इस तमाम अर्से में चौथी के बाद सिर्फ़ दो दफ़ा आई थी और वह ख़ुद उसे देखने उसके ससुराल एक दफ़ा भी नहीं गई थीं। वह लड़की के ससुराल में जाना अपनी और अपनी लड़की दोनों की सुबकी समझती थीं। ज़माने का दस्तूर ही यही था।

वह अपने कमरे में चुपचाप लेटी थीं कि यकबारगी वह ताहिर की करख़्त आवाज़ पर चौंक उठीं। ताहिर, कहीं बाहर गया था, आ गया था और यह आवाज़ उसके कमरे से आ रही थी।

वह यकबारगी गड़बड़ाकर उठ बैठीं।

"या इलाही ख़ैर !" वह सोचने लगीं—'यह ताहिर आख़िर बिगड़ किस पर रहा है। कहीं वह दुल्हिन पर तो गुस्सा नहीं कर रहा। अगर

ऐसा है, तो बहुत बुरी बात है। किसी की लड़की को अपने घर लाकर ऐसा सलूक उससे नहीं करना चाहिए। और फिर बहू को इस घर में व्याहकर आए हुए दिन ही कितने हुए है। जुम्मा-जुम्मा आठ दिन की ही तो बात है। अभी उसे व्याहकर आए हुए आठ ही माह तो हुए हैं।"

और यह सोचकर वह अपनी मसहरी पर से उठीं। वह अपने कमरे से बाहर आ गई। ताहिर की आवाज कमरे से फिर आई—

"तुम्हारा दिमाग़ ख़राब हो गया है क्या ?"

वह अपनी बीवी को डांट रहा था—

"अजीब औरत हो तुम !"

वह सोचने लगी—

"ताहिर का दिमाग़ ख़राब हो गया है क्या ?" वह ताहिर के कमरे की तरफ आई। उन्होंने यकदम अन्दर न जाकर बाहर से ही आवाज़ दी—

"ताहिर !"

और उधर से ताहिर की आवाज़ आई—

"आ जाइये न, अम्मी !"

वह अन्दर आ गई। उन्होंने देखा कि अनवरी मसहरी पर चादर लपेटे औन्धे मुंह पड़ी है। ताहिर गुस्से में भरा मसहरी के पास खड़ा है। उन्होंने बड़े प्यार से पूछा—

"क्या हुआ ? क्या बात है, बेटे ! यह तुम रईस दुल्हिन पर खफ़ा क्यों हो रहे हो ?" वह बड़ी सादगी से बोलीं—

"क्या किया है हमारी बहू बेगम ने ! बेचारी ! गुस्सा न किया करो इस पर। बात क्या हुई है आखिर ?"

"उन्हीं से पूछ लीजिए !" ताहिर बिलबिलाकर बोला—

"मैं तो समझता हूँ कि आपकी इन बहू साहिबा का दिमाग़ थोड़ा-सा ख़राब है।"

"ख़ुदा न करे। दिमाग ख़राब हो बहू बेगम के दुश्मनों का।"

"दिमाग़ तो है ही खराब !"

"बात भी बताएगा या नहीं। मुफ्त में हमारी बेटी पर गुस्सा किये जा रहा है।"

"बात क्या बताऊँ—ख़ाक !" वह आजिज़ आने वाले अन्दाज़ में बोला—"यह देखिए !"

और यह कहकर उसने अनवरी के ऊपर की चादर खेंचकर एक तरफ फेंक दी।

"ये देखिए ! यह कपड़े ज़ेब-तन फ़रमा रखे हैं आपकी वह बेगम साहिबा ने !"

ज़ाकिरा बीबी ने देखा, अनवरी अपनी मुलाज़िमा करीमन के मैले-कुचैले कपड़े पहने मसहरी पर औन्धे मुंह पड़ी थी और रो रही थी। उसे इस हाल में देखकर ख़ुद ज़ाकिरा बीबी भी बौखला गईं।

अभी उनके मुंह से मारे हैरत और ताज्जुब के एक लफ्ज़ भी न निकला था कि ताहिर इन्तिहाई नफ़रत और बेज़ारी से बोला—

"अब आप ही देखिए ! यह पागल नहीं तो और क्या है। कपड़े किसके पहन रखे हैं ? अपनी मुलाज़िमा के और वह भी उसके उतारे हुए गन्दे कपड़े जो धोबी के यहां जाने वाले हैं।"

"अजीब बात है।" ज़ाकिरा बीबी बड़बड़ाईं। उन्होंने करीब जाकर अपनी औन्धी पड़ी हुई बहू को आहिस्ता से झंझोड़ा—

"रईस दुल्हिन ! रईस दुल्हिन ! यह आखिर क्या हो गया है तुम्हें। यह क्या ? यह आख़िर कपड़े किस किस्म के पहन रखे हैं तुमने ?"

"यही मैं इनसे इतनी देर से पूछ रहा हूँ।" ताहिर नफ़रत से नाक चढ़ाकर बोला—

"और यह है कि जैसे सांप सूंघ गया हो इन्हें।"

"क्या बात है दुल्हिन !" ज़ाकिरा बीबी ने उसे उठाकर सीधा बिठा दिया—"कुछ बोलो तो सही !"

"बोलूं क्या खाक !" उसने झुंझलाकर कहा—"हमारी अम्मीजान

ने तो ससुराल में जाकर न बोलने की हमसे कसम ली थी और यह भूल गई थीं वह कि ससुराल में मुझे ऐसों से साबका पड़ने वाला है, जो चोर से कहे चोरी करो और शाह से कहे कि होशियार रहो।"

और यह कहकर वह फूट-फूटकर रोने लगी।

"यह बात क्या हुई आखिर ?" ताहिर जिच्च आकर कहने लगा—"इस बात से और नौकरानी के उतरे गन्दे कपड़े पहनने से आखिर सम्बन्ध क्या है ?"

"यह बात आप अपनी अम्मीजान साहिबा से पूछिए कि इस बात और नौकरानी के मैले कपड़े पहनने से क्या निस्बत है।"

"मुझसे पूछने को इसमें क्या बात है।" जाकिरा बीबी वाक़ई हैरान थी—"मैं वाक़ई तुम्हारा मतलब नहीं समझी, दुल्हिन !"

वह यकबारगी ताहिर की तरफ़ घूमी—

"इन्होंने ही मुझे हुक्म दिया था कि मैं भारी-भारी जोड़े पहन कर कपड़ों का सत्यानाश न करूँ।"

'ऐ अल्लाह ! मेरी तौबा !" जाकिरा बीबी ने अपनी पेशानी पर जोर से हाथ मारा—

"तो इसका मतलब यह हुआ कि तुम यह कपड़े पहन लो, बेटी।"

उन्होंने ताहिर से कहा—

"यह शादी के भारी जोड़ों के साथ बावर्चीखाने में जाती थी, मैं मुसलसल देख रही थी। आज मैंने कहीं कह दिया कि बेटी, ये भारी जोड़े पहन कर तुम बावर्चीखाने में न आया करो। खुदा न करे, कपड़े में लग जाय तो ! और फिर इस तरह ये कपड़े भी तो खराब होते हैं।"

उन्होंने अपनी बहू को हैरत से देखा—

"तुम तो बच्ची, पत्ते में दाल-भात और नाक-कान वाली बात कर रही हो !"

ताहिर ने अपनी बीवी को कुछ कहने के बजाए माँ से कहा—

"आप भी इस किस्म की रोक-टोक न किया कीजिए, अम्मी !

कपड़े ग्राखिर होते किसलिए है ?"

ताहिर के मुँह से यह सुनकर जाकिरा बीबी यकदम सन्नाटे में ग्रा गईं। एक लफ्ज भी उनके मुंह से न निकल सका। ग्रौर वह चुपचाप ग्रपना-सा मुंह लेकर कमरे से बाहर चली गईं।

ताहिर ग्रपनी बेगम का पुचकारने लगा।

ताहिर की शादी को एक साल पूरा हो चुका था।

पूरे एक साल बाद उसके यहां एक बच्ची पैदा हुई—रज़िया। उसका नाम रज़िया ताहिर के ससुर साहिब ने रखा था।

जाकिरा बीबी ने बच्ची की इस पैदायश पर बड़ी धूम-धाम की। जाहिर कि उन्हें बेहद खुशी हुई थी। उन्होंने इसकी खबर ग्रपनी बेटी रुखसाना के पास भी भिजवा दी थी। छुट्टी पर रुखसाना ग्रपनी भतीजी के लिए बड़े ग्ररमानों के साथ कुर्ता-टोपी लेकर ग्राई।

उसके साथ उसका शौहर जलील भी ग्राया। रुखसती के बाद रुखसाना तीसरी बार ग्रपने मायके ग्राई थी। जाकिरा बीबी बहुत खुश थी। वह ग्रपनी बेटी ग्रौर दामाद की दिल खोलकर सेवा कर रही थी कि एक दिन ग्रनवरी ने ग्रपने शौहर ताहिर से कहा—

"घर लुटाने वाले चोंचले ग्रल्लाह जानता है कि मुझे एक ग्रांख नहीं भाते।"

"घर लुटाने वाले चोंचले !"

"ग्रब तो ग्रल्लाह रखसे ग्राप बाप बन गए हैं।" ग्रनवरी तुनक कर बोली—"ग्रब भी ग्रक्ल न ग्राएगी तो कब ग्राएगी ? वह तो ग्रपनी बेटी ग्रौर दामाद की खातिर-तवाज़ा में हातिम की कब्र पर लात मार रही हैं, ग्रौर फिर क्यों न लात मारें वह ! उनका कुछ हो तो दिल दुखे उनका। वह तो हलवाई की दुकान ग्रौर दादा जी का फातिहा वाली बात पर

कमर कसे हैं। और यहां अपना दीवाला निकला जा रहा है।"

"तुम आखिर कहना क्या चाहती हो ?"

"जैसे कि आप समझ ही नहीं रहे।"

'समझना ही तो चाहता हूं।"

वह चीं-ब-जबीं होकर बोली—

"आपकी अम्मी साहिबा का यह ढंग मुझे बिल्कुल पसन्द नहीं है।"

"अम्मीजान का ढंग! क्या बकती हो तुम ?"

"मैं बकती नहीं हूँ। दूर की सोचती हूं।" अनवरी बोली—"जो आप नहीं सोचते। भला इन फ़िजूलखर्चियों के यह घर के दिन चलेगा ? यह अण्डा, परांठा, हलुवा—और वह भी पिस्ते और बादाम का हलुवा, यह मुर्ग मुसल्लम, यह तीतर, यह बटेर, यह भुनी रानें, ये कोफ्ते-कबाब, शीरमाल, बिरियानी, मग़ज़, फिरनी, शामी कबाब—ये सब आखिर है क्या ? ये बालाई के लड्डू आखिर कब तक हम गैरों को भराते रहेंगे ?"

"कहीं तुम्हारा दिमाग़ तो नहीं चल गया ?" ताहिर ने बीवी को झिड़का—"तुम मेरी बहिन और बहनोई को गैर कह रही हो। वे चार दिन के लिए आते हैं बेचारे और अभी से तुम्हारे सीने पर सांप लोटने लगा!"

वह तुनक कर बोला—

"तुम क्या जानो कि बड़े लोग अपनों पर क्या, गैरों पर भी कितना खर्च करते हैं! वह तो फिर भी मेरी बहिन है। मेरा बहनोई है। ये जिन-जिन चीज़ों के तुमने नाम गिनवाए है, ये खाने तुम्हारे लिए नियामत होंगे, हमारे लिए इनकी कोई अहमीयत इसलिए नहीं कि हम ये रोज़ाना खाते रहते हैं। यह कोई तुम्हारा मायका तो है नहीं कि चटनी-रोटी पक जाया करे। यह जागीरदार का घराना है, जागीरदार का! समझी! हम बचपन से ही ये चीज़ें खाते-पीते चले आ रहे हैं।"

आशा के विपरीत अपने शौहर के मुख से यह सब सुनकर अनवरी का मुँह फ़क हो गया। लेकिन अपना पहला तीर निशाने पर न लगता

देखकर उसने हिम्मत न हारी। उसने अपनी तरकस का एक दूसरा तीर छोड़ा—

"तो मैं कोई दुश्मन तो हूं नहीं, आपके बहिन-बहनोई की। मैं तो एक बात कह रही थी। दूरन्देशी कोई बुरी चीज तो है नहीं। आज अल्लाह ने हमें एक बेटी दी है, कल एक से दो और दो से तीन-चार और छह बच्चे हमारे यहाँ हो सकते है। फिर उनकी देखभाल, उनकी तालीम-तरबीयत, उनका सारा खर्च, उनका पढ़ना-लिखना, फिर सबकी शादी, उनका ब्याह······और फिर······।"

"यह सब तुम ठीक कहती हो—" ताहिर ने कहा—लेकिन दरिया से अगर कोई एक कतरा ले-ले, तो दरिया सूख नहीं जाता। दो दिन के लिए अगर बहिन-बहनोई आ गए तो हमारी इमारत फ़कीरी में न बदल जायगी।"

"लेकिन यह भी तो सोचिए कि क़तरा-कतरा दरिया होता है, रेत-रेत करके रेगिस्तान बनते हैं और······।"

"अच्छा-अच्छा !" ताहिर ने प्रसंग खत्म करना चाहा—"खयाल रखा जायगा। तुम फ़िक्र न करो।"

"मेरी जूती से।" वह अपने तरकस का दूसरा तीर भी व्यर्थ होता देख चिढ़ गई। बिलबिला कर बोली—

"मैं आइन्दा से एक लफ्ज़ भी न बोलूँगी।"

"बड़ा अहसान करोगी मेरे ऊपर।"

यह कह कर ताहिर अपनी बेगम के कमरे से बाहर आ गया।

"भाई मियाँ !" उसे देख कर उसकी बहिन रुखसाना ने पूछा—"भाभी से क्या-क्या बातें हो रही थीं ?"

"कुछ खास नहीं।" ताहिर गड़बड़ा कर बोला—"यूँ ही !"

सोचने लगा—उसकी बहिन ने कहीं उन दोनों की बातें सुन तो नहीं लीं। और अभी वह इस खयाल से उलझ ही रहा था कि रुखसाना झट से बोल पड़ी—

"मैं कब से आपका इन्तज़ार कर रही हूं, भाई मियां ! मैं समझी कि आप कहीं बाहर गए हैं।"

और रुखसाना से यह सुनकर उसे इतमीनान हुआ। शुक्र है कि रुखसाना ने अपने भाई की बकवास नहीं सुनी। वह बोला—

"क्या बात है, रुखसाना, तुम मेरा इन्तज़ार क्यों कर रही थी ?"

"कितने दिनों के बाद तो हम आए हैं, भाई मियां ! जी चाहता है कि बस आपसे बातें किए जायें। जी नहीं चाहता कि आप पल भर के लिए भी हमारे सामने से हटें। हमारा क्या है, भाई मियां ! आज आए हैं, कल चले जायेंगे। हम आपको कित्ता-कित्ता याद करते हैं वहां।"

बहिन के मुंह से ये बातें सुनकर ताहिर का दिल भर आया। बोला—

"हम तुम्हें कहां कम याद करते हैं, रुखसाना। अम्मीजान से पूछो न कि हम तुम्हें कितना याद करते हैं !"

"बेर का मौसम है, भाई मियां !" रुखसाना बड़े अरमान से बोली—"इन्तज़ाम करा दीजिए, तो हम घड़ी दो घड़ी के लिए अपने बेर के बाग़ों में जाकर बेर खा आएं अपनी सब सहेलियों को लेकर।" वह सजल हो उठी—"हम नाईन को बुलवाकर अपनी सहेलियों को जमा करालेंगे। रधिया, गघनिया, ननकी, हसीना, सलमा, हनीफ़ा और शबरातन ! ये सब हमें वहां बहुत याद आती हैं।"

ताहिर बोला—

"अच्छा-अच्छा !" ताहिर ने बड़ी मुहब्बत से कहा—"हम यह इन्तज़ाम अभी किए देते हैं।" वह मुस्कराया—"और ?"

"और कुछ नहीं, भाई मियां !" वह मुस्कराई—

"अलबत्ता हमारा दूध धुलाई का नेग अभी नहीं दिया, आपने।"

"मैं तो उसी दिन पूछ रहा था कि तुम क्या लोगी, नेग में ! लेकिन तुमने खुद ही कहा था कि तुम फिर बताओगी। लिहाज़ा अब तुम बता

दो कि नेग में क्या लोगी ?"

"नेग में मुझे आपका प्यार चाहिए, भाई मियाँ ! आपकी मुहब्बत जो मेरे बाद भी कायम रहे। आप तो बस मुझे अपना प्यार दे दीजिए, भाई मियाँ।"

वह जज़बात में डूबकर बोली—

"इसके सिवाए एक बहिन को और क्या चाहिए अपने भाई से कि वह उससे और उसके बाद उसके सम्बन्धियों से हमेशा मुहब्बत करता रहे।"

उसकी आँखें आँसुओं से भर गईं। उसके साथ-साथ ज़ाकिरा बीबी, मुगलानी बी और ताहिर की आँखें भी नमनाक हो गईं। जलील की आँखों में भी आँसू आ गए। ताहिर भर्राई आवाज़ में बोला—

"यह मेरा वायदा रहा रुखसाना, कि मेरी मुहब्बत तुझसे और तेरे शौहर के साथ-साथ तेरे बच्चों से भी कभी दूर न होगी। मैं अपनी सारी ज़िन्दगी दिल के साथ तुमसे प्यार करता रहूँगा।"

"बस, मेरे भैया !" रुखसाना बेअख़्तियार ताहिर से लिपट गई—"इससे ज्यादा मुझे कुछ न चाहिए। सब कुछ तो मिल गया मुझे। भाई के प्यार और उसकी मुहब्बत से बड़ी कोई दौलत एक बहिन के लिए नहीं होती।"

मुहब्बत और प्यार के पवित्र आँसू उसकी आँखों से बह रहे थे। और वह अपने भाई की कमर से बेअख़्तयार लिपटी हुई थी। वह बड़ी शिद्दत से भींचे हुई थी अपने भाई को।

ज़ाकिरा बीबी का दिल शिद्दत के साथ उनके पहलू में तड़प उठा। उनके जिगर से एक हूक उठी और बेअख़्तियार उन्होंने अपनी बेटी को लिपटा लिया।

"अल्लाह करे कि तू सदा हँसती और मुस्कराती रहे, मेरी बेटी ? बस, अब अपने आँसुओं को तुम रोक लो, बेटी ! नहीं तो मेरा दिल इन आँसुओं में डूब जायगा।"

रुखसाना अपने आंसुओं को अपने आंचल में जज्ब करते हुए बोली—

"यह खुशी के आंसू है, अम्मीजान, गम के नहीं। यह वह नेग है, जो मुझे भाई मियां की तरफ़ से अता हुई है।"

जलील, रुखसाना का शौहर, जो कि उसी जगह मौजूद था, बेअख्तियार बोल पड़ा—

"रुखसाना के ये आंसू वाकई बड़े कीमती हैं। बहिन-भाई की पाकीजा मुहब्बत के ये दो रोशन चिराग हैं, जो मेरे दिल में भी आज पहली बार रोशन हुए हैं। इनकी रोशनी में मैंने आज पहली बार अपने सोए हुए जज्बात को आंखें मलकर उठते हुए देखा है।"

वह रुखसाना से मुखातिब होकर बोला—

"आपने मुझे वह नूर अता किया है, जिससे अब तक मेरी आंखें अन्धी थीं।"

उसने एतराफ़ किया—

"शायद मैं भी अपनी बहिन को अब तक वह मुहब्बत नहीं दे सका, जिसकी मुस्तहक हैं मेरी राबिया आपा!"

उसने रुखसाना से कहा—

"मुझे आज मालूम हुआ कि आप अपने भाई मियां से कितनी मुहब्बत करती हैं!"

"हर बहिन अपने भाई से मुहब्बत करती है।" रुखसाना ने कहा—"यह मेरा ईमान है।"

"लेकिन मैं भी किसी का भाई हूं।" जलील बोला—"और इस लिए मैं यह बात दावे के साथ कह सकता हूं कि एक भाई अपनी बहिन से उस जैसी मुहब्बत नहीं करता।"

"नहीं। यह बात इसलिए सही नहीं है, जलील, कि मैं कसम खुदा की रुखसाना से उतनी ही मुहब्बत करता हूं, जितनी कि वह मुझसे करती है। मैं अल्लाह को गवाह करके कहता हूं कि मैं उससे और उसके बच्चों से इसी शिद्दत के साथ सारी उम्र मुहब्बत करता रहूंगा।"

"आप वाकई काबिल-कद्र हैं, भाई मियां।" जलील बोला—"आप की मुहब्बत और प्यार की कसम खाई जा सकती है।"

रुखसाना बोली—

"देखिए न, रानी कर्मवती ने हुमायूं को राखी भेजी थी और वह अपनी उस अनदेखी बहिन की खातिर सारे सयासी ऊँच-नीच को नज़र अन्दाज़ करके अपने ही एक हम मज़हब बादशाह से लड़ने चला गया। महज़ बहिन और उसकी इज्जत के बचाव की खातिर।"

"बेशक !" जलील ने कहा—"हम अगर सीखना चाहें तो अपने पुराने इतिहास से बहुत कुछ सीख सकते हैं।"

और फिर वह दिन भी आ गया, जिस दिन रुखसाना अपने शौहर के साथ अपने घर जा रही थी। वह जाने की तैयारियां कर रही थी और ताहिर से उसकी बीवी अनवरी झगड़ा कर रही थी—

"मैं कहती हूं, अब आपको कुछ और देने-दिलाने की क्या जरूरत है ?"

"पागल हो गई हो क्या तुम ?"

"इसमें पागलपन की आखिर बात ही कौन-सी है !" अनवरी झुंझला कर बोली—"नेग ले तो चुकी है वह अपना।"

"क्या—क्या दिया है मैंने उसे ?"

"भाई की मुहब्बत उसे दे नहीं चुके आप नेग में ?"

"तुम कहीं खब्ती तो नहीं हो ?"

"लो और सुनो। अब मैं इन्हें खब्ती दिखाई दे रही हूं।"

"खब्ती नहीं तो और क्या हो ? नेग में वह भाई की मुहब्बत ले चुकी है—अरे वाह ! यह क्या बात पैदा की है।"

"तो फिर आप अपना सारा घर लुटा दीजिए—मुझे क्या।" वह जुलबुला कर बोली—"पूरी जागीर क्यों नहीं लिख देते नेग में ! बड़ा मजा आयेगा।"

"बकवास मत करो।"

"लो, यह भी बकवास है।" वह मुस्करा दी—"सारी दुनिया में नाम न होगा आपका, भाई ने बहिन को नेग में पूरी जागीर लिख दी।"

"अच्छा, अब मजाक खत्म करो। वह जा रही है। यह बताओ कि क्या दूं उसे ?"

"जो जी चाहे आपका।"

"फिर भी ?"

"अगर आप अपनी दौलत के दुश्मन ही बने बैठे हैं, तो दे दीजिए पांच रुपये।"

"पांच रुपये !"

"कम हैं क्या ? नए-नए चांदी के पांच रुपये ठनाठन करते हुए दे दीजिए। बहिन की गोद भर जायगी। उसका अंचल ढेर-सी चांदी के बोझ से नीचे लटक जायगा।"

"या तो तुम वाकई पागल हो, या फिर मुझे पागल बनाने पर तुली हो।"

"तो फिर दस रुपये दे दीजिए। निकालूं चमचमाते हुए चांदी के दस रुपये ?"

"बकवास बन्द करो।"

वह चिढ़ गई—"तो पूरा खजाना दे दीजिए—मेरा क्या।" उसने मुंह बिगाड़ा—"मैं कौन होती हूं रोकने या टोकने वाली।"

"तो सौ रुपया निकालो जल्दी से।"

"बाप रे बाप ! पूरे एक सौ रुपए ! बहिन दब न जायगी इतने बड़े बोझ के नीचे।"

"बको मत और सौ रुपये का एक नोट निकालो।"

उसने शौहर को कहर बुझी नज़रों से घूरा और ट्रंक में से सौ रुपये का एक मैला-कुचैला और पुराना नोट निकाल कर ले आई—

"यह लीजिए।"

सौ का नोट देख ताहिर को बेसाख्ता हंसी आ गई। बोला—

"नेक बख्त ! कोई नया-सा नोट तो दे देती !"

"तो क्या यह नोट सौ रुपये से कम में भुनेगा ?"

"इतना रद्दी नोट है कि देते शर्म आएगी।"

"अजीब आदमी हैं ईमान से आप भी।" वह बोली--"कुछ तो मेरी तसल्ली के लिए भी रहने देते !"

और यह कहकर उसने बड़ी बेज़ारी से सौ रुपये का एक नया नोट ट्रंक से निकालकर उसे दे दिया—

"लीजिए ! दे दीजिए जाकर अपनी चहेती बहिन को।"

रुख़साना सिर्फ़ एक हफ़्ता अपने भाई के यहां रही थी और अब वह वापिस अपनी ससुराल जा रही थी। ज़ाकिरा बीवी की आंखों में आंसू उमड़-उमड़कर आ रहे थे और बरस रहे थे। रुख़साना की भी यही हालत थी। अलबत्ता ताहिर के चेहरे पर मलाल की शिकन भी न थी और अबनरी दिल-ही-दिल में बड़बड़ा रही थी।

"हुं: ! टेसूए बहाए जा रहे हैं। छि: ! मानो बेटी यहीं खेमा-डेरा डालने आई थी जन्म भर के लिए।"

रुख़साना एक दफ़ा फिर मायके आकर ससुराल रवाना हो गई।

पाँच

पाँच साल और बीत गए थे।

पाँच साल के बाद रुखसाना के यहाँ पहली बच्ची पैदा हुई थी। बड़ी प्यारी-प्यारी बच्ची थी वह। उसका नाम उसके दादा मियाँ ने सईदा रखा। सईदा के पैदा होने पर ताल्लुकेदार साहिब की खुशी का ठिकाना नहीं था। उन्होंने उस मासूम बच्ची की पैदायश पर दिल खोल-कर जशन मनाया।

दूर-नजदीक के सारे रिश्तेदार, अजीज और दोस्त जमा किए गए। सईदा की आमद के सिलसिले में ताल्लुकेदार साहिब ने पूरे तीन दिन तक जशन मनाने का प्रोग्राम बनाया था।

वह अपनी समधिन जाकिरा बीबी को इस खुशी के मौके पर दावत देने आए थे—

"मुबारक भाभी साहिबा! आपकी बेटी और हमारी बहू ने हमें एक चाँद-सी बच्ची का मुखड़ा दिखाया है। बड़ी मुरादों और अरमानों के बाद यह बच्ची पैदा हुई है। खुदा के फ़जलो-करम से जच्चा और बच्चा दोनों तन्दुरुस्त और बखैरियत हैं।"

जाकिरा बीबी की आँखों में खुशी के आँसू छलक आए। वह बे-अख्तयार होकर बोलीं—

"आपको भी मुबारक हो, भाई साहिब!" और उन का गला भर आया।

"मैं आपको यह खुशखबरी सुनाने के लिए देखिए, खुद हाजिर हुआ हूँ। और यह इसलिए कि आपको और ताहिर मियाँ को, उनकी बेगम और बच्चों को छठी के दिन आना है। सईदा की यह छठी हम

लोग बड़ी धूमधाम के साथ मना रहे हैं।"

"हम जरूर आएँगे, भाई साहिब!" जाकिरा बीबी ने कहा—यह तो हमारी अपनी खुशी है। इसके लिए आपको खुद आने की जरूरत भी क्या थी। आप एक ज़रा-सी इत्तिला ही करा देते, हम सर के बल भागे-भागे आते! बल्कि मुझे तो आपसे यह शिकायत है कि इसकी खबर बहुत पहले से आपने हमें क्यों न दी? मेरी बच्ची रुख़साना की यह पहलोटी की औलाद थी। रुखसाना की जचगी उसके मायके में होनी चाहिए थी।"

"इसके लिए मैं आपसे माफ़ी चाहता हूँ, भाभी साहिबा! वह बात दरअस्ल यह हुई कि मुझे तो इसकी इत्तिला ही नहीं थी। न बहू बेगम ने किसी को कानो-कान खबर होने दी और न जलील मियाँ ने ही मुझे कोई इशारा दिया। और फिर आपको तो इल्म ही है कि मैं ज्यादातर मर्दाने में ही रहता हूँ। अकेला-दुकेला आदमी जो ठहरा। बस, वहीं हवेली के मर्दाने हिस्से में पड़ा रहता हूँ।"

"यहाँ भी तो वह चुड़ैल रुखसाना कोई साल भर से नहीं आई। आप लोगों की मुहब्बत और ससुराल का घर उसे ऐसा भा गया है, कि वह तो जैसे भूल ही गई है, हम सबको।"

"यह बात नहीं है, भाभी साहिबा! बल्कि वह इतनी नेक, शरीफ़ और खुशवक्त लड़की है कि हवेली का सारा प्रबन्ध उसने सम्हाल रखा है। जागीर के कामों में भी बड़ा अच्छा दखल रखती है। दिन-रात वह बस अपनी ही धुन में रहती है। उस गरीब को तो यह भी नहीं मालूम होता कि कब सुबह हुई और कब शाम हो गई। भूलती वह किसी को नहीं है। हाँ, वह अपनी मसरूफ़ियात में खुद को जरूर भुला बैठी है। मैं तो कहता हूँ कि आपने अपने घर का फ़रिश्तए-रहमत उठाकर मेरे घर भेज दिया है। आपकी शिक्षा वाकई एक मिसाल है दुनिया के लिए। मेरा घर जन्नत बन गया है आपकी इस सुशिक्षित बेटी की वजह से।"

अपनी बेटी की यह बड़ाई व तारीफ़ सुनकर जाकिरा बेगम का

सिर फ़ख् से ऊँचा हो गया। फ़ख् से उनकी नजरें ऊँची हो गई और वह बहुत गम्भीरता से बोलीं—

"यह सब आपकी जर्रानिवाज़ी है, भाई साहिब !" और फिर वह फौरन ही बोल पड़ी—"हम सब कल आपके दौलतखाने पर सिर और आंखों के बल हाज़िर हो रहे हैं।"

और फिर बड़ी शानो-शौकत के साथ दिन का खाना खाकर ताल्लुकेदार साहिब करीमगंज के लिए रवाना हो गए। उनके जाने के बाद ही ताहिर और अनवरी में खुसर-पुसर होने लगी—

"अब एक और मुसीबत खड़ी हो गई।" अनवरी बोली—"मुफ्त का खर्च और बढ़ा। बहिन के यहां औलाद हुई है। अब जाइए और बहाइए रुपया पानी की तरह। मायके वालों के जोड़े दीजिए। बच्ची के लिए कुर्त्ता-टोपी, झूला और खिलौने ले जाइये। अम्मीजान तो इस मौके पर दिल खोलकर रुपया लुटाना चाहेंगी। आखिर को उनकी बेटी के पूरे छह साल के बाद औलाद हुई है।"

"हां, यह तो तुम ठीक कह रही हो !" ताहिर मरे हुए अन्दाज़ में बोला—"अब वह पहले जैसी हालत जागीर की भी नहीं रही है। काश्तकार ससुरे लगान देते नहीं हैं। सरकश हो गए हैं। आए दिन के मुकद्दमात का खर्च है। फिर कारिन्दे अलग पहले से ज्यादा लूटने लगे हैं। जब देखो पटवारी साहिब मुंह फैलाए खड़े हैं। आज उसके घर यह है तो कल वह है। अगर न दो तो जो खेत चाहो, जिसके नाम चढ़ा दें। फिर तहसीलदार साहिब के नखरे सहो। मुंह मांगी रकम उन्हें ले जाकर पूजो और···।"

अनवरी बात काटकर बोली—

"और अपना भी खर्चा कौन-सा कम है। माशा अल्लाह दो-दो बच्चे हैं। रज़िया की पढ़ाई है, नज्मा का खर्च अलग है। रज़िया की उस्तानी साहिबा हैं और फिर अभी और न जाने हमारे कितने होंगे ? दाया है, खेलाती है। नहलाने वाली है और फिर हमारी अम्मीजान

साहिबा के खर्च कौन से कम है। हाथ उनका खुला हुआ है, हरेक को देती हैं। उनकी नौकरानियाँ उसी तरह चली आ रही है और फिर यह सबसे बड़ी मुसीबत उनका दायाँ हाथ मुगलानी बी है। हज़ारो नखरे और काम कुछ नही। सिवाए इसके कि अम्मीजान साहिबा की मुसाहिबी करती रहें और हमारी तरफ से उनके कान भरें। जिसमें खाएं, उसी में छेद करे। पूरा सब कुछ हम करें और गुन वह अपनी मालकिन के गाएँ। रोज का पान-तम्बाकू का उनका खर्चा अलग है। महज़ अम्मीजान साहिबा के ही पानदान का खर्च इतना है कि खुदा की पनाह ? फिर रोज़-रोज की दावतें, मुर्ग मुसल्लम, बिरियानी और शाही टुकड़े। मैं तो कहती हूं कि इस घर का दीवाला बहुत जल्द निकलने वाला है।"

"तुम वाकई यह सब ठीक कह रही हो।"

"मैं सब कुछ ठीक कह कब नहीं रही थी !" अनवरी मुंह बिगाड़कर बेज़ारी से बोली—"लेकिन मेरी आप कभी सुनते, जब न !"

"सच है।" ताहिर तशवीश भरे लहजे में बोला—"तुम ठीक कहती हो।"

वह अपना सिर खुजलाने लगा। सिर खुजलाते हुए बोला—

"लेकिन करूं भी तो क्या करूं ? कुछ समझ में नहीं आता !"

"मेरी मानिए तो सब ठीक हो जाता है अभी।"

"क्या मानूं तुम्हारी ?"

"जो मैं कहूं।"

"मुझे मालूम है तुम क्या कहोगी।"

"क्या मालूम है आपको ?"

"वही जो तुम कहोगी।"

"क्या कहूंगी मैं ?"

"यही कि मैं बहिन की खुशी से अपना दामन साफ़ बचा जाऊं।"

"बिल्कुल ठीक ! इसके सिवा और चारा भी क्या है ?"

"बेवकूफ़ हो तुम।"

"मैं बेवकूफ़ हूँ ?"

"और नहीं तो क्या ?"

"वह कैसे ?"

"वह ऐसे कि तुम जो कह रही हो, वह होना नामुमकिन-सी बात है।"

अनवरी चिढ़ गई। झुंझलाकर बोली—

"तो फिर वह कीजिए, जो मुमकिन बात हो।"

"वही तो सोच रहा हूँ।"

"सोचिए।"

"तुम बड़-बड़ ज़रा कम किया करो।"

"तो मैं गोया कि तुम्हारे नज़दीक सिर्फ़ बड़-बड़ ही करती रहती हूँ।"

"और नहीं तो क्या ?"

"तो झख मारिए आप।"

"देखो बेगम !" ताहिर बेज़ारी से बोला—"तुम बहुत ज्यादा बदतमीज़ी मत किया करो।"

"मैं आज से बोलूंगी भी नहीं। मेरी जूती से।"

"हाँ, मत बोलना तुम !"

"तो फिर आप मुझसे सलाह-मशविरा करने भी न बैठ जाइयेगा।"

"सलाह लेता ही कौन मसखरा है तुमसे।"

"मसखरे-वसखरे की बात तो मैं जानती नहीं हूँ, लेकिन सलाह आप मुझसे जरूर लेते हैं।"

"तो झख मारता हूँ।" ताहिर ने लफ्ज़ झख पर ज़ोर दे कहा।

और वह कमरे से बाहर चला गया।

वह सीधा मर्दाने में आया। कुछ देर तक वहां बैठक में मोढ़े पर बैठा रहा और फिर अन्दर आया। अन्दर आया ही था कि ज़ाकिरा बीबी से उसका सामना हो गया।

वह उसे देखते ही बोलीं—

"अरे ! तुम आखिर चले कहाँ गए थे ? मैं कब से तुम्हारा इन्त-ज़ार कर रही हूँ, बेटे !"

"फ़रमाइये !" वह बेज़ारी से बोला।

"किसी से लड़कर आ रहे हो क्या ?"

"आप अपनी बात कहिए पहले।"

बेटे की इस बदतमीज़ी पर ज़ाकिरा बीबी का दिल बुझ गया। लेकिन क्या कर सकती थीं। अपना कलेजा मसोस कर रह गईं। बुझे दिल के साथ बोलीं—

"कुछ नहीं।"

"नहीं-नहीं, आप फरमाइये, अम्मीजान !"

ताहिर ने अपनी बदतमीज़ी का अहसास किया। वह नर्मी से बोला—

"फ़रमाइये !"

"नहीं ! शायद तुम्हारा जी खराब है इस वक़्त !" वे बुझे हुए दिल के साथ बोलीं—"फिर बात करूँगी।"

"नहीं, मुझे कुछ नहीं हुआ। आप फ़रमाइये।"

"मैं कहने जा रही थी कि तुम्हारी बहिन रुख़साना के यहाँ अल्लाह रक्खे, चाँद सी एक बच्ची हुई है।"

"यह तो मैं सुन चुका हूँ, अम्मी।" वह बोला—"बड़ी खुशी हुई है मुझे।"

ज़ाकिरा बीबी कोई बच्ची तो थीं नहीं। बेटे का लहजा और उसके तौर देख रही थीं। लेकिन मजबूर थीं बेचारी। बोलीं—

"कल हम सब वहाँ चल रहे हैं।" वे जैसे कि भीख माँगने लगी हों—"इस मौके पर हमें कुछ करना है, बेटे।"

"क्या करना चाहती हैं आप ?"

"वही, जो ज़माने का दस्तूर है, बेटे।" वे घिघयाने वाले अन्दाज़

में बोलीं—"रुखसाना के लिए, उसकी बच्ची और उसकी ससुराल वालों के लिए जोड़ा बनवाना पड़ेगा। मिठाई और…।"

ताहिर बात काटकर बोला—

"ज़माना अब वह नहीं रहा, अम्मीजान। आख़िर इतना बहुत-सा करने की हमें क्या ज़रूरत है? ज्यादा-से-ज्यादा बच्ची के लिए कुर्ता-टोपी का इन्तजाम कर दीजिए।"

"तुम पागल हो गए हो क्या, ताहिर!" वे जुलबुला कर बोलीं—"इतना गया-गुज़रा तो तुम मुझे समझो मत कि मैं दुनिया के सामने बिल्कुल ही नंगी हो जाऊँ। आख़िर को रुखसाना तुम्हारी सगी बहिन है। वह क्या सोचेगी बेचारी! और फिर अपने ससुराल वालों के सामने वह अपना सिर ऊंचा कर सकेगी? उन लोगों से उसकी आँखें चार हो सकेंगी? उसके ससुराल वाले उसके मुंह पर थू-थू करेंगे।"

"फिर?" ताहिर उस अन्दाज़ में बोला, जैसे कि वह मरा जा रहा हो। "जो हुक्म दीजिए, वह करूं।"

"बता तो रही हूँ कि रुखसाना के ससुराल वालों के लिए जोड़ा—"

ताहिर ने फिर बात काट दी—

"आप तो यह बताइये कि कितने रुपये खर्च होंगे।"

"तुम बात कर रहे हो, या काट रहे हो!" जाकिरा बीबी ने अपने बेटे को गज़बनाक नज़रों से देखा। उन्हें अपने पर तरस नहीं, बल्कि गुस्सा आ गया था। वे तर्शरुई से बोलीं—

"तुम मुझे अभी इतना गया-गुज़रा न समझो, ताहिर! हाथी लाख घट कर भी सवा लाख का होता है।"

वह बेज़ारी से बोलीं—

"तुम तो दफ़ा हो जाओ मेरे सामने से! मैं सब कर लूंगी। तुम्हें तकलीफ़ की जरूरत नहीं।"

ताहिर लाख बदतमीज था, खुदगर्ज़ और कमीना था, बहुत बुरा था वह, उसकी बीवी हर वक्त माँ की तरफ से उसके कान भरती रहती

थी, और वह जोरू का जर खरीद गुलाम भी था, लेकिन फिर भी अभी उसमें इतनी जुर्रत पैदा न हो सकी थी कि वह अपनी माँ के गुस्से का सामना कर सके। उस माँ का गुस्सा, कि जिसने मलकाओं की तरह हुकमत की थी, जिनकी आन-बान और शान देखने के काबिल थी। लिहाजा वह भीगी बिल्ली बनकर बेचारगी के साथ बोला—

"आप तो जरा-जरा सी बात पर बिगड़ जाती है, अम्मीजान ! मेरा तो दरअसल मकसद था कि···।"

वह गड़बड़ा गया। अपनी बदतमीजी का जवाब उसे न मिल सका। कोई बात बनाए न बन सकी। बदहवास होकर बोला—

"दरअसल रात से मेरी तबियत खराब है, अम्मीजान ! दर्द से मेरा सर फटा जा रहा है। कोई बात समझ में नहीं आती।"

जाकिरा उसे गौर से देख रही थीं। जैसे कि वे सब कुछ समझ रही हों। उसने फिर कहा—

"हुक्म दीजिए, अम्मीजान !"

और फिर खुद ही बोला—

"मैं अभी इलाहाबाद चला जाता हूँ। शाम तक वापिस आ जाऊंगा। रमाइये, क्या-क्या ले आऊं ?"

"कितना खर्च होगा, मालूम है ?" जाकिरा बीबी बेजारी के साथ बोलीं, जैसे कि वे कह रही हों कि खर्च सुनकर दम न निकल जाय।

ताहिर बोला—

"खर्च की बात जाने दीजिए, अम्मी ! गुस्सा थूक दीजिए। मैं माफी चाहता हूँ।"

"कम से कम एक हजार का खर्च है।" जाकिरा बीबी बोलीं—"हो सकेगा तुमसे इतना खर्च ?"

"क्यों नहीं।" ताहिर हकलाते हुए बोला—"आखिर को रुखसाना मेरी बहन है।"

और यह कहकर वह सीधा अपने कमरे में गया। जाते ही बीवी से

कहने लगा—

"ज़रा बारह सौ रुपये तो निकालो।"

"क्या कहा ?" अनवरी पर जैसे कि बिजली गिर पड़ी—"बारह सौ !"

"सुना नहीं क्या ?"

"मैंने तो सुन लिया है, लेकिन आपने अभी कुछ नहीं समझा।"

"बकवास मत करो !" वह भन्नाए हुए अन्दाज में बोला—"बारह सौ रुपया दो।"

और फिर उसके बाद अनवरी एक लफ्ज़ न बोल सकी। चुपचाप सौ-सौ के बारह नोट उसने शौहर की तरफ बढ़ा दिए—

"यह लीजिए !"

उसने रुपये लिए और कमरे से बाहर आ गया। उसने आकर अपनी माँ से कहा—

"यह लीजिए ! ये बारह सौ रुपये हैं, अम्मीजान। अब फ़रमाइये।"

उसने रुपये अपनी माँ की तरफ़ बढ़ा दिये। फिर बोला—

"हमें कल रुखसाना के ससुराल जाना है। इतनी जल्दी तो जोड़े बन नहीं सकते। मेरा खयाल है कि जोड़ों के लिए रुपये दे दें।"

"जैसा आप मुनासिब समझें, अम्मीजान !"

"हाँ, बस ! यही ठीक है। ज़ाकिरा बीबी बोलीं—"बच्चों के लिए अलबत्ता कुर्ता-टोपी तैयार किए लेती हूं।"

"ठीक है।" वह इतनी आहिस्ता से बोला, जैसे कि वह सो रहा हो।

और फिर वह वापिस अपने कमरे में आ गया। आते ही उसने अनवरी से कहा—

"तैयारी कर लेना। कल हम लोग करीमगंज चलेंगे।"

"यह आखिर मुसीबत क्या पड़ी है करीमगंज जाने की ?"

वह बड़े ठहरे हुए अन्दाज में बोला—

"तुम मुझे न तो ज्यादा परेशान करो और न मेरा दिमाग तुम खराब करो—समझीं।"

"वरना तुम मेरा क्या करोगे?"

"पागल हो गई है क्या यह औरत?"

"पागल बनाओगे, तो पागल तो हो ही जाना पड़ेगा।"

"अच्छा, बको मत!"

"मेरा जी अच्छा नहीं। मैं करीमगंज-फरीमगंज कभी न जाऊँगी।" अनवरी ने जिच आ जाने वाले अन्दाज में कहा—"मेरी बच्ची रज़िया की तबियत भी खराब है। पांच साल की इस नन्ही-सी जान को मुसीबतों में ले जाकर मुझे नहीं फंसाना और फिर नज्मा का जी भी अच्छा नहीं है। तीन साल की बच्ची है बेचारी। अगर उसे हवा लग गई तो?"

"बको मत! वहाँ जाना ही पड़ेगा।" वह कतई फ़ैसले के तौर पर बोला—"और रुखसाना की बच्ची के लिए कुर्त्ता-टोपी भी ले जाना है।"

"और ये बारह सौ, जो अभी पूजे हैं मैंने?"

"वह अम्मीजान के लिए थे।" ताहिर बोला—"हमें अपनी तरफ से भी तो कुछ करना पड़ेगा। आखिर को रुखसाना मेरी बहिन है और मैं उसका भाई हूं।"

"काश कि न आपके कोई बहिन होती और न आप किसी के भाई होते!" अनवरी चिल्लाकर बोली—"यह बहिन-भाई खूब होते हैं!"

अनवरी की इस बात पर ताहिर को हंसी आ गई। वह जुलबुला कर बोली—

"हँस-हँस कर मेरी जान जलाने में कितना मजा आ रहा है आप को? काश, कि मैं मर जाऊं!"

"मर जाओगी तो क्या होगा?"

"तुम दूसरी शादी कर लोगे।"

"फिर यही बेहतर है कि तुम मरो-वरो मत। वरना मुफ्त में मुझे दूसरी जोरू तलाश करनी पड़ेगी।"

"कभी तो जनाब फ़रमाते हैं कि अगर खुदा न ख्वास्ता मैं मर गई तो जनाब रो-रो कर मर जायेंगे। और अब दूसरी शादी के ख्वाब देख रहे हैं।" वह तल्ख होकर बोली—"लेकिन मैं यह बता दूं अच्छी तरह आप को कि मैं इतनी आसानी से मरने वाली नहीं हूँ। मैं हर्गिज न मरूंगी।"

"तो मैं क्या कहता हूं कि तुम मरो! दुश्मन मरें तुम्हारे।"

"और अगर मैं मर गई तो?"

"तो मैं ज़हर खालूंगा।"

"अभी तो दूसरी शादी कर रहे थे।"

"वह मज़ाक था।"

"और क्या पता कि यह भी मज़ाक हो।"

और इस पर वे दोनों मुस्करा दिए। ताहिर ने अनवरी को दबोच लेना चाहा और वह एक तरफ़ को हटते हुए बोली—

"उधर देखो!"

ताहिर ने घबरा कर पीछे की तरफ देखा—

उनकी मासूम तीन साला बच्ची नजमा उन दोनों को बड़े ग़ौर से देख रही थी।

दूसरे दिन सबके सब रुखसाना के ससुराल पहुँच गए। रुखसाना की बच्ची सईदा वाक़ई चांद का टुकड़ा थी। उस चांद के टुकड़े की छठी ताल्लुकेदार साहिब ने इतनी धूमधाम से मनाई कि लोग अश-अश कर उठे। ताल्लुकेदार साहिब ने अपनी बड़ी मिन्नतों और मुरादों के बाद पैदा हुई इस बच्ची की खुशी इस ढंग से की कि लोग देखते के

देखते रह गए।

बाजा-गाजा, खाना-वाना, नाच-रंग, इनामात और बख़शीशें, तीन दिन तक लगातार आतिशबाजी छूटती रही। ग़रीबों और मुहताजों की झोलियां भरी जाती रहीं। ताल्लुकेदार साहिब ने एक फसल का सारा लगान अपनी पोती की पैदायश की खुशी में काश्तकारों को माफ़ कर दिया। और वह माफ़ी किसी एक गांव के लिए नहीं थी, बल्कि पूरे ताल्लुका के लिए थी।

तहसीलदार साहिब ने अपने सारे अजीज़ों को जोड़े दिए—भारी-भारी जोड़े। बच्ची की नानी और ममानी को तो ताल्लुकेदार साहिब ने इतना भारी जोड़ा दिया कि देखने वाली निगाहें चुंधिया कर रह गईं। अनवरी को भारी जोड़े के साथ ही साथ ताल्लुकेदार साहिब ने सोने का एक जड़ाऊ हार और हाथ के कंगन भी दिए। उसकी बच्चियों से लिए जोड़ों के साथ-साथ सोने के कई-कई जेवरात भी दिए।

और जाकिरा बीबी के लाख इनकार पर भी मिन्नत करके, हाथ-पांवों जोड़ कर और खुशामद करके ये चीज़ें उन्होंने दी। और जाकिरा बीबी को मजबूर होकर लेना पड़ा।

अनवरी, सईदा की इस धूमधाम पर दिल ही दिल में जली जा रही थी। लेकिन इतना बहुत कुछ हासिल कर के वह खुश भी थी। वह सोच रही थी, कि उसके खर्च किए हुए रुपये इस बहाने से उसे वापिस मिल गए। बल्कि ये चीज़ें तो उसके खर्च किए हुए रुपयों से कहीं ज्यादा कीमती थीं और यही चीज उसके लिए सकून की वजह थी।

"आज मैं सचमुच बहुत खुश हूं, बेटी!" जाकिरा बीबी ने रुखसाना को प्यारभरी नजरों से देखते हुए कहा—

"काश! तेरी यह खुशी देखने के लिए तेरे अब्बाजान ज़िन्दा होते बेटी!" और यह कहते-कहते उनकी आवाज भर्रा गई। उनकी आंखों से गम छलकने लगा। उस वक्त उन्हें अपने मरहूम शोहर डिप्टी साहिब बहुत बुरी रह याद आ रहे थे।'

"ग़म न कीजिए, बेगम हजूर !" मुगलानी बी ने उन्हें तसल्ली दी—"खुदा डिप्टी साहिब की पाक रूह को सकून अता फ़रमाए। आपके रोने से उनकी रूह बेचैन हो जायगी। और फिर देखिए न कि बेटी रुखसाना बीबी की आंखें भी इस बहुत बड़ी खुशी के मौके पर बरस पड़ी हैं।"

उन्होंने बेअख्तयार रुखसाना की बलाएँ ले डालीं—

"मेरी शाहजादी बेटी ! खुदा के लिए अपने इन आंसुओं को रोक लो ! मेरा दिल फटा जा रहा है।"

"मुझे भी अब्बाजान कई दिनों से मुसलसल याद आ रहे हैं।" वह हिचकियों के दरम्यान बोली—"काश ! कि वे इतनी जल्दी हमसे जुदा न होते !"

जाकिरा बीबी और मुगलानी बी दोनों मिलकर रुखसाना को समझाने, बहलाने, फुसलाने और चुप कराने लगीं। और उधर जलील ने रुखसाना से कहा—

'देखो भई, अगर तुमने अपने आप को न सम्हाला, तो मैं भी अपनी अम्मी को याद कर के रो पड़ूंगा। मैं बहुत देर से अपने आप को सम्हाल रहा हूं।"

और यह कहते-कहते वह रो पड़ा। उसकी बहिन राबिया ने उसका सर अपनी गोद में भर लिया—

"मेरा बीरन ! मेरा भैया ? खुदा के लिए......।"

रुखसाना ने शौहर की तरफ प्यार भरी नजरों से देखा। उसने जबरन मुस्कराने की कोशिश की। वह आहिस्ता से बोली—

"देखिए ! इधर देखिए, अब मैं नहीं रो रही हूं।"

राबिया ने अपने भाई से कहा—

"नेग में तो मैं पूरा एक गांव तुमसे ले चुकी हूं, जलील, अब अगर तुम चुप न हुए और इस तरह रोते रहे तो मैं तुम्हें चुप कराने के बदले में तुम्हारी पूरी जागीर लिखवा लूंगी—हां, समझ लो।"

"देखा तुमने !" अनवरी से ताहिर ने कानाफूसी की—"जलील ने अपनी बहिन को नेग में पूरा गाँव दिया है और तुम, एक सौ रुपल्ली में भी मरी जा रही थीं।"

"तो तुमने अपनी पूरी जागीर लिख दी होती बहिन को।" अनवरी बोली—"मैं तो कह रही थी।'

"कह क्या रही थी, जल रही थी तुम तो।" वह उसी तरह बड़-बड़ाया।

"अच्छा-अच्छा !" अनवरी चिढ़ गई—"क्या यहाँ भी झगड़ना चाहते हो ?" वह अपनी जबान दबा कर बोली। उसने ताहिर को घूरा—"मैं कहे देती हूँ—हाँ।"

और ताहिर ने झट से कानों को हाथ लगाया। अनवरी दाँतों के नीचे जबान दबाकर मुस्करा दी।

एक बहुत बड़ा इन्कलाब आया।

जिन्दगी के पाँच साल और गुजर गए थे। फिर एक अनजाने हादसे के तौर पर वह हो गया, जो कि न होना चाहिए था।

रुखसाना ! शरीफ़, नेक तबीयत और हर दिल अजीज़ शखसीयत की मालिक रुखसाना—अल्लाह को प्यारी हो गई। उसके यहाँ पूरे पाँच साल बाद दूसरा बच्चा पैदा होने वाला था। जाकिरा बीबी भी उस मौके पर अपनी बेटी के पास थीं। उसने एक मुर्दा बेटे को जन्म दिया और सिर्फ़ पाँच मिनट के बाद वह खुद भी मर गई। बेशुमार खुशियाँ ग़मों के अथाह सागर में डूब कर रह गईं। वह बेचारी अपने उस दूसरे बच्चे की पैदायश पर शहीद हो गई थी।

करीमगंज से लेकर अहमदपुर तक एक कुहराम मच गया। ताल्लुके-दार साहिब को दिल के दौरे पड़ने लगे। उनके पूरे ताल्लुका में सफ़े-

मातम बिछ गई। हर चारों तरफ से आँसुओं के समुद्र बह गए।

जाकिरा बीबी की दुनिया लुट गई। रोते-रोते और पछाड़े खाते-खाते उनका बुरा हाल हो गया। जलील, रुखसाना के शौहर का दिमाग पागल हो गया। मासूम सईदा का यह हाल था कि वह माँ का नाम ले-लेकर रोती थी ! और बेहोश हो जाती थी।

वह माँ का जनाजा नहीं उठने दे रही थी। वह बुरी तरह अपनी मुर्दा माँ से लिपटी हुई थी और अपनी जान दे रही थी। सब लोग परेशान थे। उसे जनाज़े पर से हटाना चाहते थे और वह दुहाइयाँ दे-देकर, चीख-चीख कर और पछाड़ें खा-खाकर आसमान और जमीन एक किए हुए थी।

उसकी हालत देख कर दरो-दीवार का कलेजा भी फटने लगा था। वह दहाड़ें मार रही थी—

"अम्मी ! हमाली अम्मी···हमाली अम्मी को का हवा ! अम्मी को चादल काहे को उरहा दी है······हमाली अम्मी हम से बोलती क्यों नहीं ?"

और फिर वह अम्मी-अम्मी कह कर माँ को झंझोड़ने लगती और पछाड़ें खाने लगती। उसे जबरदस्ती उठाकर वहाँ से दूर कर दिया गया। और चीखते-चीखते, चिल्लाते-चिल्लाते उसका गला फट गया। उसके हलक से खून की धारा बह निकली। सब लोग घबरा गए। वह अपनी उसी हालत में गोद से तड़पने-मचलने और बैठा करने लगी।

"नहीं-नहीं, हमारी अम्मी को न ले जाओ। हम अपनी अम्मी को कहीं नहीं जाने देंगे······कहाँ ले जा लहे हो हमाली अम्मी को······हम भी अपनी अम्मी के साथ जायेंगे······हम अम्मी के साथ जायेंगे !"

वह एक बार चीखी—

"अम्मी ! हमाली अम्मी !!" और जोर से उछल-कूद कर उसी जगह फ़र्श पर गिर बेहोश हो गई।

जाकिरा बीवी ने बेपर्दगी की परवाह न करते हुए लपक कर उसे अपनी गोद में उठा लिया।

रात के सवा ग्यारह बजे थे। रुखसाना को दफ़न हुए पूरे सवा पाँच घण्टे हो चुके थे। और वह बच्ची सईदा अभी तक अपनी नानी की गोद में बेसुध पड़ी थी। वह दो घन्टे तक बेहोश रही थी। बड़ी कोशिश के बाद हकीम साहिब उसे होश में लाए थे। होश में आने के बाद वह बिल्कुल गुमसुम हो गई थी—बिल्कुल खामोश और चुप।

और अभी तक वह नीम बेहोशी की हालत में जाकिरा बीबी की गोद में पड़ी हुई थी। सारा घर बेहिस व हरकत, गुमसुम और उदास, वगैर कुछ खाए-पीए उसके गिर्द बैठा था।

"लाइये, बेगम हजूर !" मुग़लानी बी अपने होठ चबाते हुए बोलीं—"आप थक गई होंगी। बिटिया हज़ूर को मैं अपनी गोद में ले लूं।"

जाकिरा बीबी की जबान न खुल सकी। उन्होंने सिर्फ गर्दन हिलाई। अपनी निराशा में डूबी वीरान आंखों से मुगलानी बी की तरफ देखा उन्होंने। सर को हिला कर बच्ची को उसकी गोद में देने से इनकार कर दिया।

और फिर इस तरह बैठे-बैठे उन्हें सुबह के चार बज गए। सईदा उसी तरह उनकी गोद में बेहिस-बहरकत पड़ी रही और वह उसी तरह बेहिस व बेहरकत उसे अपनी गोद में लिए बैठी रहीं।

और फिर सुबह के पांच बज गए।

"अब मुझे दे दीजिए, बेगम हज़ूर !"

जाकिरा बीबी ने फिर इनकारी में गर्दन हिलाई।

"अब दे दीजिए, बेगम हज़ूर !"

सुबह के सात बज गए थे। दिन निकल आया था। धूप हर दरो-दीवार पर फैल चुकी थी। लेकिन उन्होंने फिर इनकार कर दिया। जैसे कि उन्हें सकता हो गया हो।

और फिर सुबह के साढ़े सात बज गए। सईदा ने उनकी गोद में

अपनी आँखें खोल दीं। उसने उसी तरह उनके घुटनों पर लेटे-लेटे उनके चेहरे को ग़ौर से देखा। वह कुछ देर तक उनका चेहरा एकटक देखती रही। उस के होंठ, थोड़े से खुले। वह आहिस्ता से बोली—

"हमाली अम्मी कहाँ हैं?"

"आ जायँगी तुम्हारी अम्मी, बेटी!" ज़ाकिरा बीबी बहुत ही बेचारगी से बोलीं—"आ जायँगी।"

"कहाँ गई हैं?" वह उसी तरह उन्हें एकटक देखते हुए उसी तरह अत्यधिक धीमी आवाज़ में बोली—

"अल्लाह-अल्लाह करने गई हैं, बेटी!"

"नमाज़ पढ़ने?" सईदा ने पूछा—

ज़ाकिरा बीबी के होंठ थरथराने लगे। लेकिन उन्होंने इन्तहाई अज़ीयतनाक कोशिश के बाद अपने आपको सम्हाला। बावजूद इन्तहाई कोशिश के आवाज़ उनके हलक को पार न कर सकी। जवाब के लिए तसदीक में उन्होंने अपना सिर हिला दिया।

"हम भी अम्मी के पास जायंगे। वह कद्रे ज़ोर से इन्तहाई कर्ब के आलम में बोली और उन्होंने यकबारगी बेताब होकर उसे अपना छाती से लगा लिया। वह उसे उसी तरह अपने कलेजे से भींचे हुए थीं कि वह फिर बोली—

"नानी अम्मा मुझे अम्मी के पास पहुंचा दो।"

उन्होंने उसे ज़ोर से भींच लिया। आँसू धार की शक्ल में उनकी आँखों से बहने लगे। उनके बेकरार आँसू सईदा की फ़राक के पिछले हिस्से को भिगो रहे थे।

ज़ाकिरा बीबी के बाल, जोकि इस उम्र के बाद भी कहीं-कहीं से सफ़ेद थे, आधे से ज्यादा सफ़ेद हो गए थे। उनका पूरा सिर खिचड़ी हो गया था।

श्रौर उस अज़ीम हादसे के पूरे एक माह बाद ताल्लुकेदार साहिब का भी इन्तकाल हो गया। उन्हे काले नाग ने डस लिया था। रात को वे अँधेरे में पेशाब के लिए उठे थे कि इस हादसे का शिकार हो गए।

बेचारे जलील के होशो-हवास पर यह दूसरी बिजली गिरी। श्रौर वह बिल्कुल ही निढाल हो गया। ग़म का इतना बड़ा बोझ उस पर पड़ा कि वह पिस कर रह गया।

एक माह के अन्दर एक के बाद दूसरी इन दो मौतों ने उसकी दिमाग़ी हालत ख़राब कर दी। अब उसका इस जहान में कोई न रह गया था।

एक दफ़ा उसकी हवेली पर पुर्सा देने वालों की भीड़ फिर लग गई। यह दूसरी मर्तबा था कि वह तड़प रहा था श्रौर उसकी बहन राबिया श्रौर उसके बहनोई सर फ़राज उसे सम्हाल रहे थे।

ज़ाकिरा बीबी, जोकि अपनी बच्ची के मरने के बाद से अब तक वहीं थीं, फिर हसरत से हर एक का मुंह ताक रही थीं। उन्हें एक बार फिर अपनी पूरी ताकत से जलील को समझाना पड़ा।

सईदा, जोकि अभी तक अपनी माँ को नहीं भूली थी, अब फिर से अपने दादा मियाँ को पूछने लगी हरेक से। उसे फिर से यही बताया गया कि उसके दादा मियाँ भी उसकी अम्मी की तरह हज करने गए हैं श्रौर साल भर के बाद वापिस आएँगे।

"एक साल किसे कहते हैं, नानी अम्मा?" मासूम सईदा अपनी नानी अम्मा से पूछ रही थी—"हमाली अम्मी कब आएँगी?" वह बिसूरने लगी श्रौर उसकी नानी अम्मा उसे पुचकारने लगी। लेकिन वह फूट-फूटकर रोने लगी—

"अम्मी हमको बहुत याद आती हैं।"

वह बेकरार होकर रो रही थी। वह बेताब होकर रो रही थी। वह इस अन्दाज़ में रो रही थी कि देखने वालों के दिल फट जायें। वह अपना सीना सहलाने लगी। उसने बड़ी घबराहट के अन्दाज़ में कहा—

"नानी अम्मा! हमाली अम्मी को कहो, वह अब चली आवें।

हज न करें। नानी अम्मा, हमारे यहाँ बड़े ज़ोर की आग लग रही है।"

वह अपना सीना ज़ोर-ज़ोर से रगड़ने लगी। वह घूंसे लगाने लगी अपने कलेजे पर—

"यहाँ बड़ी ज़ोर की तकलीफ़ हो रही है, नानी अम्मा !"

वह ज़ोर से चीखकर रोई—

"अम्मी !"

उसने अपनी पूरी कुव्वत से अपनी माँ को आवाज़ दी—

"हम रो रहे हैं तुम्हारे लिए, अम्मी ! आजाइये अब ! अब तो दादा मियाँ भी हमें छोड़कर चले गए हैं।" वह बेअख्तयार अपने बाप से लिपट गई—

"हमें अभी अम्मी के पास पहुँचा दीजिए, अब्बा जी। हम अम्मी के पास जायेंगे।"

और फिर इन्हीं दुःख तकलीफ़ों में दो साल और गुज़र गए। सईदा अब सात साल की थी। वह अपनी नानी अम्मा के पास अहमदपुर में रहती थी। रफ्तारफ्ता वह कपनी मां को भूलने लगी थी। वह अपनी नानी अम्मा को बहुत चाहती थी। बहुत प्यार करती थी वह जाकिरा बीबी को। और जाकिरा बीबी अपनी नवासी—इस बे-माँ की बच्ची से बेतहाशा मुहब्बत करती थीं। उन्होंने उसे सगी माँ का-सा प्यार दिया था। वह हर वक्त उसे अपने कलेजे से लगा कर रखती थीं।

उनका उस बच्ची के साथ यह प्यार, उनकी यह मुहब्बत अनवरी के दिल में काँटे की तरह खटकती थी। वह हरदम जला करती थी इस बात से कि जाकिरा बीबी अपनी नातिन को इस तरह क्यों चाहती हैं।

सईदा के बाप कभी-कभी उसे देखने के लिए आ जाते थे।

"क्यों जी ?" अनवरी ने एक दिन ताहिर को आड़े हाथों लिया—"यह आपकी अम्मीजान आखिर अपनी नातिन को इस क़दर चाहती क्यों हैं ?"

"अजीब सवाल करती हो तुम भी !" ताहिर बोला—"इसलिए कि वह उनकी नातिन है।"

"और ये रज़िया, नजमा और मासूम अकबर क्या उनके नहीं है ?" अनवरी के एक बेटा भी पैदा हो चुका था।

"है क्यों नही।"

"फिर वे हमारे बच्चों को क्यों नहीं चाहती ?"

"कौन कहता है कि नहीं चाहतीं ?"

"मैं कहती हूं।" वह जैसे कि खम ठोक कर बोली—"वे बिल्कुल नहीं चाहतीं हमारे बच्चों को।"

"यह तुम्हें कैसे मालूम हुआ ?"

"वह ऐसे मालूम हुआ है मुझे कि मैं देखती जो रहती हूं।"

"क्या देखा है तुमने ?"

"वे सईदा को हमेशा इन बच्चों पर तरजीह देती हैं।"

"सईदा बे-मां की बच्ची है। उसकी मां मर गई है बेचारी की।"

"तो क्या चाहते हो कि मैं भी मर जाऊं ?"

"क्या मतलब ?"

"मतलब यह कि मैं मर जाऊंगी तो आपकी अम्मीजान हमारे बच्चों को भी चाहने लगेंगी।"

"तो गोया आप इसलिए मर जाना चाहती हैं कि आपके मर जाने के बाद अम्मीजान आपके बच्चों को भी चाहने लगें ?"

"जी हां।"

"तो फिर बिस्मिल्लाह !"

"क्या ?" वह तड़प कर बोली—"यानि कि मैं मर जाऊं ?"

"अभी आप ही फ़रमा रही थीं।"

"देखिए साहब !" वह अपने शौहर को कहरभरी नजरों से घूर कर कहने लगी—"मैं आप से साफ़-साफ़ कहे देती हूं।"

"क्या ?"

"यही कि उनकी यह नाइन्साफ़ी अब मैं हर्गिज बर्दाश्त करने को तैयार नहीं हूं।"

वह और अधिक आगे बढ़ी—

"या तो अब सईदा इस हवेली में रहेगी, या मेरे बच्चे रहेंगे। यह समझ लीजिए आप अब अच्छी तरह।"

"सईदा ने क्या बिगाड़ा है आपका ?"

"वह यहाँ रहेगी तो मेरे बच्चे नजर अन्दाज़ किए जाते रहेंगे और मैं अपने बच्चों को हीनता-ग्रन्थी का शिकार कम से कम नहीं होने देना चाहती।"

"आखिर बात क्या हुई आज ?"

"यह आपकी डड्डो मुगलानी बी जो है न, उन्होंने अपनी चेहती सईदा के लिए एक गुड़िया बड़ी-सी बनाई थी। मेरी नजमा ने वह गुड़िया कहीं उठा ली। आपकी अम्मीजान साहिबा को गुस्सा आ गया। लगीं उसे सलवातें सुनाने। गुड़िया ही नहीं उसके हाथ से छीनी, बल्कि उसे कोसा-काटा भी। और फिर जब इस पर भी उनका कलेजा ठण्डा न हुआ तो उन्होंने नजमा को जी भर कर पीटा भी—और धक्का मार कर उसे सहन में गिरा दिया।

"अच्छा !" ताहिर के नथुने फड़कने लगे—"यह हुआ है ?"

वह गुस्से से उठ कर खड़ा हो गया।

"मैं अभी जाकर अम्मीजान के होशो-हवास ठिकाने किए देता हूँ। आख़िर उन्होंने मुझे और मेरे बच्चों को समझ क्या रखा है ? अब वाक़ई सईदा नामुदनी इस हवेली में नहीं रहने पायेगी।"

और अभी वह गुस्से में भरा हुआ अपने कमरे से निकलने ही वाला था कि उसकी बड़ी बेटी रज़िया बोली--

"नहीं अब्बाजान यह सब झूठ है। दादी बीवी ने नजमा को न मारा है, न डाँटा है। नजमा ने सईदा की गुड़िया उसके हाथ से छीनकर उसे मारा था, इस पर दादी बीवी ने उसे बड़े प्यार से समझाया था कि देखो बेटी, इसे मारा न करो। यह भी तुम्हारी बहिन है और तुम से छोटी है। देखो, कैसे रो रही है बेचारी ! यह गुड़िया तुम इसे दे दो।

मैं तुम्हें भी कल एक गुड़िया बना दूंगी।"

उसने फिर कहा—

"और इस पर नज्मा बड़ी बदतमीजी से वह गुड़िया दादी बीबी के मुंह पर मार कर चली आई थी। दादी बीबी ने उसकी इस बदतमीज़ी पर बस घूरा था—जरा सा और यह कहा था कि तुम बड़ी बदतमीज हो गई हो।"

अनवरी ने जुलबुला कर रज़िया की पीठ पर दोहत्थड़ जमाने शुरू कर दिए। वह दांत पीस कर बोली—

"कम्बख्त! अपनी औलाद होकर सांप बनती जा रही है मेरे लिए।"

और फिर वह ताहिर की ओर खुशमगीं नजरों से देख कर बोली—

"यह मुर्दार बड़ी झूठी है। झूठ बोल रही है सरासर। बड़ी आई अपनी दादी की सगी!"

"यह झूठ बोल रही है?"

"हां!" अनवरी कमाल ढिठाई से बोली—"मैं इस मुर्दार के मुंह में कल ही अंगारे रखूंगी।"

वह बड़बड़ाई—

"झूठ-मूठ की आग लगाती है।"

"और सचमुच की आग तुम लगाने चली थीं!"

ताहिर ने अफ़सोस से डूबी हुई नज़रों से अनवरी को देखा और चुपचाप उठकर बाहर चला गया।

उसके जाते ही अनवरी रज़िया को पीटने लगी—

"कम्बख्त! खुदा तुझे ग़ारत करे। मेरी राहों में कांटे बोने चली है।"

जाकिरा बीवी अपने कमरे में इन्तहाई से ज्यादा उदास और गमगीन अपनी मसहरी पर लेटी हुई थीं। उस वक्त उन्हें अपनी बेटी रुखसाना बेहद याद आ रही थी। उन्हें डिप्टी साहिब याद आ रहे थे। उन्हें अपनी पिछली जिन्दगी और पिछली खुशियां याद आ रही थीं। उनका दिल अपने ग़मों में डूबा जा रहा था कि इतने में सईदा भागी हुई आई। वह हवेली के लान में अपनी आया के साथ खेल रही थी।

"नानी अम्मा ! नानी अम्मा ! हमारे अब्बा जी आए हैं।"

वह आकर बेताहाश जाकिरा बीवी से लिपट गई।

जाकिरा बीवी उठकर बैठ गई। उन्होंने अपना दिल-दिमाग़ काबू में करने की कोशिश की। उन्होंने मुगलानी बी को आवाज दी और जब वह आ गई तो उन्होंने कहा—

"देखना मुगलानी बी, जलील मियां आए हैं !"

और अभी वह मुगलानी बी को बाहर भेज ही रही थीं कि राबिया यकबारगी आकर उनसे लिपट गई। वे दोनों एक दूसरे से लिपटी हुई थीं। दोनों की आंखें ग़मगीन थीं। दोनों की आंखों में आंसू थे कि राबिया ने कहा—

"जलील मियां भी आए हैं।"

"हां, मुझे सईदा ने आकर बताया है, बेटी।"

वे यकदम मुगलानी बी से बोलीं—

"यह जलील मियां आखिर मर्दाने में बाहर क्यों रुक गए ? उन्हें तुम अन्दर बुला लाओ, मुगलानी बी।"

मुगलानी बी बाहर की तरफ लपकीं। राबिया ने सईदा को अपनी गोद में उठा लिया। वह उसे दीवानावार प्यार करने लगी। उसने सईदा को खूब जोर से भींचते हुए जाकिरा बीवी से कहा—

"जलील बाहर ताहिर भाई के पास रुक गया है, चचीजान !"

और फिर कुछ देर बाद जलील और ताहिर अन्दर आ गए—

"तसलीम अर्ज, अम्मीजान !" जलील ने बड़े अदब से हाथ उठा-

कर ज़ाकिरा बीबी को सलाम किया।

"जुग-जुग जियो, बेटे! खुश रहो! शाद और आबाद रहो।"

और यह कहते-कहते उनकी आवाज़ ज़रा भर्रा गई। जलील और ज़ाकिरा बीबी दोनों की आँखें भर आईं। जलील ने सईदा को इन्तहाई प्यार के साथ अपनी गोद में भर लिया।

"तुम हमें कभी याद करती हो, बेटी!"

"हाँ, अब्बूजान!" वह अपने बाप को गौर से देखते हुए बोली—"हम आपको रोज़ याद करते हैं।"

उसने अपने बाप को बताया—

"अब हम पढ़ते भी हैं, अब्बूजान! उस्तानी साहिबा हमें रोज़ उर्दू और पारा पढ़ाने आती हैं।'

"शाबाश!" जलील ने उसे ज़ोर से लिपटा लिया।

और फिर वे सब इतमीनान से बैठकर इधर-उधर की बातें करने लगे। दोपहर के खाने के बाद जलील ने बड़ी दबी ज़बान से ज़ाकिरा बीबी से कहा—

"अगर आपकी इज़ाज़त हो तो अम्मीजान, मैं अपनी दूसरी शादी······!"

और यह कहते-कहते वह रुक गया। उसकी आवाज कपकपा गई। उसकी नजरें नीची थीं। उसकी पेशानी पसीने से डूबी हुई थी।

ज़ाकिरा बीबी, जोकि उसकी हालत को गौर से देख रही थीं, यक-दम से बोलीं—

"हाँ-हाँ, मियाँ! तुम जरूर अपनी दूसरी शादी करलो! भला इसमें हिचकिचाने की क्या बात है? मैं तो खुद सोच रही थी कि तुम से खुद इस बारे में बातचीत करूँ। यह तुम्हारी शराफ़त है कि तुम मुझसे पूछ रहे हो!"

वह आहिस्ता से रुक-रुककर बोला—

"वह बात दरअसल यह है, अम्मीजान!" वह गला साफ़ करने

लगा—"इतना बड़ा घर मेरे अकेले के बस का नहीं है।"

"हां-हां, मियां ! तुम जरूर दूसरी दुल्हिन ले आओ ! और फिर अभी तुम्हारी उम्र भी क्या है ?"

उन्होंने फिर पूछा—

"कोई लड़की देखी है क्या ?"

"हां, अम्मीजान !" राबिया बोली—"वह शबीर हुसैन हासिब हैं न, वह, जो राधानगर में रहते हैं ! छोटे-मोटे ज़मींदार हैं बेचारे। वह कई लड़कियां जिनके हैं, उन्हीं की बड़ी बेटी साइरा के साथ—।"

"अच्छा-अच्छा !" ज़ाकिरा बीबी खुद को सम्हालते हुए बोलीं—"तुम जरूर अपनी शादी करलो मियां ! मुझे खुशी होगी।"

"आपको आना पड़ेगा, अम्मीजान !"

वह अपना दिल मजबूत करके बोलीं—

"क्यों न आऊंगी, बेटे ! जरूर आऊंगी।"

और फिर अगले ही महीने जलील का दूसरा ब्याह हो गया। उनकी नई बीवी और सईदा की नई मां साइरा बेगम, जोकि राधानगर गांव के एक मामूली दर्जे के जमींदार की बेटी थी, इस इतनी बड़ी हवेली में, इतने बड़े ताल्लुकेदार की बीवी बनकर आ गई। इतनी बड़ी हवेली, नौकर-चाकर, रुपया-पैसा, साजो-सामान, जेवर-कपड़े, उसकी नजरें चुंधिया गईं। उसका दिमाग अर्श पर उड़ने लगा। गरूर और तमकनत से उसकी गर्दन अकड़ गई।

शादी के दूसरे दिन ज़ाकिरा बीबी जब वहां से चलने के लिए आमादा हुईं, तो जलील ने उनसे कहा—

"अगर आपको कोई एतराज न हो तो मैं सईदा को अपने पास रख लूं।"

उसने वज़ाहत की—

"पहले तो घर अकेला था। सईदा की देख-भाल मुश्किल थी। लेकिन अब तो उसकी नई मां आ गई है। अगर आप—।"

"अगर आप सईदा को अपने पास रखना चाहते हो, बेटे, तो मैं रोकने वाली कौन ? मुझे क्या एतराज हो सकता है, मियाँ ! तुम उसके बाप हो और वह तुम्हारी बेटी और फिर मेरा क्या ? बुढ़ापा है। आज मरी कि कल ! सईदा अगर रहना चाहे तो जरूर रख लो !"

वे अपने पर जबर करते हुए बोलीं। उनका दिल कोई चुटकियों से मसलने लगा। उनके कलेजे पर घूंसे पड़ने लगे। लेकिन वे बोल कैसे सकती थीं ? बाप फिर भी बाप होता है और नानी फिर भी नानी।"

लेकिन उन्हें ऐसा लगने लगा, जैसे कि उनका सब कुछ छीन लिया जा रहा हो। उन्होंने अपनी डबडबाई हुई आँखें सईदा की तरफ उठाईं। वह अपने होंठ काटते हुए बोलीं—

"बेटी, अब तुम अपने अब्बूजान के पास रहो। अब तो तुम्हारी नई अम्मीजान भी आ गई हैं। वह तुम्हें बहुत प्यार से अपने पास रखेंगी। तुम्हारे अब्बूजान तुम्हें बहुत-सी गुड़ियाँ, मिठाई और खिलौने लाकर दिया करेंगे।"

"नहीं !" सईदा बोली—"मैं तो आपके ही पास रहूँगी, नानी अम्मा !" और यह कहते-कहते उसकी आँखों में मोटे-मोटे आँसू तैरने लगे—

"मैं यहाँ न रहूँगी।"

"हम तुम्हें बड़े प्यार से रखेंगे, बेटी।" जलील ने सईदा को बड़े प्यार से गोद में भर, पुचकारते हुए कहा।

"हम आपके पास आ जाया करेंगे।" वह बड़ी मासूमीयत से बोली—"लेकिन हम रहेंगे अपनी नानी अम्मा के पास ही।"

"तुम्हारी मर्जी, भई !" जलील ने कहा—"तुम वहीं रहो। हम तो तुम्हारी खुशी से खुश हैं।" उसने प्यार से सईदा के सिर पर अपना हाथ फेरा—"लेकिन तुम हमारे पास भी आकर रहा करना, भई !" उसने सईदा से पूछा—"आकर रहा करोगी न, हमारे पास बेटी ?"

सईदा ने स्वीकृति में अपना सिर हिला दिया।

"मेरी बेटी !" जलील ने सईदा को बड़ी शिद्दत के साथ भींच लिया।

साइरा को ताल्लुकेदार साहिब की हवेली में ब्याह कर आए सिर्फ़ छह ही महीने हुए थे। लेकिन इस इतने अर्से में ही उसने उस हवेली और जलील पर अपना अच्छा-खासा असर जमा लिया था।

उसमें और मृतक रुखसाना के मिज़ाज में ज़मीन-आसमान का फ़र्क था। रुखसाना ने यह कभी गवारा न किया था कि उसकी ससुराल का कोई फर्द यहाँ बार-बार आता रहे। या वह खुद जल्दी-जल्दी अपनी ससुराल से अपने मायके जाती रहे। लेकिन साइरा ! इसके बिल्कुल उलट थी। इस छह महीना में ही वह पन्द्रह-बीस दफ़ा अपने मायके जा चुकी थी और इससे भी ज्यादा मर्तबा उसके माँ-बाप, उसकी बहनें और भाई यहाँ आ चुके थे और यहाँ आकर दिनों और हफ्तों रह चुके थे। उसका भाई अरशद तो गोया पक्का यहीं रहने लगा था।

वह अपने मायके वालों को खूब दिल खोलकर नवाज़ती भी रहती थी। वह अक्सर अपने घर वालों की मदद भी करती थी। और इस मामले में वह जलील को बोलने का मौका ही न देती थी।

अलबत्ता वह सईदा का ज़िक्र कभी न करती। बल्कि उसकी यह कोशिश होती कि अगर सईदा का ज़िक्र आए भी तो वह उसे जिस तरह भी हो आगे न बढ़ने दे और कोई दूसरी इधर-उधर की बात निकालकर उसे गोल कर जाय।

वह नहीं चाहती थी कि जलील सईदा का ज़िक्र करे। वह जलील के दिल-दिमाग से सईदा का ख़याल तक निकालकर बाहर कर देना चाहती थी।

एक दिन जलील ने बात निकाली—

"सईदा तो अब मुझे बहुत याद आने लगी है। मेरा जी···!"

वह बात काट कर बोली—

"अरे हाँ ! यह तो फ़रमाइये कि उस खरगोश के जोड़े का क्या रहा, जो आप मेरे लिए मँगवाने वाले थे ?"

"मैंने आदमी से कह रखा है कि विलायती ख़रगोश का एक जोड़ा वह कहीं से तलाश करके ला दे।"

"लेकिन मुझे तो वे चितले-चितले रंग के ख़रगोश अच्छे लगते है। वही सुर्ख-सुर्ख, सफ़ेद-सफ़ेद या काले-सफ़ेद। या फिर भूरे रग के।"

वह जलील को बोलने का मौका न देकर बोले जा रही थी—

"यह विलायती ख़रगोश आखिर क्यों कहलाते हैं ? क्या वे विलायत से आते हैं ? यह विलायत क्या चीज है ?"

"विलायती खरगोश—"

और वह झट बात काट कर बोली—

"अच्छा, यह तो बताइये, यह इलाहबाद गाड़ी कितने बजे जाती है ?"

वह यह नहीं चाहती थी कि जलील बोलने का मौका अपने हाथ में लेकर फिर घूम-फिर कर सईदा की तरफ आ जाते। लिहाज़ा उसने एक नया सवाल फिर खड़ा कर दिया—

"कभी हमें कलकत्ता घुमा लाइये न। ऐ अल्लाह ! हमारा कित्ता-कित्ता जी चाहता है कलकत्ता देखने का। कलकत्ता बड़ा शहर है न—बहुत बड़ा।"

"कलकत्ता—"

उसने जलील की बात फिर उचक ली—

"वे हमारे अब्बा हैं न, अब्बा, कसम अल्लाह की, वे आपकी बहुत तारीफ करते हैं। कह रहे थे कि हमारे······!" वह शर्मा गई।

"वे आपका नाम लेकर कह रहे थे कि मियाँ—जैसा लड़का इस पूरे जिले में तो मिलेगा नहीं।"

उसने जलील का ज़हन बहुत दूर ले जाने की सोची—

"सुना है कि आप कनकौवा बड़ा अच्छा लड़ाते हैं। ऐ अल्लाह, कभी हमें भी दिखाइये न कि आप कनकौवा कैसा लड़ाते हैं। और बटेरें तो मैंने देखी ही नहीं। मैं जब से कि ब्याह कर यहां आई हूँ—हमारे अब्बाजी बड़ा अच्छा बटेर लड़ाते हैं।"

उसने अपनी बात जारी रखी—

"वह एक बटेर था हमारे अब्बा जी के पास। मुआ नाम भूल रही हूँ—क्या हो गया है मेरे दिमाग़ को!"

उसने अपने भाई अरशद को मुखातिब किया—

"क्या नाम था अरशद मियाँ, उस बटेर का?"

"दिलावर बेग।"

"हाँ—हाँ, दिलावर बेग! मैं क्या अर्ज करूँ आपसे कि कैसा बटेर था वह भी! कम-अज-कम, खुदा झूठ न बुलाए, तो कम-से-कम एक हजार मुहर्कों में उसने हिस्सा लिया होगा। लेकिन अल्लाह रक्खे उसकी शान को कि एक पाली भी न हारने पाया। हर जंग शान के साथ जीती और अब्बाजी का नाम रोशन कर दिया। और मालूम है आपको कि कितना पक्के किस्म का दीनदार था, पंच वक्ता नमाज के वक्त अपना सिर पिंजरे के भीतर झुका कर बैठ जाता था। और उस वक्त तक अपना सिर न उठाता, जब तक कि मस्जिद के सारे नमाजी रुखसत न हो जाते। अज़ान की आवाज़ कान में पड़ी तो यकदम से टोएँ-टोएँ करने लगता।

वह बोली—

"एक दफ़ा तो अब्बा जी ने उसे तीतर के साथ लड़ा दिया था। बिलकुल इकबाल के उस शेर पर अमल करते हुए कि—'कंजश्क फ़रोमायको शाहीं से लड़ा दो' और फिर आप जानते हैं कि क्या हुआ था?"

वह ताली बजा कर बोली—

"हमारे दिलावर बेग ने तीतर को भगा दिया था। वह उसके परों में छिप जाता था। और फिर उचक कर वह उसकी पीठ पर सवार हो जाता था। और चोंचे मार कर उसका सिर ज़ख्मी करने लगता था। आखिर मार खा-खाकर जब तीतर तंग आ गया तो भाग खड़ा हुआ। हमारे दिलावर बेग ने उसे दूर तक खदेड़ दिया था।"

"तो कहाँ गया वह आपका दिलावर बेग ?" जलील मुस्कराया।

"शहीद हो गया बेचारा !" साइरा बड़े दुःख के साथ बोली।

जलील यकबारगी बोल पड़ा—

"वह कैसे ?"

"वह ऐसे कि उसे एक दिन हमारी मुर्दार बिल्ली खा गई।"

"अरे !"

"हाँ !" वह विक्रत आमेज़ अन्दाज में बोली—"इस ग़म में मैंने दिन भर खाना भी नहीं खाया था।"

"और तुम्हारे अब्बा जी ने ?" जलील मुस्कराया—"उन्होंने कितने दिन खाना नहीं खाया ?"

"दो दिन तक।"

"मैंने सोचा कि उन्होंने दिलावर बेग की शहादत पर कम से कम एक साल तक खाना नहीं खाया होगा !"

उसने जलील को शिकायत भरी नजरों से देखा—

"आप मेरा मजाक उड़ा रहे हैं ?" उसने अपना मुँह फुला लिया। वह शौहर से खफा हो गई। बड़बड़ाई—

"ब-खुदा, हम आपको इतना बेरहम नहीं समझते थे।"

"बेरहम !"

"और नहीं तो क्या ? हमारा दिलावर बेग शहीद हो गया और आपकी आँख से एक आँसू भी न टपका !"

"मगर तुम यक़ीन करो कि मेरा दिल अन्दर ही अन्दर दिलावर बेग मरहूम की मौत पर आठ-आठ आँसू रो रहा है।"

"आप मजाक कर रहे हैं।"

"नहीं भई।"

"नहीं भई क्या ?" वह बिसूरने लगी—"कसम अल्लाह पाक की, आपने मेरा मज़ाक उड़ाया है।"

और यह कह कर वह उठी और अपने कमरे में अपनी मसहरी पर औंधे मुंह जाकर गिर पड़ी। जलील उसके बाद उसके कमरे में आया। वह उसे मनाने लगा—

"मेरी सर्रो ! मेरी नन्ही-मुन्नी बेगम !"

"चलिए ! हटिए !"

वह ठनक कर फिर बोली—

"हम कसम अल्लाह की अब आप से अपने घर की कोई बात न करेंगे।"

"नहीं-नहीं ! मेरी सर्रो !"

वह उसे बच्चों की तरह मना और फुसला रहा था।

छह

जलील, जोकि अब पूरी तरह से अपनी बीवी की गिरफ्त में था और जो अब सोचता भी अपनी बीवी के दिमाग से था, अब अपनी बेटी सईदा की तरफ से बिलकुल ग़ाफ़िल हो गया था। वह अब सईदा को कभी भूल कर भी याद नहीं करता था। अपनी मृतक बीवी रुखसाना की तरह वह सईदा को भी भूल चुका था। जैसे कि उसकी बीवी रुख-साना की तरह उसकी बेटी सईदा भी मर चुकी हो।

उसके घर, उसकी दौलत, उसकी सोच और उसकी समझ पर अब मुकम्मल तौर पर साइरा का कब्ज़ा था। साइरा ने जैसे कि उसके ऊपर टोना कर दिया था।

उसकी शादी को अब सवा साल हो चुका था। एक दिन साइरा की माँ ने, जो उसके घर में थी, साइरा को एक सलाह दी—

"बेटी, तुम अक्लमन्दी से काम लेकर अपनी सौतेली बेटी सईदा को यहाँ बुलवा लो। बुलवा कर उसे अपने पास रखो।"

साइरा ने हैरानकुन नजरों से अपनी माँ को देखा। वह सोचने लगी थी कि आखिर उसकी माँ उसे किस किस्म का मशविरा दे रही है। यानि यह कि वह उस मुसीबत को जान-बूझ कर अपने गले से लगा ले, जिसे कितनी तरकीबों से तो उसने अपने शौहर के दिल-दिमाग से निकाला है। वह सवालिया अन्दाज से अपनी माँ को तक ही रही थी कि उसकी माँ, जोकि जमाने भर की छटी हुई औरत थी, बोली—

"तुम खुद से अपनी सौतेली बेटी को जिद्द कर के बुलवाओगी और उसे अपने पास रखने को कहोगी, तो तुम्हारे दुल्हा को तुम्हारी नेक

नीयती और शराफत का अहसास होगा। उसे यह खयाल होगा कि तुम सौतेली मां होकर भी उसकी बच्ची से कितनी मुहब्बत करती हो और फिर जब वह यहां आजायगी तो तुम उससे शौहर के सामने तो इन्तहाई प्यार और मुहब्बत से पेश आना और अन्दरून में तुम उसे इतना मजबूर कर देना कि वह खुद ही यहां से चली जाने को कहे। फिर जब वह यहां से आकर एक दफा चली जायगी, तो फिर तुम्हारे बीच से यह कांटा हमेशा के लिए निकल जायगा। यह बात ही खत्म हो जायगी सदा के लिए। वरना हो सकता है कि वह यहां आए और उसका खतरा हमेशा के लिए तुम्हें बना रहे। आखिर को वह तुम्हारे दुल्हा की पहलौटी की बेटी है।"

उसने अपनी बेटी को समझाया—

"तुम तो ऐसी चाल-चलो, बेटी, कि नेकनामी बने रहे और उस कम्बख्त सईदा का पत्ता हमेशा के लिए कट जायगा तुम हमेशा यह कह सको कि मैंने तो उसे कलेजे लगाना चाहा था, लेकिन······।"

"मैं समझ गई, मां!" साइरा खुश होकर बोली—"तुमने वाकई मुझे बड़ी अच्छी तरकीब बताई है। मैंने उनके दिल से सईदा का खयाल निकाल कर यह समझा था कि यह बात खत्म हो गई, लेकिन यह स ा है कि वह उनकी बेटी है। कभी न कभी उन्हें उसका खयाल आ ही सकता था। आज न सही तो कल और कल न सही तो परसों।"

और फिर उस दिन उसने अपने शौहर से बात निकाली—

"यह आखिर हमारी बेटी कब तक हम से दूर रहेगी?"

जलील यकबारगी चौंका—

"हमारी बेटी!"

"हां-हां, सईदा! क्या वह हमारी बेटी नहीं है? मेरा तो दिल हरदम उसके लिए तड़पता रहता है।"

जलील की आंखें खुशी से चमकने लगीं—

"क्या तुम उसे वाकई अपने पास बुलाकर रखना चाहती हो?"

"क्यों नहीं ! क्या वह कोई गैर है। क्या आप समझते हैं कि आपके खून से मुझे मुहब्बत नहीं है ?"

"बड़ी अच्छी हो तुम !" जलील खुशी से पागल हो गया—"मुफ्त में दुनिया सौतेली माओं को बदनाम किया करती है। काश ! कि सारी दुनिया की सौतेली माएँ तुमसे आकर सबक सीखें।"

"मैं तो कब से सईदा के लिए तड़प रही हूँ। लेकिन चूँकि वह वहाँ अपनी नानी अम्मा के पास है, लिहाजा मुझे जबान खोलने की हिम्मत नहीं हो रही थी।"

साइरा ने मुकम्मल तौर पर अदाकारी के जौहर दिखाए। वह आँखों में आँसू भर कर बोली—

"आखिर को वह आपकी पहली बेगम की औलाद है। काश; कि बेचारी रुखसाना बहिन इस तरह अचानक न मर जातीं। उन पर मुझे हमेशा तरस आता है। खुदा उन्हें रहमत करे। सुना करते थे कि बड़ी शरीफ़ और खुदातरस थीं बेचारी !"

"इस वक्त तो तुम उनसे भी बाजी ले गई हो, मेरी सरों !" जलील ने बड़े प्यार से साइरा की ठोडी ऊपर उठाई "ब-खुदा, तुमने मुझे खरीद लिया है। तुम बड़ी नेक, खुदातरस और प्यारी बीवी हो हमारी। खुदा तुम्हें इस खुदातर्सी का उज्र जरूर देगा।"

"आप तो इसी वक्त अहमदपुर सिधारिये और मेरी बेटी को लाकर दीजिए मुझे।"

"मैं अभी जाता हूँ। बखुदा हवा के घोड़े पर सवार होकर जाता हूँ।"

"आज ही मेरी बेटी को लेकर वापिस आइएगा।"

जलील अहमदनगर जाने की तैयारियाँ करने लगा।

और वहाँ अहमदपुर में अब हालात पहले से भी ज्यादा खराब हो गए थे। अनवरी अब खुल्लम-खुल्ला सईदा के वहाँ रहने पर एतराज करने लगी थी। आये दिन वह कोई न कोई बहाना रख कर, सईदा को

दरम्यान में रख कर फ़िसाद बरपा करती और सारे घर को अपने सर पर उठा लेती। उसने बहुत काफ़ी हद तक ताहिर को भी अपनी माँ तथा भांजी से बदजन कर दिया था।

जाकिरा बीबी अब वाकई अपनी नातिन सईदा के बारे में सोचने लगी थीं। उसका यहाँ रखना उनके लिए भी अब मुश्किल होता जा रहा था वे अपनी मासूम बच्ची के लिए यहाँ का माहौल अब जहर समझने लगी थीं। इतने में जलील आ गया। जलील, सईदा का बाप, जो उसे अपने साथ ले जाने के लिए आया तो उन्हें ऐसा लगा, जैसे कि उन्हें अपने दिल की मुराद मिल गई हो। जैसे कि खुदा ने उनकी सुन ली हो।

जलील की इस ख्वाहिश पर कि वह सईदा को अपने साथ ले जायेगा, उन्हें ऐसा महसूस हुआ कि जलील कोई फ़रिश्तए-रहमत है, जो ऐन मौके पर सईदा और उनकी दोनों की मुश्किल आसान करने के लिए खुदा की तरफ़ से भेजा गया हो। उन्होंने बड़ी खुशी तथा फ़राख-दिली के साथ कहा—

"जरूर मियाँ! बेटी बाप के पास न रहेगी, तो किसके पास रहेगी! मेरी सईदा कितनी खुशनसीब है कि उसे बाप का महान साया नसीब हो रहा है। खुदा इसे हमेशा खुश रखे और तुम्हारी मुहब्बत और शफ़-क़त में परवान चढ़ना नसीब करे।"

और यह कहते कहते उनकी आवाज भर्रा गई। सईदा की जुदाई के खयाल से उनका दिल उनके सीने में तड़पने लगा। उन्हें ऐसा लगने लगा, जैसे कि उनके दिल पर कोई छुरी से कचोके लगा रहा हो।

उन्होंने सईदा को प्यार से लिपटाते हुए कहा—

"बेटी···चाँदनी मेरी, तुम्हारे अब्बाजी तुम्हें लेने आए हैं। तुम खुशी-खुशी उनके साथ जाओ। बाप से बड़ी और सच्ची मुहब्बत किसी के पास नहीं होती, बेटी!"

उन्होंने बेअख्तयार होकर सईदा को लिपटा लिया—

"जब जी घबराए, तो कुछ दिन के वास्ते फिर यहाँ ग्रा जाना। जब तक मैं जिन्दा हूँ, यह सिलसिला तो लगा ही रहेगा, मेरी चांद।"

ग्रौर सईदा जो कि खुद भी ग्रपनी मामी की झिड़कियों से ग्रौर उनके बच्चों के रोज़-रोज़ की मार-पीट से ग्राजिज़ ग्रा गई थी, ग्रपने बाप के साथ जाने पर बखुशी राजी हो गई। वह इन्तहाई मासूमियत के साथ बोली—

"ग्रच्छा, नानी ग्रम्मा ! हम ग्रपने ग्रब्बूजान के साथ चले जाते हैं। लेकिन ग्राप भी वहाँ ग्राइयेगा।"

"हाँ-हाँ बेटी।" जाकिरा बीबी ने उसे ग्रौर भींच लिया—"मैं भी ग्राऊँगी ग्रौर तुम भी ग्राना।"

ग्रौर फिर जबकि सईदा के जाने का वक्त ग्रा रहा था, उन्होंने सईदा की ग्रदम मौजूदगी में जलील से कहा—

"देखो मियाँ, इसे किसी किस्म की तकलीफ न हो। सौतेली माँ के साथ बहुत कम ऐसा होता है कि बुरा न हो। खयाल रखना कि साइरा बेगम इस पर जब्र न करें, जो कि सौतेली माग्रों का खासा होता है।"

"नहीं, ग्रम्मीजान।" जलील दिल के वमूक के साथ बोला—"बखुदा खुद साइरा ने मुझे सईदा को लाने के लिए इसरार करके भेजा है। वह तो इसके लिए सगी माँ की तरह पुर इजतराब है। मुझे दिल से एतबार है कि सईदा को प्यार के सिवाए एक हल्की-सी झिड़की भी कभी न देगी।"

उसने कहा—

"ग्रौर ग्रगर कुछ गड़बड़ी हुई भी तो मैं मर नहीं गया हूँ ग्रभी।" जलील ने जाकिरा बीबी को यकीन दिलाया—"ग्रापको ग्रौर मेरी सईदा को इतनी-सी भी तकलीफ न होगी। इसका जिम्मा ग्राप मुझ से ले लीजिए।"

"हाँ मियाँ !" जाकिरा बीबी की तरह मुग़लानी बी भी ग्राबदीदा

होकर कहने लगी—"सईदा हम सबकी यों समझिए कि जिन्दगी है, सरकार!"

"फ़िक्र न करो, मुगलानी बी, यह मेरा खून है।"

और फिर जब सईदा अपने बाप के साथ जाने के लिए तैयार हो गई, तो बेअख्तयार होकर जाकिरा बीबी ने उसे पागलों की तरह भींच लिया। वह और सईदा दोनों फूट-फूटकर रोने लगीं। मुगलानी बी भी इस तरह रोने लगी, कि उनकी सगी बेटी ब्याह कर ससुराल जा रही हो।

अनवरी मुंह बिगाड़ कर बोली—

"खुदा का लाख-लाख शुक्र है कि यह बला हमारे घर से दूर जा रही है।" उसने नाक सिकोड़ी—"रोया जा रहा है, जैसे कि उसका बाप उसे कुर्बान करने के लिए ले जा रहा हो।"

वह अपनी मामी के पास आई। बड़ी मासूमीयत से बोली—

"हम जा रहे हैं, ममानीजान!"

अनवरी ने उसे यों ही दूर-दूर से कलेजे से लगाते हुए कहा—

"जा तो रही हो, लेकिन गुन-ढंग से वहां रहना। सौतेली मां के पास जा रही हो। ऐसी माओं के पास रहने वाली लड़कियों को लोहे के चने चबाने पड़ते हैं। खयाल रखना।"

सईदा का दिल बुझ गया। उसके कलेजे पर उसकी मामी ने इस वक्त भी बड़े जोर का घूंसा मारा था। वह ताहिर के पास आकर बोली—

"मामू साहब!" उसकी आवाज लरज रही थी—"हम अब्बूजान के साथ जा रहे हैं, मामू साहब!"

उसकी आंखों में मोटे-मोटे आंसू तैर गए। ताहिर ने उसके सिर पर हाथ रख दिया—

"जाओ बेटी!"

और वह सब को आदाब करती हुई जलील के साथ रवाना हो गई।

दूर तक उसकी नानी अम्मा की याद उसका दामन थाम चली आ रही थी। और उसे ऐसा महसूस हो रहा था, जैसे कि उसकी माँ एकबारगी मर गई हो।

सईदा को देखते ही साइरा ने उसे इस अन्दाज में लिपटा लिया, जैसे कि वह बरसों से उसके लिए बेचैन व बेकरार रही हो। उसने इस अन्दाज़ से सईदा को लिपटाया कि जलील की आँखों में सच्ची मुसर्रतों के दीप झिलमिला गए। उसका दिल खुशी और इतमीनान से नाच उठा।

वह बेअख्तयार बोला—

"यकीन मानो साइरा, मरने वाली की रूह मुस्करा-मुस्कराकर तुम्हें देख रही होगी और खुदा से अर्श का पाया पकड़ कर कह रही होगी—खुदाया ! तू मेरी मासूम बच्ची को सहारा देने वाली इस नेक खातून की झोली में मेरी सारी नेकियाँ डाल दे। इसने मेरी रूह को बड़ा सकून अता किया है। इसने गले से लगाया है मेरी बे माँ की मासूम बच्ची को।"

सईदा भी अपनी सौतेली माँ का अपनत्व देख कर खिल उठी। वह सोचने लगी—

"मेरी ममानी कितनी बुरी है ! कह रही थी कि सौतेली माएँ बहुत बुरी होती हैं। झूठी जमाने भर की !"

और फिर आठ-दस दिन के अन्दर-ही-अन्दर साइरा ने अपने ऐन प्रोग्राम के तहत अपनी कार्यवाहियाँ शुरू कर दीं। उसने एक रात, जब कि जलील रात का खाना खाकर अभी लेटा ही था, उसने कहा। यह उसके बने-बनाए प्रोग्राम का पहला वार था—

"एक बात कहूँ !"

"फरमाइये !"

"बुरा न मानिएगा !" उसने पेशबन्दी शुरू की—'डर लगता है, मुझे।"

"नहीं-नहीं, ऐसी क्या बात है ?" वह प्यार से बोला—"कहो !"

"यह तुम्हारी बेटी सईदा बड़ी खुदराय है।"

"क्या बात हुई ?"

"आज ही की बात नहीं है।" वह बोली—"यह तो उसके आने के दूसरे ही दिन शुरू हो गया था। जिक्र तो मैं अब कर रही हूँ आपसे।"

"क्या हुआ ?"

'यह हर काम और हर बात में अपनी मर्जी चलाती है। कहो कपड़े बदलो, तो कहेगी—नहीं बदलती। कहो—मुंह हाथ धो डालो, तो इनकार कर देगी। नहाने को कहती हूं तो मुंह फुला लेती है। पढ़ाने बिठाती हूँ तो मुंह बिचकाकर भाग जाती है। अगर कहो कि हम तुम्हारे अब्बू-जान से शिकायत कर देंगे, तो कहती है कि मेरी जूती से। डरता कौन है अब्बूजान-टब्बूजान से।"

जलील यकबारगी उठकर बैठ गया—

"हाँ यें !"

वह हैरत और ताज्जुब से बोला।

वह अदाकारी करते हुए बोली—

"हाँ ! लेकिन अभी आप उससे कहिएगा कुछ नहीं। मैं उसे समझा-बुझा और मना-फुसलाकर ठीक कर लूंगी।"

"हाँ, यह तो ठीक है। यह तो तुम्हारी शराफ़त, तुम्हारी मुहब्बत और नेकनीयती है।"

वह तशवीश भरे अन्दाज़ में बोला—

"लेकिन यह सईदा को हो क्या गया है ? किस किस्म की है यह लड़की !"

'यह उसकी नानी अम्मां का बेजा लाड-प्यार है। यह गलत शिक्षा है उनकी, जो हमारी बेटी खराब हो गई है।"

"यही बात है।" जलील ने ताईद की—"इसके मायने तो यह हुए कि हमारी खुशदामन साहिबा ने हमारी बेटी को कहीं का नहीं रखा।"

साइरा ने शौहर की ताईद में कहा—

"बिल्कुल यही बात है। मुझे तो अल्लाह जानता है कि बेटी सईदा की तरफ से फिक्र लग गया है।"

उसने शौहर को यकीन दिलाया—

"लेकिन आप फिक्र बिल्कुल न कीजिए। कसम अल्लाह की, मैं उसे बिल्कुल ठीक कर दूंगी।"

"ठीक क्या करना है।" जलील ने इजाजत दी—"अगर वह इस तरह नहीं सुधरती जो तुम उसकी खबर लो। बेंत पकड़ लो हाथ में। कोई हमें बेजा प्यार करके उसे खराब करना तो है नहीं।"

"नहीं-नहीं।" साइरा जैसे कि दुहाइयां देने लगी—"खुदा न करे कि मैं उसके लिए हाथ में छड़ी पकड़ लूं। मार खाएँ उसके दुश्मन। मैं तो उसे यों ही समझा-बुझा कर, बहला-फुसला कर ठीक कर लूंगी।"

"कहो तो मैं इस वक्त या कल सुबह उससे पूछूं?"

"नहीं-नहीं, आपको मेरी कसम, अगर आपने एक लफ्ज भी उससे पूछा। या इस किस्म की बात भी निकाली। आप तो उसकी इस बात से बिल्कुल अनजान बने रहिए। जैसे कि आपको कुछ मालूम ही नहीं है। वह तो मैं आपसे इस बात का ज़िक्र भी नहीं करना चाहती थी, लेकिन आपकी औलाद है। मेरा दिल न माना और मैंने आपसे इस बात का जिक्र कर दिया। आप तो अपने किसी रवैये से इसका इज़हार तक न कीजिएगा कि आपको मालूम हो चुका है। या यह कि आप उस से खफ़ा हैं।"

जलील अपनी बीवी के इस फरेब, उसकी इस सरासर झूठ, उसकी इस एक्टिङ्ग पर कुर्बान हो गया। सोचने लगा कि उसकी बीवी कितनी समझदार और शरीफ है। यह नहीं चाहती कि मैं सईदा को एक लफ्ज भी कहूं और खुद उसकी इन बेहूदगियों और बदतमीजियों के बावजूद उसकी इसलाह समझदारी और खूबी के साथ प्यार से करना चाहती है। वह दिलो-जान के साथ अपनी बेगम पर मजीद ईमान ले आया। बड़े

प्यार से बोला—

"सर्रो ! खुदा की कसम, तुमने मुझे खरीद लिया है अपने इस तर्ज़-अमल से।"

"खुदा न करे कि मैं आपको खरीदने की बात करूं। यह तो मेरा फ़र्ज़ है। क्या आप यह समझते हैं कि मैं सईदा को अपनी बेटी नहीं समझती। वह तो मेरे जिगर का टुकड़ा है। यह और बात है कि मैंने उसे अपनी कोख से जन्म नही दिया। लेकिन प्यार मैं उससे उसी अन्दाज में करती हूं कि वह मेरी कोख से ही पैदा हुई है। आपका ही तो खून है न सईदा किसी और का तो नहीं।"

उसने अपनी बात फिर दुहराई—

"लेकिन आप सईदा से कुछ न पूछिएगा और न उसकी तरफ से आप अपना दिल बुरा कीजिएगा। बच्ची है। अभी अपना अच्छा-बुरा वह क्या समझे। मैं उसे सम्हाल लूंगी।"

"नहीं !" जलील बोला—मैं सईदा से कुछ नहीं पूछूंगा।"

दो दिन और गुजर गए। सईदा को साइरा ने खूब जोर से भींचकर प्यार करते हुए कहा—

"तुम मेरी बेटी हो न !"

"हां बीबी।" सईदा मासूमियत से बोली—"हम आपकी बेटी है।"

वह अपनी सौतेली मां को बीबी कहा करती थी। उसको यही सिखाया गया था कहने के लिए।

"जो मैं कहूंगी, वह करोगी ?" एक दफ़ा और प्यार करते हुए साइरा ने पूछा।

"जी।" उसने स्वीकृति में सिर हिलाया—"आप जो भी कहेंगी, करूंगी।"

"तो फिर तुम एक काम करना। आज जब तुम्हारे अब्बूजान खाना खाने बैठें, तो उनकी प्लेट में राख डाल देना।"

सईदा ने बड़ी हैरत से पूछा—

"यह क्यों, बीवी ?"

"यह इसलिए, बेटी।" उसने सईदा का मुंह चूम लिया—"कि तुम्हारे अब्बूजान का जी खराब है। हकीम साहब ने उन्हें मुर्गा खाने से मना किया है। और वे हैं कि सुनते ही नहीं है। तुम राख डाल दोगी, तो वे फिर न खायेंगे और इस तरह हकीम साहब का कहना हो जायगा और वह, तुम्हारे अब्बूजान की तबीयत भी ठीक हो जायगी।"

"लेकिन इतनी बड़ी बदतमीज़ी पर अब्बूजान हमसे ख़फ़ा हो जायेंगे। मारेंगे हमें। समझेंगे कि मैं पागल हो गई हूं।"

"नहीं-नहीं, वे मारेंगे कैसे ? हम बचा लेंगे तुम्हें। हम कह देंगे कि अभी नासमझ बच्ची है बेचारी। वे फिर तुमसे नाराज़ भी न होंगे।"

उसने सईदा को खूब अच्छी तरह से समझा-बुझा दिया। जब जलील खाना खाने बैठा तो सईदा ने महज़ अपने अब्बूजान के परहेज़ के खयाल से उनकी प्लेट में राख डाल दी।

"अरे ! यह क्या बदतमीज़ी !"

जलील गुस्से से आग-बबूला होकर खड़ा हो गया। उसने कहर भरी नजरों से सईदा को घूरा। उसकी आंखों से शोले निकलने लगे। वह जोर से गर्ज उठा—

"बड़ी बदमाश लड़की हो तुम ! कमीनी कहीं की। यह क्या हरकत ? कहीं तेरा दिमाग तो खराब नहीं है ?"

उसने एक जोरदार तमाचा सईदा के गाल पर मारना चाहा। अभी उसका हाथ उठा ही था कि साइरा ने उसका हाथ पकड़ लिया। वह मुलायमियत से बोली—

"बच्ची है अभी। अब ऐसा भी क्या कि उस पर आपका हाथ उठने लगे।"

"लेकिन यह उसकी हरकत क्या थी ?" जलील के नथुने फड़क रहे थे—"मैं इस खबीस लड़की को एक सैकिंड के लिए भी अपने घर रखने को तैयार नहीं हूं।"

"क्या बेकार की बातें रहे हैं ? आपको मेरी कसम । बच्ची है, हो गई उससे हिमाकत ।"

"लेकिन मैं कहता हूँ कि यह बदतमीजी की हद है ।"

"यह मासूमियत है ।" साइरा बोली—"बच्चे तो शरारत करते ही हैं ।

"लेकिन ।"

"आपको मेरी कसम । आपको मेरा मुर्दा दीखे, जो आप हमारी बेटी को अब कुछ कहें ।"

उसने सईदा से प्यार से कहा—

"जाओ बेटी, तुम बावर्चीखाने में जाओ । मैं अभी आती हूँ ।"

जलील दस्तरख्वान पर फिर नहीं बैठा । वह गुस्से से भरा हुआ अपने बाहर के कमरे में चला गया ।

साइरा ने मुस्करा कर अपनी माँ की तरफ देखा ।

अपनी इस इतनी बड़ी कामयाबी पर दोनों माँ-बेटियाँ मुस्करा रही थीं ।

•

साइरा अपनी इन्हीं हरकतों में दिन रात लग गई ।

वक्त गुजरता गया । यहाँ तक कि एक साल गुजर गया ।

सईदा अब नौ साल की हो गई थी ।

साइरा ने अपनी इन्हीं हिकमत अमलियों से इतना कर दिया था कि जलील को अपनी बेटी सईदा की सूरत तक से नफरत हो गई थी । इस एक साल के अर्से में कम से कम दो सौ छोटी-छोटी बातें वह सईदा की तरफ से लगाती रही थी । इस अन्दाज में कि सईदा और जलील को कभी सीधी बातचीत का मौका ही उसने न दिया । कहीं उससे उसका सारा बना बनाया खेल बिगड़ न जाय । वह तो यही करती रही कि

उसे कसमें दे-देकर इस बात से रोकती और मना करती रही कि वह अपनी बेटी से सीधे कोई बात न पूछे, कोई बात न करे उससे और न किसी की उससे बाजपुर्स करे।

वह सईदा को पुचकार-पुचकार कर और प्यार कर-करके उसे अपने बाप से बुरा बनाती रही और वह जलील पर और सईदा दोनों पर यह असर डालती रही कि वह इनसान नहीं, बल्कि फ़रिश्ता है।

जलील सोचता रहा। वह यही समझा कि उसकी बीवी साइरा जैसी नेक और शरीफ औरत इस रुए-जमीन पर कोई और नहीं हो सकती। वह यही समझता रहा कि साइरा सईदा से सगी माँ से भी ज्यादा प्यार करती है। उसे चाहती है। वह एक ऐसी चाहने वाली माँ है सईदा की, जो अपने हद से ज्यादा लाड़ और प्यार से बच्चों को बिगाड़ दिया करती हैं।

वह अपनी तरफ से हर गलत और झूठ बात सईदा के बारे में जलील से कहती और फिर वह उसे इस बात पर मजबूर कर देती कि वह उस मामले में सईदा से न पूछे।

और यह उसका एक ऐसा नया हर्बा था, यह उसकी एक नई और अनोखी चाल थी। एक ऐसा अनोखा तरीका था उसकी माँ का बताया हुआ कि वह हद से ज्यादा दुश्मन होते हुए भी सईदा की दुश्मन नहीं समझी जा रही थी। हर जगह यही मशहूर था कि यह सईदा की सौतेली माँ सगी माँ से भी ज्यादा उसे चाहती है। जलील की नजरों में अपनी बीवी की कीमत, उसकी मुहब्बत और उसकी रवादारी बहुत ज्यादा बढ़ गई थी। वह दिलो-जान के साथ उसकी पूजा करने लगा था। हालाँकि शायद अगर उसे हकीकते-हाल से पूरी तरह आगाही हो जाती तो वह साइरा जैसी कमीनी, ज़लील और खतरनाक औरत को अपने घर से निकाल देता या वह उसका खून कर डालता। लेकिन वह तो उसकी पूजा कर रहा था। साइरा की यह नई और अनोखी चाल सौ फीसदी कामयाब थी।

उसने आज तक सईदा को एक जरा-सा घूरा तक नहीं था। बल्कि वह उसे हमेशा कलेजे से लगा कर रखती थी, पुचकारती थी और प्यार करती थी और इस अपने पुचकार और प्यार में वह उसके लिए एक ऐसा जहर घोल रही थी, जो उसकी सारी जिन्दगी को जहरीला कर दे। नासूर बन जाए उसकी जिन्दगी में।

"भई, अब तो मैं भी बखुदा, इस खुदसर लड़की से तंग आ गई हूँ।" उसने अपने शौहर से कहा—"अब तो आप उसे उसकी अपनी नानी अम्मा के पास ही भेजिए।"

"क्या हुआ?" जलील ने, जोकि पहले ही से सईदा से तंग आ चुका था पूछा—"क्या किया उसके अब कि अब आप भी वही चाह रही हैं, जो मैं बहुत दिनों से चाहता चला आ रहा हूँ।"

वह ताहने के स्वर में बोला—

"आप तो बड़ी हमदर्द थीं उसकी!"

"मैं उसकी हमदर्द तो अब भी हूँ। वह चली जायगी तो मुझे उसकी याद चैन न लेने देगी।"

वह रुहांसी होकर बोली—

"लेकिन अब उसका यहाँ रहना खतरनाक है।"

"हुआ क्या?"

"कुछ नहीं। आप तो उसे अब उसकी नानी माँ के पास भिजवा दीजिए।"

"फिर भी।"

"मुझे बताते शर्म आती है।"

"क्या?"

"अब क्या कहूँ आपसे!" वह जैसे कुनीन की गोली निगलते हुए बोली—"आप मेरे उस नामुराद चचाजाद भाई को तो जानते ही हैं। वही कम्बख्त रजा, अभी चौदह साल का भी पूरा नहीं है। मगर हरकतें उसकी ऐसी हैं कि खुदा की पनाह। कल ही मैंने उसे जूते लगाकर यहाँ

से निकाला है। मैंने कह दिया है अम्मा से कि अगर अब वह इस घर में आया तो मुझ से बुरा कोई न होगा। कम्बख्त जलील ! आवारा ! कल जो हमारी हवेली के पिछवाड़े मेरी नजर गई तो क्या देखती हूँ कि वह सईदा के बालों में फूल लगा रहा है। मैंने सुना, वह कह रहा है—"

वह बोलते-बोलते रुक गई। जलील, जोकि वह सब दास्तान सुनते-सुनते पागल हो गया था, बोला—

"क्या कह रहा था वह ?" वह जोर से गर्जा—"मैं उनका खून कर दूंगा।"

"कोई खास बात नहीं।" वह बात की अहमीयत को कम करते हुए बोली—"वह सईदा से कह रहा था कि मैं तुमसे व्याह करूंगा।"

जलील आग-बबूला हो गया—

"और यह नामुराद सईदा क्या बक रही थी ?"

"कोई ऐसी-वैसी बात उस बेचारी ने नहीं कही। बेकार का गुस्सा उस मासूम पर न कीजिए। वह तो सिर्फ इतना बोली थी कि मैं भी तुमसे व्याह करूंगी। वह बच्चा है अभी, क्या जाने इन बातों को। बच्चों की बातें। लेकिन अब मैं नहीं चाहती कि सईदा यहाँ रहे। वहाँ नानी के पास रहेगी, तो वे उसे सम्हाले रखेंगी। वे फिर भी नानी हैं और मैं लाख सब कुछ होते हुए भी, फिर भी सौतेली माँ हूँ। यह मुआ सौतेले का लफ्ज़, जो मेरे नाम के साथ लगकर रह गया है, क्या करूँ मैं इस नामुराद सौतेले का ?"

और यह कहते-कहते वह रोने लगी। बड़ी हसरत से बोली—

"काश ! मैं उसकी सौतेली माँ न होती। हालांकि यह मेरा अल्लाह जानता है कि मैं उसे प्यार बिल्कुल सगी माँ की तरह करती हूँ।"

"अरे-अरे !" उसके इस तरह बेकरार होकर रोने से जलील का दिल बेचैन हो गया। उसने आगे बढ़कर उसका सिर अपनी गोद में भर लिया। वह इन्तहाई मुहब्बत से अपने हाथ से उसके बहते हुए आँसुओं

को रोकते हुए बोला—

"खुदा की कसम बेगम मेरी, तुम इसका गम न करो कि वह नालायक बे कहे की बदनसीब लड़की यहाँ से चली जायगी। उसे यहाँ से चले ही जाना चाहिए। उसकी नानी अम्मा ने उसे बिगाड़ा है, अब वही उसकी बदतमीजियों को भुगत भी लेंगी। खुदा की कसम, अल्लाह जानता है कि तुमने उसे कितनी अज़ीम मुहब्बत दी है। वही बदबख्त उसके योग्य न साबित हो सकी तो इस में तुम्हारा क्या क़सूर है। उसे कल ही उसकी नानी के पास ले जाकर छोड़ आता हूँ। मैं समझ लूंगा आज से कि वह मर गई है और तुम भी उसके लिए यही समझ लेना। उसी में हम सब की बेहतरी है।"

वह हिकारत से बोला—

"और शायद इसी में उसकी भी बेहतरी हो।"

"किस दिल से मैं सईदा को अपने से जुदा करूंगी!" साइरा ने अदाकारी की हद कर दी। एक लम्बी सर्द आह भर कर बोली—"हाय मेरे अल्लाह!"

वह फिर से बिसूरने लगी—

"मेरा दिल तो अभी से, इस तसव्वर से ही फटा जा रहा है कि मेरी बच्ची मुझ से जुदा हो जायगी। उसे अपने से अलग कर के मैं जिन्दा कैसे रह सकूंगी?"

जलील ने उसे फिर तसल्ली दी। वह उसे देर तक पुचकारता रहा और समझाता रहा। आखिर में वह एक सर्द आह भर कर बोली—

"अच्छा! तो कल आप उसे लेजाकर उसकी नानी अम्मां के पास छोड़ आएं। लेकिन एक बात का वायदा आपको मुझ से करना होगा।"

जलील झट से बोल पड़ा—

"मैं दोबारा उसे यहाँ हर्गिज न बुलवाऊंगा। खुदा की कसम नहीं। तुम यह बात फिर मुझ से कभी न कहना कि मैं उसे बुलवा लूं।"

साइरा यह बात कहने नहीं जा रही थी। लेकिन जब उसने जलील

के मुंह से सुना तो उसके दिल की और कई कलियां एक साथ खिल उठीं। एक सर्द आह भरते हुए बोली—

"अच्छा ! न बुलाइयेगा उसे दुबारा फिर कभी। अगर आपकी यही मर्जी है तो मैं आपकी मर्जी के आगे ज़बान न हिलाऊँगी। लेकिन एक दरख्वास्त मैं जरूर आपसे करूंगी।"

वह खुशामद से बोली—

"और आपको मेरी वह इल्तजा माननी ही पड़ेगी। आपको मेरे सर की कसम है खुदा-रसूल का वास्ता आपको। मेरा मुर्दा देखे आप, जो मेरी यह बात आप न मानें।"

"क्या है वह बात ?"

"आप मेरी बेटी सईदा से यह बात न कहिएगा। उस पर आप यह बात हर्गिज जाहिर न करेंगे कि आप उससे खफ़ा हैं। या यह कि उसकी सारी बातें आपको मालूम हो चुकी हैं। आप मेरी कही हुई किसी बात का उससे जिक्र नहीं करेंगे। इशारे से भी नहीं। और न इसमें की कोई बात उसकी नानी अम्मा से कीजिएगा। उसकी एक जरा-सी बुराई भी वहाँ न कीजिएगा आप। उसे इस तरह से वहां लेकर जाइएगा आप कि जैसे आपको किसी बात का इल्म ही नहीं है। आप उसे बड़े प्यार से यहां से लेकर जायेंगे। और वहां उसे इसी प्यार के साथ ही छोड़ कर भी आना होगा।"

और यही वह बात थी, जिसे साइरा उस समय कहने जा रही थी। जिसे अपनी ग़लतफ़हमी से जलील यह समझ बैठा था कि वह सईदा को दुबारा बुला लेने की बात करने जा रही है।

जलील कुछ सोच कर बोला—

"मैं सईदा पर कोई बात जाहिर नहीं करूंगा। यह ठीक है और यह मुमकिन भी है। मैं दिल पर पत्थर रख कर उससे हँस-बोल भी लूंगा। लेकिन यह कैसे मुमकिन है कि मैं उसकी नानी अम्मां को कुछ न बताऊँ ? वे पूछेंगी नहीं कि सईदा को क्यों वापिस भेजा जा रहा है।

फिर मैं क्या जवाब दूंगा ?"

"कह दीजिएगा कि मैं उसकी सौतेली माँ की वजह से उसे यहाँ लेकर आया हूँ।" वह बोली—"मैं अपने ऊपर दूसरों का इलजाम ले लेने को तैयार हूं, लेकिन मैं यह नहीं चाहती कि सईदा को ये सब बातें मालूम हों। या यह कि मेरी बेटी की बुराई किसी और को पता चले। मैं तो सईदा की नानी अम्माँ तक से यह बात छुपाना चाहती हूँ कि मेरी बेटी में कोई ऐब या बुराई है। फिर दुनिया तो एक तरफ है।"

"लेकिन इस तरह तुम्हारी बदनामी जो होगी।"

"मेरी बदनामी होने दीजिए। सौतेली माँ तो जग में होती ही बदनाम है। इससे मेरी कोई बदनामी न होगी।"

वह अफ़सुर्दगी से बोली—

"सौतेली माँ की अच्छाइयों पर अलबत्ता दुनिया कभी एतबार न करेगी। चाहे कुछ हो, लिहाजा क्या जरूरत है कि आप मेरी अच्छाइयों का ढोल पीट कर, जिसका कि कोई यकीन भी न करे, मेरी बेटी को बदनाम कर दें। उसकी कोई कमजोरी मैं दुनिया के सामने ब-खुदा नहीं रखना चाहती। और मैं यह किसी कीमत पर न चाहूँगी कि सईदा को यह मालूम हो जाय कि उसकी नालायकियों की खबर मैं आप तक पहुँचाती रही हूँ। वह क्या सोचेगी मेरे बारे में। वह मेरे बारे में बुरा सोचे, इससे ज्यादा मेरी बदकिस्मती क्या होगी। उसे यह कभी न मालूम होने दीजिएगा कि उसकी बातें मैं आपको बताती रही हूँ।"

"फिर मैं उसकी नानी से क्या कहूंगा ?"

"यही कि सौतेली माँ की वजह से मैं सईदा को अपने पास नहीं रख सकता।"

"तुम जैसी फ़रिश्ता को मुफ्त में बदनाम करूंगा।"

"हाँ।" वह बोली—"यही मेरी ख्वाहिश आप समझ लीजिए। इस से मेरा कुछ न बिगड़ेगा और मासूम सईदा का बहुत बिगड़ जायगा और मैं उसका एक जरा-सा भी बिगाड़ना नहीं चाहती।"

"वाकई तुम फरिश्ता हो !" जलील ने सचमुच साइरा के सामने अपना सिर झुका दिया। "दुनिया की सारी अज़ीम औरतों की अजमत तुम पर खत्म है। ब-खुदा !"

दूसरे दिन सुबह ही जलील जब सईदा को अपने साथ उसकी नानी अम्मा के यहां ले जाने की तैयारियाँ करने लगा तो सईदा हैरान रह गई। जहां एक तरफ उसे अपनी नानी अम्मा के पास जाने की दिल ही दिल में बेअन्दाजा खुशी हो रही थी, वहां उसे साइरा, अपनी बीबी को छोड़ने का मलाल भी हो रहा था। इसलिए कि उसकी जानकारी में उसकी सौतेली मां ने उससे कोई बुरा सलूक नहीं किया था। बल्कि वह तो उसे हरदम पुचकारती, प्यार करती, खिलाती-पिलाती, पहनाती ओढ़ाती और बनाती-संवारती रहती थी। उसने आज तक कभी न तो उसे घुड़का था और न एक जरा-सी आँख दिखाई थी। न मारा था, न झिड़का था कभी। वह तो बस, हरदम उसे प्यार करती रहती थी। उसे मीठी-मीठी कहानियां सुनाया रहती थी। मिठाइयां, लड्डू, बताशे, सिवैयां और चिरौंजी दाने मंगा-मंगा कर देती थी और उसे हरदम लिपटाए रहती थी। वह तो उसके अब्बाजान से लड़ने लग जाती थी अगर वह कभी जरा-सा भी उसे डाँटते थे तो। उन्होंने तो लाड और प्यार में उसे पढ़ाया तक नहीं था। वह उसे कभी भी पढ़ने को नहीं कहती थीं।

और जब वह जाने के लिए बिल्कुल तैयार हो गई, तो साइरा उससे लिपट कर रोने लगी। वह फूट-फूट कर रो रही थी। वह इस अन्दाज में रो रही थी, जैसे कि वह अपना दम दे देगी।

जलील उसे समझाने लगा। उसे तसल्ली और दिलासे देने लगा। उसकी मां भी उसे समझाने लगी। उसकी बहिनें और उसका भाई भी उसे समझाने लग पड़ा।

मासूम सईदा ने, जोकि अपनी बीबी की जुदाई के ग़म में, खुद भी बेकरार होकर रो रही थी, अपना रोना काबू में करके उसे समझाया—

"आप न रोइये, बीबी ! हम अल्लाह ने चाहा तो फिर आजायेंगे जल्दी ही से। अब हमारा कोई वहाँ जी थोड़े ही लगेगा। आप हमसे कित्ता-कित्ता प्यार करती हैं। हम ये सब अपनी नानी अम्माँ से बताएंगे। आप बड़ी अच्छी हैं, बीबी ! न रोइये आप !"

वह बड़ी शिद्दत के साथ अपनी सौतेली माँ, अपनी बीबी से लिपट गई। साइरा ने भी उसे भींच लिया। वे देर तक दोनों एक दूसरे से लिपटी रहीं।

"अब चलो, बेटी !" जलील ने उसे अलग हटाते हुए अपनी बीवी से कहा—"अब जाने भी दो। छोड़ो उसे ! बहुत देर हो रही है। ठण्डे-ठण्डे हम अहमदपुर पहुंच जायेंगे तो अच्छा है।"

"जाओ बेटी ! खुदा निगहबान !"

साइरा ने उसे रथ पर अपने हाथों से सवार करा दिया।

"बीबी !" सईदा ने बिसूरते हुए अपना हाथ उठाया—"सलाम !"

रथ रवाना हो गया। सईदा हवेली के फाटक से लगी अपनी माँ को दूर तक देखती रही। दूर तक—बहुत दूर तक, जहाँ तक कि वह नज़र आ सकीं। और फिर उसने रथ का पर्दा गिरा दिया। अब वह पर्दा जो करने लगी थी।

हवेली के फाटक से साइरा हटी। वह हवेली के अन्दर आ गई। वह अपने कमरे में जाकर मसहरी पर गिर गई।

उसकी माँ कमरे में आ गई थी। वह यकबारगी जोश में उठी और अपनी माँ से बेतहाशा लिपट गई। उसने अपनी माँ को अपनी पूरी शक्ति से भींचते हुए कहा—

"वाह, माँ ! वाह ! अल्लाह जानता है कि कितनी बढ़िया तरकीब तुमने मुझे बताई थी।"

उसने माँ की पेशानी चूम ली—

"मान गई आपको मैं। साँप भी मर गया हमेशा-हमेशा के लिए और अपनी पारसाई भी बरकरार रही।"

"लेकिन बेटा, पूरे एक साल तक तुमने भी तो कमाल किया है। मुझे तो खुद हैरत होती थी कि तुम ऐसा अच्छा कमाल दिखा कैसे रही हो ?' वह हैरत से बोली—"यहाँ तक कि तुम झूठ-मूठ के आँसू भी बहा लेती थीं।"

"यह सब आपकी शिक्षा का कमाल है, अम्मा !" वह एक बार फिर अपनी माँ से लिपट गई—

"आखिर मैं बेटी किसकी हूँ !"

वे दोनों ज़ोर-जोर से हँसने लगीं। वे दोनों कहकहे मार कर हँस रही थीं।

सईदा अपनी नानी अम्माँ से लिपटी रो रही थी—

"मैं अल्लाह जानता है कि तुम्हें आज महीना भर से बहुत याद कर रही थी, बेटी ! अच्छा हुआ कि तुम आकर मेरे कलेजे से लग गईं।"

"आप तो वहाँ एक दफा भी नहीं आईं, नानी अम्माँ !" सईदा नानी अम्माँ से शिकायत करने लगी—

'हम न जाने क्यों, रोज़ आपकी राह देखते थे !"

ज़ाकिरा बीबी ने कहा—

'बेटी ! वह तुम्हारे बाप का घर है। और बेटी की ससुराल में बेटी वाले नहीं जाया करते। इसीलिए मैं नहीं आई।"

और फिर थोड़ी देर बाद, जब सईदा वहाँ नहीं थी, जाकिरा बीबी ने जलील से पूछ ही लिया—

"यह अचानक तुम सईदा को लेकर आ कैसे गए, मियाँ ?"

जवाब में जलील का दिल चाहा कि वह सईदा की सारी बेहूदगियाँ और बदतमीजगियाँ उगल दे, लेकिन फिर उसे अपनी बीवी साइरा की

दिलाई हुई कसम याद आ गई। वह जज़बज होते हुए बोला—

"क्या बताऊं, अम्मीजान ! आप तो जानती ही हैं कि सौतेली माएं कैसी होती हैं।"

वह जैसे कि दुःख के साथ बोला—

"सईदा अब वहां नहीं रह सकती।"

"अरे !" ज़ाकिरा बीबी को ऐसा लगा, जैसेकि उनके ऊपर बिजली गिर गई हो—"फिर ?" वह अपना कलेजा मसोस कर बोलीं—"फिर क्या होगा।"

"कुछ नहीं।" जलील ने बड़े इतमीनान के साथ कहा—"आप इसे अपने ही पास रखिए। मैं इसका हर माह का खर्च भिजवा दिया करूंगा।"

"खर्च की बात नहीं, मियां ! खुदा न करे कि मैं अपनी बच्ची के लिए तुम्हारे भिजवाए हुए खर्च का मुंह देखूं, लेकिन—"

वह चन्द लम्हे रुक कर बोलीं—

"मेरा क्या भरोसा ! ग़म की मारी बुढ़िया हूं। आज मरूं कि कल। फिर क्या होगा उसका ?"

"खुदा न करे कि आप को कुछ हो—" जलील बोला—"और फिर अल्लाह मालिक है। वह जो करेगा, बेहतर ही होगा।"

मुग़लानी बी बड़े दुःख के साथ बोल पड़ीं—

"हमारी यह शहजादी बिटिया भी बड़े दुःखों की शहजादी है, बेचारी !"

और फिर वह बोलीं—

"आप कोई फिक्र न करें, जलील मियां ! अल्लाह मालिक है। वह ही सब करने वाला है। वह जो करेगा, बेहतर ही करेगा।"

"हां।" जलील ने कहा—"खुदा करे कि वह बेहतर ही करे।"

अनवरी ने बड़े झुंझलाते हुए अन्दाज से अपनी बेटी रज़िया से मुखातिब होकर कहा—

"देख लिया तुमने, वह मनहूस फिर यहाँ आकर मर गई।"

"हाँ, अम्मी !" रजिया बुरा-सा मुंह बनाकर बोली—"मरती भी तो नहीं है यह कम्बख्त।"

"वह क्या मरेगी खुदा की ख्वार !" मुसीबत जमाने भर की। अनवरी ने झुंझला कर कहा—"आने दो अपने अब्बा को। कहती हूं कि इन तीनों भटियारिनों को यहाँ से गारत करो। वरना मैं, अल्लाह जानता है, कि यहाँ न रहूँगी।"

चलते वक्त मासूम सईदा ने अपने बाप से कहा—

"हमारा सलाम कहिएगा, अब्बूजान, हमारी बीबी से। और कह दीजिएगा कि सईदा यह कह रही थी कि वह आपको बहुत याद करेगी।" उसने आँखों में आँसू भर कर अपने बाप से कहा—

"अब्बूजान, हमारी बीबी से कहिएगा कि वे हमें जल्दी से बुला लें।"

"अच्छा।"

जलील ने कहा और वह अपनी बेटी सईदा को पुचकारे या प्यार किए बगैर ही वहाँ से रुखसत हो गया।

सईदा ने यकबारगी अपनी नानी से लिपट कर कहा—

"नानी अम्माँ। हमारी बीबी हमें बहुत चाहती थीं।"

"हाँ, बेटी !"

जाकिरा बीबी के दिल से धुआँ उठने लगा। वह सोचने लगीं कि इस मासूम को क्या मालूम कि वह कितनी बड़ी जहर की पुड़िया है। कितनी बड़ी दुश्मन है वह इस मासूम की।

उन्होंने सईदा को जोर से लिपटा लिया। उनके मुंह से निकला—

"काश ! तुम्हारी माँ तुम्हें छोड़कर न मर जाती, बेटी !"

सात

अनवरी की लाडली बेटी नजमा ने सईदा से कहा—

"तुम हमारे बाप का खाती हो।"

"नहीं।" सईदा ने जवाब दिया—"हम मामू साहब का क्यों खाने लगे। हम सब अपनी-अपनी किस्मत का खाते हैं।"

"चल-चल, बड़ी आई अपनी किस्मत का खाने वाली! हमारे टुकड़ों पर तो पलती है और कहती है कि हम मामू साहब का दिया नहीं खाते!"

"अच्छा, खाते हैं फिर? वे हमारे भी तो मामू साहब हैं!"

"बड़े आए वे तुम्हारे मामू साहब। वे हमारे अब्बा हैं।"

"और हमारे मामू साहब हैं।"

"वह तेरे कोई नहीं हैं।"

"हैं क्यों नहीं। चलो, नानी अम्मा से पूछ लो।"

"चल-चल, बड़ी आई नानी अम्मा वाली!" नजमा ने कमाल ढिठाई से कहा—"वह तो डायन है, डायन!"

"अरे!" सईदा को गुस्सा आ गया—"खबरदार, जो हमारी नानी अम्मा को डायन कहा। हम तुम्हारा मुंह नोच लेंगे।"

"अच्छा।" और यह कहकर उसने अपनी दादी को और बुरा-भला कहा—"वह भी हमारे टुकड़ों पर पलती है। भिखारिन कहीं की—डायन।"

सईदा ने तैश में आकर नजमा के मुंह पर एक घूंसा मारा। उससे अपनी नानी अम्मा की तौहीन नहीं बर्दाश्त हो सकी थी। वह चीख कर बोली—

"खबरदार, जो हमारी नानी अम्मा को बुरा-भला कहा ।" उसने नज्मा को एक और चाँटा लगाया ।

नज्मा चीख-चीख कर रोने लगी ।

उसका रोना सुनकर अनवरी चील की तरह झपट कर आई ।

"क्या हुआ ?"

"इसने मुझे मारा ।"

"नज्मा बहन ने हमारी नानी अम्मा को डायन कहा था ।"

"बड़ी आई नानी अम्मा की सगी ।" अनवरी ने सईदा को बेतहाशा पीटना शुरू कर दिया—"वह डायन नहीं तो और क्या है ?"

वह उसे बेतहाशा पीट रही थी कि सईदा के रोने की और शोर-गुल की आवाज सुनकर मुगलानी बी आ गई । आते ही उन्होंने झपट कर सईदा को अनवरी की पकड़ से छुड़ाया—

"यह क्या करती हैं आप, बहू बेगम ! कोई इतनी सी बच्ची को इस तरह मारता है ! गजब खुदा का । आपने उसका मुंह लहूलुहान कर दिया ।"

और इतने में जाकिरा बेगम, जो कि गुसलखाने में थीं, वहीं से चीखीं—

"यह आखिर क्या हो रहा है ?"

"हो रहा है तुम्हारा सिर ।"

अनवरी ने यह कहकर सईदा को फिर पीटना चाहा । मुगलानी बी आड़े आ गईं । उन्होंने सईदा को अपने पीछे कर रखा था । अनवरी मुगलानी बी से जूझ गई ।

"खबरदार, जो तू आड़े आई । दो टके की मामा ! बड़ी आई इस कमीनी की तरफदार बन कर ।"

अनवरी ने सईदा को मुगलानी बी की तरफ से खेंच लेने की कोशिश की । मुगलानी बी ने सईदा को उनके हवाले न करते हुए कहा—

"होश में आओ, बहू बेगम ! इतना जुल्म न करो कि आसमान

कांप उठे। तुम यह न समझो कि यह बच्ची लावारिस है।"

"मेरे आड़े आती है, कमीनी। अपनी औकात भूल रही है।"

अनवरी ने मुगलानी बी के मुंह पर एक तमाचा मारा। फिर दूसरा और फिर तीसरा। जब उसने मुगलानी बी को मारने के लिए फिर हाथ उठाया तो मुगलानी बी ने उसका हाथ पकड़ लिया। वह बड़े ठहरे हुए अन्दाज़ में बोलीं—

"होश में आओ, बहू बेगम! इतना आगे न बढ़ो कि तुम्हारी अपनी बेइज्जती हो जाय।"

"मेरी बेइज्जती!"

अनवरी कमीनी और रज़ील औरतों की तरह उनसे लिपट गई। मुगलानी बी के हाथ में उसने काट लिया। मुगलानी बी ने इतने जोर का धक्का उसे दिया कि वह चारों शाने चित वहीं गिर पड़ी। अब बात मुगलानी बी के बर्दाश्त से बाहर हो चुकी थी, वह तेज होकर बोलीं—

"यह मत भूलो कि अपनी इज्जत हमेशा अपने हाथ में होती है, बहू बेगम। अगर मैंने इसी डेवढ़ी पर अपनी उम्र गुजारी है तो इसका यह मतलब नहीं है कि मैं कोई गई गुजरी या कमजात हूं। आज भी मेरा बेटा सैंकड़ों से अच्छा है। रूखी-सूखी खाने की कमी न मेरे है और न उसके।"

वह बड़े मलाल के साथ बोलीं—

"आज मुझे वह दिन देखना पड़ा है इस हवेली में, जो मेरे खावो-खयाल में भी न था। यहां हमेशा मेरी इज्जत हुई है। छोटे सरकार मेरी गोद में मूत करके इतने बड़े हुए हैं। बड़े सरकार ने कभी मुझे आप से तुम नहीं कहा।"

वह रो पड़ीं। आंसू उनकी आंखों से बह रहे थे कि इतने में जाकिरा बीवी अधनहाई गुसलखाने से बाहर आ गईं।

"क्या हुआ? यह सब क्या हो रहा है?"

रज़िया, नज्मा और अकबर तीनों दहाड़ें मार-मारकर रो रहे थे। सईदा रो रही थी और अनवरी उसी तरह मकर किये पड़ी थी। उन्होंने अनवरी को उठाया—

"यह क्या बहू बेगम!" कोई बड़ों के साथ ऐसा बर्ताव करता है। मुगलानी बी कोई तुम्हारी गई-गुजरी मुलाज़िमा तो है नहीं कि तुम उनके साथ ऐसा सलूक करो। मैं सब सुन रही थी गुसलखाने से।"

वह मुगलानी बी से मुखातिब हुईं—

"माफ करना, मुगलानी बी। उनकी तरफ से मैं तुमसे माफी मांगती हूँ।"

उन्होंने मुगलानी बी के गालों को देखा। अनवरी की पांचों उंगलियां उनके गालों पर उभरी थीं। अनवरी के दांत मुगलानी बी की कलाई में गड़ चुके थे। कलाई से खून बह रहा था।

"यह सब क्या किया तुमने?"

"मुझसे पूछ रही हैं आप?" अनवरी पूरी ताकत से चीख कर बोली—"इससे पूछिए कि इसने क्या किया है।"

"बहुत बदतमीज हो तुम, दुल्हिन!" जाकिरा बीबी ने दुःख के साथ कहा—"तुमसे बात करना या तुम्हें समझाना गू में ईंट डालने के बराबर है।"

वे मुगलानी बी से मुखातिब हुईं—

"आओ मुगलानी बी।"

वह मुगलानी बी और सईदा को लेकर वहां से हट आईं। अनवरी अपने कमरे में चली गई और बीन कर-करके रोने लगी। नौकरानी के साथ मिलकर जाकिरा बीबी ने सईदा और मुगलानी बी की देख-भाल शुरू कर दी।

और अभी वे सईदा को कुल्ली करा ही रही थीं और मुलाजिमा मुगलानी बी की कलाई पर पट्टी बांध रही थी कि ताहिर आ गया। उसने यह सब नज़ारा देखा—

"क्या हुआ ?"

"यह सब-कुछ तो तफ़सील से तुम्हारी बेगम साहिबा नमक-मिर्च लगाकर तुम्हें बताएँगी। लेकिन अगर तुमने पूछा है तो इतना सुन लो कि तुम्हारी बेटी नज्मा के मुझे डायन और भिखारिन कहा था और यह कहा था कि मैं तुम्हारे टुकड़ों पर पल रही हूँ। इस पर सईदा ने उसके मुंह पर एक तमाचा दे मारा था। तुम्हारी बेगम ने सईदा को मार-मार कर उसका कचूमर निकाल दिया। मुगलानी बी छुड़ाने गईं तो उन्हें दो सौ गालियाँ देकर तुम्हारी बेगम ने इनके गालों पर तमाचे मारे और कलाई पर काट लिया।"

जाकिरा बीबी ने अपने बेटे ताहिर को वह सब दिखाया। वह बोलीं—

"अब तुम जाकर अपनी बेगम को समझाओ। वह अपने कमरे में बीन कर रही है।"

"अच्छा!" ताहिर ने ताने से कहा—"मुझे आज मालूम हुआ कि कि मेरी बीवी अनवरी पागल भी है।"

और यह कहकर वह अनवरी के कमरे में पहुँचा। और फिर थोड़ी देर के बाद आकर उसने मुगलानी बी को डाँटना शुरू किया—

"देखो जी, तुम कोई लाट साहिब नहीं हो कि जो जी में आए वह करो। न तुम कोई मुन्सिफ हो कि सईदा और उसकी मामी का फ़ैसला करने खड़ी हो जाओ। तुम इसी वक्त निकलो, इस हवेली से! तुम जैसी गुस्ताख और जबान दराज औरत की जरूरत यहाँ बिल्कुल नहीं है।"

और फिर वह अपनी माँ से बोला—

"आपकी यह नवासी सारे फ़िसाद की जड़ है। इसका गुजारा जब बाप के घर नहीं हुआ तो यहाँ क्या होगा? अगर यह यहाँ सलीके से रह सकती है तो ठीक, वरना इसे यतीमखाने भिजवा दीजिए। मुफ्त की इल्लत पालने की ताकत मुझमें नहीं है। मैं इसकी बेहूदगियों को अब एक सैकिंड भी बर्दाश्त करने को तैयार नहीं। यह आप अच्छी तरह

समझ लें।"

इतने में अनवरी भी आ गई। आते ही बोली—

"इस बुढ़िया डायन मुगलानी की बच्ची को तुम इसी वक्त मेरी आंखों से दूर कर दो। वरना मुझसे बुरा कोई न होगा। इसने मेरी बड़ी तौहीन की है।"

"तुम फिक्र न करो, दुल्हिन बेगम !" मुगलानी बी बोलीं—"अब इस हवेली में मेरा रहना भी गाली है। मैं खुद वहाँ रहना न चाहूँगी, जहाँ आपका साया भी पड़े।"

"चुप !" ताहिर मुगलानी बी की तरफ लपका—"जबानदराज।"

जाकिरा बीवी बीच में आ गईं—

"खबरदार, ताहिर।"

ताहिर उसी जगह ठिठक कर खड़ा हो गया। वे मुगलानी बी से बोलीं—

"वाकई अब ऐसी जगह जहाँ, इज्जतों का नीलाम हो रहा हो, तुम्हारा रहना ठीक नहीं है, मुगलानी बी ! तुम मेरी फिक्र छोड़कर यहाँ से चली जाओ।"

यह कहते-कहते उनकी आवाज भर्रा गई। उनकी आंखों से आंसुओं का सैलाब उमड़ पड़ा।

"एक तुम्हारा सहारा था, सो वह भी लूट लिया गया। अल्लाह मालिक है।" उनके जिगर से एक हूक उठी—"काश ! मैंने तुम्हारा उस दिन का कहना मान लिया होता !"

और फिर मुगलानी बी, उस हवेली से, जहाँ कि उन्होंने अपनी जिन्दगी के तीस साल गुजारे थे, जाने लगीं। वह जाकिरा बीबी के कदमों से लिपट गईं। जाकिरा बीबी ने उन्हें लिपटा लिया—

"जाते-जाते दुआ देती जाओ, मुगलानी बी !" उनकी आवाज लरज गई थी—"कि मेरा भी इस हवेली से जनाजा जल्द निकले।"

वे फूट-फूट कर रोने लगीं। मुगलानी बी ने हिचकियों के दरम्यान

कहा—"खुदा न करे, बेगम हजूर। इस मासूम बच्ची के लिए खुदा आपको जिन्दा रखे। यह तो सोचिए कि आपके बाद इसका क्या होगा!"

"इसी की तो शर्म है, बीबी! वरना ज़हर खाकर अपनी इस जलील जिन्दगी का मैं खात्मा न कर देती!"

"दिल छोटा न कीजिए, बेगम हजूर! मैं आप से दूर जरूर हो रही हूँ, लेकिन मुझे आप अपने करीब हमेशा समझिएगा। लौण्डी हूँ आपकी। हमेशा लौण्डी ही समझ कर याद कर लिया कीजिएगा।" और यह कह कर वह जाकिरा बीबी के कदमों पर लोट गई—

"अल्लाह गवाह है, बेगम हजूर! मैं आपसे दूर रहकर मर जाऊंगी शायद! मेरा दिल फटा जा रहा है।"

"मुगलानी बी!" जाकिरा बीबी ने उन्हें फिर उठाया—"मुझे और ज्यादा बेमौत न मारो। रहम करो मुझ बदनसीब पर। तरस खाओ मेरे ऊपर और ऐसी बातें न करो। काश कि मैं बदनसीब, नसीबों जली बेवा न हुई होती।"

वह जुलबुला कर बोलीं—

"काश! मेरी कोख से इस जैसे नालायक इनसान ने जन्म न लिया होता! इसके बदले में काश, मेरी कोख से सांप पैदा हुआ होता!"

और फिर मुगलानी बी उस हवेली से हमेशा-हमेशा के लिए चली गईं। जाकिरा बीबी को ऐसा लगा, जैसे कि उनका दिल कोई नोचकर अपने साथ ले गया हो।

और फिर, उनकी और सईदा की जिन्दगी इस घर में अजाब बन गई। अब इस घर में अनवरी और उसके बच्चे सईदा के साथ खुल्लम-खुल्ला ज्यादतियां करते और वह अपना कलेजा मसोस कर रह जाती। यह तमाशा इस घर में रोज का था। मामाएं और नौकर-चाकर तक अनवरी की शै पाकर सईदा और जाकिरा बीबी के साथ बदतमी-जियां करते थे। और वह अपना वक्त देख कर तरह दे जाया करती

थीं ।

एक दिन खाने के वक्त दस्तरख्वान पर अनवरी ने बदतमीजी की। उसने सईदा के मुंह पर एक तमाचा मार दिया—

"लाख दफ़ा मना किया कि इतना बहुत-सा सालन न लिया करो।"

उसने सईदा की प्लेट उठा कर दूर फेंक दी—

"यह सब हराम में नहीं आता।"

जाकिरा बीबी यकबारगी सईदा को लेकर दस्तरख्वान से उठ गईं। वे झुंझला कर बोलीं—

"आज से तुम्हारा खाना-पीना हम दोनों को हराम है दुल्हिन !"

ताहिर उसी तरह गुम-सुम बैठा, यह सब देखता और सुनता रहा। उसी वक्त से जाकिरा बेगम ने अपना और सईदा का खाना अलग कर लिया।

इस वाकया को भी एक साल हो गया।

अब उनका ताल्लुक उस खानदान से बराए नाम था। वे दिन भर अलग-थलग अपने कमरे में पड़ी रहती थीं।

अब उनके पास खर्च की तंगी होने लगी थी। जायदाद तो वह सब बेटे के नाम लिख चुकी थीं। जेवरात दुल्हिन को उन्होंने उसकी मुँह दिखाई पर दे दिए थे और अपनी हिमाकत से उन्होंने हबीबगंज भी बहू को दे दिया था।

कुछ बचा-खुचा उनके पास रखा था, उससे वह अपना और सईदा का खर्च पूरा कर रही थीं। उसी में वे सईदा को पढ़ा भी रही थीं। सईदा माशाअल्लाह बड़ी ज़हीन लड़की थी। वह जल्दी-जल्दी पढ़ रही थी। कुरानशरीफ खत्म करके अब वह उर्दू और फ़ारसी पढ़ रही थी। एक उस्तानी उसे पढ़ाने आती थीं। जाकिरा बीबी उस्तानी को पन्द्रह रुपये महीना तनख्वाह भी देती थीं। एक नौकरानी भी उनके पास थी। और आमदनी कुछ भी नहीं थी। बचा-खुचा सरमाया ही आहिस्ता-आहिस्ता ख़त्म हो रहा था।

कहने को तो जलील कह गया था कि वह सईदा का हर माह का

खर्चा भेज दिया करेगा, लेकिन उसने अब तक ईद-बकरईद पर भी अपनी बच्ची के लिए कुछ न भेजा था और ज़ाकिरा बीबी उसके लिए लिखना नहीं चाहती थीं।

और फिर एक दिन वह भी आया कि ज़ाकिरा बीबी का चूल्हा ठण्डा हो गया। वे बेहद चिन्तित और परेशान बैठी थीं कि सईदा उनके पास आकर कहने लगी—

"नानी अम्मा ! एक बात कहूं ?"

"कहो बेटी !

"यह लीजिए !" उसने अपनी सोने की बालियां उनकी ओर बढ़ा दीं।"

"क्या करूं इनका ?" ज़ाकिरा बीबी ने हैरान होकर उसे देखा।

"इन्हें उस्तानी बीबी से बिकवा कर पैसे मंगवा लीजिए।"

"मेरी बच्ची !"

उन्होंने सईदा को ज़ोर से लिपटा लिया। जिन्दगी में पहली मर्तबा ज़ाकिरा बीबी को अपनी बेबसी का अहसास हुआ। लेकिन वे बड़े हौसले के साथ इस ग़म को पीती हुई बोलीं—

"पगली ! कहीं बेटी की चीज भी कोई बेचता है !"

"तो क्या हुआ, नानी अम्मा !" सईदा मासूमियत से बोली—"यह आप ही ने तो हमें बनवाकर दी थीं। बिकवा दीजिए। जब पैसे अल्लाह हमें देगा, तो फिर बनवा दीजिएगा।"

लेकिन ज़ाकिरा बीबी ने सईदा की इन बालियों को नहीं बेचा। और उस वक्त उनके घर में पहला फ़ाका हुआ। वे दिल ही दिल सोचने लगीं—

"अच्छा हुआ कि उन्होंने दो दिन पहले ही मामा को छुड़ा दिया। नहीं तो उसके सामने बड़ी सुबकी होती।"

उन्होंने अपने अल्लाह का शुक्र अदा किया—

"शुक्र है, मेरे अल्लाह ! तूने मेरी आबरू रख ली।"

और फिर उस रात नानी और नवासी दोनों ही बिना कुछ खाए-पीए ही सो गईं।

सुबह को सईदा ने अपनी नानी अम्मा से पूछा—

"नानी अम्मा, मैं अब्बूजान को एक खत लिखूं?"

"क्या लिखोगी, बेटी! खुदा न करे, क्या यह लिखोगी कि हमारे घर में खाने को कुछ नहीं है। तुमने रात से कुछ नहीं खाया।"

"नहीं-नहीं, नानी अम्मा।" वह बोली—"अल्लाह न करे कि हम यह लिखें, हम तो ये लिखेंगे उन्हें कि आप आखिर हमें भूल क्यों गए है? हम बेटी हैं आपकी! वह हमारा हर माह का खर्च क्या हुआ?"

"नहीं बेटी!" उन्होंने सईदा को समझाया—"भूलने वालों को जब खुद से याद न आए तो उन्हें याद नहीं दिलाना चाहिए।"

उन्होने सईदा को लिपटा लिया—

"और फिर पहले भी तो तुमने उनको दो-चार खत लिखे थे। जवाब दिया उन्होने?"

"अच्छा, नानी अम्मा! इस दफ़ा में बीबी को खत लिखती हूं। वह तो मुझे बहुत चाहती थीं।"

"बेटी!" जाकिरा बीबी ने सईदा को समझाया—"यह सब उसी का तो किया-धरा है। अगर वह ऐसी,न होती तो तुम्हारे अब्बूजान तुम्हें कभी भी न भूलते।"

"लेकिन वह तो अब्बूजान से ज्यादा हमें प्यार करती थीं।"

"तुम नादान बच्ची हो। तुम्हें क्या मालूम बेटी, कि इसमें भी उनकी कितनी बड़ी चाल रही होगी?"

उन्होंने सईदा को बताया—

"तुम्हारे अब्बूजान मुझे कह रहे थे कि वे तुम्हें इसीलिए यहां छोड़ने आए हैं कि तुम्हारी सौतेली मां तुम्हें अपने साथ नही रख सकती थी।"

"अजीब बात है।" सईदा बड़ी बेचारगी से बोली—"फिर वे मुझे इतना प्यार क्यों करती हैं?"

"होगी उसकी श्रोई मसलहत।" ज़ाकिरा बीबी ने कहा—"श्रौर इसमें भी उसकी कोई बहुत बड़ी चाल रही होगी कि ज़ाहिर में वह तुम्हें चाहे श्रौर परोक्ष में तुम्हारी राहों में कांटे बिछा दे।"

"श्रच्छा !"

"हां बेटी ! यह दुनिया बड़ी ज़ालिम है।"

सईदा श्रपनी नानी श्रम्मां का मुंह ताकने लगी। वह उनका मुंह ताक ही रही थी कि ज़ाकिरा बीबी का चेहरा खिल उठा। वे बेतहाशा उठ कर ख़ड़ी हो गईं।

"क्या बात है, नानी श्रम्मां।"

"श्रभी बताती हूं।"

यह कह कर वे श्रपना बड़ा सन्दूक जाकर खोलने लगीं। वे बड़े इज़तराब के श्रालम में उसकी चीज़ें इधर-उधर उलट-पलट रही थीं। उन्होंने सन्दूक के सारे कपड़े श्रौर न जाने क्या-क्या एक तरफ ढेर कर दिया। सईदा बड़े ग़ौर से यह सब देख रही थी। श्राखिर में सन्दूक की तह में उन्हें सुर्ख़ रंग की थैली नज़र श्रा गई। उनका चेहरा खिल उठा।

"इसमें क्या है, नानी मां।" सईदा ने बड़े चाव से पूछा।

"श्रभी बताती हूं, बेटी !"

उन्होंने थैली का डोरा खोला। मारे, खुशी के उनकी श्रांखें चमकने लगीं। उन्होंने वह थैली रखे हुए कपड़ों पर झाड़ी। सौ-सौ के श्रौर दस-दस के उसमें से बहुत से नोट निकल कर कपड़ों पर बिखर गए।

"शुक्र है, मेरे श्रल्लाह !" ज़ाकिरा बीबी की श्रांखों से श्रांसू टपाटप उन नोटों पर गिरने लगे। सईदा बे-श्रख़्तयार श्रपनी नानी श्रम्मां से लिपट गई। बोली—

"रात हमने श्रल्लाह मियां से रो-रोकर दुश्रा मांगी थी, नानी श्रम्मां !"

"क्या दुश्रा मांगी थी, बेटी !"

"हमने दुआ माँगी थी—अल्लाह मियाँ ! हमारी नानी अम्माँ को कहीं से बहुत से रुपये दे दीजिए।"

"तो यह तुम्हारी ही दुआओं का नतीजा है, न जाने कब के ये रखे हुए रुपये मुझे यकदम याद आ गए। पहले से याद होते, तो न जाने कब के खत्म भी हो चुके होते।"

ज़ाकिरा बीवी ने उन रुपयों को गिना। पूरे साढ़े पाँच हजार थे।

"बहुत बड़ा कारसाज है तू, मेरे अल्लाह !" उनके मुँह से निकला।

वे यकबारगी सईदा से कहने लगीं—

"देखो बेटी, तुम किसी से भी इन रुपयों का जिक्र न करना।"

"नहीं, नानी अम्माँ !" सईदा बोली—"हम किसी से जिक्र न करेंगे।"

एक वक्त के फ़ाका के बाद सईदा की नानी अम्माँ का चूल्हा फिर से रोशन हो उठा।

साल भर और बीत गया।

सईदा के बाप का कोई खत उसके पास न आया। उसकी खबर किसी ने भी न ली, सिवाए मुगलानी बी के, जो कभी-कभी आ जाया करती थीं।

"मेरे अल्लाह !"

यकबारगी ज़ाकिरा बीवी के मुँह से निकला और वे चौंक पड़ीं—

"ला इलाह इल्लल्लाह।"

मोअ़ज्जन ने सुबह की अजान खत्म की। उनके खयालात का सिल-सिला टूट गया। दुआ के लिए उन्होंने अपने हाथ ऊपर उठाए। अजान की इस दुआ के बाद उन्होंने एक नजर अपनी बच्ची सईदा पर डाली। वह अभी तक गफ़लत की नींद सो रही थी। वे नमाज़ पढ़ने के लिए उठ गईं। उन्होंने नमाज़ के बाद इन्तहाई खुलूस के साथ अपने रब से दुआ की—

"ऐ मेरे अल्लाह पाक ! तू अपने हबीब पाक के सदके में मेरी सईदा को अच्छा कर दे। रहम [फ़रमा उस बे-माँ-बाप की बच्ची पर। कोई रास्ता हम लोगों के लिए ऐसा पैदा कर दे, मेरे अल्लाह, कि बगैर किसी का अहसान लिए हम अपना आप पूरा कर सकें। हम पर रहम फरमा, मेरे करीम !"

उनकी आँखें बरसने लगीं—

"सईदा का बुखार अभी तक हलका नहीं हुआ। वह उसी तरह ग़फ़लत में पड़ी है।"

वे नमाज और दुआ खत्म करके मुसल्ले पर से उठीं। उन्होंने सईदा को फूँका। उसकी पेशानी पर उन्होंने अपना प्यार भरा हाथ रखा। वे यकबारगी खुश हो गईं। सईदा का बुखार उतर चुका था।

उनके हाथ रखने पर सईदा की आँख खुल गई। उसने पट से अपनी आँखें खोल दीं। उसने बड़े प्यार से कहा—

"नानी अम्मा !"

"जी बेटे।" वह इन्तहाई प्यार से बोलीं।

"अब हमारी तबीयत अच्छी है, नानी अम्मा !"

"अल्लाह का शुक्र है, बेटी !" वे प्यार से सईदा को लिपटा कर बोलीं—"अल्लाह करे, तुम हमेशा अच्छी रहो।"

"हमें भूख लगी है, नानी अम्मा !"

"अच्छा बेटी ! हम अभी तुम्हारा हाथ-मुंह धुलाए देते हैं। फिर तुम नाश्ता करना।"

"हमारा बदन दुख रहा है, नानी अम्मा" वह एक हल्की-सी कराह के साथ करवट बदलते हुए बोली।

"मारा जो है इस बेरहमी से उस खुदा की ख्वार ने।" उन्होंने झल्ला-कर बद्दुआ दी—"खुदा समझे इस ताहिर नामुराद को। मजलूम पर जुल्म किया है उसने। खुदा उसे कभी माफ न करेगा।"

"मामू साहिब बहुत बुरे हो गए हैं, नानी अम्मा।"

"वह बदनसीब बुरा था कब नहीं !"

"हमने उनका बिगाड़ा क्या है, नानी अम्मां।"

"यही बेटी कि हमने उसका कुछ भी नहीं बिगाड़ा।"

"एक बात मैं कहती हूं, नानी अम्मां, मैं मामू साहिब से, ममानी जान से और रज़िया, नज्मा, अकबर से अब कभी बात नहीं करूंगी।"

"बिल्कुल ठीक है, बेटी।" ज़ाकिरा बीबी ने ताईद की—"ऐसे कमीने और बेरहमों से बात न करना ही शराफ़त है। मैं खुद उनसे कोई बात न करूंगी।"

"मैं मामू साहिब और ममानी जान से अब दबूंगी भी नहीं।" वह नफ़रत से कह रही थी—"हम उसका कोई दिया खाते हैं क्या? लिहाज़ करने और दबने की भी एक हद होती है।" उसे अपने मामू साहिब से अब दिल से नफ़रत पैदा हो गई थी। उसके मासूम दिल में इन सबके खिलाफ़ बग़ावत की आग भड़क उठी थी। वह बेज़ारी से बोली—"अब मुझे मामू साहिब कभी हाथ लगा कर तो देखें!"

"हिम्मत है अब उस मुए, नामुराद की! मैं अबकी दफ़ा उसका खून न पी जाऊं तो फिर कहना, बेटी!"

"अरे!" सईदा एकबारगी अरे कहकर उठने लगी।

ज़ाकिरा बीबी घबरा गईं। बोलीं—

"क्या हुआ, बेटी?"

"सुबह की नमाज़ मैंने नहीं पढ़ी, नानी अम्मां!" वह उठ गई—"बाप रे बाप!"

"अब नमाज़ का वक़्त नहीं है, बेटी।" ज़ाकिरा बीबी ने उसे रोका—"तुम लेटी रहो। मैं तुम्हारा मुंह-हाथ धोने के लिये पानी गर्म कर दूं। फिर उठना।"

"आपने नमाज़ पढ़ ली?"

"हां, बेटी!"

"फिर आपने हमें क्यों न जगाया?"

"तुम्हारी तबीयत जो खराब थी, बच्चो !" वे सईदा को प्यार करते हुए बोलीं—"कोई बात नहीं। तुम कजा पढ़ लेना।"

"नमाज़ तो फर्ज़ है, नानी अम्मां !" वह बड़े रंज के साथ कहने लगी—"ऐ अल्लाह ! हमारी नमाज़ क़ज़ा हो गई।"

"अल्लाह मियां तुम्हें माफ़ कर देंगे, बेटी ! रंज न करो। तुम बीमार थी न !"

"आप ही ने तो हमें बताया था, नानी अम्मां, कि नमाज़ किसी हालत में भी माफ़ नहीं है।"

"हां-हां ! वह ठीक है। लेकिन—"

"नहीं—नानी अम्मां, हमें बड़ा रंज हो रहा है।" वह दिल से बोली—"अल्लाह मियां, हमें माफ कर देना। हम नामुराद सो गए थे।"

मासूम सईदा की इस लगन को देख कर ज़ाकिरा बीबी का जी बहुत खुश हुआ। उन्होंने सईदा को बेअख्तयार अपने कलेजे से भींच लिया। और फिर वे मामा के आने का इन्तज़ार किए बगैर ही उठकर मुंह-हाथ धोने के लिये पानी गर्म करने लगीं सईदा के लिये।

दिन के दस बजे का वक़्त था। सईदा अभी हवेली की छत पर गई ही थी कि रज़िया उसके पीछे-पीछे ऊपर आई। वह इन्तहाई घृणा तथा बेज़ारी से उसकी तरफ़ जलते अन्दाज़ से देख कर बोली—

"तुम फिर आ गईं छत पर ?"

"हां आ गई फिर ! तुम्हें क्या ?" सईदा ने रज़िया को उसी अन्दाज़ में जवाब दिया।

"कल इसी बात पर तुम्हें हमारी अम्मी ने मारा था न !"

"अब मार कर देखें !" सईदा बोली—हम अपनी नानी अम्मां से पूछ कर ऊपर आये हैं।"

"हुंः, नानी अम्मां !" रज़िया ने मुंह चिढ़ाया—"तुम्हारी नानी अम्मां की सुनता ही कौन है इस घर में।"

"कोई सुने या न सुने, हम तो सुनते हैं अपनी नानी अम्मां की हर

बात !"

"तो यह छत कोई तुम्हारी नानी अम्मां के बाप की है ?"

"तो तुम्हारी अम्मां के बाप की भी नहीं है।" सईदा ने, जो कि अब इन लोगों से न दबने का फ़ैसला कर चुकी थी तुर्की-ब-तुर्की जवाब दिया।

"तो तुम्हारे बाप की भी नहीं है।" रज़िया हिक़ारत से बोली—"हां, अलबत्ता हमारे बाप की है यह छत !"

"हुआ करे।" सईदा बोली—"आप हमसे बक-बक मत कीजिये।"

"मैं बक-बक कर रही हूं ?"

"हम आपसे बात करना नहीं चाहते।" सईदा ने कहा और अपना मुंह दूसरी तरफ़ फेर लिया।

रज़िया गुस्से में भरी तनतनाई हुई नीचे उतर गई। वह जाते ही अपनी अम्मां से बोली—

"वह सईदा है न अम्मी सईदा, उसका दिमाग़ तो अब पहले से भी कहीं ज़्यादा खराब हो गया है।"

"क्या हुआ ?"

"फिर कोठे पर चढ़ी है। मैंने कहा कि अम्मी खफ़ा होंगी, तो कहने लगी कि मैं तुम्हारी अम्मी को जूती पर मारती हूं।"

"अच्छा।"

"हां अम्मी।" रज़िया ने उस पर इलज़ाम तराशा—"वह आपको और अब्बा जी दोनों को गालियां देने लगी। कह रही थी कि छत तुम्हारे बाप की नहीं है।"

अनवरी ने लपक कर रज़िया का गरेबान फाड़ डाला। रज़िया अपनी मां की इस हरकत पर सहम गई। अनवरी बोली—

"यह इसलिए बेटी, कि तुम अपने अब्बा जी से कहना कि सईदा ने मुझे मारा और मेरी क़मीज़ फाड़ डाली। यह तुम उन्हें दिखाना।"

वह उठते हुए फिर बोली—

"बस, अब वे आने ही वाले होंगे।"

"अब्बा जी बाहर मर्दाने में बैठे हैं।" नज्मा ने बताया—"वे कहीं गए थोड़े ही हैं।"

"अच्छा !" रज़िया ने नथुने फुलाते हुए कहा—"मैं उन्हें अभी बुलवाती हूं।"

"जाकर बाहर से मियां को तो बुला लाओ !"

उसने मुलाज़िमा को हुक्म दिया। और फिर वह छत की तरफ लपकी। इतने में सईदा छत पर से नीचे आ रही थी। अनवरी उस जगह खड़ी हो गई। जब सईदा नीचे उतर कर आ गई, तो उसने उसे खा जाने वाली नज़रों से देखा—

"तुम कहां गई थीं ?"

"छत पर।"

"क्यों ?"

"मेरा जी चाहा था।"

सईदा के इस बरजस्ता जवाब पर वह हैरान रह गई। उसने तेज़ होकर कहा—

"मैं पूछ रही हूं तुम ऊपर क्यों गई थीं ?"

"हमने अपनी नानी अम्मां से पूछ लिया था।"

"तुम्हें ऊपर जाने की इजाज़त देने वाली तुम्हारी नानी अम्मां कौन होती हैं ?"

सईदा को बड़े ज़ोर का गुस्सा आ गया। बोली—

"और आप कौन होती हैं, हमें मना करने वाली ?"

"अच्छा !" अनवरी ने अभी मारने के लिए थप्पड़ उठाया ही था कि ज़ाकिरा बीबी आ गईं। वे चीख कर बोलीं—

"ख़बरदार, अगर तुमने मेरी बेटी पर हाथ उठाया।"

अनवरी यकबारगी रुक गई। वे करीब आकर बोलीं—

"लावारिस क्या तुमने इस बच्ची को समझ रखा है ? अब अगर

एक उँगली भी किसी ने उस पर उछाली, तो मुझसे बुरा कोई न होगा।"

"यह कोठे पर क्यों गई थी?"

"मुझसे पूछ कर गई थी, तुम्हें क्या?"

"नाक कटवायेगी एक दिन खानदान की तो मालूम होगा।"

"चुप रहो बदतमीज़।" ज़ाकिरा बीवी ने अनवरी को डाँटा—"अब अगर ऐसी-वैसी बात मुँह से निकाली तुमने तो मुझ से बुरा कोई न होगा।"

"अच्छा—!" अनवरी बोली—"मेरी बला से! लेकिन इसने रज़िया को मारा क्यों, उसका गरेबान इसने क्यों फाड़ा?"

"यह झूठ है!" सईदा ने कहा—"मैंने न तो रज़िया बहिन को मारा है, और न उनका गरेबान ही फाड़ा है।"

"फिर यह गरेबान कैसे फट गया उसका?"

"मैं पागल हूँ, या मेरे सिर पर सींग है?"

"पागलों के सिर पर सींग नहीं होते, दुल्हिन!"

ज़ाकिरा बीवी ने नफ़रत से अनवरी को देखते हुए जवाब दिया। वे सईदा से मुखातिब हुई—

"आओ, बेटी!"

और इतने में ताहिर आ गया।

"फिर हंगामा खड़ा हो गया घर में!" वह आते ही बरस पड़ा—"यह सब आखिर क्या हो रहा है?"

"वही पुराना रोना! यह फिर कोठे पर गई थी। रज़िया ने मना किया तो इसने मुझे और आपको गालियाँ दीं। बाप-दादा करने लगी। रज़िया को मारा भी और उसका गरेबान फाड़ डाला। यह देखिये!"

अनवरी ने ताहिर को रज़िया का फटा हुआ गरेबान दिखाया।

"मुझे भी इतनी देर से बराबर तड़ातड़ जवाब दे रही है।"

"क्यों री चुड़ैल!" ताहिर सईदा की तरफ़ बढ़ा—"कल की मार भूल गई?"

"कल की मार यह तो क्या, मैं भी क़यामत तक न भूलूंगी। खुद खुदा भी न भूलेगा। लेकिन कल की मार अब कभी न दुहराई जायगी।"

ज़ाकिरा बीबी ने ताहिर की तरफ़ हिक़ारत से देखते हुए कहा—

"तुम इस बच्ची को खिला-पिला नहीं रहे। न इसका खर्च उठा रहे हो कि वह तुम्हारी जा-बेजा मार सहती रहे।"

"मैं इसे जान से मार डालूंगा।"

"उंगली छुआ कर तो देखो!" ज़ाकिरा बीबी गर्जी—"तुम्हारी और अपनी जान एक न कर दूं तो! कोई रोज़-रोज़ का मज़ाक समझ रखा है क्या? कल नहीं बोली, खून का घूंट पीकर रह गई हूं, तो क्या आज भी इस बेज़बान को इस तरह पीटते देख लूंगी? हाथ तुम्हारे न तोड़ दूंगी!"

"अम्मी जान!" ताहिर गला फाड़ कर चिल्लाया—"मैं कहता हूं, मुझ से बुरा कोई न होगा!"

"नई बात तुम कौन-सी बता रहे हो?"

"आखिर आप चाहती क्या हैं?"

"तुम क्या चाहते हो?"

"मैं इस नाबकार सईदा को इस घर में नहीं रखना चाहता!"

"वह तो रहेगी!" ज़ाकिरा बीबी ने जवाब दिया—"जब तक मैं रहूंगी, वह भी रहेगी।"

"तो आप भी न रहिये, इस घर में।"

अनवरी बरबस बोली। उसने सोचा, शायद उसका शौहर यह जवाब सुनकर खामोश रह जायगा। लिहाज़ा वह बीच में बोल पड़ी—

"आप बड़े शौक से जा सकती हैं।"

"यह तुम कह रही हो?"

"यह मैं भी कह रहा हूं।" ताहिर ने अनवरी की ताईद की—"मैं अब मजबूर हूं, यह कहने पर कि आप भी यहां से तशरीफ़ ले जाइये। यह रोज़-रोज़ की बक-बक मुझे बिल्कुल पसन्द नहीं।"

जाकिरा बीबी ने अपने बेटे ताहिर को बड़े गौर से देखा। बावजूद इन्तहाई ज़ब्त के उनकी आंखें भर आईं। वे खून के घूंट पी रही थीं कि अनवरी बोली—

"अब तो बात साफ हो गई न ! तशरीफ़ ले जाइये आप !"

"मुझे क्या मालूम था कि वह इतना जलील निकलेगा, जिसे अपना खून पिलाकर मैंने पाला है।" वे अनवरी से बोलीं—"मुझे तुमसे नहीं इस कमीने से शिकायत है। काश, यह पैदा होते ही मर जाता !"

"तुम्हारे मुंह में खाक !" अनवरी इन्तहाई बदतमीज़ी के साथ बोली—"उनके दुश्मन मरते। या वे, जो उसका बुरा चाहते थे !"

"ज़लील, दो टके की छोकरी !" ज़ाकिरा बीबी जुलबुला गई—"खुदा करे कि तेरी ज़बान में कीड़े पड़ें। तेरा किया-धरा आगे आए तेरे ! अहसान फ़रामोश ज़माने भर की !"

"बस-बस !" ताहिर ने झुंझलाते हुए जवाब दिया। वह अपनी बेगम की तरफ से बोला—

"बहुत ज़बान अब तुम न चलाओ, बड़ी बी ! वरना मुझसे बुरा कोई न होगा।"

यह एक नालायक़ बेटा अपनी मां से कह रहा था। उस मां को, जिसने उसे पैदा किया था और जिसने अपनी सारी जायदाद उसके नाम लिख दी थी। जिसने अपना सब-कुछ उसके ऊपर कुर्बान कर दिया था।

"कमीना कहीं का !" जाकिरा बीबी अपने दांत पीसने लगीं—"आज से मेरा-तेरा हर रिश्ता खत्म हो गया। क़सम मौला की मैं तेरा दूध कभी न बख्शूंगी। मैं अब यहां न रहूंगी। खुदा की ज़मीन बहुत बड़ी है। मैं बियाबानों और जंगलों में रह लूंगी, लेकिन यहां नहीं रहूंगी।"

"हां-हां न रहो !" अनवरी बोली—"तुम्हें रोकता कौन है ? हवेली हमारी खाली करो !"

जाकिरा बीबी कुछ सोचकर बोलीं—

"लेकिन तू मुझे इस हवेली से निकालने वाली कौन है ?"

उन्होंने ताहिर से कहा—

"यह शायद तू भूल गया है, अहसान फ़रामोश, कि यह कोठी तेरी नहीं बल्कि मेरी है। मैंने जागीर तेरे नाम लिखवा दी है। हबीबगंज मैंने तेरी बातों में आकर तेरी इस कमीनी औरत को बख्श दिया है। अपना सारा जेवर मैंने इसे दे डाला है, लेकिन यह कोठी मैंने किसी को नहीं दी।"

वे ज़ोर देकर बोलीं—

"मैं पहले तो लिहाज़ कर रही थी, लेकिन अब मैं कह रही हूं कि यह कोठी मेरी मलकीयत है। तुम सब निकल जाओ इस कोठी से। यह हवेली मेरी है। अब इस हवेली से मैं नहीं निकलूंगी, बल्कि तुम लोग निकलोगे।"

ज़ाकिरा बीबी के मुंह से यह सब कुछ सुन कर अनवरी का मुंह फ़क हो गया, वह सोचने लगी कि यह तो उल्टी आंतें गले पड़ीं। ताहिर अलबत्ता निराश नहीं था। वह इन्तहाई मसख़रेपन की नजरों से अपनी मां को देख रहा था। एक ज़ोर का क़हक़हा लगा कर बोला—

"ग़लतफ़हमी है आपको। जागीर के साथ-साथ यह हवेली भी मेरे नाम हो चुकी है। कहिये तो काग़ज़ात लाकर आपको दिखा दूं ?"

और यह कह कर वह अपनी मां के जवाब का इन्तज़ार किए बग़ैर कमरे की तरफ़ लपका और और थोड़ी-सी देर में काग़ज़ात लेकर वापिस आ गया। उसने वे काग़ज़ात अपनी मां की तरफ़ फेंक दिए।

"उर्दू में यह है दस्तावेज़।" वह व्यंग्य से मुस्कराया—"पढ़ लीजिए। जागीर ही नहीं, बल्कि कोठी भी मेरे नाम लिखी हुई है।"

"लेकिन—"

वह हंसा। उसने अपनी मां का शक दूर कर दिया—

"मैंने जागीर के साथ-साथ कोठी भी इसमें लिखवा दी थी। दस्तख़त करते समय आपने दस्तावेज़ पढ़ी नहीं थी।"

अनवरी का चेहरा यकबारगी चमक उठा। वह बेअख्तयार मुस्कराए जा रही थी। बोली—

"बड़ी अक़्लमन्दी से आपने काम लिया था। बड़ी दूर की सोची थी आपने।"

ताहिर मुस्कराया—

"इसी दिन के लिए।"

"हाँ, ठीक है।" ज़ाकिरा बेगम एक सर्द आह के साथ बोलीं—"इसने दूर की बात सोच ली थी, लेकिन मैंने इस दिन के लिए कुछ नहीं सोचा था। वरना कम-अज़-कम मैं दस्तावेज पढ़ ज़रूर लेती। या फिर इस दस्तावेज़ की नौबत ही न आती।"

ताहिर ने आगे बढ़कर वह जगह दिखाई जिस जगह पर हवेली की बात लिखी हुई थी—

"यह देखिए, हवेली भी लिखी हुई है।"

और यह कह कर वह पीछे हट आया।

ज़ाकिरा बेगम ने दस्तावेज़ ग़ौर से देख कर ताहिर की तरफ़ देखा—

"वाक़ई, तुम बहुत अक़्लमन्द हो।"

दस्तावेज़ अभी तक उनके हाथ में थी। अनवरी ने चुपके से ताहिर से कहा—

"काग़ज़ात इनके हाथ में क्यों दे दिए? न दें या फाड़ डालें तो?"

"मैं खुदा न करे, तुम लोगों जैसी ज़लील हो जाऊँ।" और यह कह कर काग़ज़ात उन्होंने अनवरी के मुँह पर फेंक दिए—

"इसे भर लो अपने कलेजे में!"

ताहिर ने मुस्कराकर अनवरी से कहा—

"ये काग़ज़ात अगर ये फाड़ भी डालें तो क्या होता! इसकी नकल तो अदालत में मौजूद है।"

वह मुस्कराया—

"तुम भी क्या समझती हो, बेगम, तुम्हारा दूल्हा कच्ची गोलियाँ

खेले हुए है ?"

"मैं इसी वक़्त तुम्हारी हवेली खाली किए दे रही हूँ।" ज़ाकिरा बेगम ने ताहिर से कहा। फिर वे सईदा से मुखातिब हुईं—

"आओ बेटी, हम अपना सामान समेट लें।"

"लेकिन हम जायेंगे कहाँ, नानी अम्माँ ?" सईदा, जो कि ग़मों में डूबी हुई थी, सहमकर बोली।

"अल्लाह बहुत बड़ा है, बेटी !" उन्होंने सईदा को तसल्ली दी—"इनसान को हर वक़्त अपने रब पर भरोसा रखना चाहिए, बेटी ! यह मुआ बन्दा क्या चीज़ है !"

वे दोनों वहाँ से अपने कमरे में आईं। ज़ाकिरा बेगम अपना सामान समेटने लगीं। सईदा भी उस काम में उनकी मदद कर रही थी। उन्होंने अपनी मुलाज़िमा से कहा—

"बाहर जाकर किसी मुलाज़िम से कहो कि वह तहसील जा कर हमारे लिए गाड़ी ले आए।"

"बहुत अच्छा, बेगम हुज़ूर !"

मुलाज़िमा गाड़ी लेने चली गई। सईदा ने फिर सवाल किया—

"सोच लिया, नानी अम्माँ, कि हम कहाँ जायेंगे ?"

"सोच रही हूँ, बेटी !" वे अपने आँसू पोंछते हुए बोलीं—

"हम मुग़लानी बी के यहाँ चले जायं, तो—?"

सईदा ने राय दी। ज़ाकिरा बेगम यकबारगी बोल पड़ीं—

"अरे हाँ ! शाबाश बेटी ! जीती रहो।" उन्होंने सईदा की पेशानी चूम ली—"उनसे बड़ा हमदर्द मेरा इस जहान में और कौन है, बेटी।"

"हम मुग़लानी बी के पास ही जायेंगे।"

"कब तक हम वहाँ रहेंगे, नानी अम्माँ ?"

"कुछ दिनों तक। फिर हम अपना बन्दोबस्त कहीं और कर लेंगे।"

"उनके घर का पता आपको मालूम है, नानी अम्माँ ?"

"हाँ, बेटी ! वे कानपुर में रहती हैं। मुहल्ला तलाक महल में।

उनके बेटे का नाम रज़ी उद्दीन है। वह कानपुर में एक मिल में ठेकेदार है। हम लोग वहीं चलेंगे। फिर वहीं कानपुर में हमें कोई मकान किराए पर मिल ही जायगा!"

और फिर उसी शाम जाकिरा बीबी, सईदा और अपनी मुलाजिमा को साथ लेकर कानपुर के लिए रवाना हो गईं। चलते वक़्त उन्होंने हवेली के हर दरो-दीवार को हसरत के साथ देखा था। उनकी आँखें सावन-भादों की तरह बरसी थीं। लेकिन उन्हें तसल्ली देने वाला उनकी सईदा के सिवाए कोई न था। उनके चलते वक़्त ताहिर या कोई और नौकर खड़ा भी नहीं हुआ था आकर।

और वे बड़ी बेबसी के साथ अहमदपुर से हमेशा-हमेशा के लिए जा रही थीं।

रात के नौ बजे जब इक्का मुगलानी बी के घर के आगे जाकर रुका तो वह हैरान रह गईं। भला उनके यहाँ इस वक़्त कौन आ सकता है? उन्होंने सोचा। उधर इक्के वाले ने आवाज़ लगाई—

"सवारियाँ आई हैं।"

तो वह भड़भड़ा कर भागीं और दर्वाजे से लगकर देखने लगीं। दो इक्के खड़े थे। एक पर सामान लदा हुआ था और दूसरे पर पर्दा बन्द था। सईदा सब से पहले बुर्का ओढ़े हुए उतरी और जाते ही मुगलानी बी से लिपट गई। उसने अन्दर पहुँचकर नकाब उलट दी—

"अरे! हमारी छोटी शहजादी!"

वह हैरत और खुशी से पागल हो गईं। सईदा को बेअख़्तयार लिपटा कर वह बगैर बेपर्दगी का ख़याल किए इक्के की तरफ भागीं। जाकिरा बीवी को बड़े आदर से उन्होंने उतारा और उन्हें अन्दर लाकर वह बेअख़्तयार उनके कदमों पर लिपट गईं—

"बेगम हुजूर ! खुदा जानता है कि मेरा दिल मारे खुशी के फटा जा रहा है। बहुत बड़ी इज्ज़त इस लौंडी को आपने बख्शी है।"

खुशी के आंसू उनकी आंखों से जारो-कतार बह रहे थे। उन्होंने अपने बेटे को आवाज दी—

"बेटा रजी उद्दीन ! सामान उतरवा लो।"

वह जाकिरा बीबी और सईदा को लेकर अन्दर कमरे में आ गई। उन के बेटे ने सारा सामान उतरवा कर और इक्के वाले को किराया देकर रवाना कर दिया। वह बाहर वाले कमरे में ही बैठ गया।

जाकिरा बीबी ने मुगलानी बी को अपनी सारी दास्तान सुनाई। वे अपनी दास्तान, दुःख भरी दास्तान सुना रही थीं और मुगलानी बी का रोते-रोते बुरा हाल हो रहा था। साथ ही वे मालकिन को तसल्ली भी देती जा रही थीं।

अन्त में बोलीं—

"मुझे सबसे बड़ी खुशी तो यह हो रही है, बेगम हुजूर, कि आपने अपनी इस लौंडी को अपना समझा। बड़ी इज्जत आपने मुझे बख्शी। फ़ख्र और गरूर से आपने अपनी इस कनीज का सर ऊँचा कर दिया। गुलामी का मौका देकर आपने मेरी और मेरे बच्चों की आकबत सुधार दी।"

वह रुंधे हुए स्वर में कह रही थी—

"अब आप कोई फिक्र न कीजिए, बेगम हुजूर। यहां जो कुछ है, वह सब आप ही की जूतियों का सदका है। वह सब आप की ही बखशीश है अगर आप जवानी में ही बेवा हो जाने वली इस नाचीज कनीज को पनाह न देतीं, तो न जाने मेरा और मेरे बेटे रजी उद्दीन का क्या होता। यह आपका और बड़े सरकार का अहसान है कि मेरा बेटा परवान चढ़ा। लिख-पढ़ लिया उसने। और आज माशा अल्लाह वह चार पैसे कमा रहा है। वह यहां मिल में ठेकेदारी कर रहा है और महीने के चार-पांच सौ ले आता है।"

उन्होंने ज़ाकिरा बीवी के पांवों पकड़ लिए—

"यह सब आपका है, बेगम हजूर ! हम सब आपके गुलाम हैं। मैं आपकी कनीज हूं। मेरी बहू आपकी कनीज है। मेरा बेटा और उसके दोनों बच्चे आपके खिदमतगुजार हैं। आपको इस गरीबखाने पर अल्लाह ने चाहा तो कभी कोई तकलीफ न होगी। हम सब अपनी-अपनी खाल उतार कर आपकी जूती बनवा सकते हैं।"

वह बड़ी अकीदत से बोलीं—

"और इस पर हमें फ़ख्र होगा।"

"यह तुम्हारा शरीफ खून है, मुगलानी बी ! यह तुम्हारे ईमान की पुख्तगी है। यह इस बात का सबूत है कि तुम फितरतन शरीफ हो। वरना इस जमाने में कौन किसी को याद रखता है। आज तो सगा बेटा अपना नहीं होता !"

उन्होंने मुगलानी बी से फिर कहा—

"लेकिन तुम अब अपने को बार-बार कनीज और मवातरी गुलाम मत कहो। बखुदा मैंने हमेशा तुम्हें अपनी बहन माना है। तुम मेरी बहन हो।"

"यह आपका दिया हुआ मर्तबा है, बेगम हजूर, जिस पर मैं मरते दम तक फ़ख्र करूंगी। मेरे बच्चे जिस पर हमेशा नाज करेंगे। लेकिन मुझसे यह सआदत न छीनिए कि मैं अपने आपको आपकी कनीज कहूं। मैं और बेटा दोनों आपके शाही दस्तरख्वान के टुकड़ों पर पले हैं, बेगम हजूर ! हम मां-बेटों की रगों में आप ही का बख्शा हुआ रिज़क खून की शक्ल में दौड़ रहा है। आप ही ने रज़ी उद्दीन को पढ़ाया-लिखाया था और अगर मेरे ये अहसासात न होते, बेगम हजूर, तो मैं कब की अपने बेटे के साथ आकर रहने लगती। लेकिन आपकी गुलामी और आपकी खिदमत मेरा ईमान जो है ! वह तो मैं निकाल दी गई वहां से, वरना उस हवेली की चौखट से मैं नहीं, बल्कि मेरी लाश निकलती। जनाज़ा ही निकलता वहां से मेरा।"

"तो मैं कहाँ नहीं निकाल दी गई हूँ वहाँ से ?" जाकिरा बीबी ने एक सर्द आह ली—"हम दोनों ही वहाँ से निकाले गए हैं।"

"आप तो वहाँ इंशा अल्लाह फिर जायेंगी।"

"मैं अब वहाँ थूकूँ भी नहीं, मुगलानी बी ! मुझे इस ज़लील बेटे के रहमो-करम की बिल्कुल ज़रूरत नहीं है।"

"खुदा न करे कि आप वहाँ पर किसी के रहमो-करम पर वापिस जायँ।" मुगलानी बी ने सईदा को भींचकर कहा—

"मेरी इस शहजादी बेटी का हक है उस कोठी पर। यह अपने जायज़ हक के साथ वहाँ शान के साथ दाखिल होगी उस हवेली में।"

और यह सुनकर जाकिरा बीबी का मुंह खुला का खुला रह गया। वे जैसे कि चीख पड़ीं—

"अरे !" उन्होंने अपनी पेशानी पर हाथ मारा—"मुझ निगोड़ी को यह याद ही न आया कि उस हवेली और उस जागीर पर माँ की तरफ से इसका भी हक है।"

'वह कैसे, नानी अम्मा ?" सईदा ने भोलेपन से पूछा—"मेरा हक कैसे हुआ उस हवेली पर ?"

"बेटी, तुम रुखसाना की बेटी हो। रुखसाना का उस कोठी और जागीर पर एक तिहाई का हक है। रुखसाना की तरफ से यह हक तुम्हें पहुँचता है।

"अच्छा !" सईदा खुश होकर बोली—"और हमारा वह हक मामू साहिब मारे बैठे हैं।"

"हाँ बेटी।" मुगलानी बी बोलीं।

"कोई बात नहीं।" जाकिरा बीबी ने नफरत से दाँत भींचकर कहा—"अब उस नामुराद को जागीर और हवेली का एक तिहाई हिस्सा देना पड़ेगा। मैं कल ही उसे सईदा की तरफ से मुख्तार बनकर वकील का नोटिस दिलवाती हूं। जागीर के एक तिहाई हिस्से का सारा रुपया उसे डिप्टी साहब की वफात के बाद से लेकर आज तक का यक-

मुश्त चुकाना पड़ेगा।"

"बिल्कुल, बेगम हजूर।" मुगलानी बी बोलीं—"मेरा बेटा कल ही कानपुर के सबसे बड़े वकील के पास मशविरे के लिए जायगा। इस मुकद्दमे पर जितना रुपया खर्च होगा, आपकी यह कनीज़ और इसका बेटा खर्च करेगा।"

"नहीं रुपया मेरे पास है।" जाकिरा बीबी ने मुगलानी बी को बताया—"कभी का पस-अन्दाज़ किया हुआ वह रुपया, जो कि मैं भूल गई थी, उस बुरे वक्त में मेरे काम आ गया था, मुगलानी बी। साढ़े पाँच हजार था। अब उसमें से पौने चार हजार बच रहा है।"

और फिर यही सब बातें करते हुए रात के बारह बज गए थे। खाना-वाना खाकर सब सो गए। मुगलानी बी के यहाँ आकर जाकिरा बीबी और सईदा को कल्बी सकून मिला था।

दोनों गहरी नींद सो रही थीं।

आठ

जाकिरा बीबी, मुगलानी बी के बेहद इसरार पर उनके मकान में एक हफ्ता रहीं। और फिर उसके बाद वे उसी मुहल्ले में मुगलानी बी के मकान के नजदीक ही एक दूसरे मकान में रहने चली गईं। यह मकान मुगलानी बी के बेटे रजी उद्दीन के अहतमाम और इन्तजाम से उन्हें मिला था। उसने इस मकान को बना और संवार उनके लिए आरास्ता किया था। सब सामान ठीक से लगाया था और फिर जाकिरा बीबी, सईदा और मुगलानी बी वहां आ गई थीं। जाकिरा बीबी की मामा भी, जिसे वह अहमदपुर से साथ लेकर आई थीं, उनके साथ थी।

यह मुगलानी बी का इसरार था कि वह पहले की तरह ही अपनी बेगम हजूर के साथ रहेंगी। और उनकी खिदमत में ही अपनी जिन्दगी गुजार देंगी। वे अपने बेटे, बहू और पोती-पोते छोड़कर यहां आई थीं।

कानपुर के मशहूर वकील का नोटिस ताहिर को भेजा जा चुका था। जाकिरा बेगम की तरफ से सईदा के हिस्से का मुतालबा कर दिया गया था और यह नोटिस हवेली और जागीर दोनों के सिलसिले में था। जागीर की आमदनी का ग्यारह बरस का मुतालबा एक साथ किया गया था। नोटिस का जवाब एक हफ्ते के अन्दर-अन्दर मांगा गया था और सारे रुपये के साथ वरना कानूनी चारा-जोई की धमकी दी गई थी।

जिस वक्त यह नोटिस ताहिर के हाथों में पहुंचा तो उसके हाथों के तोते उड़ गये। वह नोटिस लिए हुए अन्दर आया। उसने आते ही अनवरी से कहा—

"हम अब मर गए।"

"क्या हुआ ?"

"हमारी अम्मीजान साहिबा की मार्फ़त हमारी भाजी साहिबा का नोटिस आया है। हवेली और जागीर के एक तिहाई हिस्से का मुतालबा किया गया है और साथ ही यह मुतालबा है कि उसके हिस्से की तिहाई जायदाद की एक न दो, पूरे ग्यारह साल की आमदनी की पूरी रकम भी एक साथ अदा की जाय।"

अनवरी का मुंह फ़क हो गया। जुलबुलाकर यकदम बोली—

'ये हैं आपकी अम्मीजान और भांजी साहिबा! सच है, दुनिया का खून सफ़ेद हो गया है।"

वह बेकरारी से बोली—

"जरा पढ़कर सुनाइये तो, क्या लिखा है इसमें ?"

"मैं इसे नहीं पढ़ सकता।"

"क्यों ?"

और फिर वह खुद ही कुछ सोचकर बोली—

"सच तो है, आपसे कैसे पढ़ा जा सकता है ?" उसने एक सर्द आह खेंची—"अपनों ने ऐसा लिखवाया है न, इसलिए।"

"पागल हो, तुम तो !" ताहिर चिढ़ गया—"मेरा मतलब है कि यह नोटिस वकील का है और अंग्रेजी में लिखा है। मैंने तो पोस्टमैन से पढ़वाकर सुन लिया था। तुम जानती हो कि मैं अंग्रेजी नहीं जानता।"

"फिर अब क्या होगा ?" अनवरी बड़ी बेचारगी से बोली।

"सब कुछ देना पड़ेगा।" ताहिर उसी जगह मोढ़े पर गिर पड़ा—"एक तिहाई जागीर भी और एक तिहाई हवेली भी।"

"फिर ?"

"फिर क्या ? दीवाला !" ताहिर बोला—"सबसे बड़ी मुसीबत तो ग्यारह साल की आमदनी का मुतालबा है।"

"भला कुल कितना रुपया होगा ?"

"एक लाख बत्तीस हजार रुपये।"

अनवरी को चक्कर आ गया। ताहिर जोकि अपना सिर पकड़े बैठा था, बोला—

"कुल जागीर चालीस हज़ार रुपये साल की है। खर्च-वर्च निकाल कर तीन हज़ार रुपया महीना समझो। एक तिहाई के हिसाब से साल के बारह हज़ार रुपये हुए बहिन के हिस्से के। ग्यारह साल के एक लाख बत्तीस हज़ार रुपये हो गए।"

"फिर अब !"

"फिर अब क्या ?"

ताहिर जोकि अपनी जान से आजिज आता जा रहा था, बोला—

"कह तो रहा हूं कि ये सब यकदम से उगलना पड़ेगा, और क्या !"

"आप तो साफ़-साफ़ लिख दीजिए कि आप एक धेला भी नहीं दे सकते।" अनवरी ने गोया कि सलाह दी।

ताहिर चिढ़ गया। बोला—

"क्या फ़िज़ूल की बकवास कर रही हो तुम !"

"ऐ लो ! और सुनो ! यह गोया मैं इनकी नज़रों में बकवास ही कर रही हूं।"

"और नहीं तो क्या ?" वह तुनककर बोला—"अदालत-कचहरी भी कोई खाला जी का घर है क्या ?"

"तो फिर आप इसका कुछ जवाब न दीजिए।"

"इससे क्या होगा ?"

"वह सुना नहीं आपने कि एक चुप, हज़ार बला टली।"

"तुम तो मुझे और भी पागल बना दोगी।"

"वह कैसे ?"

"यह सब बकवास करके।" वह उठकर खड़ा हो गया—"तुम इतना भी नहीं समझती हो कि सब कानूनी बातें है। अगर जवाब न दूंगा, तो फिर मुझ पर मुकद्दमा दायर कर दिया जायगा। बमये खर्चे के सब देना होगा।"

"तो फिर आप ही जानिए। काहे को बहिन की जायदाद आप अब तक हड़प किए बैठे थे।"

"हां, अब तो तुम यह कहोगी ही।"

"और क्या कहूं ?"

"अच्छा, बको मत !"

वह इन्तहाई चिन्तित और झुंझलाए हुए अन्दाज़ में बाहर चला गया।

ताहिर ने एक बेवकूफ़ी और की। वह रुपया और जायदाद न देने के चक्कर में और फंस गया। उसके वकीलों और सलाहकारों ने महज़ उसे उल्लू बनाकर रुपया खाने के चक्कर में उससे मुकद्दमा लड़वा दिया।

ज़ाकिरा बीबी की सरपरस्ती में सईदा की तरफ से उस पर मुकद्दमा दायर कर दिया गया और इलाहाबाद की अदालत में उसने उस मुकद्दमे की पैरवी शुरू कर दी। सईदा की तरफ से एक वकील अटार्नी बनाकर खड़ा कर दिया गया था और वही इस मुकद्दमे की सारी कार्यवाहियों में हिस्सा लेता था। और ताहिर बहुत ज्यादा खर्च करके हर पेशी पर अपने दर्जनों आदमियों के साथ अहमदपुर से इलाहाबाद आया-जाया करता था।

ताहिर के ससुर का वकील, जिसके यहां वह मुंशी था, बड़ा काईयां था। वह अपने मुवक्किलों का दीवाला निकलवा देने में मशहूर था और उसके हाथों में ताहिर के ससुर ने ताहिर की गर्दन दबवा रखी थी।

हर पेशी पर खामखाह के लिए वह अपने इलावा चार-छह वकील और खड़े करवा देता। दर्जनों आदमियों का खर्चा अलग पड़ता। और ताहिर का रुपया बग़ैर किसी मकसद के पानी की तरह बहता। वह

वकील कदम-कदम पर ताहिर से बगैर किसी मकसद के रुपया खर्च करवाता रहता और यह बेवकूफ़ इस लालच में, कि वह मुकद्मा जीत जायगा, रुपया पानी की तरह ज़ाय करता।

मुकद्मे की पेशियां पड़ती रहीं। और बस, मुकद्मा चलते-चलते तीन साल हो गए थे और फ़ैसला न आज होता था और न कल। और फिर यह मुकद्मा जब मुसलसल पांच साल तक चलता रहा तो एक दिन ताहिर ने घबराकर अपने वकील से बात की—

"यह क्या सिलसिला है, वकील साहिब! आखिर यह मुकद्मा कब तक चलता रहेगा ?"

"जब तक आप अपनी भांजी की जायदाद का एक तिहाई हिस्सा वापिस न कर देंगे।"

"क्या मतलब!" ताहिर ने हैरान होकर सवाल किया—

वकील मुस्कराया—

'अजी साहिब, आप इतना भी नहीं जानते कि कानून आपकी जागीर का वह खेत तो है नहीं, कि उसमें जो फसल चाहे उगा लीजिए! कानून कानून ही है और वही फ़ैसला करता है, जो इन्साफ हो। इन्साफ का खून न होने देना ही तो दरअसल कानून का ऐन मकसद होता है।"

ताहिर झुंझला कर बोला—

"मैं समझा नहीं, वकील साहब।"

"आप समझे नहीं, या आप समझना नहीं चाहते।" वकील मुस्कराने लगा—'अजी हजरत, बल्कि जगीरदार साहिब, ये सब आपके न समझने की ही तो बातें हैं।"

"जी!"

"जी हां।" वकील बराबर मुस्कराए जा रहा था—"आप इतना भी नहीं समझते कि यह खुला हुआ केस है। आप भला अपनी बहिन का हक, जो कि कानूनी भी है और शरई भी, कैसे मार सकते हैं; आप ही सोचिए!"

"फिर यह मुकद्दमा चलता क्यों रहा पांच साल तक ?"

"इसलिए कि आपके हुक्म पर मैं इसे चलाता रहा। मैं यह तिकड़म करता रहा इस पाँच साल तक आपके लिए कि मुकद्दमे को उलझा-उलझा कर इसकी पेशियाँ किसी न किसी तरह से बढ़वाता रहूँ। कभी कह दिया कि वह मिसल नहीं है, कभी कह दिया कि वह गवाह नहीं है। कभी कह दिया कि वह कागजात नहीं आ सके है और कभी यह, कभी वह। और इस तरह यह मुकद्दमा मैंने अपने असली मूड में फैसले के लिए मैजिस्ट्रेट के सामने आने ही न दिया। कभी बगैर पेशी के तारीख डलवा दी। कभी खुद बीमार बन गया। कभी एक महीना की तारीख बढ़वा ली और कभी छह महीना की ; और फिर इस बीच अदालत की लम्बी-लम्बी छुट्टियाँ भी होती रहीं।"

"लेकिन यह सब आखिर क्यों !" ताहिर जैसे कि रो पड़ा।

"कहे तो जा रहा हूँ कि आपकी ख्वाहिश पर कि मुकद्दमा कभी भी फ़ैसले की हद तक न आने दिया जाय, वरना—"

"वरना क्या ?" ताहिर ने बेचैन होकर पूछा।

"वरना यह कि फैसला उस दम आपके खिलाफ़ हो जाता।"

"और अब ?"

"अब भी फैसला आपके खिलाफ़ ही होगा।"

वकील जोर के हँसा—

"आप ही तो कह रहे थे न कि मुकद्दमा लम्बा खिंचे। इससे यह होगा कि आपकी बूढ़ी वालदा, जोकि अपनी सारी जागीर और कोठी आपके नाम अपनी सादगी से लिखवा चुकी हैं, बेजर और बेपर होने की वजह से मुकद्दमा वापिस ले लेंगी। आपकी मासूम भांजी अपने हक से महरूम रह जायगी। और आप उसकी मलकियत पर उसी तरह कब्जा जमाए रहेंगे। बल्कि मैं तो यह तक सुन चुका हूँ कि आप अपनी मासूम भांजी को मरवा डालने की भी स्कीम बना रहे हैं। ताकि आपकी समझ के मुताबिक न बांस रहे और न बांसुरी ही बजे। लेकिन

आपको शायद यह नहीं मालूम कि यह जायदाद फिर भी आपकी न होती। उस मासूम के कत्ल के बाद उसके बाप को मिल जाती और आप पर वह मुकद्दमा करके ले लेता।"

वह संजीदगी से बोला—

"आप मुफ्त में पांच साल तक इस मुकद्दमे में उलझ कर बेतहाशा फ़िज़ूल रुपया खर्च करते रहे। और आपकी वाल्दा के समझदार वकील ने यह किया कि उसने उनका कुछ खर्च ही न होने दिया। सिवाय कोर्ट फ़ीस के। वह हर पेशी पर अकेला खुद ही आता रहा और आप हर पेशी पर कम-से-कम तीस पैंतीस आदमी लाते रहे।"

ताहिर लगभग रो पड़ा—

"फिर अब!"

"फिर यह कि आप अपनी भांजी और बहनोई को जल्दी से मरवा डालिए, उस वक्त यह सारी जायदाद आपको मिल जायगी।" वह मुस्करा कर बोला—"अपनी भांजी को अपने प्रोग्राम के मुताबिक मरवा डाला कि नहीं ? अगर हां, तो अब जल्दी से अपने बहनोई को भी खत्म करवा दीजिए।"

"मुझे मशविरा गलत दिया था लोगों ने।" ताहिर के चेहरे पर हवाइयां उड़ रही थीं—"इस चक्कर में खाने वाले मेरा हजारों रुपया खा गए।"

"खाने वाले तो आपकी पूरी जागीर भी खा सकते हैं। खिलाने की हिम्मत आप में होनी चाहिए।"

"मैं अब मुकद्दमा लड़ना नहीं चाहता।"

"आपके अब लड़ने या न लड़ने से क्या होता है। मुकद्दमा तो आप पर हुआ है। उसका उठा लेना आपके अख्तयार में कब है ?"

"फिर!"

"फिर यह कि अब उसका फैसला जल्दी ही हो जाने वाला है। फ़िक्र न कीजिए।"

"क्या फ़ैसला होगा ?"

"कहे तो जा रहा हूं कि आपके खिलाफ़ होगा। अरे, यह तो खुला हुआ मुकद्दमा है, मेरे यार !" वह मुस्कराया—"एक तिहाई जागीर, एक तिहाई कोठी का हिस्सा और सोलह साल के एक साल बानवे हज़ार रुपये नकद आपको देने होंगे। कम-से-कम पन्द्रह हज़ार मुकद्दमे का खर्चा आपको और देना होगा। कुल मिला कर हुए—दो लाख सात हज़ार रुपये और बस, छुट्टी !"

"मैं तो मर गया, वकील साहिब !"

ताहिर के मुंह से बे-अख्तयार निकला और वह उसी जगह चकरा कर गिर गया। मुंशी साहिब उसके मुंह पर पानी के छींटे देने लगे।

नौ

सईदा अब वह पहले जैसी सईदा नहीं रही थी। अब वह सोलह साल की एक खिली कली थी, जिसे देखकर खुद उसकी नानी अम्मा, और मुगलानी बी भी भौंचक्का होकर रह जाती थीं। वह बेहद खूबसूरत थी। इतनी कि उसे देखकर अलफ़ लैला की दास्तानों की हसीन परियाँ तस्वीर में रक्स करने लगती थीं। यह अन्दाजा लगाने में दुश्वारी होने लगी थी कि सईदा ज्यादा खूबसूरत है या मई-जून की रातों में आसमान पर चमकने वाला चौदहवीं का चाँद ज्यादा खूबसूरत है।

उसे देख कर आँखों में नूर और दिल में सरूर पैदा होता था। आँखें ऐसी थीं, कि हिरनी की आँखें उसे देख कर शर्मा जायें। पेशानी ऐसी थी कि मानो रात के चेहरे पर आधा चाँद जगमगा रहा हो। अब्रू, जैसे कि कड़ी कमान, जो तीर बरसाने के लिए पुर इज्तराब हो। पलकें, मानो कि मासूम तीर, जो जिगर के आर-पार होकर भी लज्जत दें। चेहरा, जैसे कि खुली किताब, एक कुरान, जोकि रहल पर धरा हो। तमतमाए हुए रुखसार ऐसे, कि काश्मीर के सेब शर्मा जायें।

लम्बा कद, खिले-खिले हाथ-पाँव और केश, जैसे कि सावन की मस्त—बेखुद कर देने वाली काली घटा। ग़र्ज़ें कि वह सुन्दरता की सजीव प्रतिमा थी, जैसे उसके रूप में कयामत सजीव होकर जवान हुई थी।

और इस पर तरह यह कि नेक तीनत, नेक तबीयत और पाकबाज ऐसी कि फ़रिश्ते उसकी पाकबाजी की कसमें खा लें। नमाज-रोजे की शिद्दत से पाबन्द, खुश गुफ्तार, खुश रफ्तार और खुश मिजाज, गोया कि जाकिरा बीबी के घर में नूर और बरकत की एक जीती-

जागती तस्वीर उतर आई थी।

इतनी शर्मीली, कि छुई मुई को भी मात कर दे। पर्दे की इतनी शिद्दत के साथ पाबन्द कि खुले आसमान के नीचे सोने में भी उसे झिझक हो। और ज़हीन इतनी कि मिडिल पास करने के बाद मुंशी और अदीब फ़ाजिल सफलता के साथ पास करने के बाद अब अंग्रेजी पढ़ रही थी। उसके लिए जाकिरा बीबी ने एक लेडी टीचर रख दी थी। मुंशी और अदीब फ़ाजिल की तरह वह अंग्रेजी इम्तहान भी प्राइवेट तौर पर देने की सोच रही थी।

और उसका यह सब खर्च ज़ाकिरा बीबी बड़े शौक़ के पूरा कर रही थीं। उनका सवा सौ रुपया महीना का खर्च था और इस सवा सौ में उनकी बड़े ठाठ से गुजर हो रही थी। यह उस वक्त की बात थी, जब कि एक रुपये का चौबीस सेर गेहूँ और सोलह छटांक का घी मिला करता था। मकान, जोकि बहुत बड़ा सा था, सिर्फ बारह रुपये महीने किराया पर उनके पास था। जब वे कानपुर आई थीं, तो साढ़े तीन हजार उनके पास नकद थे। जिनमें से तीन हजार रुपये मुगलानी बी के बेटे रजीउद्दीन के कहने पर एक स्टोर में लगा दिए थे। हर महीना मुस्तकिल तौर पर डेढ़ सौ रुपया उन्हें इस स्टोर से आमदनी थी। अच्छी-खासी उनकी गुज़र हो रही थी। मुकद्दमे पर उनका धेला भी अब तक इसलिए खर्च नहीं हुआ था कि हजारों किस्म की क़समों और मिन्नतों के बाद यह खर्च रजी उद्दीन ने अपने ज़िम्मे ले लिया था। उसने कहा था कि मुकद्दमे के बाद वह सारा हिसाब-किताब बता कर यह रक़म उनसे ले लेगा। वे महज़ मुग़लानी बी का दिल न तोड़ने की वजह से इस बात पर राज़ी हो गई थीं।

यह सब कुछ था। जिन्दगी का हर सकून जाकिरा बीबी को मयस्सर था। लेकिन वे कभी-कभी अपनी बेटी सईदा की चुप पर आप ही आप अफ़सुर्दा हो जाती थीं। सईदा अक्सर व बेशतर चुप रहती थी, गुमसुम और उदास। वे सोचतीं, न जाने इसकी क्या वजह है? वे

लाख पूछतीं, सईदा को हर तरह से बहलातीं-फुसलातीं, लेकिन वह अपनी उदासी का कोई माकूल जवाब न देती। वह इस बात के लिए हामी ही न भरती कि वह उदास है या ग़मगीन है। आखिर एक दिन ज़ाकिरा बीबी ने उससे पूछने की ठान ली—

उन्होंने बड़े प्यार से उसे अपने पास बुलाया—

"यहाँ आओ, बेटी।"

और जब वह उनके पास आ गई, तो उन्होंने उससे पूछा—

"तुम मुझे कितना प्यार करती हो, बेटी !"

"बहुत ज़्यादा, नानी अम्माँ !"

"फिर भी ?"

"मुझे खुद अन्दाज़ा नहीं है, नानी अम्माँ !" उसने बड़े प्यार से नानी अम्माँ को देखा—"जैसे कि समुद्र की थाह का अन्दाज़ा नहीं होता।"

"तो फिर मुझे यह बताओ कि तुम आजकल चुपचाप और खोई-खोई-सी क्यों रहती हो ?" ज़ाकिरा बीबी ने कहा—"मैं तुम्हें अपनी क़सम देती हूँ, बेटी !"

वह गड़बड़ा गई, लेकिन सम्हल कर बोली—

"मैं चुप रहती हूँ, नानी अम्माँ, शायद इसलिए कि यह मेरी आदत हो गई है।"

"तुमको अपनी नानी अम्माँ के लिए अपनी इस आदत को छोड़ना होगा !" उन्होंने सईदा को भींच लिया।

"अच्छा !" वह इन्तहाई सादगी से बोली—"छोड़ दूँगी यह आदत।"

"मेरी बच्ची !" वे बड़ी चाह के साथ बोलीं—"तेरे इस तरह उदास रहने से मेरी नज़रों में दोनों आलम तारीक हो जाते हैं।"

"अच्छा, नानी अम्माँ।" सईदा ने अपनी नानी अम्माँ के गले में अपनी बाँहें डाल दीं—"अब से आप हमें कभी उदास न देखेंगी।"

"मेरी बच्ची !"

उन्होंने सईदा की चटाचट अनगिनत बलाएँ ले डालीं। सईदा के इस वायदे से उनका दिल बाग़-बाग़ हो गया था। वे अपने अन्दर एक खास क़िस्म की तवानाई महसूस करने लगीं। अब वे हँसी-खुशी बावर्ची-खाने में बैठी शामी कबाब तल रही थीं और सईदा इन्तहाई महवीयत की हालत में अपने कमरे में गली की तरफ़ खुलने वाली खिड़की से टिकी सोच रही थी—

"आखिर यह हो क्या गया है उसे ? वाक़ई वह हर वक़्त खोई-खोई और उदास क्यों रहती है ? यह उसकी हालत आखिर होती क्या जा रही है ?" उसने सोचना शुरू किया—

"यह मेरा दिल आखिर चाहता क्या है ? आप-ही-आप मेरा यह जी क्यों चाहता है कि मैं रोने लगूं ? जी है कि उमड़ता आता है, तबीयत है कि आप ही आप बौखला जाती है। यह जी क्यों चाहता है मेरा कि मैं अपने कपड़े फाड़ कर घर से निकल जाऊँ। आखिर क्यों ? कोई वजह ? जब बारिश होती है तो मेरा दिल रोने क्यों लगता है ?"

वह बौखला गई। वह डर गई जैसे—

"खुदा न करे, कहीं मेरा दिमाग़ तो खराब होने वाला नहीं है ! कहीं ऐसा तो नहीं कि मैं पागल होने जा रही हूँ—अल्लाह न करे !"

उसने दिल से दुआ की—

"अल्लाह मियाँ, तुम हम पर तरस खाओ। रहम करो तुम मेरी इस हालत पर। मेरे दिल को क़रार दो और मुझे तुम बचा लो इस पागलपन से।"

वह सोचने लगी—

"यह मेरा पागलपन नहीं तो और क्या है कि खुशबू से मेरा दिल डूबने लगता है। इतना बेक़रार होता है मेरे पहलू में कम्बख्त, जैसे कि तड़प कर दम दे देगा। गाने की आवाज़ मेरे कान में आई कि मेरा दम निकलने लगा। न जाने, दिल क्या चाहने लगता है ? बाजे की आवाज़

कान में पड़ी कि दिल घबराने लगता है। बस, आप ही आप जी रोने को चाहता है। अजीब मुसीबत है, मुझे खुद नहीं मालूम कि मेरा जी क्या चाहता है?"

वह खुद से शर्मा गई—

"ऐसा क्यों जी चाहता है मेरा कि कोई मुझे अपनी गोदी में भर ले और इतना मसले, इतनी जोर से मुझे दबाए कि मेरी हड्डी-पसलियाँ टूट जायें।"

वह अपने गुलाब जैसे गालों पर हौले-हौले तमाचे लगाने लगी—

"तौबा-तौबा-तौबा, अल्लाह मेरी तौबा है!" वह बड़बड़ाई— "ज़रूर मेरे दिल में शैतान घुस गया है!"

"हाय अल्लाह!"

वह यकबारगी उछल पड़ी। उसे इस बात का भी होश नहीं था कि कमरे की गली की तरफ़ से उसे कोई भी देख सकता है। वह खिड़की के खुले पट से लगी खड़ी थी और एक नौजवान लड़का उसे इन्तहाई हसरत और मस्ती के आलम में अपने घर की खुली खिड़की से ताक रहा था। दोनों की नजरें चार हो गई थीं।

उसने घबरा कर खुली हुई खिड़की का पट बड़ी ज़ोर से, फट से करके भेड़ा और एक दम से उसी जगह खिड़की के नीचे दीवार से लग कर बैठ गई।

उसका दिल इतनी ज़ोर से धड़क रहा था कि अपने दिल की इस खतरनाक क़िस्म की धड़कन को वह खुद सुन रही थी और बौखलाई जा रही थी। उसके तमाम जिस्म में बिजलियाँ-सी कौंधी जा रही थीं। पसीने से उसका सारा जिस्म सराबोर हुआ जा रहा था। उसकी रगों में खून की रवानी बहुत तेज़ हो गई थी। उसका साँस इस अन्दाज़ में फूल रहा था, जैसे कि वह मीलों भाग कर आ रही थी।

वह उसी जगह, उसी एक हालत में देर तक बैठी रही बैठी रही— और काँपती रही। लरज़ रही थी वह सारी जान से।

"उस नामहरम ने मुझे खूब जी भर कर देखा है। वह न जाने कब से मुझे इस हालत में देख रहा था।"

उसे खयाल आया, उसका दुपट्टा भी तो ठीक से उसके सिर पर नहीं था। और यह खयाल आते ही वह जल्दी-जल्दी ग़ैर इरादी तौर पर अपना दुपट्टा सम्हालने लगी। वह घबरा-घबरा कर उसी जगह बैठे-बैठे अपना दुपट्टा संवार रही थी और लरज़ रही थी। उसने सोचा—

"न जाने यह कौन होगा—मुआ! कैसे मुझे दीदे फाड़-फाड़ कर देख रहा था! खुदा ग़ारत करे कम्बख्त को—बेईमान ज़माने भर का!"

वह अभी उसी जगह, उसी हालत में, अपने घुटनों में अपना सिर छुपाए सिमटी-सिमटी अपने आपको सम्हाले बैठी थी कि खिड़की का पट एक ज़रा-सा खुला और एक तह किया हुआ काग़ज़ का टुकड़ा उसके सिर पर आ गिरा।

वह चौंक पड़ी। उसने अपना सिर थोड़ा-सा घुटनों के अन्दर से निकाला और काग़ज़ का तह किया हुआ वह पर्चा उसके सिर से सरक कर उसके सामने आकर फ़र्श पर गिर पड़ा।

वह और ज्यादा बदहवास हो गई। कागज़ का मोड़ा हुआ यह हकीर टुकड़ा इसके लिए तोप के गोले से कम नहीं था। उसे ऐसा मह-सूस हो रहा था कि किसी ने उसके सिर पर पहाड़ उठाकर दे मारा हो। जैसे कि कागज का यह टुकड़ा एक जहरीला नाग हो, जो उसके सिर से फिसलकर उसके बिल्कुल करीब सामने आकर गिर पड़ा हो।

वह कागज के उस टुकड़े को अपनी सहमी हुई नजरों से बिल्कुल इस अन्दाज से देख रही थी, जैसे कि वह स्याह नाग हो और वह अभी अपना फण फैलाकर खड़ा हो जायगा। उसे डस लेगा।

वह उस जगह से खिसक भी नहीं रही थी और न हिल ही रही थी, मुबादा यह नाग उसकी जरा सी हरकत पर उसे लहराकर डस ले।

वह उसको उस सहमे-सिमटे अन्दाज से ताक रही थी कि उसे खयाल आया कि इस खतरनाक चीज को कोई और न देख ले। उसकी

नानी अम्माँ देख लें, या मुगलानी बी की नज़र उस पर पड़ जाये। लिहाज़ा उसने हिम्मत करके अपनी कपकपाती और लरजती उँगलियों से उस हक़ीर कागज़ के टुकड़े को उठा लिया।

उसने उस पर्चे को इस अन्दाज में इधर-उधर देखा और अपने गरारे के नेफ़े में उड़सा कि उसकी इस हरकत पर दरो-दीवार को भी हँसी आ गई। जैसे कि किसी माहिर चोर ने मौका पाते ही किसी की जेब का गिरा हुआ माल छुपा लिया हो। जैसे कि किसी गिरहकट की अभ्यस्त उँगलियों ने किसी की जेब काटकर अपने नेफ़े में छुपा ली हो।

वह अपने-आपको सम्हालती हुई वहाँ से उठी और अपने काँपते क़दमों के साथ गुसलखाने में घुस गई। अन्दर से गुसलखाने की चट-खनी उसने चढ़ा ली।

कुछ देर तक वह वहाँ खड़ी अपने होशो-हवास को दुरुस्त करती रही। अपने-आपको काबू में करती रही। और फिर जब उसके दिल की धड़कनें ज़रा थमीं, खून की गर्दिश एक हद तक अपने मामूल पर आ गई तो उसने अपने नेफ़े में उड़से हुए कागज के उस हक़ीर टुकड़े को निकाला।

और जैसे ही उसने उस मोड़े हुए कागज को खोलना चाहा, तो उसके सारे जिस्म में फिर बिजलियाँ कौंधने लगीं। जिस्म में खून की रवानी फिर तेज हो गई। उसका दिल जोर-जोर से फिर से धड़कने लगा। उँगलियाँ लरजने लगीं। उसका दिल फिर से डूबने लगा।

वह घबराकर उसी जगह नहाने के पटरे पर उकडूं बैठ गई। महज अपने-आपको सम्हालने के लिए। इसलिए कि उसके पाँव लरजने लगे थे। और उसे यकदम से यह अहसास हुआ था कि अगर वह बैठ न जायगी, खड़ी रहेगी तो धम से करके गिर पड़ेगी।

लिहाजा वह बैठ गई थी। उसने उस जगह, उसी हालत में बैठे-बैठे कागज का वह पुर्जा खोला। उसकी नजरें कागज के उस टुकड़े पर झुकीं। लिखा था—

"मुझे न अपना अंजाम मालूम है और न अपने इस पागलपन का, जागते और सोते में मैं सिर्फ़ ख्वाब देखता हूँ अब। और मेरा वह ख्वाब आप—और सिर्फ़ आप हैं। दिल आपको किसी लम्हा नहीं भूलता। आपसे जुदा रहकर मैं जी न सकूंगा। बस इतना मैं जानता हूँ। जीने की क्या ज़रूरत हो सकती है, यह मुझे मालूम नहीं।

लब बन्द, गुम हवास, तग़य्युर निगाह में।

तस्वीर बन गया हूँ तेरी जल्वागाह में—(कैफ़ टन्कवी मरहूम)।"

"—कानपुर आज से एक हफ्ता पहले आया था। यह मकान मेरे चचा का है। यहाँ तालीम की गर्ज़ से आया हूँ और जिस दिन से आया हूँ—आपको रोज़ देखता हूँ मैं।

आज देखा है आपने मुझको—(आदिल रशीद)—"

"—आप ही फ़रमाइये अब क्या होगा? हम क्या करें, हमारी समझ में तो आपकी कसम, जैसे कि पत्थर पड़ गये हैं—सलीम।"

सईदा ने यह खत पढ़ा तो उसके सारे जिस्म में सर्दी की एक लहर समा गई। अब उसे ऐसा महसूस हो रहा था, जैसे कि खून उसकी रगों में जम गया हो। उसके कानों में एक अजीब किस्म का सन्नाटा-सा समा गया। उसकी आँखों के सामने अन्धेरा-सा छा गया था और उसकी आँखों के सामने तीरिये नाचने लगे थे। सिर उसका इतनी ज़ोर-ज़ोर से चकराने लगा कि वह चक्कर खाकर गिरने को हो गई। उसे ऐसा महसूस होने लगा, जैसे कि उसके सिर पर पहाड़ टूट पड़ा हो। जैसेकि वह किसी गहरे और अन्धे कुएं में दूर तक सिर के बल गिरती चली जा रही हो।

उसने जल्दी-जल्दी से खत को अपने गरारे के नेफ़े में फिर ठूंस लिया। वह कुछ और देर तक उसी जगह बेहिस-व-हरकत खड़ी रही। फिर वह दबे पाँव गुसलखाने से बाहर निकली और नजरों से अपने-आपको बचाती हुई अपने कमरे में आई और मसहरी पर औंधे मुंह गिर पड़ी।

उसकी नजर फिर गली की तरफ खुलने वाली उस खिड़की पर

पड़ी। वह सन्नाटे में आ गई। वह उठकर दबे पाँव खिड़की के नज़दीक आई। उस ख़त के उसने बेशुमार टुकड़े किए। उन टुकड़ों को उसने खिड़की की दहलीज़ पर रखकर अपनी फूंक से बाहर की तरफ़ उड़ा दिया। बड़ी ज़ोर से भड़-से करके उसने खिड़की बन्द कर दी। खिड़की की चटख़नी लगाई और कमरे से इस तरह घबराकर बाहर निकली कि जैसे कि इस कमरे में आसेब हों।

और फिर उस रात को वह रात भर चैन की नींद नहीं सो सकी। रात भर वह कुत्ते की नींद सोई। जब उसकी आंख खुली, ग़ैर इरादवी तौर पर उसकी नज़रें गली की तरफ़ खुलने वाली उसी खिड़की पर अटक-अटक गईं। उसे हर दफ़ा ऐसा महसूस हुआ, जैसे कि वह उस तरफ़ खिड़की के पास रात की बेतहाशा सर्दी में सिकुड़ा खड़ा हो और कह रहा हो—

"हमारी समझ में तो आपकी कसम, जैसे कि पत्थर पड़ गए हों। आप ही फ़रमाइये कि अब क्या होगा? हम क्या करेंगे?"

सईदा के ज़हन में बार-बार वह मंज़र घूम-घूम जाता था—वह उसका बदहवासों की तरह देखना—उसकी नज़रों का चार होना और उसका घबराकर 'हाय अल्लाह' कहकर खिड़की भड़ से करके बन्द कर देना।

उसके दिल ने कई बार उसे झंझोड़कर जगाया था। वह उसे बार-बार याद दिला रहा था—

"बड़ी बेरहम है तू! कम्बख़्त, कितना ख़ूबसूरत—मासूम-सा लड़का है वह! कितना भोला, कितना सीधा-सा और कितना आज़ुर्दह, जैसे कि सचमुच उसकी ज़िन्दगी में तेरी वजह से ज़हर घुल गया हो। किस हसरत से वह तेरी तरफ़ ताक रहा था। बिल्कुल इसी अन्दाज में वह देख रहा था, जैसेकि एक अक़ीदतमंद पुजारी अपनी देवी को देखता है। जैसे कि मोमिन ख़ानए-काबा को देखता है। जैसे कि चकोर चाँद को ताकता है और परवाना दीवानावार शमा पर निसार हो जाता है।"

वह अपने दिल की इस पुकार पर यकबारगी चौंक पड़ी—

"बेचारा !"

बेसाख्ता उसकी ज़बान से निकला। घबराकर उसने अपने तकिए में अपना मुंह छुपा लिया। वह फूट-फूटकर, सुबक-सुबक कर घुटे-घुटे अन्दाज़ में रो रही थी।

सईदा ने चार दिन तक गली में खुलने वाली उस खिड़की का दरवाज़ा नहीं खोला। खिड़की का दरवाज़ा उसी तरह बन्द रहा। लेकिन उसके खयालात खिड़की के उस पार गली के उस सामने वाले मकान के बाहर वाले ड्राइंग रूप में उलझे रहे, जहाँ कि वह लड़का बैठा हुआ उसे दिखाई देता था।

दिन-रात के चौबीस घण्टों में वह एक लम्हा के लिए भी अपने खयालात को उस लड़के के तसव्वर से आज़ाद न करा सकी। वह सोते में भी उसी के ख्वाब देखती थी। उसी के ख्वाब जिसने उसे लिखा था—

"आपको रोज़ देखता हूँ मैं,
आज देखा है आपने मुझको।"

वह सोचती, यह उसकी उस बदहवासी का नतीजा है कि वह लड़का उसे देखता रहा। वह ज़रूर आलम-बेखयाली में उस खिड़की से लगी खड़ी रही होगी। खिड़की का दरवाज़ा खुला रहा होगा और वह उसे खूब जी भरकर देखा किया होगा।

उसे अपने-आप पर गुस्सा आने लगता। वह सोचा करती, वह आखिर इतनी बदहवास क्यों हो गई थी कि दूसरों को अपने को दिखाती फिरे !

और इस मोड़ पर आकर उसे इस लड़के सलीम का कोई कसूर नज़र न आता। वह सोचती, मुफ़्त में उसने उस गरीब को कोस डाला। खुदा उसे क्यों गारत करे बेचारे को ! बेईमान क्यों होने लगा वह ! बेकार ही को उसे मैंने 'मुआ' कहा था।

रात के पौने तीन बजे थे। वह अभी तक जाग रही थी। उसके खयालात खिड़की के उस तरफ़ उलझे हुए थे। उसे सलीम की वह पुरकशिश नज़रें याद आ रही थीं जिनसे कि वह घबराकर बदहवास हो गई थी। उसने कुछ इस क़िस्म की कसक अपने दिल में महसूस की, जो अब तक उसकी जात के लिए अनजानी थी। और अचम्भा उसे इस बात का हो रहा था कि उसके दिल की यह कसक नानी अम्मां के लिए नहीं, बल्कि सलीम के लिए थी। सलीम के लिए, जो कि उसके लिए कतई अनजाना था और अजनबी था। जिसके बारे मे वह इसके सिवाए और कुछ नहीं जानती थी कि वह एक खूबसूरत-सा लड़का है और उसका नाम सलीम है।

जैसे कि उसकी चिट्ठी से यकदम से बेदार हो गई हो। उसे ऐसा महसूस हुआ, जैसे कि सलीम उस वक्त भी, जबकि रात के तीन बजने वाले हैं, जाग रहा है और उसकी खिड़की के नीचे इस जमा देने वाली सर्द रात में भी खड़ा है। और उसकी एक झलक देखने के लिए उसका इन्तजार कर रहा है। उसकी उस चिट्ठी ने उसे बताया कि वह हर रात इसी तरह रात के ग्यारह बजे से लेकर सुबह के पाँच बजे तक इसी खिड़की के नीचे, सारी रात खड़ा रह कर उसका इन्तजार करता रहता है।

"बेचारा !"

एक दफ़ा फिर यह लफ्ज गैर इरादतन तौर पर उसके होठों से फूट पड़ा। और वह यकबारगी अपनी मसहरी पर से अपने ऊपर का मोटा-सा लिहाफ़ परे फेंक कर उठ गई। वह तीर की तेजी के साथ खिड़की के पास आई। उसने आन की आन में खिड़की खोल दी।

"अरे !"

वह जैसे कि पागल हो गई। सलीम वाक़ई खिड़की के नीचे दीवार से लगा खड़ा था और एक टक खिड़की की तरफ़ ताक रहा था।

"हाय अल्लाह !" उसके मुंह से बेअख्तयार निकल गया। सलीम सिर्फ कमीज और पाजामे में उस कड़ाके की सर्दी के बावजूद उसकी दीवार से लगा खड़ा था।

घबरा कर अपने दोनों हाथों से उसने अपना मुंह दबा लिया। उसकी नानी अम्मां उसी कमरे में उसकी मसहरी के बराबर वाली मसहरी पर लेटी सो रही थीं। मुबादा उन्होंने उसकी 'हाय अल्लाह' सुन ली हो।

"मुझे यकीन था—" सलीम आहिस्ता से बोला—"आपको मुझ पर रहम ज़रूर आएगा। तरस खाकर आप मेरे लिए इस खिड़की का पट जरूर खोल देंगी।"

वह एक कदम पीछे हट गई। उसका दिल जैसे कि उसके हलक में आकर फंस गया हो। सलीम का मुरझाया हुआ चेहरा उसने चांद की रोशनी में देख लिया था।

उसकी रगों में खून की गर्दिश एक बार और तेज हो गई। उसका सारा जिस्म उस सर्दी के बावजूद दहक उठा। वह उसी जगह खड़ी रही। खिड़की का पट घबरा कर उसने इस दफा बन्द नहीं किया। उसके दिल से अपनी नानी अम्मा की उस कमरे में मौजूदगी का अहसास जैसे कि मर गया हो।

सलीम दीवार से हट कर खिड़की के सामने आ गया। वह मस्कीनियत से कपकपाई हुई आवाज में बोला—

"तरस खाकर मेरे इस दिल के टुकड़े को जरूर देख लीजिएगा।"

उसने कागज़ का तह किया हुआ एक पुर्जा फिर अन्दर फेंक दिया। सईदा ने वह पुर्जा इस बार फौरन उठा लिया। वह खिड़की के नजदीक आ गई।

उसने देखा वह सिर झुकाए चला जा रहा था। उसने गली पार कर ली। वह अपने मकान के बरामदे में आ गया। वह कमरे में चला गया। वह कमरे की जगमगाती रोशनी में, जोकि तारीकियों से हम-किनार थी, गुम हो चुका था।

सईदा ने खिड़की के पट बन्द कर दिए।

दस

सईदा सलीम के खत को कई दफ़ा पढ़ चुकी थी। वह इस वक्त भी अपनी किताब में उसी का खत रखे थी और किताब पढ़ने के बहाने उसे पढ़ रही थी। सलीम का खत उसके सामने खुला रखा था—

"सईदा,

बड़ा प्यारा नाम है। आपका यह नाम मुझे अपनी चचाजाद बहिन तसनीम से मालूम हो चुका है। बहाने-बहाने से मैंने यह नाम उससे पूछ लिया था। आप यह न समझ लीजिएगा कि खुदा न ख्वास्ता मैंने आपका नाम मालूम करके आप को बदनाम कर देने का कोई गलत कदम उठाया है। तसनीम तो बड़ी मासूम-सी बच्ची है। उससे मैंने योंही इधर-उधर की बातों में यह मालूम कर लिया था कि आपका नाम सईदा है। मेरी इस जसारत से न तो किसी को शक हो सकता है और न आपकी, अल्लाह न करे, बदनामी। आपने मेरे खत के पुर्जे उड़ाकर फूंकों के ज़रिये उसे मेरे हवाले कर दिया था। मुझे इससे हैरत या मायूसी हर्गिज़ नहीं हुई, बल्कि खुशी हुई है। शरीफ़ लड़कियों की यही फितरत होनी चाहिए। मेरे दिल के टुकड़े आपके हाथों हुए, यही सब से बड़ी खुशी मेरे लिए क्या कम है। अपने दिल के टुकड़े मैंने सम्हाल कर रख छोड़े हैं।

"—मेरा नाम सलीम है, यह तो आपको मालूम हो ही चुका होगा। खत के आखिर में वह मेरा ही नाम था। मैं इस वक्त बी० ए० में पढ़ रहा हूं। मेरे बाप का नाम शेख गुलाम रसूल है। वे जिला रायबरेली में कलैक्टर हैं। वे इसी जिला के बहुत बड़े जागीरदार भी हैं। मैं उनका इकलौता बेटा हूं। मां हैं, बाप हैं और मैं हूं और बस। मुझे वालिद

साहिब बैरिस्ट्री के लिए विलायत भेजना चाहते हैं। लेकिन अब मुझे यकीन है कि उनकी यह हसरत पूरी न हो सकेगी। हाँ, वे मेरा सेहरा भी अब न देख सकेंगे। उनकी यह भी बड़ी आरज़ू है।"

"—लेकिन मेरी आरज़ू! वह आप हैं और आप मुझे ठुकरा चुकी हैं। वरना पांच दिन तक रात-रात भर इस तरह मैं तन्हा आपकी खिड़की के नीचे न खड़ा रहता। एक दफ़ा तो दिल का हाल आप पूछने आईं, कोई गिला नहीं है आप से। शिकवा मुक्द्दर से है! काश, कि मैं कानपुर न आता!"

"अब मेरे माँ-बाप मेरे सेहरे के फूल मेरी कब्र पर आकर चढ़ाएँगे। इसका मुझे अपने ईमान की तरह यकीन है।"

"तीन और मुरादें आपको पाने के लिए माँग रखी हैं। अगर मुराद पूरी हो सकी, तो ठीक, वरना मौत को गले लगा लेना मुश्किल हर्गिज नहीं है। इस दुनिया में जीना मुश्किल है और मरना आसान है। इस आसानी ही को मैं अपना लूंगा। कोई बात नहीं।"

"—किसको मालूम मेरे ख्वाबों की ताबीर है क्या,
कौन जाने कि मेरे गम की हकीकत क्या है?" (हिमायतअली)

—सलीम

सलीम का यह खत सईदा ने पढ़ा था, बार-बार पढ़ा था और वह इस खत को जितनी बार पढ़ती थी, उलझ-उलझ जाती थी। उसे इस खत के पीछे एक नहीं, बल्कि तीन दिल धड़कते हुए दिखाई देते थे। एक दिल खुद सलीम का था, दूसरा उसके बाप का दिल था और तीसरा दिल उसकी माँ का था।

सलीम का दिल कि वह उसे अपनी जिन्दगी का साथी बना ले। बाप का दिल कि वह अपने बेटे को बैरिस्ट्री के लिए विलायत भेजे। और माँ का दिल कि वह अपने इकलौते बेटे का सेहरा देखे। माँ बेचारी अपने बेटे के लिए सेहरे के फूल खिलाना चाहती थी और बेटा अपनी जान के पीछे हाथ धोकर पड़ गया था।

उसे बेहद अफ़सोस हुआ। और जब उसे चौथे दिल का खयाल आया तो वह अपना कलेजा मसोस कर रह गई। यह चौथा दिल उसका अपना दिल था। जो उसके लाख सम्हाले और समझाने पर भी उसकी अब एक नहीं सुन रहा था। उसे अहसास हुआ कि वह सलीम की मुहब्बत में बिल्कुल ही मजबूर और लाचार होकर रह गई है।

वह अपने होंठ काटने लगी। शर्म से उसका चेहरा गुलनार हो गया। उसकी पेशानी पसीने से भर चुकी थी। शर्म से उसकी निगाहें खुद-बखुद नीचे झुक गईं। उसने दांतों से अपने दुपट्टे का कोना दबा लिया। वह यकबारगी चौंक पड़ी। वह दिल ही दिल में बड़बड़ाई—

"—लेकिन अब मेरी वह पहली जैसी हालत क्यों नहीं है? क्यों करार आ गया है मेरी उस हालत को, जिसने कि मुझे, मेरी नानी अम्मां को और यहां तक कि मुगलानी बी को भी चिन्तित और परेशान कर रखा था।"

वह सोचने लगी—

"क्या सलीम ही मेरी उमड़ती-मचलती और बल खाती हुई बेकरार आरजुओं और तमन्नाओं का वह मर्कज़ है, जिस तक पहुंच जाने के लिए मेरी हालत काबिले-रहम थी? क्या सलीम का वजूद ही मेरी बेताब जिन्दगी के लिए सहारा बनने वाला था?"

वह अपने-आप से शर्मा गई। उसने अपने रंगीन आंचल में अपना मुंह छुपा लिया। शर्म से उसकी गर्दन नीचे झुक गई। वह बड़बड़ाई—

"मेरे अल्लाह! मैं सचमुच कितनी बुरी और कितनी अजीब हो गई हूं। तौबा-तौबा! कोई खुदा न करे कि मुझ जैसा हो।"

"छीः! मैं भी कोई लड़की हूं! खुदा मुझे माफ़ करे।"

आंसू उसकी पलकों तक आ गए थे। बेकरार होकर उसने अपना मुंह अपने दोनों हाथों से ढांप लिया।

ताहिर ने गुस्से और नफ़रत से घुटी हुई आवाज़ में एक ज़ोर की चीख़ निकाली—

"अब तू, कमीनी और हरामज़ादी औरत मुझे यह सब-कुछ बता रही है ! अब, जबकि पानी सिर से गुज़र चुका है, इस वक़्त तेरे इन मनहूस होंठों के टांके खुले हैं, जबकि हमारी इज्ज़त का उस कमीनी लड़की रज़िया के हाथों नीलाम हो चुका है। जबकि वह एक बच्चे की मां बनने वाली है।"

उसने अपनी बीवी अनवरी का गला घोंटना शुरू कर दिया। उसने उसके मुंह पर बेतहाशा तमाचे लगाए। वह उसे दीवानों और पागलों की तरह पीटने लगा। उसके बेटे अकबर और बेटी नज्मा ने मां को किसी-न-किसी तरह से मरने से बचा लिया। बड़ी मुश्किलों से उन्होंने मिलकर अपने बाप के हाथों से अपनी मां को छुड़ाया।

ताहिर उसी जगह अपना सर अपने दोनों हाथों से पकड़कर बैठ गया। वह ज़ारो-कतार रो रहा था। और कहता जा रहा था—

"अच्छी तरबीयत की थी उसने अपने बच्चों की। बड़ा अच्छा सबक उसने हरामज़ादी रज़िया को पढ़ाया था। मेरी मासूम भांजी सईदा में तो इसे उसके बचपन ही से कीड़े नज़र आने लगे थे, लेकिन अपनी लाडली की आवारगियों की तरफ़ से इस कमीनी औरत ने अपनी आंखें बन्द करली थीं। सईदा तो बचपन से ही इसकी नज़रों में आवारा होने जा रही थी, यह उस मासूम को हवेली की छत पर भी नहीं जाने देती थी और अपनी बेटी को—?"

वह उठा। वह गुस्से से पागल हुआ जा रहा था। उसने अपने कमरे में जाकर बन्दूक उठाली—

"मैं अभी गोली मार देता हूं उस नंग ख़ानदान रज़िया को। मैं उस कुतिया को हराम की मौत मारे डालता हूं।"

बड़ी मुश्किल से अनवरी, नज्मा, अकबर ने उसे उसके इरादों से बाज़ रखा। बन्दूक उसके हाथ से छीन ली गई, लेकिन वह जनूनियों

की तरह रज़िया के कमरे में घुस गया और उसे बेतहाशा पीटने लगा। उसने मार-मारकर रज़िया को अधमुआ कर दिया। उसने रज़िया को एक आखिरी ठोकर लगाई—

"बोल कमीनी ! यह किसका गुनाह है, जिसे तू अपने जिस्म में पाल रही है ?" उसने दांत पीसे—"मैं अभी उसे जहन्नुम रसीद करूंगा। कसम खुदा की, मैं उसे मार डालूंगा।"

"वह आपका कारिन्दा था न, कारिन्दा, वह वसीमुल्लाह, वह जो आपकी मुलाज़मत छोड़कर कलकत्ता भाग गया है।" अनवरी खून थूकते हुए कराह के साथ बोली—"उसी नामुराद ने इस बदबख्त की पेशानी पर यह कालिख मली है।"

"ओह, वसीमुल्लाह ! वह दो टके का लौंडा। वह अवारा..."

"हां !" अनवरी ने अपने शौहर के पांव पकड़ लिए—"अब उसी को किसी तरह इस बात पर आमादा कीजिए कि वह इस नामुराद से शादी करले।"

"खुदाया !" ताहिर चीख पड़ा—"यह मेरे किस गुनाह की सज़ा है !"

वह निराश होकर चीख पड़ा—

"मैं तो चारों तरफ़ से आफ़ात में घिर गया हूं। वह ज़ारो-कतार रो रहा था—"मैं बहुत गुनहगार हूं, मेरे अल्लाह ! तू मेरे सारे गुनाहों को माफ़ करके मुझ पर रहम कर।"

वह बड़बड़ा रहा था—

"इस नाबकार औरत की बातों में आकर मैंने अपनी मां का दिल चकनाचूर किया है। मैंने उस फ़रिश्ता-सिफ्त और बेवा मां की सारी जागीर छीनी है। मैंने इस हवेली से उसे निकाला है। मैंने हर बुराई और हर दुश्मनी उसके लिए जायज़ रखी है। मैंने अपनी मासूम भांजी का सब्र समेटा है। इस अनवरी हरामज़ादी की हर बात में आकर मैंने कदम-कदम पर ठोकर खाई है। इसी के बाप ने मुझे मुकद्दमे में

उलझा कर मेरा हज़ारों का नुकसान कराया है।"

उसने अपने दोनों हाथों से अपना दिल थाम लिया। उसका दिल डूब रहा था। वह अपना दिल पकड़कर बैठ गया। वह उसी जगह गिर पड़ा। वह बेहोश हो चुका था।

ग्यारह

जलील को आज पूरे आठ साल बाद होश आया। उसे अपनी बेगम साइरा की हर बात अपनी बहिन राबिया की जबानी मालूम हो चुकी थी। साइरा बीवी के हाथ का लिखा हुआ खत, जोकि उसने अपने आशिक को लिखा था, उसके सामने खुला पड़ा था।

अब उसकी आँखें शोले बरसा रही थीं और वह जल्द से जल्द साइरा के भविष्य का फ़ैसला कर देना चाहता था। साइरा पन्द्रह दिन से अपने मायके गई हुई थी। उसी के साथ उसका सारा खानदान भी, जोकि शादी के बाद से वहीं डटा रहता था, अपने घर राधानगर गया हुआ था। उसकी हवेली में अब कोई नहीं था कि उसकी बहिन राबिया पूरे पाँच साल के बाद यह सारी तफ़सील और मालूमात लेकर अपनी ससुराल से उसके पास आ गई थी।

राबिया रुखसाना की अचानक मौत के बाद फिर इस तरफ़ दो-एक मर्तबे को छोड़ कर नहीं आई थी। वह अहमदपुर जाकिरा बीवी के पास भी रुखसाना के पुर्से पर ही गई थी। उसके बाद पे दर पे हालात कुछ इस तेजी के साथ बदलते रहे कि वह जाकिरा बीवी के पास रंज, अफसोस और शर्म व निदामत की वजह से न जा सकी। उसी की वजह से रुखसाना और जलील का ब्याह हुआ था। जलील की इन हरकतों पर वह इतनी ज्यादा रंजीदा और शर्मसार थी कि वह फिर दुबारा जाकिरा बीवी को अपनी सूरत न दिखा सकी।

राबिया की बड़ी बेटी हमीदा जीनत की गहरी दोस्त थी और यह जीनत साइरा की एक जिगरी सहेली फ़रखन्दा की छोटी बहिन थी। दोनों अलीगढ़ में एक साथ पढ़ती थीं और वहीं गर्ल्स होस्टल में एक

कमरे में रहती थीं।

जीनत ने एक दिन हमीदा से कहा—

"दुनिया भी बड़ी अजीब है, हमीदा !"

"क्या हुआ ?" हमीदा ने पूछा !

"सुनोगी तो तुम्हें भी बड़ा दुःख होगा।"

"तो न सुनाओ।" हमीदा ने कहा—"ग़म की कोई दास्तान मैं सुनना न चाहूँगी।"

' फिर भी सुन लो।"

"क्यों ?"

' दूसरों की दास्तानों में भी कभी-कभी कुछ सोचने और सीखने को बहुत कुछ मिल जाता है।"

'अच्छा बताओ क्या बात है ?"

जीनत ने सुनाना शुरू किया—

"मेरी बड़ी बहिन फ़रखन्दा को तुम जानती ही हो।"

"हां-हां।" हमीदा बोली—"तुम्हीं ने अक्सर अपनी बड़ी बहिन का जिक्र मुझ से किया है।"

वह जैसे कि परेशान हो गई—

"तो क्या तुम्हारी बहिन फ़रखन्दा को—?"

"खुदा न करे कि उन्हें कुछ हो।" जीनत हमीदा की इस बदहवासी पर मुस्करा दी—"मैं उन्हीं अपनी फरखन्दा बहिन के वास्ते से तुम्हें एक दिलचस्प लेकिन इन्तहाई अफ़सोसनाक किस्सा सुनाने लगी हूँ।"

"क्या है वह वाकया ?"

जीनत ने बताना शुरू किया—

"फ़रखन्दा बा जी की एक सहेली हैं—साइरा बेगम•••।"

हमीदा ने जीनत की बात काटी—

"साइरा बेगम !" उसने पूछा—"तुमने उनका नाम साइरा बेगम बताया ?"

ज़ीनत झुंझला गई—

"मत बोलो बीच में। सुनती जाओ। बड़ी इबरतनाक दास्तान है। हाँ, मैंने साइरा बेगम उनका नाम बताया है।"

वह आगे बढ़ी—

"इन साइरा बेगम साहिबा की शादी एक मालदार घराने में हो गई।"

"फिर ?" हमीदा ने फिर बात काटी।

"तुम इतनी बौखलाई क्यों जा रही हो ?" ज़ीनत ने हमीदा को गौर से देखा—"सुनती जाओ।"

उसने अपनी बात फिर शुरू की—

"हाँ, तो उन साइरा बेगम की शादी एक ऐसे शख्स से हुई थी, जिसकी पहली बीवी मर चुकी थी। वह दूसरी बेगम बनकर ससुराल गई थीं। उनके शौहर की पहली बीवी से एक बच्ची सात साल की थी। वह भला इसे कैसे गवारा कर सकती थी। उन्होंने अपनी इस सौतेली बच्ची को उसकी नानी के पास से बुलवा लिया।"

"नानी के पास से बुलवा लिया, तो वह तो उससे मुहब्बत करती थीं।"

"कहा कि बीच में न बोला करो। सुनती जाओ।"

"अच्छा ! अब न बोलूंगी। आगे बढ़ो।"

"हाँ, तो उस बच्ची को उस औरत ने बुलवा कर अपने पास रखा। वह उससे बेतहाशा मुहब्बत जताती थी। वह बच्ची के बाप तक से उसके लिए लड़ती थी। वह बच्ची को हर वक्त अपने कलेजे से लगाकर रखती थी।"

"यह तुम बक क्या रही हो, ज़ीनत !" हमीदा जैसे कि उकता गई। "वह इतनी मुहब्बत तो करती थी अपनी सौतेली बेटी से—और तुम...।"

"कह जो दिया कि बीच में मत बोलो।"

"तुम बीच-बीच में बोलने की ही बात जो करती हो।"

"मैं तो बात नहीं करती बीच में बोलने की। तुम ही बदहवास होकर बात काटे जाती हो। पहले पूरी बात सुन लेते हैं, फिर बात काटा करते हैं।" जीनत बोली—"फिर पूछते हैं, जो पूछना हो। फिर मीन-मेख निकाला जाता है।"

"अच्छा !" हमीदा मुस्कराई—"अब मैं बीच में तो क्या, अगर आखिर में भी बोल जाऊँ, तो कहना। तुम शुरू करो। फिर क्या हुआ ?"

"हुआ तुम्हारा सिर।"

"बस रूठ गईं !"

"हाँ, रूठ गई। फिर !"

"फिर यह कि तुम्हें हमारी कसम, जो आगे न बढ़ो।"

"अच्छा, तो सुनो !"

"सुनाओ।"

"हाँ, तो उस बच्ची से वह साइरा बेगम बेतहाशा मुहब्बत करती थी। जब उस बच्ची का बाप जुलबुला कर उससे बाजपुर्स करना चाहता तो वह अपनी कसमें दे-देकर उसे रोकती रहती थी। अगर…।"

"पगली थी क्या वह औरत ?"

"फिर तुम बीच में…!"

"अच्छा-अच्छा !" हमीदा ने कानों को हाथ लगाया—"तुम आगे कहो, आगे। मामला जरा दिलचस्प मालूम हो रहा है।"

"वह औरत दरअसल बड़ी अकलमन्द और समझदार थी। वह नहीं चाहती थी कि बाप बेटी को डांटे, उस पर खफा हो और वह बाप को बता दे कि वह जिस बात पर उसे डांट रहा है, वह तो बात ही मेरे से नहीं हुई। इस तरह वह बाप के दिल में बेटी के लिए मुसलसल नफरत भरती रही और खुद को इन्तहाई चाहने वाली माँ साबित करती रही और शौहर की नजरों में सुर्खरू होती रही। आखिर एक दिन उसके

शौहर ने अपनी बेटी को उसकी नानी अम्मां के पास पहुँचा दिया। हमेशा-हमेशा के लिए उसने अपनी बेटी की तरफ से आँखें फेर लीं। और फिर···।"

"हां-हां और फिर !" हमीदा ने बेअख्तयार सवाल किया।

"और फिर यह हुआ कि उस चालबाज औरत ने शौहर को जी भर कर उल्लू बनाने की ठान ली। वह उसे लगातार उल्लू बनाती रही और अब तक उसे उल्लू बनाती रही है। उसने शौहर का सारा रुपया अपने मां-बाप के घर पहुँचा देना शुरू कर दिया है। अपने सारे परिवार को वह शौहर के रुपये पर पालने लगी। उसके सारे अज़ीज़ उसके यहां भरे रहते हैं। खाते-पीते और ऐश करते हैं और वह···।"

"और वह क्या ?"

"और वह अपने एक पुराने आशिक के साथ ऐश करती है।"

"हाय !"

"हां।" जीनत बोली—"यही तो जुल्म है उस औरत का।" वह राज़दाराना तौर पर बोली—"और अब वह अपने शौहर को ज़हर देने की सोच रही है।"

"अरे !"

"हां !" जीनत बोली—"ऐसी औरतें तो करती ही यही हैं। वे अपने रास्ते के कांटे मुस्तकिल तौर पर अपनी राहों से दूर कर देती हैं।"

"उस औरत की कोई औलाद है ?"

"नहीं।"

"और यह तमाम बातें उस औरत ने तुम्हारी बहिन को बतला दीं ?"

"हां। वे उसकी राज़दार सहेली जो हैं !" जीनत बोली "मुझे तो अपनी बहिन पर भी गुस्सा आने लगा। ऐसी औरत से दोस्ती, तौबा—तौबा।" जीनत ने अपने कानों को हाथ लगाते हुए कहा—

'खुदा बचाए ऐसी आवारा और बदजन औरतों के साए से।" उसने हमीदा से कहा—

"उस औरत ने अपने और अपने आशिक के कई खतूत भी मेरी बहिन को दिखाए थे। बहिन ने उनमें से एक खत चुपके से रख लिया। उस खत में उस औरत ने अपने आशिक को अपने शौहर को जहर देकर मार डालने की बात लिखी थी और उस खत को पुश्त पर उसके आशिक ने इस अमर की ताईद करते हुए यह लिखा था कि इस नेक काम में तुम अब देर न करो।"

वह बोली—

"और वह खत मैं बहिन से छुपाकर तुम्हें दिखाने के लिए चुरा लाई हूं।"

और यह कहकर उसने वह खत हमीदा को दिखाया। हमीदा ने वह खत लेकर अपने पास रख लिया।

"तुम क्या करोगी इस खत का ?"

"अचार डालूंगी।" हमीदा ने मुस्करा कर कहा।

"तो डालो अचार !" जीनत मुस्करा दी—"कहीं इस खत को अपने लिए मशाले-राह बनाने का खयाल तो नहीं ?"

"चुप नालायक ! खुदा न करे।"

हमीदा ने अपनी मजीद तसल्ली के लिए पूछा—

"इस तौरत का ब्याह कहां हुआ था ?"

"कस्बा करीमगंज है कोई। वहां के जागीरदार से इसकी शादी हुई है।"

हमीदा का मुंह फक हो गया। उसने दिल में सोचा, अल्लाह का शुक्र है कि जीनत को यह नहीं मालूम कि वह ये सारी बातें तो मेरी ममानी साहिबा के बारे में कर रही है। वह अपने आपको सम्हाल रही थी, लेकिन उसके औसान खता होते जा रहे थे। फिर उसने वह खत, जो कि साहरा, उसकी ममानी का था, अपने एक तफसीली खत के साथ

अपनी माँ राबिया के पास रजिस्ट्री से भिजवा दिया। उसने लिखा था—

"अम्मी ! आप खुदा के लिए जल्दी मामूजान के पास पहुँचिए। ये सब उन्हें बताइये। उनकी जान ख़तरे में है।"

अपनी बेटी हमीदा का यह तफ़सीली रजिस्ट्री खत पाकर राबिया की आँखें खुल गईं और वह बड़ी बदहवासी की हालत में उसी लम्हे अपने भाई जलील के पास कस्बा करीमगंज रवाना हो गई। उसने वहाँ जाकर यह खत अपने भाई को दिखाया। मारे शर्म के जलील की गर्दन शर्म से नीचे झुक गई। गुस्से से उसका चेहरा सुर्ख हो गया।

वे बहुत देर तक इस मसले पर बातचीत करते रहे। बहुत देर तक जलील अपनी बेटी सईदा के लिए तड़पता और रोता रहा।

"कमीनी ! ज़लील औरत !" वह मुट्ठियाँ भींचकर चीखा—"मैं उस आवारा और बदमाश औरत का अगर खून न कर दूं, तो मेरा नाम भी जलील नहीं।"

"खुदा न करे !" राबिया ने उसे समझाया—"उस बेहया औरत के खून से अपने हाथ रंग कर खुदा न करे कि तुम अपनी बेटी को यतीम बना दो, भैया ! तुम तो इस ज़लील और मक्कार औरत को तलाक़ देकर उससे अपना दामन छुड़ा लो—बस !"

"बेटी को अपनी ना-दूरअन्देशियों से यतीम तो मैंने अपनी जिन्दगी में ही बना दिया है।" उसकी आँखें बरस पड़ीं—"खुदा मुझे इस इतने बड़े गुनाह पर कभी माफ़ न करेगा। रुखसाना जैसी अज़ीम और शरीफ़ बीवी की रूह मुझे कभी माफ़ न करेगी। मेरी बेटी सईदा मुझे कभी माफ़ न करेगी। उसकी नानी मुझे अब कभी मुंह न लगाएगी। उसकी नवासी पर मैंने कितना बड़ा जुल्म किया है ! आज आठ साल से मैंने उसकी कोई खबर नहीं ली।"

वह बेअख्तयार होकर फूट पड़ा। वह ज़ारो-कतार आँसू बहा रहा था। उसकी बड़ी बहिन राबिया उसे समझा रही थी। उसे दिलासे और तसल्लियाँ दे रही थी। और वह रो-रोकर अपनी जान खोए दे

रहा था ।

आखिर बहुत रो लेने के बाद उसके जी का बोझ कुछ जरा-सा हल्का हुआ । राबिया ने उससे कहा—

"अब तुम इस वक़्त मेरे साथ अहमदपुर चलो, जलील ! हम दोनों चलकर सईदा और अम्मीजान से माफ़ी माँगें। उन्हें ये सब बातें बताएँगे । उन्हें मैं जरूर राजी कर लूंगी ।"

वह इन्तहाई अफ़सोस के साथ बोली—

"मैं खुद इतने बरसों उन्हें अपना मुंह न दिखा सकी । न उनकी कोई खैरीयत मालूम हुई और न मैंने अम्मीजान को कोई खत लिखा । मैं इसी उधेड़ बुन में रही कि जाकिरा बीबी को मुंह क्या दिखाऊँगी । तुम्हारी शादी तो रुखसाना के साथ मैंने ही कराई थी न !"

उसने जलील से कहा—

"जभी तो मैंने कई मर्तबा तुम्हें समझाने की कोशिश की थी, जलील, कि तुम इस तरह अपनी बेटी को न भूलो । वह तुम्हारी फिर भी बेटी है। और उसका···!"

जलील ने अपनी बहिन राबिया की बात काटी—

"क्या बताऊँ, आपा ! उस कमीनी औरत साइरा का जादू जो मेरे सिर पर चढ़ा हुआ था। उस मक्कार और फ़ाहिशा औरत ने मेरी आँखों पर और मेरे दिल-दिमाग पर अपनी कमीनगी और अय्यारी के पर्दे जो छोड़ रखे थे ।"

उसने दाँत भींच लिए—

"लेकिन अब मैं भी उसे इतनी इबरतनाक सजा दूंगा कि वह भी सारी जिन्दगी याद रखेगी । मैं बखुदा उसकी नाक-चोटी काटूंगा ।"

"तुम ऐसा हर्गिज़ नहीं करोगे, जलील ! मैं ये सब बदनाम होने वाली बातें तुम्हें हर्गिज़ न करने दूंगी ।" राबिया ने उसे फिर समझाने की कोशिश की—"तुम तो उसे सिर्फ़ तलाक़ दोगे और बस ! उसके कार्यों की सजा उसे खुदा खुद देगा । तुम ऐसा सब-कुछ करके उसके

गुनाहों को कम क्यों करो। खुद तुम्हें दीनी और दुनियावी अज़ाब में फँसने की कोई ज़रूरत नहीं।"

जलील इन्तहाई निराशा से बोला—

"सईदा, मेरी बेटी न जाने कितनी बड़ी हो गई होगी—बेचारी!"

उसकी आँखों से आँसू फिर बहे—

"कितनी मज़लूम है वह और कितना बड़ा जालिम हूँ मैं।"

उसने अपनी बहिन राबिया से इन्तहाई मासूमीयत से सवाल किया—

"वह मुझे माफ़ तो कर देगी न, आपा?"

"हाँ-हाँ, क्यों नहीं! आखिर को वह तुम्हारी बेटी है और तुम उसके बाप हो।"

वह बड़ी बेचारगी से बोला—

"काश! वह मुझे माफ़ कर सके!"

"तुम उसे खर्च तो भेजते रहे हो न?"

"कहती तो थी वह बदज़ात औरत कि वह उसे हर माह पचास रुपये भिजवा रही है। यह भी कहती थी कि हर ईद और बकरईद पर वह उसे सौ रुपये कपड़ों के लिए भेजती है।" जलील ने कहा—"मेरा यह फ़र्ज भी उसने अपने ही ज़िम्मे ले लिया था।"

"तुमने कभी मनीआर्डर की रसीद देखी?"

"नहीं।" वह बोला—"उस बदबख्त ने मुझ गधे पर अपनी मुहब्बत और वफ़ा का जादू जो चला रखा था।"

"तो फिर मेरा तो यह खयाल है कि वह बदकार औरत मासूम सईदा को ये रुपये भी नहीं भिजवाती रही होगी।"

"मेरा खयाल भी अब यही हो रहा है।" जलील ने कहा—"वरना वह महज़ मुझ पर अपना असर दिखाने के लिए वे रसीदें मुझे ज़रूर दिखाती।"

राबिया ने बड़े दर्द के साथ कहा—

"तुम्हें भी अपनी बेटी की तरफ से इतनी गफ़लत न बर्तनी चाहिए थी। आखिर को वह तुम्हारा खून है। वह तुम्हारी उस वफ़ाशुआर और शरीफ़ बेगम की बेटी है, जिसका जवाब नामुमकिन है। वह सचमुच नेक सूरत, नेक सीरत और फ़रिश्ता थी।"

"इसीलिए तो सोच रहा हूं कि मैं सईदा को और उसकी नानी को अपनी यह मनहूस सूरत दिखा कैसे सकूंगा। मैंने तो आज आठ बरस से भूल कर उनकी कोई खबर ही नहीं ली।"

"अम्मीजान का दिल बहुत बड़ा है। वे रुखसाना जैसी अजीम बीवी की मां हैं। सईदा रुखसाना की बेटी है। वे तुम्हें और साथ-साथ मुझे भी ज़रूर माफ़ कर देंगी।"

"अगर सईदा ने मुझे माफ़ न किया, तो ब-खुदा मैं ज़हर खा लूंगा।"

जलील ने बेताबाना कहा। वह फिर फूट-फूट कर रोने लगा। राबिया उसे समझाने और चुप कराने लगी।

बारह

ताहिर ने वसीमुल्लाह का पता चला लिया था। वह कलकत्ता पहुंचा। वह वसीमुल्लाह से जाकर मिला। उसका जी तो यही चाहता था कि वह उस नाबकार का खून कर दे, लेकिन उसने अपनी मजबूरी और मसलहत को पेशे-नजर रख उससे बातचीत की—

"तुमको इस तरह से हमारे यहाँ से भाग नहीं आना चाहिए था।"

वसीमुल्लाह की गर्दन झुकी हुई थी। वह खौफ़ से थरथर काँप रहा था। ताहिर को गुस्सा आगया। वह तेज आवाज़ में बोला—

"मैं अगर चाहूं तो इसी वक्त तुम्हारा खून कर दूं। मैं तुम्हें जेल की हवा खिला सकता हूँ। मैं तुम्हें···!" वह फिर सम्हल गया। उसने खुद पर काबू पाने की कोशिश की। उसकी पोजीशन इन्तहाई नाजुक थी। वह अपने दिल पर फिर जब्र करके नर्मी से बोला—

"लेकिन मैं तुम्हें माफ़ कर सकता हूँ।"

वसीमुल्लाह ताहिर के कदमों पर गिर पड़ा—

"मैं अपनी गलतियों की माफ़ी चाहता हूँ, हुजूर !"

"मैंने तुम्हें दिल से माफ़ कर दिया।"

ताहिर ने अपने दिल पर जब्र कर समस्या की बिना पर कहा। उसकी आवाज उसके गले में फंस रही थी—

"तुम रजिया से मुहब्बत करते हो, यह मुझे मालूम हो चुका है।"

वसीमुल्लाह लरजते हुए बोला—

"मैं अपनी इस गलती की हुजूर से माफ़ी चाहता हूँ।" उसने हकलाते हुए अपनी बात पूरी की—"आप मुझे जो भी सजा दीजिएगा

मैं कबूल कर लूंगा !"

ताहिर का जी चाह रहा था कि वह वसीमुल्लाह को कच्चा निगल ले। लेकिन वह अपनी होने वाली बहुत बड़ी बदनामी के डर से अपने दिल पर जब्र करके बोला—

"मुहब्बत कोई गुनाह नहीं है।" वह अपनी बात को निभाने की कोशिश कर रहा था—"मैं तुम्हारा निकाह रज़िया से कर दूंगा।"

वसीमुल्लाह ने, जिसके ख्वाबो-खयाल में भी यह बात नहीं आ सकती थी, बे-अख्तयार उसने ताहिर के पांवों पकड़ लिए। वह गिड़गिड़ा रहा था—

"मैं अपनी सारी जिन्दगी आपका गुलाम रहूंगा।"

ताहिरा को ऐसा मालूम हो रहा था, जैसेकि वह जीती-जागती मक्खी निगल रहा हो, लेकिन वह इन्तहाई बेबस और मजबूर था। वह वसीमुल्लाह को अपने साथ लेकर कलकत्ता से अहमदपुर आ गया।

अनवरी ने ताहिर से रोते हुए कहा—

"अब इतना भी क्या जुल्म ! फिर भी रज़िया आपकी बेटी है। उसका निकाह आप इस तरह भिखारिनों की तरह क्यों कर देना चाहते हैं ?"

"बकवास मत करो तुम हरामज़ादी औरत !" ताहिर दांत पीस-कर अपनी भिची हुई आवाज में बोला—"इसीलिए तो इतना जलील हुआ हूं कि वह बदकार लड़की मेरी बेटी है। वरना इतना बड़ा गला-ज़त का टोकरा अपने सिर पर मैं कभी न रखता। अब क्या तू यह चाहती है कमीनी कि मैं यह सारी दुनिया को दिखाता फिरूं, कि आओ, और मेरी रुसवाई का तमाशा अपनी आंखों से देखो ! मैं अपनी बेटी अपने दो टके के कारिन्दे से ब्याह रहा हूं। एक ऐसे इनसान को मैं

अपना दामाद बना रहा हूं, जिसका कोई मय्यार नहीं। जिसके न मां और न बाप, जिसकी जात-वात भी मालूम नही है। जो महज एक लफ़ंगा-आवारा इनसान है।"

"लेकिन—"

"बकवास बिल्कुल नहीं।" ताहिर ने अनवरी के गाल पर दो भर-पूर तमाचे लगाए—"हरामजादी ! मैं रजिया को जहन्नुम रसीद करके बखुदा तुझे तलाक दूंगा। मैं नही चाहता कि मेरी बेटी नज्मा और बेटा अकबर तुझे मां भी कहे। मैं तुझ जैसी ज़लील औरत के साए से भी अपने-आपको और उन बच्चों को बचाना चाहता हूं।"

उसने अनवरी के मुंह पर एक घूसा और मारा—

"कीड़े तो तुझे मेरी भांजी, उस मासूम सईदा मे ही नजर आते थे न ! वह मासूम तेरी नजरों में आवारा हो जाने वाली थी। और अब यह क्या हुआ ? सईदा की तुझे बहुत फ़िक्र रहती थी और अपनी बेटी की तुझे यहां तक फ़िक्र न हुई कि वह एक हरामी बच्चे की मां तक बनने वाली हो गई। कमीनी ! ब-खुदा, जी चाहता है कि मैं तुम्हारा गला घोंट दूं। तूने मुझे हर तरह से तबाह और बरबाद किया है। मेरी मां के साथ मुझसे जुल्म करवाया। भांजी के साथ महज तेरी बातों में आकर मैने इन्तहाई बुरा सलूक किया। उसे हमेशा मारता-पीटता रहा। तेरे बाप के उकसाने पर और तुमसे शह पाकर मै अपनी मां से मुकद्दमा लड़ने खड़ा हो गया। और तेरे बाप ने मुझे उल्लू बनाकर उस मुकद्दमे में मुझे तबाह कर दिया। अब और क्या चाहती है तू ?"

"बहुत ज्यादा आगे मत बढ़ते जाइये !" आखिर अनवरी गुस्से से पागल होकर बोली—"अगर मैं खामोश रहूं तो इसके मायने ये नहीं कि मैं ही अकेली कसूरवार हूं और आप दूध के धुले हुए हैं। आपने हमेशा अपनी मां के साथ चालाकी से काम लिया है। सारी जागीर मक्कारी से अपने नाम आपने लिखवाई है। हबीबगंज आपने चालाकी से उनसे छीना है। मैंने नहीं कहा था। इस घर से आपने उन्हें निकाला

था। आपने तू-तू, मैं-मैं की थी अपनी माँ से और आपने बदकलामी की थी उनसे। माँ को बड़ी बी और बुढ़िया-बुढ़िया आपने कहा था, मैंने नहीं।"

वह और तेज हुई। उसने ताहिर जैसे जलील इन्सान के जिगर पर और तीर चलाए—

"और यह आपकी बेटी जो आवारा हुई है, वह आप ही के कार्यों का नतीजा है। किसी को सजा मरने के बाद मिलती है और किसी को उसके किए हुए काले करतूतों की सजा इस जहान में ही मिल जाती है। यह सजा आपको इसी दुनिया में ही मिल गई है।"

उसने ताहिर को नफरत से देखा—

"क्या आप समझते हैं कि आपकी आवारगियों की मुझको खबर नहीं? जागीर की शरीफ़ और मासूम लड़कियों की अस्मत को किसने दागदार बनाया है? किसने इज्जत लूटी है उनकी? कौन है वह, जो मासूम देहात की लड़कियों को जबरन अपनी औलाद बाँटता रहा? कौन है वह, जो बेकसों की आहें, सिसकियाँ और बद्दुआएँ वसूल करता रहा? दिली बद्दुआएं ये किसके लिए थीं और किसके लिए किस-किस की आहें दिल से धुआँ बनकर निकलती थीं, यह कोई मुझसे पूछे!"

उसने ताहिर को झंझोड़कर रख दिया—

"इलाहाबाद और कानपुर की वेश्याओं में दिल खोल-खोलकर इस जागीर का रुपया किसने लुटाया? मैंने या आपने? बेइज्जत और बेहया बनकर इलाहाबाद की उस जल्लोबाई के कोठे से जूते खाकर कौन निकला था, मैं या आप? कौन था वह, जिसे कानपुर की चम्पाबाई ने मुगले-जात गालियाँ दी थीं और कौन था वह, जो शारदाबाई की जूतियाँ चाटा करता था? वह कौन था, जो हसीना तवायफ़ के आगे कुत्ते की तरह दुम हिलाया करता था—आप या मैं? और कौन था वह—?"

"बन्द करो बकवास! बन्द करो यह सब···!"

ताहिर अपना सिर पकड़ कर उसी जगह बैठ गया। अनवरी चीखी—

"अपनी भांजी को मरवा डालने की नित नई तरकीबें कौन सोचा करता था, मैं या आप?"

"खुदा के लिए अब बस करो, वरना मैं पागल हो जाऊँगा।"

ताहिर अपना सिर पकड़े-पकड़े चीखा नहीं, बल्कि रो दिया।

"अब तुम मुझे माफ कर दो खुदा के लिए! रहम करो मेरे ऊपर!"

"आपने मुझे पीटते वक़्त मुझ पर रहम किया था?"

अनवरी ने जुलबुलाकर ताहिर को बद्दुआ दी—

"खुदा करे, आपका किया हुआ हर जुर्म, आपकी हर बदकारी इसी दुनियां में आपके सामने आए और मैं उसे अपनी आँखों से देखूं। खुदा करे कि पूरी जागीर के मजदूर और किसान इसी जन्म में अपनी-अपनी कुंवारी बेटियों का बदला आप का भेजा फाड़ कर आप से लें और मेरा कलेजा ठंडा हो। खुदा करे कि वे सब आपकी बोटी-बोटी कर डालें! अल्लाह करे कि वे सब मिलकर आपकी इस मनहूस सूरत पर थूकें और मैं मजा लूं। खुदा करे...!"

"बस कर अब, कमीनी औरत!"

ताहिर पागलों की तरह उठा और अनवरी को दीवानावार पीटने लगा। अकबर, उसका बेटा, जोकि अब ग्यारह बरस का था आकर उसकी टाँगों से लिपट गया। अपनी माँ की खातिर, उसे बचाने के लिए उसने ताहिर की टाँगों में कई जगह पर काट लिया।

ताहिर ने गुस्से में आकर उसे दूर फेंक दिया। वह बेहोश हो चुका था।

तेरह

ताहिर अपने बहनोई जलील से कह रहा था—

"अम्मीजान सईदा को लेकर पाँच साल से कुछ ऊपर हुआ कि यहाँ से जा चुकी हैं।

"कहाँ ?' जलील ने घबरा कर पूछा—"कहाँ चली गईं वे ?"

"कानपुर।"

"कानपुर !" जलील ने हैरान होकर सवाल किया—"वहाँ उनका कौन है ?"

"मुझे नहीं मालूम।" ताहिर ने बेदिली से कहा।

"उनका पता आपको मालूम है ?" जलील के सवाल में बेकरारी थी।

"नहीं।" ताहिर का यह मुख्तसर-सा जवाब था।

"फिर !"

जलील के इस 'फिर' में बड़ी घबराहट और बड़ी बेचैनी थी।

ताहिर ने कहा—

"फिर मैं क्या बताऊँ ?"

"बड़े अजीब इनसान हैं आप !" जलील चिढ़ गया।

"और अजीब तुम नहीं हो कि बेटी की खबर लेने आज आ रहे हो। पूरे पाँच साल बाद।"

"सच है, भाई साहिब।" जलील ने शर्मिन्दगी और शिकस्तखुर्दगी के साथ कहा।

और वह अपनी बहिन राबिया के साथ उसी वक्त वहाँ से रवाना हो गया। उसने अपनी बहिन से कहा—

"हम कानपुर चलकर उन्हें तलाश करेंगे।"

"वहां उनका पता हमें किस तरह चल सकता है ?"

"कोशिश से क्या नहीं मिलता, आपा।" जलील बोला—"हिम्मत शर्त है।"

"लेकिन !"

"मैं वहां अपने दोस्त अजीमुल्लाह खां के यहां ठहरूंगा। वे कानपुर के बड़े बा-रसूख आदमी हैं। शहर के कोतवाल भी हैं। वहां उनके जरिये से दो-एक दिन में पता चल ही जायगा।"

यह कहते-कहते उसकी आंखों में आंसू तैरने लगे। अब उसे अपनी नज़रों में बग़ैर सईदा के दुनिया तारीक दिखाई दे रही थी।

सईदा की नजरों में दुनिया तारीक दिखाई दे रही थी। उसकी आंखों में आंसू थे। सलीम का एक और खत उसके सामने था।

सलीम ने उसे लिखा था—

"यह मेरा पांचवां खत है। अगर अब आपने ज़बानी मुझसे सिर्फ दो बात करने की कोशिश न की, तो बखुदा मैं खुदकुशी कर लूंगा। आपने मेरे एक खत का जवाब भी मुझे नहीं दिया। लेकिन इसका मुझे ब-खुदा कोई गिला नहीं है। शराफ़त इसी का नाम है कि इस किस्म की खतो-किताब से दूर रहा जाय।"

"—आपसे सिर्फ़ दो बात इसलिए करना चाहता हूं कि लिखकर तो आप मुझे बताएंगी नहीं कि आपकी नजरों में मेरी क्या वक़त है ? अगर आप यह लिखकर मुझे बता दें, तो ब-खुदा फिर बात करने के लिए न कहूंगा। मैं यह पूछना चाहता हूं कि अगर आप मुझे इस काबिल समझती हों तो मैं अपने मां-बाप से इल्तजा करूं कि वे मेरे साथ आपके

रिश्ते की बातचीत आपकी नानी अम्मां से करें—"

"—बस सिर्फ़ इतनी-सी बात जानने के लिए मैं बेचैन हूँ। रात भर खिड़की के नीचे हस्ब-मामूल खड़ा रहूंगा। खुदा के लिए रात भर सर्दी में ठिठुरने से मुझे बचा लीजिएगा। एक दफ़ा इत्तफ़ाक से खिड़की खुली थी और फिर आज तक यह हसरत ही रह गई कि मेरा दरे-मुकद्दर खुला हो। लेकिन—

दिल में मेरे लगी हुई है आग
आपको क्या गर्ज़ बुझाने की।

यह खत भी अपनी बहिन तसनीम ही के हाथ भिजवा रहा हूँ। खिड़की खुलती, तो उसमें फेंक देता। लेकिन—

"ऐ बसा आरज़ू कि खाक शुदा।"

—आपका दीवाना, सलीम।

उसने अपने दिल में यह कतई तौर पर फ़ैसला कर लिया कि वह आज रात खिड़की में खड़ी होकर उससे दो मिनट बात जरूर करेगी। वह दिल-ही-दिल में दुआ करने लगी—

"खुदाया! तू मेरे इरादों में शक्ति दे! मैं आज रात उसके लिए खिड़की में दो मिनट के लिए ज़रूर खड़ी होना चाहती हूँ।"

उसे सलीम का खयाल लगातार आ रहा था। उसने दिल ही में एतराफ़ किया—

"खुदा मेरा गवाह है कि मैं उन्हें चाहने लगी हूँ।"

वह दिल-ही-दिल में बुदबुदाई—

"मैं खुद भी अब उनके सिवाए किसी और की नहीं हो सकती।" वह जैसेकि खुद से शर्मा गई। उसकी चांद जैसी पेशानी पसीने से तर हो चुकी थी। उसकी नज़रें नीचे झुक गईं। वह अपने दिल के इस अनजाने तकाजे पर परेशान हो गई।

वह अब तक नहीं सोई थी।

वह अब तक जाग रही थी। रात के सवा ग्यारह बज चुके थे। उसकी नानी अम्माँ कब की सो चुकी थीं। वह बार-बार हिम्मत कर रही थी कि वह खिड़की पर आ जाय और खिड़की का पट खोलकर उससे दो बात करले। लेकिन उसकी हिम्मत बार-बार जवाब दे रही थी। आखिर हिम्मत करके वह अपने बिस्तर से उठी। मसहरी की पट्टी पर पाँवों लटकाए अपनी नानी अम्माँ की तरफ आँखें फाड़-फाड़कर देखती रही। और यह अन्दाज़ा करती रही कि उसकी नानी अम्माँ सो रही हैं या जाग रही हैं।

और जब उसे यह अन्दाज़ा हो गया कि उसकी नानी अम्माँ बे-खबर पड़ी सो रही हैं तो वह मसहरी पर से उतरी। दबे पाँव चलकर खिड़की तक आई। उसने इतना रास्ता तै करने में भी देर लगाई। वह बार-बार अपनी गर्दन मोड़कर यह देख लेती थी कि उसकी नानी अम्माँ कहीं जाग तो नहीं रही। आखिर यह अन्दाज़ा लगाते-लगाते वह खिड़की के पास आ गई। उसने बड़ी अहतियात से खिड़की का एक पट खोला। फिर दूसरा भी।

उधर से सलीम के मुंह से निकला—

"अल्लाह ! तेरा शुक्र है।"

सईदा का दिल जोर-जोर से धड़कने लगा। सलीम खिड़की के बिल्कुल करीब आ गया। दोनों ने एक-दूसरे को मलगजी रोशनी में देखा।

सलीम ने सिर्फ इतना पूछा—

"मैं अपने वाल्दैन से कहूं कि वो मेरी खातिर आपकी नानी अम्मा से रिश्ते की बात करें ?"

"जी।"

कुछ देर के बाद यह मुख्तसर-सा लफ्ज़ उसके मुंह से निकला। उधर सलीम जैसे कि खुशी से पागल हो गया। वह बेअख्तियार पुकार उठा—

"कसम अल्लाह की आपने मुझे मरने से बचा लिया। आपका यह अहसान मैं जिंदगी भर न भूलूंगा।"

उसने घबरा कर खिड़की के दोनों पट बन्द कर दिए। उसकी नानी अम्मा की आंख खुल गई।

"कौन ? क्या हुआ ?" वे घबरा कर अपने बिस्तर से उठ बैठीं।

सईदा के पांव जैसे नौ-नौ मन के होकर उसी जगह जम गए। वह सारी जान से थर-थर कांप रही थी। जाकिरा बीबी ने पास ही रखी लालटेन की लौ ऊंची कर दी।

"क्या हुआ ?" उन्होंने सईदा की तरफ देखते हुए सवाल किया—"कहां गई थीं तुम ?"

बड़ी दिक्कत के साथ वह बोली—

"वह नामुराद बिल्ली आ गई थी। खिड़की से कूदकर बाहर चली गई। मैंने खिड़की भेड़ी थी।"

"कुंडी लगा दो खिड़की को, बेटी।" वे बोलीं—"खिड़की खुली रह गई थी क्या ?"

"हां।"

"अरे !" वे कहने लगीं—"अल्लाह न करे, कहीं उस तरफ से कोई मुआ चोर-उचक्का कूदकर आ जाता तो ?"

"हां, नानी अम्मा !" वह बोली—"अभी-अभी हम इत्ता-सा सोए थे कि—"

"कुंडी लगाना न भूला कर।"

"जी।"

वह कुंडी लगाकर आई और अपने बिस्तर पर दुबक गई। उसका दिल उसके हलक में आकर अटक गया था।

चौदह

सलीम ने अपनी माँ से कहा—

"आप मेरी जिन्दगी चाहती हैं न, अम्मी ।"

"अरे ! खुदा न करे, कहीं तुम्हारा दिमाग तो नहीं चल गया। यह क्या ऊट-पटाँग किस्म का सवाल तुम मुझ से कर रहे हो ? तुम्हारी जिन्दगी ही हमारी जिन्दगी है ।"

"तो फिर आप मेरी एक बात मानिए ।"

"क्या ?"

"मैं राशिदा से शादी हर्गिज न करूँगा ।"

"अरे !"

"हाँ अम्मी !"

"लेकिन यह क्यों ? वह लड़की तो हम सबको पसन्द है । तुम्हारे अब्बा को तो और भी ज्यादा ।"

"शादी अब्बा की नहीं मेरी होगी ।"

"क्या बकते हो तुम ! क्या कोई लड़की तुम्हें पसन्द आ गई है ?"

"जी ।" उसने शर्माकर गर्दन झुका ली—"है एक ।"

"अच्छा !" उसकी माँ मुमताज बेगम मुस्कराने लगी—"कौन है वह ?"

"जिसे मैं पसन्द करने लगा हूँ और जिससे मेरा ब्याह न हुआ तो मैं खुदकुशी करके मर जाऊँगा ।"

"लेकिन वह है कौन ?"

"कोई भी हो ।"

"लेकिन कोई भी हो से तो तेरा ब्याह हो नहीं सकता ।" उसकी

माँ मुमताज बेगम ने कहा—"कम-से-कम जात-वात, खानदान ?"

"तो क्या, आप समझती हैं कि आपका बेटा नाली में गिर सकता है ?"

और फिर सलीम ने अपनी माँ को सब-कुछ बता दिया।

वह बोलीं—

"अच्छा, तुम्हारे लिए हम वही दुल्हिन लादेंगे। तुम्हारे अब्बा को मैं राजी कर लूंगी कि वे अपनी पहले वाली राय बदल दें।"

और फिर उसके दूसरे ही दिन मुमताज बेगम अपने शौहर कलैक्टर गुलाम रसूल साहिब के साथ जाकिरा बीबी के यहाँ कानपुर पहुँचे। ये लोग कलैक्टर साहिब के भाई के यहाँ जाकर उतरे थे।

कोई डेढ़ घण्टे के बाद मुमताज बेगम ने सलीम के चचा की मुलाजिमा से कहा—

"तुम उस सामने वाले घर में जाकर उस घर की बेगम साहिबा से कहो कि हम उनसे मिलना चाहती हैं।"

"सर-आँखों पर!" जाकिरा बीबी ने जवाब दिया—"उनसे जाकर हमारी तरफ से कहो, हम उनका इन्तजार कर रहे हैं।"

और जब मुलाजिमा चली गई तो जाकिरा बीबी ने मुगलानी बी से पूछा—

"यह कौन साहिबा हैं ?"

"यह शाकिर हुसैन साहिब का मकान है, बेगम हुजूर ! उनके बड़े भाई शेख गुलाम रसूल साहिब रायबरेली में कलैक्टर हैं और बहुत बड़े जागीरदार भी हैं। उनका बेटा सलीम यहाँ तालीम हासिल करने आया है। अपने चचा के पास रहता है।"

"यह बेगम साहिबा मुझसे क्यों मिलना चाहती होंगी ?" जाकिरा बीबी बोलीं—"हमारी तो इस घर तक से बातचीत नहीं है।"

"होगी कोई बात।"

और फिर उसके कोई पन्द्रह-बीस मिनट बाद मुमताज बेगम अपने

देवर की बेगम के साथ आ गई। साथ में तसनीम भी थी। ज़ाकिरा बीवी ने उनका मुस्कराते मस्तक से स्वागत किया। सईदा ने भी सलाम के लिए अपना हाथ उठाया।

ज़ाकिरा बेगम बोलीं—

"तशरीफ़ लाइये।"

अलेक-सलेक के बाद वे बातें करने लगीं। मुमताज बेगम बार-बार सईदा को ताके जा रही थीं। वे दिल-ही-दिल में अपने बेटे की पसन्द और पहुँच पर दाद देने लगीं।

सईदा उन्हें हद से ज्यादा पसन्द आई थी। उनकी नजरों से आज तक कोई एक लड़की भी इतनी ज्यादा खूबसूरत और शानदार नहीं गुजरी थी। वह खुद भी अब सईदा को देखकर उसे अपनी बहू बनाने के लिए बेचैन थीं। वे अपने साथ टोकरा भर फल और मिठाई भी लेकर आई थीं। ज़ाकिरा बेगम ने कहा—

"इन सब चीजों की क्या जरूरत थी आपको?"

"नहीं! जरूरत है।" मुमताज बेगम ने कहा।

सबसे आखीर में, इधर-उधर की बातों के बाद सलीम की माँ ने कहा—

"मैं आपकी खिदमत में एक दरख्वास्त लेकर हाजिर हुई हूँ।"

"फ़रमाइये!" जाकिरा बीवी ने कहा—'हुक्म दीजिए।"

सईदा वहाँ नहीं थी। वह कब की वहाँ से उठकर अपने कमरे में चली गई थी।

मुमताज बोलीं—

"हम अपने बेटे सलीम को आपकी गुलामी में देने की आरजू के साथ हाजिर हुए हैं।"

वे कहती गईं—

"सलीम बड़ा नेक और होनहार लड़का है। इतनी बड़ी जागीर का वाहिद मालिक है। उसे बी० ए० के बाद हम विलायत भेज रहे हैं।

शक्लो-सूरत का भी बहुत अच्छा है, मेरा बेटा। नेक मिजाज, नेक तबीयत और नेक फितरत है। चाल-चलन ऐसा है, जैसे सफ़ेद धुली हुई चादर हो।"

जाकिरा बीबी सोचने लगीं। बोलीं—

"लेकिन आपको हमारे या हमारी बेटी सईदा के बारे में कैसे मालूम हुआ ?"

"फूल जब खिलता है, बेगम साहिबा, तो उसकी महक दूर-दूर पहुंच जाती है।"

"अच्छा !" वे बोलीं—"मैं सोचकर आपको इसका जवाब दूंगी।"

"हम इसका इन्तजार करेंगे।" मुमताज ने कहा—"हम रुके रहेंगे यहां।"

दो-तीन दिन के अन्दर-अन्दर जाकिरा बीबी ने सलीम को बहाने-बहाने से देख लिया। बातें भी इस अर्से में बराबर होती रहीं। उनके घर खुद कलैक्टर साहिब भी आए। बाहर मर्दाने में बैठ पर्दे से जाकिरा बीबी से बातें भी कीं। मुगलानी बी और उनके बेटे रजीउद्दीन ने इस रिश्ते की ताईद की।

और उसके बाद यह रिश्ता तै हो गया। सईदा और सलीम की मंगनी हो गई। मुमताज बेगम और कलैक्टर साहिब खुशी-खुशी वापिस चले गए। सलीम की खुशी का ठिकाना न रहा। वह अपनी मुहब्बत में कामयाब हो गया।

वह हराम मौत मरने से बच गया। उसे ऐसा लग रहा था, जैसे कि उसकी ज़िन्दगी उसे दुबारा वापिस मिल गई हो।

शादी की तारीख अब से तीन महीने बाद की तै हो चुकी थी।

ताहिर ने अपनी बेटी का निकाह इन्तहाई सादगी और खामोशी के साथ वसीमुल्लाह से कर दिया था। वसीमुल्लाह रज़िया को ब्याह कर अपने गाँव ले गया। वह रहीमयारखां में रहता था। यहां उसका एक छोटा-सा कच्चा मकान था। रहीमयारखां इलाहाबाद का एक छोटा-सा कसबा था।

ताहिर का बर्ताव अब अपनी बीवी अनवरी से बहुत बुरा था। वह उससे कतई बातचीत नहीं करता था। उसने रज़िया के निकाह के एक महीना बाद ही अपनी छोटी बेटी नज्मा की शादी भी सादगी के साथ कर दी थी। वह फतहपुर ब्याह कर गई थी। उसका शोहर फतहपुर तहसील में नायब तहसीलदार था। वह छोटा-मोटा जमींदार भी था।

अपनी दोनों बेटियों की तरफ से फुर्सत पाकर ताहिर ने एक दिन अनवरी से कहा—

"अब तुम भी यहां से दफा हो जाओ।"

"कहां जाऊँ मैं ?"

अनवरी ने बड़ी बेचारगी से कहा। ताहिर ने तर्श रूई से जवाब दिया—

"क्या तुम्हारा बाप मर गया है ? मायके जाओ अपने, मुझे क्या ? कोई ठिकाना न हो तो जहन्नुम में चली जाओ।"

"लेकिन मेरा कसूर क्या है ?"

"कसूर ही तुम्हारा कुछ नहीं है।" ताहिर बेजारी और नफ़रत से बोला—"तुम्हारा कसूर तो इतना संगीन है कि मुझे चाहिए कि मैं तुम्हें गोली मार दूं।"

"तो मार दो न गोली !" अनवरी ने बिसूर कर कहा—"इस जिन्दगी से तो अल्लाह जानता है, मौत सबसे अच्छी है।"

"खुदा करे, तुम्हें वह चीज कभी न मिले, जो अच्छी हो।" ताहिर ने जैसे कि दुःख से कहा—

"परसों मुकद्दमे का फैसला हो जायगा। दो लाख सात हजार

नकद और इस हवेली का एक तिहाई हिस्सा देना होगा। ऐसा लगता है कि इस हवेली का अपना हिस्सा और जागीर का हिस्सा मुझे बेचना पड़ेगा।"

"क्यों ?" अनवरी बोल पड़ी।

"दो लाख सात हजार मैं नकद लाऊँगा कहां से ?" उसने दोबारा जैसे खुद ही से पूछा।

अनवरी फिर बोल पड़ी—

"मैं अम्मीजान के पांवों पड़ जाऊँगी। उनके हाथ जोड़ूंगी मैं, खुशामद करूंगी कि दो लाख सात हजार वे यकदम से न लें हमसे।"

"उनके पांवों पड़ने से क्या होगा।" ताहिर बेचारगी से बोला—"यह मामला तो सईदा का है। वह हमे क्यों माफ़ करने लगी। हमने उससे सलूक ही कौन-सा अच्छा किया है ?"

"मैं सईदा बेटी के पांवों पकड़ कर उसके पांवों आंसुओं से धो डालूंगी।" अनवरी की आंखों में आंसू आ गए—"मैं उसके कदम उस वक्त तक न छोड़ूंगी, जब तक कि वह मुझे माफ़ न कर देगी।"

वह रो पड़ी—

"हम उसका सारा रुपया अदा कर देंगे, लेकिन थोड़ा-थोड़ा कर के। मैं उसके लिए अपने सारे जेवर बेच दूंगी।"

वह बेअख्तयार ताहिर के कदमों पर गिर पड़ी—

"यह सब-कुछ मेरा कसूर है। आप रसूल के वास्ते मुझे माफ़ कर दीजिए।"

वह सिसकियों से रोने लगी—

"मैं सचमुच बड़ी गुनाहगार हूं। लेकिन मेरी आंखें खुल चुकी हैं। आप मुझे इन कदमों से लगा रहने दीजिए। अपने से मुंह दूर न कीजिए। मेरा सारा कसूर माफ़ कर दीजिए,। मुझे, मुझ बदनसीब को कुदरत की तरफ से बहुत बड़ी सजा मिल चुकी है।

ताहिर का दिल भर आया। आंसू उसकी आंखों में मचलने लगे।

उसने अनवरी को बाजुओं से पकड़ कर ऊपर उठाया। वह अपनी भर्राई हुई आवाज़ में बोला—

"कसूरवार मैं भी कहाँ कम हूं!"

अनवरी का सिर उसने अपने सीने से लगा लिया—

"तुमने अपनी इन बातों से मुझे बड़ी ढारस बंधाई है।" वह कदरे जोश से बोला—"अब मैं अपने अन्दर एक खास किस्म की शक्ति महसूस करने लगा हूँ। जैसे कि मेरी रगों में नया ख़ून दौड़ने लगा हो।"

अनवरी को उसने जोर से भींच लिया। उन दोनों की आंखें एक बार फिर मुस्करा उठीं।

मुकद्दमे का फ़ैसला सईदा के हक़ में हो गया। अदालत की तरफ़ से हुक्म मिला—

"ताहिर अपनी भांजी सईदा की जागीर का तमाम पहला रुपया, जो कि एक लाख बानवे हजार है, फ़ौरन अदा करे। साथ ही मुकद्दमे का पूरा खर्च, जोकि पन्द्रह हजार है, अपनी भांजी को दे। जागीर का एक तिहाई हिस्सा भी उसके हवाले कर दे। वरना उसके ऊपर कुर्की वाजिब होगी।"

सबसे आखरी में हुक्मनामे पर अदालत की मुहर और मैजिस्ट्रेट के दस्तखत थे।

जिस वक़्त यह फ़ैसला ज़ाकिरा बीबी और सईदा ने सुना तो खुशी के आंसू उन दोनों की आंखों में एक साथ छलक आए।

"अल्लाह, तेरा लाख-लाख शुक्र है।" ज़ाकिरा बीबी के मुंह से निकला—"तूने मुझ बेवा की लाज रख ली।"

उन्होंने सईदा को गले से लगा लिया—

"आज मैं अपनी बच्ची से आंखें चार कर बातें कर सकता हूं।

मेरे दिल का बहुत बड़ा बोझ हल्का हो गया है। मुझे इसके ब्याह के खर्च की बहुत बड़ी फ़िक्र थी।"

"शुक्र है अल्लाह का!" मुग़लानी बी ने अपने दोनों हाथ दुआ के लिये ऊपर उठाए—"अब हमारी रानी बेटी मौला के करम से किसी की मुहताज नहीं है।"

"अल्लाह का शुक्र है।"

सईदा के दिल से यह आवाज़ निकली। और वह अपनी नानी अम्मा से और जोर से लिपट गई।

साइरा अपने शौहर जलील के क़दमों से लिपट गई—

"खुदा के लिए रहम कीजिए मुझ पर। माफ़ कर दीजिये इस लौण्डी को। रहम कीजिये!"

"कमीनी! ज़लील औरत! फ़ाहिशा! हरामज़ादी कहीं की!"

ज़लील ने साइरा को एक ज़ोर की ठोकर लगाई। वह नफ़रत से भिंची हुई आवाज़ में बोला—

"कमीनी औरत! जलील! अब जाती क्यों नहीं यहां से अपनी मनहूस सूरत लेकर! जा, अपने उस आशिक़ के पास! मुझे ज़हर देने का प्रोग्राम बना रही थी, मेरी बच्ची को मक्कारी की इन्तहा करके मुझसे दूर कर दिया तूने। तूने उसके साथ—"

"माफ़ कर दीजिए!"

"चुप कमीनी औरत! किस मुंह से तू मुझसे माफ़ी मांग रही है। अगर शरीफ़ न होता तो बखुदा तुझे कुन्द छुरी से ज़िबह कर देता। मेरा सारा घर लूट कर अपने मायके ले जाती रही तू और मेरी बच्ची के वे पचास रुपए माहवार भी हज़म करती रही! ईद-बकरईद के सौ-सौ रुपए भी तू खाती रही और एक हल्की-सी डकार भी तुझे न आई।"

वह ज़ोर से गर्जा—

"मैं तेरी तहरीर दिखा कर तुझे जेल की हवा खिला सकता हूं। लेकिन मैं तुझ जैसी औरत के मुंह लगना नहीं चाहता।'

उसने बुलन्द आवाज में कहा—

"मैं तुझे तलाक़ देता हूँ—तलाक़-तलाक़-तलाक़ ! तुझे मेरी तीन दफ़ा की कही हुई तलाक़ हो।"

उसने एक जोर की ठोकर उसे और मारी—

"यह ले !"

उसने पांच हजार रुपये जेब से निकालकर उसके मुंह पर मार दिए।

"यह है तेरा महर ! ले इसे और दूर हो जा मेरी नजरों के सामने से ! कमीनी, मुझे तेरी सूरत से भी घृणा आ रही है।"

उसने साइरा को तलाक दे दी। उसने उसका महर दे दिया। उसने उसे और उसके मायके वालों को जूते मार-मारकर हवेली से बाहर निकाल दिया।

वह अब उन सबके दफ़ा हो जाने के बाद इन्तहाई पुरसकून दिखाई दे रहा था कि अचानक वह फिर उदास हो गया। वह एक सर्द आह भरकर इन्तहाई कर्ब के आलम में बोला—

"न जाने मेरी बेटी सईदा कहां होगी !"

"एक दफ़ा और कोशिश करो, भैया !" राबिया ने सलाह दी—"वह कानपुर में ही होगी। उस दफ़ा तो वे तुम्हारे दोस्त कोतवाल साहिब भी वहां न मिले। दौरे पर कहीं बाहर थे। हम लोग इधर-उधर की ठोकरें खाकर आ गए। लेकिन अब वे जरूर आ गए होंगे।"

"मैं कल ही तुम्हें लेकर कानपुर चलूंगा, आपा।"

"हां, जलील !" राबिया ने कहा—"सईदा को देखने के लिए मेरी आंखें तरस गई हैं।"

"वह यकीनन अम्मीजान के साथ कानपुर में होगी।" जलील ने कहा।

"है ही वहां !" राबिया बोली—

'हम कल ही चलेंगे। जलील ने इत्मीनान की एक सांस ली—"इस तरफ से तो मेरा दिमाग अब पुरसकून हुआ है।"

वे अभी बातें कर ही रहे थे कि मुलाजिमा ने एक लिफाफा लाकर दिया—

"अरे !" जलील यकबारगी उछल पड़ा।

"क्या बात है ?" राबिया ने पूछा।

"अरे आपा, यह देखो, यह अम्मीजान का खत है।"

उसने खत राबिया की तरफ बढ़ाया—

"अल्लाह का लाख-लाख शुक्र है।"

राबिया ने जोश में आकर वह खत अपने हाथ में लिया ही था कि जलील ने झपटकर वह खत उसके हाथ से ले लिया—

"जरा पढ़ूं तो क्या लिखा है !"

वह खुशी से पागल हुआ जा रहा था। उसने खत पढ़ना शुरू किया। राबिया उसके बराबर आकर खड़ी हो गई। वह खुद भी साथ-ही-साथ खत पढ़ रही थी। दोनों एक साथ जल्दी-जल्दी यह खत पढ़ लेना चाहते थे। लिखा था—

"जलील मियां,

दुआएं ! जी तो नहीं चाहता था कि तुम्हे खत लिखूं। फायदा क्या तुम्हें खत लिखकर ! जब तुम अपनी बेटी को बिल्कुल ही भूल गये हो, तो मैं क्यों याद दिलाने की कोशिश करूं। फिर खयाल आया कि मैं अपनी तरफ से तुम्हें और खास तौर पर दुनिया को शिकायत का मौका क्यों दूं।

और फिर यह खत किसी मकसद, अर्ज या तुमसे तुम्हारी बच्ची की मदद लेने के लिए तो लिख नहीं रही हूं, फिर फायदा क्या शर्माने से ! खुदा न करे कि मैं तुम्हें कभी यह लिखती कि तुम अपनी बेटी के अखराजात के लिए मुझे कुछ भेजो। खुदा ने मुझे इतना मजबूर कभी नहीं किया। यह उसका लाख-लाख शुक्र है और उसका अहसान है। और अगर मैं इतनी मजबूर भी हो जाती कि अपनी बच्ची का खर्च न उठा सकूं, फिर भी मैं तुम्हें न लिखती। इसलिए कि जो शख्स अपने

ख़ून को भुला सकता है, वह दुनिया में किसी के लिए कुछ भी नहीं कर सकता। अगर सईदा की माँ सौतेली है, तो तुम तो उसके सौतेले बाप नहीं हो। या कह दो कि वह तुम्हारी बेटी नहीं है।

बहरहाल, मैं कहाँ जज़बात की रौ में बही जा रही हूँ, मियाँ! छोड़ो इस क़िस्से को। और यह सुनो कि तुम्हारी बेटी सईदा की शादी हो रही है। शादी की तारीख़ तै हो चुकी है। अगले महीने की दस तारीख़ को उसका निकाह है। उसके सेहरे के फूल इसी तारीख़ को खिलने वाले हैं।

मैं इसकी इत्तिला भी तुम्हें न देती, लेकिन फिर सोचा कि तुम उसके बाप हो। उसके निकाह के वक़्त तुम्हारा ही नाम पुकारा जायगा और तुम खुदा रखे, जीवित हो। बुरा लगेगा कि बेटी का बाप जिन्दा होते हुए भी मौजूद न हो।

अगर तुम अपनी बेटी के निकाह के वक़्त मौजूद होना चाहो, तो आ जाओ। यह तुम्हारी अपनी मर्जी पर मुनहसर है। मेरी तरफ से यह कोई अर्ज या दरख्वास्त नहीं है। आओ, या न आओ, जैसा मुनासिब समझो करो।

और हाँ, इतना जरूर कहे देती हूँ कि मैं या तुम्हारी बेटी सईदा इस बात की हर्गिज-हर्गिज रवादार न होंगी, कि तुम इसके लिए इस शादी पर कुछ खर्च करो। सोचकर आना! तुम्हारा एक धेला भी हमें नहीं चाहिए।

हाँ, एक बात तो बताना भूल ही गई। तुम्हारी बेटी सईदा का ब्याह सलीम से हो रहा है। सलीम बड़ा अच्छा लड़का है। नेक, शरीफ और पढ़ा-लिखा। बी० ए० में पढ़ रहा है। उसके बाद बैरिस्टरी के लिए विलायत जायगा। वह रायबरेली के बहुत बड़े जागीरदार शेख गुलाम रसूल साहिब का बेटा है। इकलौता बेटा। शेख साहिब रायबरेली में कलैक्टर भी हैं।"

सबसे आखीर में पता था—

"बवा, डिप्टी अकराम अली मरहूम, मुहल्ला तलाक महल, मकान नम्बर एक सौ दो, कानपुर।"

खत पढ़ कर जलील इतना रोया, इतना रोया कि उसकी हिचकियाँ बँध गईं। राबिया भी खूब जी भरकर रोई। वे दोनों भाई-बहिन रोते रहे और जब बहुत रो लेने से उनके दिलों का बुखार उतर गया, तो जलील भर्राई हुई आवाज में बोला—

"अगर मेरी बेटी मुझे जूते भी लगाए, तो भी वह अपनी जगह पर हक बजानिब होगी।"

वह एक कराह के साथ बोला—

"न जाने इस जहान में मुझ जैसे कितने ही नालायक बाप होंगे, जो नई-नवेली दुल्हिन का घूंघट उठाते ही उसके मकरो-फ़रेब का शिकार होकर अपनी पहली बीवी के बच्चों को भूल जाते होंगे। अगर खुदा न ख्वास्ता सईदा की नानी अम्मां इस काबिल न होतीं कि मेरी बेटी और अपनी नवासी को परवरिश कर सकतीं तो वह न जाने किस हाल में होती! या अगर वे मर जातीं, खुदा न ख्वास्ता तो यह बच्ची किसी यतीमखा ने में पल रही होती।"

वह एक सर्द आह भर कर बोला—

"खुदा हम जैसे बापों को वाकई कभी माफ़ न करेगा!"

ज़ाकिरा बीवी ने जलील को देखते ही उसकी तरफ़ से अपना मुँह फेर लिया।

"मैं तुम्हें कभी माफ़ नहीं करूँगी।"

उन्होंने उसी तरह मुँह फेरे-फेरे कहा—

"मैंने तो तुम्हें निकाह के वक्त आने की दावत दी थी। तुम तो खत मिलते ही चले आए।"

जलील जाकिरा बीबी के सामने हाथ जोड़ कर खड़ा हो गया। गिड़गिड़ा कर आजजी से बोला—

"मैं तो इससे पहले भी कानपुर महज आपकी तलाश में आया था। राबिया भी मेरे साथ थी। हम यहां से भटक कर नाकाम वापिस चले गए। आपका कोई पता हमें न लग सका था।"

"क्यों आए थे तुम ? क्या तुम्हें अपनी मक्कार और जलील बेगम से फुर्सत मिल गई थी ?"

"उससे, उस नाबकर औरत से मुझे हमेशा-हमेशा के लिए फुर्सत मिल गई है, अम्मी जान ! मेरा उसका हमेशा के लिए साथ छूट गया है।"

"मना लो जाकर उसे।"

"मैंने उसे तलाक दे दिया है।"

जाकिरा बेगम यकबारगी घूम गईं। उन्होंने जलील को गौर से देखा—

"क्यों ! तुमने इतनी सआदतमन्द और प्यारी बीवी को तलाक क्यों दे दिया ?"

"पहले आप मुझे माफ़ फरमा दीजिए, फिर मैं सारी रूदाद आपको तफसील से सुनाऊँगा। वह इन्तहाई खतरनाक किस्म की चालाक औरत थी।"

वह गिड़गिड़ाने लगा—

"मुझे मेरी बेटी की सूरत दिखा दीजिए, अम्मीजान ! मैं उसके कदमों पर अपना सिर रख कर उससे माफ़ी मांगने के लिए तरस रहा हूँ।"

वह रो पड़ा—

"मैं अपने गुनाहों का कुफारा अदा करना चाहता हूँ, अम्मीजान।"

एक बेटी से अपने बाप की यह बेकरारी उसकी यह घबराहट सहन न हो सकी। वह कमरे में आई और अपने बाप की कमर से लिपट गई।

वह फूट-फूट कर रो रही थी। जलील उसके कदमों पर वाकई झुकने लगा। वह बच्चों की तरह बेकरार होकर रो रहा था। सईदा ने उसे रोक दिया—

"यह क्या करते हैं आप, अब्बूजान! गुनाहगार बनाते हैं मुझे, खुदा के लिए···!"

और फिर वे सब एक साथ एक जगह बैठ गए। सारी बातें, तमाम कैफियत शुरू से आखीर तक दुहराई गई। आंसुओं के दरम्यान उस आठ साल की एक-एक बात दुहराई गई। और उन सबके दिल का गुब्बार धुल गया।

सईदा बोली—

"वाकई हमारी बीबी बड़ी समझदार और चालाक औरत थीं। मुझसे कहा कि अपने अब्बूजान की प्लेट में राख डाल देना, बेटी! मुझे यह समझाया कि तुम्हारे अब्बूजान को हकीम साहिब ने मुर्गा खाने के लिए मना किया है और वे मान नहीं रहे। तुम प्लेट में राख डाल दोगी तो इस तरह वे मुर्गा नहीं खाएंगे और इस तरह वे परहेज कर-लेंगे। उनका परहेज हो जायगा और···।"

जलील ने सईदा की बात काटी—

"उसकी बात अब छोड़ो, बेटी! खुदा उसे जहन्नुम रसीद करे। मुझे उस पर अब भी इतना गुस्सा आ रहा है कि मैं उसका खून कर दूं।"

वह इन्तहाई कर्ब और बेजारी से बोला—

"उसका जिक्र मेरे सामने न करो।" वह होंठ भींचकर बोला—"कमीनी, जलील, हरामजादी औरत! खुदा उसे गारत करे।"

"ऐसी औरतों का हश्र हमेशा बुरा होता है, मियां!" मुगलानी बी बोलीं—"तुम देख लेना, मियां, कि उसकी जिन्दगी में कितने नासूर पड़ते हैं। कब्र तक में उसको कीड़े न पड़ें तो मुझे फिर कहना।"

अभी ये बातें हो ही रही थीं, दुःख-सुख के किस्से कहे ही जा रहे

थे कि मुलाजिमा ने आकर खबर दी—

"रजी मियाँ कह रहे हैं कि वे बेगम हुजूर से कुछ बातें करना चाहते हैं।"

"डेवढ़ी में बुला लो मेरे बेटे को!" जाकिरा बीवी ने कहा।

रजी डेवढ़ी में आकर खड़ा हो गया। जाकिरा बीवी ने इस तरफ खड़े होकर पर्दे से रजी से बातचीत की—

"तुम आ गए, बेटे!"

"जी, बेगम हुजूर!"

"कहो, बेटे!"

"इन्तहाई खुशी की खबर है, बेगम हुजूर! सरकारी आदमी आए हैं, सरकार का हुक्मनामा लेकर।"

"क्या बात है?"

"आप उनके साथ अहमदपुर रवाना हो जाइए। हवेली का हिस्सा वे जाकर आपको दिलाएँगे और साथ ही दो लाख सात हजार रुपये भी। वे अदालत का हुक्म और कुर्कीनामा साथ लेकर आए हैं।"

उसने बताया—

"एक तिहाई जागीर के हिस्से पर सईदा बेगम का नाम तहसील की तरफ से चढ़ चुका है। और काश्तकारों को और पटवारी को इसकी इत्तिला दी जा चुकी है। अब अहमदपुर की जागीर पर हमारी भांजी सईदा बीवी का एक तिहाई का हक हो चुका है। अगर ताहिर मियाँ दो लाख सात हजार रुपये न दे सकेंगे, तो...!"

जाकिरा बीवी यकबारगी बोलीं—

"हाँ, तो फिर क्या होगा?"

"उनकी पूरी हवेली और जागीर सईदा बीवी के नाम कुर्क करवाली जायगी। जागीर का नीलाम हो जायगा।"

"बहुत खूब!" जाकिरा बीवी की आँखें चमक उठीं—"अब मेरी बेटी अपने कमीने मामू और हरामजादी ममानी से बात करेगी।"

तकरीबन एक घण्टे के वाद ये सब-के-सब कानपुर से अहमदपुर की तरफ रवाना हो गए। गवर्नमेंट के आदमियों के साथ जाकिरा बीबी, सईदा, मुगलानी बी, उनका बेटा रजी, जलील और राबिया भी थी।

ये सब लोग दिन के तकरीबन दो बजे के करीब मोटर लारी के जरिये अहमदपुर पहुँच गए। साथ में सईदा के वकील शिवचरणलाल भी थे।

वहाँ पहुँचते ही हवेली के लॉन मे सरकारी आदमियों का एक पूरा इजलास लग गया। लारी के अड्डे से यहाँ तक सईदा, जाकिरा बीबी, मुगलानी बी और राबिया पालकी पर सवार होकर आई थीं। वे अभी तक पालकी के अन्दर ही बैठी थीं। पालकी हवेली के दालान में रख दी गई थी। जाकिरा बीबी और सईदा ने कब्जा कानूनी तौर पर मिल जाने से पहले हवेली के अन्दर जाने से इन्कार कर दिया था।

ताहिर पालकी के पास उकड़ूँ बैठा गिड़गिड़ा रहा था—

"खुदा के लिए अम्मीजान! अगर आप अन्दर न चलीं तो मेरी रही-सही इज्जत भी नीलाम हो जायगी।"

"मैं कैसे अन्दर जा सकती हूँ?"

जाकिरा बीबी ने कहा—

"मुझे कोई अपनी इज्जत का नीलाम इतने आदमियों के बीच में कराना है क्या? मैं अन्दर कैसे जा सकती हूँ! कब्जा कानूनी तौर पर मिल जाने के बाद मैं अन्दर कदम रखूँगी।"

वे बड़े कर्ब के साथ बोलीं—

"मुझे वह दिन कभी न भूलेगा, जब मैं लावारिस और भिखारिनों की तरह इस कोठी से धक्के मार कर बाहर निकाल दी गई थी।"

"तरस खाइये, अम्मीजान! रहम कीजिए मेरे ऊपर! आखिर को मैं आपका बेटा हूँ।"

"और उस दिन?—जिस दिन मुझे इस हवेली से कुतिया की तरह दुत्कार कर निकाल दिया गया था, जबकि मेरा कोई न था, जब

कि सब-कुछ मुझसे छीन लिया गया था, उस दिन क्या मैं तुम्हारी माँ नहीं थी ? या तुम मेरे बेटे न थे ?"

जाकिरा बीबी की आवाज भर्रा गई। वे भर्राई आवाज में बोलीं—

"अब मैं किसी की माँ नहीं हूँ और न मेरा कोई बेटा है। माँ-बेटे के रिश्ते को मैं हमेशा के लिए अपने दिल में दफ़्न करके इस हवेली से निकली थी।"

"अम्मीजान ! खुदा के लिए !" ताहिर गिड़गिड़ाए जा रहा था—आप एक मिनट के लिए तो अन्दर आ जाइए।"

"नहीं, मुझे अब और ज्यादा रुसवा नहीं होना है।"

"तरस खाइये मेरी इस बदहाली और मेरी इस हालत पर, अम्मी जान !"

"उस दिन मेरी बदहाली और खस्ता हालत पर किसने तरस खाया था ?"

"आपके सीने में माँ का दिल है, अम्मीजान !"

"वह दिल, जो मेरे सीने में था और जो माँ का दिल था, उसे जबरन गला घोंटकर मार डाला गया है।"

"मैं आपके पाँवों पड़ता हूँ। माँ बनकर न सही, खुदा-तरस बनकर चन्द मिनट के लिए अन्दर आ जाइये। मुझे आपसे चन्द बातें करनी हैं।"

"मुझसे बातें करने से कुछ हासिल न होगा। मेरा क्या है इसमें। मैं तो अपना हक अपनी बेवकूफी से खो ही चुकी हूँ। अब तो जो है, वह हकदार का है और वह हक वाली सईदा है, मैं नहीं हूँ। दो लाख सात हजार रुपये, एक तिहाई जागीर और कोठी का हक मेरा नहीं सईदा का है।"

ताहिर इन्तहाई पशो-पंज के आलम में फंसा गिड़गिड़ा रहा था। उसने इन्तहाई बेकसी के आलम में सईदा को पुकारा—

"तुम ही एक मिनट के लिए अन्दर आ जाओ, बेटी सईदा ! मेरी

कुछ अर्ज सुन लो !"

"नानी अम्मा का फरमान और हुक्म मेरे लिए खुदा और रसूल का फरमान और हुक्म है। मैं अगर अपनी नानी अम्मा के होते जबान खोलूं, तो खुदा ताला मेरी जबान में कीड़े डाले। वह सजा दे मेरी जबान को।"

और फिर अन्दर से अनवरी बुर्का सम्हाले आ गई। और आते ही पालकी का पर्दा हटा कर जाकिरा बीबी के कदमों पर पालकी के अन्दर ही उसने अपना सिर रख दिया और फूट-फूट कर रोने लगी—

"खुदा के लिए, अम्मीजान ! आपको रसूल पाक का सदका, आप को हुसनैन का वास्ता, दो मिनट के लिए अन्दर आकर हमारी चन्द बातें सुन लीजिए और फिर जो चाहे कीजिए। हमारी सिर्फ इतनी इल्तजा है आप से।"

और उसके इस तरह रोने से जाकिरा बीबी का दिल पसीज गया—

"अच्छा !"

उनके मुंह से निकला और वे सब की सब अन्दर आ गईं।

अन्दर आते ही ताहिर और अनवरी दोनों यकबारगी जाकिरा बीबी के कदमों पर गिर गए। ताहिर और अनवरी ने उनके पांव इन्तहाई मजबूती के साथ थाम रखे थे।

"इस भरी महफिल में आप मुझ नालायक और बदनसीब की इज्जत का नीलाम न होने दीजिए, अम्मीजान !"

ताहिर जारो-कतार रो रहा था—

"मेरे पास दो लाख सात हजार यकमुश्त देने को नहीं हैं। मैं रफ्ता-रफ्ता करके यह कर्ज चुका दूंगा। किस्तें लिखवा कर सरकार के सामने दे देता हूं। इस वक्त पचास हजार नकद ले लीजिए। एक लाख एक महीने बाद दे दूंगा। बकाया रुपया किस्तों में अदा कर दूंगा।"

"एक लाख तुम अगले महीने कैसे दोगे ?"

"मैं अपनी जागीर, मेरा मतलब है कि अपने हिस्से की जागीर

का कुछ हिस्सा फरोख्त कर दूंगा और यह रकम···।"

जाकिरा बीबी का दिल अन्दर से रो पड़ा। ताहिर की इस बेकसी पर उन्हें तरस आ गया।

ताहिर कहता रहा—

"इस वक्त अगर आप अपने मुतालबे पर अड़ी रहीं तो यह जागीर नीलाम पर चढ़ जायगी और मेरी इज्जत का नीलाम चढ़ जायगा। बाप-दादा की जागीर कौड़ियों के दाम नीलाम होगी। बोलियां लगेंगी इस जागीर पर और मैं कुएं में कूदकर अपनी जान दे दूंगा।"

"क्या कहती हो तुम, बेटी ?"

जाकिरा बीबी ने सईदा से पूछा। और वह, जोकि अपनी आंखों में अश्कों का तूफान लिए यह सारा मंजर देख रही थी, यकदम से रो पड़ी। अपने होंठ काटते हुए घुटी हुई आवाज में बोली—

"अगर आप नाराज न हों, नानी अम्मां, तो मैं अर्ज करूंगी कि मामूजान अगर मेरी ज़िन्दगी मांगते हों, तो वह भी मेरी तरफ़ से दे दीजिए !"

और यह कहकर वह फूट-फूटकर रोने लगी। आंसुओं का सैलाब उसके काबू से बाहर हो चुका था। वह बेसाख्ता अपने मामू साहिब से लिपट गई—

"मामू साहिब !" वह भर्राई हुई आवाज में बोली—"आप हमारे मामू साहिब हैं। आप भाई हैं मेरी अम्मी के। मैं आपके लिए अपनी ज़िन्दगी लुटा सकती हूं। यह तो जागीर नामुराद, हवेली और रुपयों की बात है।"

ताहिर ने अपनी भांजी को बेअख्तयार लिपटा लिया। उसने सईदा का सिर अपनी गोद में भर लिया। अनवरी उसके कदमों पर गिर पड़ी। ताहिर अपने होंठ चबाते हुए बोला—

"तुम सही मायनों में फ़रिश्ता हो, बेटी ! तुम इनसान हो और मैं ?—मैं एक ज़लील कुत्ता हूं, जानवर हूं। मैं इनसानियत के नाम पर

कलंक का टीका हूँ और तुम ताज हो इनसानियत के सिर का। तुम शराफ़त और रहम की पेशानी पर वह चमकता हुआ झूमर हो, जिससे पेशानियों का हुस्न बढ़ता है।"

सईदा अपनी ममानी से लिपट गई। इसलिए कि वह सईदा के सामने खड़ी, दोनों हाथ जोड़े माफ़ी माँग रही थी।

सईदा बेकरार होकर बोली—

"हमें, अल्लाह की कसम, इतना शर्मिन्दा और ज़लील न कीजिए, ममानी जान!" वह अपनी ममानी से लिपट कर रोने लगी—"मैं आपकी बेटी हूँ। आप माँ हैं मेरी।"

ज़ाकिरा बीबी की आँखें सावन-भादों की तरह बरस रही थीं। वे सब-के-सब उसी जगह खड़े थे। उन सबकी आँखों से आँसुओं की धाराएँ फूट रहीं थीं।

जलील का सीना फख्र की अधिकता से फूल गया था। वह एक कदम आगे बढ़ा। उसने बड़े फ़ख्र और प्यार से अपनी बेटी सईदा के सिर पर हाथ फेरा।

"मुझे इस वक़्त इस बात पर फ़ख्र है, बेटी, कि मैं तुम्हारा बाप हूँ। इस बात पर फ़ख्र है मुझे कि तुम मेरे नाम के साथ वाबस्ता हो। इस बात पर मैं फ़ख्र से फूला नहीं समा रहा हूँ कि तुम्हारी नानी अम्मा मेरी सास हैं। जिनकी तरबीयत, तालीम और सरपरस्ती में रहकर तुम मेरी काबिले-सद-फ़ख्र बेटी बनी हो। जिनकी तरबीयत ने तुम्हें जिन्दा जावेद बना दिया है। मुझे इस खानदान से वाबस्ता होने पर मरते दम तक फ़ख्र रहेगा।"

अनवरी और ताहिर ने मुगलानी बी से भी माफ़ी माँग ली। और मुगलानी बी ने उन दोनों को अपने गले से लगा लिया।

सबके अन्त में जाकिरा बीबी ने सईदा को लिपटा लिया—

"मुझे खुशी है बेटी, कि तूने मेरा सर हमेशा ऊँचा रखा है। मुझे जिन्दगी के किसी मोड़ पर भी तुमने जलील नहीं होने दिया। तुमने

मेरी सरपरस्ती में गुड़ियां भी खेली हैं, गुड़ियों के ब्याह भी तुमने रचाए हैं, अपने गुड्डे की बारातें भी तुमने निकाली हैं और अपनी गुड़ियों को उनकी ससुराल रुखसत भी किया है। तुमने शरारतें भी की हैं, जिद्दें भी तुमसे हुई होंगी, लेकिन किसी जगह भी तुमने मेरी तालीम और मेरी तरबीयत को रुसवा नहीं होने दिया, बिल्कुल अपनी मां की तरह।"

उन्होंने सईदा को ज़ोर से लिपटा लिया—

"बेटी ! खुदा करे, तुम सदा सुखी रहो ! फूलो-फलो और शाद व बामुराद रहो।"

उन्होंने बड़े प्यार से सईदा की पेशानी चूमी—

"मरते वक्त मुझे इसका क़लक न होगा बेटी, कि मेरी तरबीयत नाकाम या निकम्मी रही है।"

उन सबके चेहरों पर वही कैफ़ियत थी, जो बारिश के बाद यकायक चान्दनी छिटक जाने से हो जाती है।

सरकारी आदमियों को रुखसत कर दिया गया। सईदा ने उनसे कह दिया कि मुझे अपना सब-कुछ मिल चुका है। और वे सबके सब वहां से रुखसत हो गए !

सईदा के सेहरे के फूल इस अन्दाज से खिले कि सारी फ़िज़ा सुगन्धित हो गई। वह दुल्हिन बनी हुई चौदहवीं के चांद को बादलों की ओट में अपना मुंह छिपाने पर मजबूर कर रही थी।

जब वह रुखसत होकर जाने लगी तो एक बार फिर उसकी नानी अम्मां को वही अल्फ़ाज दुहराने पड़े, जो कि उन्होंने उसकी मां और अपनी बेटी के लिए कहे थे। वे सईदा को लिपटाते हुए उसे समझा रही थीं—

"बेटी, तुम अपने घर जा रही हो अब। वह घर, जो कि सही

मायनों में तुम्हारा अपना घर है।"

बेटियाँ दुल्हिन बनकर मायके से अपनी ससुराल जाती हैं······

और फिर सदियों पहले का जाना-पहचाना राग एक बार गूंज उठा—

"काहे को ब्याही बिदेस, ओ लक्खी बाबल मोरे!

ताक़ों भरी मैंने गुड़ियाँ जो छोड़ीं

छोड़ा सहेलियों का साथ, ओ लक्खी बाबल मोरे!"

ज़ाकिरा बीबी ने अपनी डबडबाई हुई आँखों को आसमान की तरफ उठाया—

"ऐ मेरे अल्लाह पाक! मैंने बेटी के बाद अपनी नवासी के सेहरे के फूल भी देख लिए। तूने दुनिया में सब कुछ मुझे दिखाया, सब-कुछ तूने मुझे दिया, अब अपने रसूल पाक का रोजा भी मुझे दिखा दे। और साथ ही ईमान के साथ इस दुनिया से उठा ले मुझे। मेरे पास तेरी बख़शीशों का कोई शुमार नहीं है, मेरे अल्लाह!"

वे ज़ारो-कतार रो रही थीं। उनकी आँखें [सावन-भादों की तरह बरस रही थीं। और ढोलक की धुन पर गाया हुआ यह दर्दनाक विदाई का गीत अपने पूरे अरूज पर पहुँच चुका था—

"काहे को ब्याही बिदेस, ओ लक्खी बाबल मोरे!

काहे को ब्याही बिदेस!"

अन्त में यह गीत अपने पूरे अरूज पर पहुँच कर खत्म हो गया। ज़ाकिरा बीबी के तमाम आँसू एक साथ खत्म हो गए। वे अब अपनी चौकी पर खड़ी हुई अपने खुदा के हुजूर में शुक्राने की नमाज पढ़ रही थीं।

उनके रब ने उनके बहुत बड़े फ़र्ज़ से उन्हें मुक्त कर दिया था।